अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजाबहादर लाला सुखदेवसहायजी. जौहरी.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के मुख्याचार्य पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य प. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने पुत्र शास्त्रोद्धार महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व धर्मोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए, इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के बालब्रह्मचारी पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य पूज्य [illegible] महाराज! [illegible]

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्वा. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व धर्मोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महाल्लाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिष्य-अमोल ऋषि.

उपकारी-महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका. इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री माधिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समयस्पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे.

आपका-अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पुज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निस कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुअे हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

सहाय-मुनिमंडल

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्रीअमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीये वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बहुत उक्त मुनिवर्गों का भी बडा उपकार है.

और भी-सहायदाता

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन-लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवी-वर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी, पं.श्री जोरावरमलजी. कवियर श्री नानचन्द्रजी. प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी. गुणज्ञ-सतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लीबडी भंडार. कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ट दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु.२००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नही होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

आश्रयदाता

धोवाला (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेठ! इनोंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की.इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये, इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया.तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ.यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की. इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं.

चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र की विषयानुक्रमणिका.

चन्द्रप्रज्ञाप्ति सूत्र की प्रस्तावना

देवाधिदेवं जिनं नत्वा, सद्गुरू ज्ञान प्रसादते॥चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्रस्य वार्तिकं कुरुते मया ॥१॥

सर्व देवों के देव श्री जिनेश्वर भगवंत को नमस्कार करके श्री सद्गुरु महाराजने दी हुई ज्ञान रूप प्रसादी के प्रसाद कर यह छठा अंग चन्द्रप्रज्ञप्ति शास्त्र का हिन्दी भाषानुवाद करता हूं. ॥ १ ॥ यह ज्ञाताजी शास्त्र का उपांग कहा जाता है. ज्ञाता सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का अध्ययन चन्द्रमा का है तथा दूसरे श्रुतस्कन्ध में चन्द्रमा की अग्रमहिषीयों के नाम मात्र व पूर्वभव की करणीका कथन किया है, वह चन्द्रमा किस प्रकार ऋद्धिवाला है. जिस का मंडल,गति,गमन, संवत्सरों,वर्ष,पक्ष, महिने, तीथि, नक्षत्रों का काल प्रमाण कुलोपकुल नक्षत्रों ज्योतिषी के सुख वगैरह बहुत विस्तार से वर्णन किया है. यह चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र कैसा प्रभाविक (चमत्कारी) व कितना गहन हैं यह कुछ जैनों से छिपा नहीं है बडे २ महात्मा साधुओं भी इस का पठन मात्र करते अचकाते हैं. जिन २ ने इस का पठन किया उन २ ने इस के चमत्कार देख ऐसी दंत कथाओं भी बहुतसी प्रचलित है. इस से सहज भान होगा कि इस को लिखना और छपा के प्रसिद्धी में लाना यह कितना विकट काम है. सामान्य पुरुष से हो सकता है क्या ? ऐसे दुष्प्राप्य शास्त्र को आज हिन्दी भाषानुवाद युक्त प्रसिद्धी में रखने जो मैं समर्थ होता हूं यह प्रबल प्रताप कच्छ देश पावन करता आठ कोटी बडी पक्ष के प्रतापी परमपूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के जेष्ट

शिष्य कविवरेन्द्र परमोपकारी महात्मा मुनिराज श्री नागचन्द्रजी महाराज का ही है. इन महात्माने एक बहुत अर्थ वाली शुद्धलिपी वाली अपने पास की चन्द्र प्रज्ञप्ती की प्रत भेजी, तैसे ही परम प्रयास कर अहमदाबाद के भंडारमें रहे हुवे अष्टकोटी दरियापुरी सम्प्रदाय के परमपूज्य रघुनाथजी महाराजके त्रिद्वशि रोमणि, गणितानुयोग विशारद महापुरुष श्री हाथीजी स्वामीजी के परम प्रयास से लिखे हुवे बहुत ही खुलासा और यंत्रो के चन्द्र प्रज्ञप्ति की गुटके (पुस्तके) यहां भेजवाइ, उन के आधार से इस प्रकार खुलासे सहित इस का उतारा कर सका हूं. तैसे ही गौणताणें भीनासर के शेठ हजारीमलजी बांठीया की तरफ से प्राप्त हुई प्रत की भी सहाय ली गई हैं. हमारे जानने में तो यथा बुद्धि बहुत खुलासा किया है तद्यपि इस के मूल में अशुद्धीयों का संभव रहा है क्योंकि इस प्रकार इस हस्त लिखित प्रतीयों भी क्वचित उपलब्ध होती है. इसलिये विद्वद्वर सुधारा कर पठन कीजीये.

☛ परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया, उन ३२ ही शास्त्रों की १०००— १००० प्रतों को सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादूर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सर्व को उस का अमूल्य लाभ दिया है।

॥ षष्ठ उपाङ्ग-चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र ॥

जयइ नव णलिण कुवलय विगसियसयवत्थपतल दलत्थो ॥ वीरो गयंदमयंगल

प्रथम इष्टार्थ की सिद्धि के लिये सूत्रकर्ता इष्ट देवकी स्तवना करते हुए कहते हैं कि नविन विकसे हुवे नलिन, नीलोत्पल, सोपांखडी वाले, वगैरह कमल समान दीर्घ मनोहरकारी नेत्रों वाले और अपनी लीला सहित जाता हुवा गजेन्द्रकी गति समान गति वाले भगवान महावीर स्वामी रागादि शत्रुओं को अविरपने जीतते हैं. यहां पर कोई प्रश्न करे कि रागादि शत्रुओं का जय होने से ही केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और केवल ज्ञान की प्राप्ति होने से सूत्र प्ररूपना हुई; तो यहां पर वर्तमान काल वाचक जयति शब्द का प्रयोग कैसे कहा ? उत्तर—यद्यपि जिनेश्वर ने सूत्र प्ररूपना के पूर्व ही रागादि शत्रुओं जीते हैं तथापि जीतने का फल जो केवल ज्ञानादि गुन हैं वे वर्तमान काल में ही वर्त रहे हैं, इस तरह फल के उपचा-

सललिय गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥ नमिऊण असुर सुर गरूल भुयंग परिवंदिए.

रिक कारण से भूतकाल की क्रिया को वर्तमान कालवाची जयति शब्द के प्रयोग से बतलाइ है. अथवा जिनेश्वर की भक्तिवाले भव्य जीवों ज्ञानादि में प्रवृत्ति करते हुए रागादि का जय करते हैं. कहा है कि-भत्ताइं जिनवराणं खिप्पंति पुव्वसंचिया कम्मा । आयरिय णमोक्कारे विज्जा मंताय सिज्झंति ॥ १ ॥ अर्थात् जिनेश्वर की भक्ति करने से पूर्व जन्मके संचित कर्मों का क्षय होता है, और आचार्य को नमस्कार करने से विद्या मंत्र वगैरह सिद्ध होते हैं इसलिये जयति शब्द का यहां पर प्रयोग कीया है. अथवा जिनेश्वर ने अपने सर्वाधिक गुणों के सुरासुर मानवादि भव्यगणोंको जीतकर अपने भक्त बनाये हैं वे भव्यों जिनेश्वर की सदैव भक्ति करते हैं, इस से भी जयति शब्दका प्रयोग कीया है,] अब वे जिनेश्वर कैसे हैं प्रश्न-ऐसे रागादि शत्रुको कौन जीते हैं ? उत्तर-महावीर भगवंतने ऐसे रागादि शत्रुओं जीते हैं? कषायादि बलिष्ट मल्लों की साथ ध्यानादि युद्धकर उनका पराजय कीया है, इसीसे आत्माको पुनर्भव की प्राप्ति से पराङ्मुख कीया है, और शिव निरुपद्रव मोक्ष के शाश्वत सुख के सन्मुख कीया है, यहां पर वीर शब्द से भगवंत अपायअपगम अतिशय अर्थात् सांसारिक दुःख भोगने से दूर दर्शाया है, और भी वे जिनेश्वर कैसे हैं? नवीन उत्पन्न हुए विकसायमान नलिन (रक्तोत्पल कमल) नीलोत्पल कमल की पांखडी वाला कमल की समान प्रफुल्लित दीर्घ व चक्षुओं वाले और भी तरुण मदोन्मत्त अपनी

गयकिलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहूअ ॥ २ ॥ फुडवियड पागडत्थं
वुत्थं पुव्वसुयं सारणीसद्दं, सुहुमगणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय पण्णत्ते ॥ ३ ॥
लीलामें लीन बना हुवा गजेन्द्र जैसे चलता है वैसे चलने वाले, और भी मगरुर से ऐश्वर्यवाले, ठकुराई वाले,
अनुपम रूप के धारक, तीन जगत में यशकीर्ति धारन करने वाले, उत्तम एक हजार
आठ लक्षण धारण करनेवाले, धर्म के स्थापक, और सम्यक्त्व प्रकार से
वर्ता पूर्वक प्रवर्तक इत्यादि गुणों युक्त, चारों प्रकार के महा अतिशय के धारक श्री जिनेश्वर भगवान में
इस तरह प्रथम गाथा में वर्तमान तीर्थाधिपति श्री महावीर स्वामी को नमस्कार करके दूसरी गाथा में
समुच्चय पंच परमेष्ठि को नमस्कार करते हैं. ॥ १ ॥ असुर (असुरकुमार) सुर (वैमानिक देव) गुरुल
[सुवर्णकुमार] भुयंग (नागकुमार अथवा व्यंतरादि देव के) ज्योतिष्क, रागादि सब क्लेश से रहित
ऐसे अरिहंत तीर्थंकर भगवान, सब कार्य को सिद्ध करने वाले सिद्ध भगवान, पंचाचार पालने वाले
आचार्य भगवान, सूत्र पठन पाठन के कर्ता उपाध्याय भगवान और मोक्ष के साधक साधु भगवान को
नमस्कार होवे ॥ २ ॥ इस प्रकार नमस्कार कर कहते हैं, किस को ?—जिस का जैसा स्वरूप है वैसा
ही उस का जानपने का विषय है, विपड विस्तीर्ण सूक्ष्मबुद्धि गम्य प्रत्यक्ष साक्षात अक्षरों में. जिस का
अर्थ प्रकाशा है, पूर्वश्रुत का सारभूत अर्थात् पूर्वों में से उद्धार किया हुवा, सूक्ष्म बुद्धि वाले आचार्य ने
कहा हुवा ऐसा ज्योतिषियों के गण के राजा जो चंद्र उस की प्ररूपणा सो चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र कहा है. ॥ ३ ॥

सललिय गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥ नमिऊण असुर सुर गरूल भुयंग परिवंदिए.

रिक कारण से भूतकाल की क्रिया को वर्तमान कालवाची जयति शब्द के प्रयोग से बतलाइ है. अथवा जिनेश्वर की भक्तिवाले भव्य जीवों ज्ञानादि में प्रवृत्ति करते हुए रागादि का जय करते हैं. कहा है कि-भंताइ जिनवराणं खिवंति पुव्वसंचिया कम्मा । आयरिय णमोक्कारे विज्जा मंताय सिज्झंति ॥ १ ॥ अर्थात् जिनेश्वर की भक्ति करने से पूर्व जन्मके संचित कर्मों का क्षय होता है, और आचार्य को नमस्कार करने से विद्या मंत्र वगैरह सिद्ध होते हैं इसलिये जयति शब्द का यहां पर प्रयोग कीया है. अथवा जिनेश्वर ने अपने सर्वाधिक गुणों के सुरासुर मानवादि भव्यगणोंको जीतकर अपने भक्त बनाये हैं वे भक्तों जिनेश्वर की सदैव भक्ति करते हैं, इस से भी जयति शब्दका प्रयोग कीया है,। अब वे जिनेश्वर कैसे हैं प्रश्न-ऐसे रागादि शत्रुको कौन जीते हैं ? उत्तर-महावीर भगवंतने ऐसे रागादि शत्रुओं जीते हैं? कषायादि बलिष्ट मल्लों की साथ ध्यानादि युद्धकर उनका पराजय कीया है, इसीसे आत्माको पुनर्भव की प्राप्ति से पराङ्मुख कीया है, और शिव निरुपद्रव मोक्ष के शाश्वत सुख के सन्मुख कीया है, यहां पर वीर शब्द से भगवंत अपायअपगम अतिशय अर्थात् सांसारिक दुःख भोगने से दूर दर्शाया है, और भी वे जिनेश्वर कैसे हैं! नविन उत्पन्न हुए विकसायमान नलिन (रक्तोत्पल कमल) नीलोत्पल कमल की पांखडी वाला कमल की समान प्रफुल्लित दीर्घ व चक्षुओं वाले और भी तरुण मदोन्मत्त अपनी

गयकिलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहूअ ॥ २ ॥ फुडावियड पागडत्थं वुत्थं पुव्वसुय सारणीसदं, सुहुमगणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय पण्णत्ते ॥ ३ ॥

लीलामें लीन वना हुवा गजेन्द्र जैसे चलता है वैसे चलने वाले, और भी भगशब्द से ऐश्वर्यवाले, ठकुराइ वाले, अनुपम द. ०४ रूप के धारक, तीन जगत में यशकीर्ति धारन करने वाले, उत्तम एक हजार आठ लक्षण धारण करनेवाले, धर्म के स्थापक, और सम्यक् प्रकार से यत्ना पूर्वक प्रवर्तक इत्यादि गुणों युक्त, चारों प्रकार के महा अतिशय के धारक श्री जिनेश्वर भगवान हैं. इस तरह प्रथम गाथा में वर्तमान तीर्थाधिपति श्री महावीर स्वामी को नमस्कार करके दूसरी गाथा में समुच्चय पंच परमेष्ठि को नमस्कार करते हैं. ॥ १ ॥ असुर (असुरकुमार) सुर (वैमानिक देव) गुरुल [सुवर्णकुमार] भुयंग (नागकुमार अथवा व्यंतरादि देव के) वंदनिक, रागादि सव क्लेश से रहित ऐसे अरिहंत तीर्थंकर भगवान, सव कार्य की सिद्धि करने वाले सिद्ध भगवान, पंचाचार पालने वाले आचार्य भगवान, सूत्र पठन पाठन के कर्ता उपाध्याय भगवान और मोक्ष के साधक साधु भगवान को नमस्कार होवे ॥ २ ॥ इस प्रकार नमस्कार कर कहते हैं, किस को ?—जिस का जैसा स्वरूप है वैसा ही उस का जानपने का विषय है, वियड विस्तीर्ण सूक्ष्मबुद्धि गम्य प्रत्यक्ष साक्षात अक्षरों में जिस का अर्थ प्रकरा है, पूर्वश्रुत का सारभूत अर्थात् पूर्व में से उद्धार किया हुवा, सूक्ष्म बुद्धि वाले आचार्यने कहा हुवा ऐसा ज्योतिषियों के गण के राजा जो चंद्र उस की प्ररूपणा सो चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र कहा है. ॥ ३ ॥

णामेण इंदभुइत्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेणं ॥ पुच्छइ जिणवर वसहं, जोइस गणराय पण्णत्ति॥ ४॥कइ मंडलाइं वचंति॥तिरिच्छा किंवा एच्छंति॥ओभासीत, केवइयं सेयाए, किंति संठिति ॥ ५ ॥ कहिं पडिहया लेसा. कहिं तेउय संठाति ॥ कि सूरिया

ज्योतिषी के अधिकार की प्रथम पृच्छा गौतम स्वामीने की थी इस से उन का कथन कहते हैं: जिनेश्वर श्री महावीर स्वामी को मन वचन व काया से नमस्कार करके गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति नाम के अनगार चंद्रप्रज्ञप्ति. की पृच्छा करते हैं. ॥ ४ ॥ इस तरह मंगलाचरण करके चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र का संक्षेप में समुच्चय कहते हैं—इस चंद्रप्रज्ञप्ति के बीस पाहुडे कहे हैं. प्रथम पाहुड में सूर्य के जो १८४ मांडले कहे हैं उन में से एक वक्त में कितने मंडल स्पर्शता है और दो वक्त में कितने मंडल स्पर्शता है जिसका कथन है.इस के आठ अंतर पाहुडे हैं.दूसरे पाहुडे में से पूर्व प्रकार तीर्च्छी दिशा में सूर्य किस तरह चलता है यह कथन है, इस के तीन अंतर पाहुडे हैं. तीसरे पाहुडे में चंद्र सूर्य कितने क्षेत्र में रहे हुवे प्रकाश करते हैं. इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपना रूप बारह पडिवृति है. चौथे पाहुड में चंद्रमा व सूर्य के संस्थान का वर्णन है. इस मे अन्य तीर्थि की प्ररूपणा रूप सोलह पडिवृति है. ताप क्षेत्र व अंधकार क्षेत्र की प्ररूपणा भी है. वैसे सूर्य ऊंचा नीचा व तीर्च्छा कितना तपता है उस का वर्णन है. ॥ ५ ॥ पांचवे पाहुड में सूर्य की लेश्या (तेज) का प्रतिघात कहां होवे सो कहा है. इसमें अन्यतीर्थिकी प्ररूपणारूप बीस पडिवृति कही है.छठे पाहुडे में

चरंति, कहंते उदय संठिति ॥ ८ ॥ कइकठा पोरसीच्छाया, जोएत्ति किंते आहिए,

सूर्य का प्रकाश किस तरह रहता है उस का कथन है, इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पचीस पडिवृत्ति कही है. सातवे पाहुडे मे कितने दूर के पुद्गल चंद्र सूर्य के तेज को स्पर्श कर रहे हैं सो कहा है, इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप वीस पडिवृत्ति कही है. आठवे पाहुडे में जहां सूर्य का उदय अस्त होवे, जहां दिन व रात्रि होवे, उस का कथन है, और उत्तर दक्षिण में प्रथम समय होवे उस के दूसरे समय में पूर्व पश्चिम में प्रथम समय होवे उस का जम्बूद्वीप से अर्ध पुष्कर द्वीप तक का वर्णन है. इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्तियों हैं. ॥ ९ ॥ नवमे पाहुडे में ताप क्षेत्र का कथन है इस में अन्यतीर्थिकी प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्ति हैं. इस में सूर्य के तेज का स्वरूप बतलाया है. जिस समय सूर्य अपने तेज से पुरुष की छाया बनावे उस वर्णन में अन्यतीर्थिकी प्ररूपणा रूप पचीस पडिवृत्ति हैं. और पुरुष छाया का वर्णन है उस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप दो पडिवृत्ति अथवा छन्नु पडिवृत्ति भी है. और पौरसी, अर्ध पौरसी व डेढ पौरसी में कितना दिन व्यतीत होता है और शेष कितना दिन रहता है, और पुरुष छाया मे कितना दिन जाता है और कितना दिन शेष रहता है. और पचीस प्रकार की छाया का वर्णन यह सब कथन इस मे कीया है. दशवे पाहुडे मे चंद्र सूर्य की साथ कितने नक्षत्र का योग होता है. उस का कथन है. उस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप पांच पडिवृत्ति हैं. अग्यारहवे पाहुडे में कितने संवत्सर कहे हैं और उन की आदि व अंत कहां

णामेण इन्दभूइत्ति, गोयमो वंदिऊण: तिविहेणं ॥ पुच्छइ जिणवर वसहं, जोइस
रायस्स पण्णत्तिं ॥ ४ ॥ कइ मंडलाइ वच्चति तिरिच्छा किंवा पुच्छंति ॥ ओभासंति, कइहयं
सेयाए, किंति संठिति ॥ ५ ॥ कहिं पडिहया लेसा, कहिं तेउय संठिति ॥ किं सूरिया

ज्योतिषी के अधिकार की प्रथम पृच्छा गौतम स्वामीने की थी इस से उन का कथन कहते हैं. जिनेश्वर श्री महावीर स्वामी को मन वचन व काया से नमस्कार करके गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति नाम के अनगार चंद्रप्रज्ञप्ति की पृच्छा करते हैं. ॥ ४ ॥ इस तरह मंगलाचरण करके चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र का संक्षिप्त में समुच्चय कहते हैं—इस चंद्रप्रज्ञप्ति के बीस पाहुडे कहे हैं. प्रथम पाहुडे में सूर्य के जो १८४ मांडले कहे हैं उन में से एक वर्ष में कितने मंडल स्पर्शता है और दो वक्त में कितने मंडल स्पर्शता है जिसका कथन है, इस के आठ अंतर पाहुडे हैं. दूसरे पाहुडे में से पूर्व प्रकार तीच्छी दिशा में सूर्य किस तरह चलता है यह कथन है; इस के तीन अंतर पाहुडे हैं. तीसरे पाहुडे में चंद्र सूर्य कितने क्षेत्र में रहे हुए प्रकाश करते हैं. इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप बारह पडिवृत्ति हैं. चौथे पाहुडे में चंद्रमा व सूर्य के संस्थान का वर्णन है. इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप सोलह पडिवृत्ति हैं. ताप क्षेत्र व अंधकार क्षेत्र की प्ररूपणा भी है. वैसे सूर्य ऊंचा नीचा व तीच्छा कितना तपता है उस का वर्णन है. ॥ ५ ॥ पांचवे पाहुडे में सूर्य की लेश्या (तेज) का प्रतिघात कहां होता सो कहा है. इसमें अन्यतीर्थी की प्ररूपणा के बीस पडिवृत्ति कही है छट्ठे पाहुडे में

घरयंति, कहंते उदय संठिति ॥ ६ ॥ कइकठा पोरसीच्छाया, जोएत्ति किंते आहिए,

सूर्यका प्रकाश किस तरह रहता है उस का कथन है, इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पच्चीस पडिवृत्ति कही है. सातवे पाहुडे मे कितने दूर के पुद्गल चंद्र सूर्य के तेज को स्पर्श कर रहे हैं सो कहा है, इस में अन्य तीर्थिकी प्ररूपणा रूप वीस पडिवृत्ति कही है. आठवे पाहुडे में जहां सूर्य का उदय अस्त होवे, जहां दिन व रात्रि होवे, उस का कथन है, और उत्तर दक्षिण में प्रथम समय होवे उस के दूसरे समय में पूर्व पश्चिम में प्रथम समय होवे उस का जम्बूद्वीप से अर्ध पुष्कर द्वीप तक का वर्णन है. इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्तियों हैं. ॥ ६ ॥ नवंवे पहुडे में ताप क्षेत्र का कथन है इस में अन्यतीर्थिकी प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्ति हैं. इस में सूर्य के तेज का स्वरूप बतलाया है. जिस समय सूर्य अपने तेज से पुरुष की छाया बनावे उस वर्णन में अन्यतीर्थिकी प्ररूपणा रूप पच्चीस पडिवृत्ति हैं. और पुरुष छाया का वर्णन है उस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप दो पडिवृत्ति अथवा छन्नु पडिवृत्ति भी है. और पौरसी, अर्ध पौरसी व डेढ पौरसी में कितना दिन व्यतीत होता है और शेष कितना दिन रहता है, और पुरुष छाया मे कितना दिन जाता है और कितना दिन शेष रहता है. और पच्चीस प्रकार की छाया का वर्णन यह सब कथन इस मे कीया है. दशवे पाहुडे मे चंद्र सूर्य की साथ कितने नक्षत्र का योग होता है. उस का कथन है. उस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप पांच पडिवृत्ति हैं. अग्यारहवे पाहुडे में कितने संवत्सर कहे हैं, और उन की आदि व अंत कहां

णामेण इंदभूइत्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेणं ॥ पुच्छइ जिणवर वसहं, जोइस गणराय पण्णत्ति॥ ४॥कइ मंडलाइं वच्चंति॥तिरिच्छा किंवा एच्छंति॥ओभासीत, केवइयं सेयाए, किंति संठिति ॥ ५ ॥ कहिं पडिहया लेसा, कहिं तेउय संठाति ॥ किंसूरिया

ज्योतिषी के अधिकार की प्रथम पृच्छा गौतम स्वामीने की थी इस से उन का कथन करते हैं. जिनेश्वर श्री महावीर स्वामी को मन वचन व काया से नमस्कार करके गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति नाम के अनगार चंद्रप्रज्ञप्ति की पृच्छा करते हैं. ॥ ४ ॥ इस तरह मंगलाचरण करके चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र का संक्षिप्त में सम्बन्ध कहते हैं—इस चंद्रप्रज्ञप्ति के बीस पाहुडे कहे हैं. प्रथम पाहुड में सूर्य के जो १८४ मांडले कहे हैं उन में से एक वक्त में कितने मंडल स्पर्शता है और दो वक्त में कितने मंडल स्पर्शता है जिसका कथन है इस के आठ अंतर पाहुडे हैं, दूसरे पाहुडे में से पूर्व प्रकार तीरछी दिशा में सूर्य किस तरह चलता है यह कथन है, इस के तीन अंतर पाहुड हैं. तीसरे पाहुडे में चंद्र सूर्य कितने क्षेत्र में रहे हुवे प्रकाश करते हैं. इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपना रूप बारह पडिवृति है. चौथे पाहुड में चंद्रमा व सूर्य के संस्थान का वर्णन है. इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप सोलह पडिवृति है. ताप क्षेत्र व अंधकार क्षेत्र की प्ररूपणा भी है. वैसे सूर्य ऊंचा नीचा व तीरछा कितना तपता है उस का वर्णन है. ॥ ५ ॥ पांचवे पाहुड में सूर्य की लेश्या (तेज) का प्रतिघात कहां होवे सो कहा है. इसमें अन्यतीर्थिकी प्ररूपणारूप बीस पडिवृति कही है. छट्ठे पाहुडे में

केइसिग्घगतिवुत्ते, किंते दोसिणलक्खणं ॥८॥ चयणोववायं उचत्तं, सूरिया कति

का कथन है॥ ८ ॥ सत्तर वे पाहुडे में चंद्र सूर्य के चवण उत्पन्नका कथन है इस मे मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पच्चीस पडिवृत्ति यो हैं अठारहवे पाहुडे में सूर्यादि के सम भूमि कितने ऊंचे हैं उसका कथन है इसमें मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पच्चीस पडिवृत्ति कही उन्नीसवा पाहुडे में द्वीपसमुद्र में चंद्र सूर्य वगैरह कितने कहे हैं उसका कथन हैं और वीसवे पाहुडे में चंद्र सूर्य का मुख किस प्रकार है उसका कथन कीया है, इस में मिथ्यात्व की प्ररूपना रूप दो पडिवृति है, इस में राहुका भी कथनहै, अट्ठासी महाग्रह का कथन चंद्र प्रज्ञप्तिका ज्ञान दान देना वगैरह कथनहै

पाहुडा अंतर पाहुडा व पडिवृत्तियों का यंत्र

पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति
१	८	२९	८	१	३	१५	१	०
२	३	१४	९	१	१२६	१६	१	०
३	१	१२	१०	२२	२०	१७	१	२५
४	१	३२	११	१	०	१८	१	२५
५	१	२०	१२	१	०	१९	१	१२
६	१	२५	१३	१	०	२०	१	४
७	१	२०	१४	१	०			

इन वीस पाहुडे में अंतर पाहुडे कितने हैं, और अन्य तीर्थि की प्ररूपनारूप पडिवृत्तियों कितनी हैं उनका कथनकहा

केते संवच्छराणाइ, कइ संवच्छरेईथ ॥७॥ कहं चंदमसोवुड्ढी, कायाते दोसिणा वहं है और चंद्र सूर्य की साथ कौन २ नक्षत्र योग मीलाते हैं उस का कथन है. बारहवे पाहुडे में पांच संवत्सर, उन के मास, दिन व मुहूर्त का कथन है, और युग में चंद्र ऋतु, सूर्य ऋतु का कथन सूर्य नक्षत्र योग मीलावे, दश प्रकार के योगका कथन, व कौन नक्षत्र में छत्रपर छत्र का योग होवे वह सब कथन है. ॥ ७ ॥ तेरवे पाहुडे में कृष्णपक्ष में चंद्र का विमान राहुके विमान की साथ रक्त होवे, तब उद्योत की हानि और शुक्लपक्ष में विरक्त होवे तब उद्योत की वृद्धि होवे, मुहूर्तादिक का मान, चंद्र युग की आदि में कहां से प्रवेश करे, अब नक्षत्र के अर्ध मास में चंद्रपाके अर्ध मंडल कितने चलते हैं और चंद्र के अर्ध मास में चंद्र के मंडल कितने चलते हैं. और नक्षत्र के अर्धमास से चंद्र के अर्ध मास तक में चंद्र के कितने अर्ध मंडल अधिक चलते हैं और चंद्र के स्वतःके कौन से मंडल हैं, और अन्य के कौन २ से मंडल हैं. वगैरह कथन है. चउदहवे पाहुडे में चद्र का अंधकार व उद्योत का वर्णन कीया हैं. पन्नरवे पाहुडे में पांच ज्योतिषियों की मंदागति व शीघ्रगति चंद्र सूर्य व नक्षत्र एक मडल पर कितने भाग चलते है, पांचों युगके मास में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने २ मांडले चलते हैं, एक अहोरात्रि में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने मांडल चलते हैं सूर्य व नक्षत्र को एक २ मांडले में कितनी अहोरात्रि होवे एक युग में प्रत्येक के कितने मांडल है, वगैरह कथन हैं. सोलहवे पाहुडे में चंद्र सूर्य की छाया के लक्षण

केइसिग्घगतिवुत्ते, किंते दोसिणलक्खणं ॥८॥ चयणोववायं ऊचत्तं, सूरिया कति

का कथन है॥ ८ ॥ सत्तर वे पाहुडे में चंद्र सूर्य के चवण उत्पन्नका कथन है इस मे मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पचीस पडिवृत्ति यो हैं अठारहवे पाहुडे में सूर्यादि वे सम भूमि कितने ऊंचे हैं उसका कथन है इसमें मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पचीस पडिवृत्ति कही उन्नीसवा पाहुडे में द्वीपसमुद्र में चंद्र सूर्य वगैरह कितने कहे हैं उसका कथन हैं और वीसवा पाहुडे में चंद्र सूर्य का सुख किस प्रकार है उसका कथन कीया है, इस में मिथ्यात्व की प्ररूपना रूप दो पडिवृति है, इस में राहुका भी कथनहै, अठ्ठासी महाग्रह का कथन चंद्र प्रज्ञप्तिका ज्ञान दान देना वगैरह कथनहै

पाहुडा अंतर पाहुडा व पडिवृत्तियों का यंत्र

पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति
१	८	२९	८	१	३	१५	१	०
२	३	१४	९	१	१२६	१६	१	०
३	१	१२	१०	२२	२०	१७	१	२५
४	१	३२	११	१	०	१८	१	२५
५	१	२०	१२	१	०	१९	१	१२
६	१	२५	१३	१	०	२०	१	४
७	१	२०	१४	१	०			

इन वीस पाहुडे में अंतर पाहुडे कितने हैं, और अन्य तीर्थि की प्ररूपनारूप पडिवृत्तियों कितनी हैं उसका कथनकहा

केते संवच्छराणाइ, कइ संवच्छरेईब ॥७॥ कहं चंदमसोवुड्ढी, कायाते दोसिणा वहुं है और चंद्र सूर्य की साथ कौन २ नक्षत्र योग मीलाते हैं उस का कथन है. बारहवे पाहुडे में पांच संवत्सर, उन के मास, दिन व मुहूर्त का कथन है, और युग में चंद्र ऋतु, सूर्य ऋतु का कथन सूर्य नक्षत्र योग मीलावे, दश प्रकार के योगका कथन, व कौन नक्षत्र में छत्रपर छत्र का योग होवे वह सब कथन है. ॥ ७ ॥ तेरवे पाहुडे में कृष्णपक्ष में चंद्र का विमान राहुके विमान की साथ रक्त होवे, तब उद्योत की हानि और शुक्लपक्ष में विरक्त होये तब उद्योत की वृद्धि होवे, मुहूर्तादिक का मान, चंद्र युग की आदि में कहाँ से प्रवेश करे, अब नक्षत्र के अर्ध मास में चंद्रमाके अर्ध मंडल कितने चलते हैं और चंद्र के अर्ध मास में चंद्र के मंडल कितने चलते हैं. और नक्षत्रे के अर्धमास से चंद्र के अर्ध मास तक में चंद्र के कितने अर्ध मंडल अधिक चलते हैं और चंद्र के स्वतःके कौन से मंडल हैं और अन्य के कौन २ से मंडल हैं. वगैरह कथन है. चउदहवे पाहुडे में चद्र का अंधकार व उद्योत का वर्णन कीया है. पन्नरवे पाहुडे में पांच ज्योतिषियों की मंदागति व शीघ्रगति चंद्र सूर्य व नक्षत्र एक मडल पर कितने भाग चलते है, पांचों युगके मास में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने २ मांडले चलते हैं, एक अहोरात्रि में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने मांडले चलते हैं सूर्य व नक्षत्र को एक २ मांडले में कितनी अहोरात्रि होवे एक युग में प्रत्येक के कितने मांडले है, वगैरह कथन हैं. सोलहवे पाहुडे में चंद्र सूर्य की छाया के लक्षण

केइसिग्घगतिवुत्ते, किंते दोसिणलक्खणं ॥८॥ चयणोववायं ऊचत्तं, सूरिया कति

का कथन है॥ ८ ॥ सत्तर वे पाहुडे में चंद्र सूर्य के चवण उत्पन्नका कथन है इस मे मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पचीस पडिवृत्ति यो है अठारहवे पाहुडे में सूर्यादि वे सम भूमि कितने ऊंचे हैं उसका कथन है इसमें मिथ्यात्वी की प्ररूपना रूप पचीस पडिवृत्ति कही उन्नीसवा पाहुडे में द्वीपसमुद्र में चंद्र सूर्य वगैरह कितने कहे हैं उसका कथन हैं और वीसवे पाहुडे में चंद्र सूर्य का सुख किस प्रकार है उसका कथन कीया है, इस में मिथ्यात्व की प्ररूपना रूप दो पडिवृति है, इस में राहुका भी कथनहैं, अट्ठासी महाग्रह का कथन चंद्र प्रज्ञप्तिका ज्ञान दान देना वगैरह कथनहैं

पाहुडा अंतर पाहुडा व पडिवृत्तियों का यंत्र

पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी कीप्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी कीप्ररूपणा रूप पडिवृत्ति	पाहुडा	अंतर पाहुडा	अन्य तीर्थी कीप्ररूपणा रूप पडिवृत्ति
१	८	२९	८	१	३	१५	१	०
२	३	१४	९	१	१२६	१६	१	०
३	१	१२	१०	२२	२०	१७	१	२५
४	१	३२	११	१	०	१८	१	२५
५	१	२०	१२	१	०	१९	१	१२
६	१	२५	१३	१	०	२०	१	४
७	१	२०	१४	१	०			

इन वीस पाहुडे में अंतर पाहुडे कितने हैं, और अन्य तीर्थि की प्ररूपनारूप पडिवृत्तियों कितनी हैं उसका कथनकहा

कैते संवच्छराणाइ, कइ संवच्छरेईय ॥७॥ कहं चंदमसोवुड्ढी, कांपाते दोसिणा वहुं है और चंद्र सूर्य की साथ कौन २ नक्षत्र योग मीलाते हैं उस का कथन है. बारहवे पाहुडे में पांच संवत्सर, उन के मास, दिन व मुहूर्त का कथन है, और युग में चंद्र ऋतु, सूर्य ऋतु का कथन सूर्य नक्षत्र योग मीलावे, दश प्रकार के योगका कथन, व कौन नक्षत्र में छत्रपर छत्र का योग होवे वह सब कथन है. ॥ ७ ॥ तेरवे पाहुडे में कृष्णपक्ष में चंद्र का विमान राहुके विमान की साथ रक्त होवे, तब उद्योत की हानि और शुक्लपक्ष में विरक्त होवे तब उद्योत की वृद्धि होवे, मुहूर्तादिक का मान, चंद्र युग की आदि में कहां से प्रवेश करे, अब नक्षत्र के अर्ध मास में चंद्रमाके अर्ध मंडल कितने चलते हैं और चंद्र के अर्ध मास में चंद्र के मंडल कितने चलते है. और नक्षत्र के अर्धमास से चंद्र के अर्ध मास तक में चंद्र के कितने अर्ध मंडल अधिक चलते हैं और चंद्र के स्वतःके कौन से मंडल हैं और अन्य के कौन २ से मंडल हैं. वगैरह कथन है. चउदहवे पाहुडे में चद्र का अंधकार व उद्योत का वर्णन कीया हैं. पन्नरेव पाहुडे में पांच ज्योतिषियों की मंदगाति व शीघ्रगति चंद्र सूर्य व नक्षत्र एक मडल पर कितने भाग चलते है, पांचों युगके मास में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने २ मांडले चलते हैं, एक अहोरात्रि में चंद्र सूर्य नक्षत्र कितने मांडले चलते हैं सूर्य व नक्षत्र को एक २ मांडले में कितनी अहोरात्रि होवे एक युग में प्रत्येक के कितने मांडल है, वगैरह कथन हैं. सोलहवे पाहुडे में चंद्र सूर्य की छाया के लक्षण

चत्रिकप्पति ॥ मंडलाणय संठाणं, विक्खंभ अट्ठपाहुडा ॥ ११ ॥ छप्पंचय सत्तेवयं,
अट्ठय तिन्निय हवंति पडिवत्ती॥पढमस्स पाहुडस्स ओहवंति एयाओप.डिवत्ती ॥१२॥
का कथन है, इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्तियों है. इस तरह प्रथम
पाहुडे के अंतर पाहुडे में सब मीलकर अन्यतीर्थी की प्ररूपणा रूप गुनतीस पडिवृत्तियों हुई. ॥ ११ ॥
अब प्रथम पाहुडे में अलग २ पडिवृत्ति कहते हैं. प्रथम पाहुडे से चौथे पाहुडे तक सात पडिवृत्ति हैं,
पांचवे पाहुडे में पांच पडिवृत्ति हैं, छट्ठे पाहुडे मे सात पडिवृत्ति है, सात वे पाहुडे में आठ पडिवृति हैं,
और आठवे पाहुडे में तीन पडिवृत्ति है, इन सब पडिवृति में अलग २ परमत की प्ररूपणा कह कर
फीर भगवंत ने स्वमत की प्ररूपना की है. ॥ १२ ॥ अब दूसरे पाहुडे के तीन अंतर पाहुडे कहते हैं १.
प्रथम अंतर पाहुडे में सूर्य कहां उदय होता है और कहां अस्त होता है उस का कथन है, दूसरे अंतर
पाहुडे में भेदघात व कर्णकला हानि का कथन है. अर्थात भेद कहते है मंडल के अंतर के
और घात कहते हैं उन पर गमन करने को. इस विषय में एकेक मत की प्ररूपना
की है, जैसे विवक्षित मंडल में सूर्य फीर तदनंतर अन्य मंडल में जावे, तथा कर्ण कला कर्ण को ही भाग
सन्मुख कर परमत के अनुसार से काल कहा. जैसे विवक्षित मंडल में दोनों सूर्य अन्दर क्षण मे प्रवेश कर
पहिले पीछे की दोनों कोरों लकीरें रूप कर प्रतिपूर्ण यथावस्थित मंडल को वंच्छापने यों फीर दूसरे
मंडल से कर्ण को ही कही. यह भाग रूप काल मात्रा करे फीर दूसरे मंडल के सन्मुख अंगीकार करे

आहियाअणुभावे केरिसे वुत्ते, एवमेताणि वीसति ॥९॥ वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं, अद्धमंडल संठिइ॥किंते चिण्णं पडिचरंत्ति, अंतरं किं चरंतिया॥१०॥उग्गहति कवतियं, केवतियं

इस तरह मूल पाहुडे वीस हैं. जिन के तीन पाहुडे में अंतर पाहुडे हैं, सत्तर पाहुडे में अंतर पाहुडे नहीं हैं. मूल पाहुडा को अंतर पाहुडा सरीखे के एक गिन कर और अन्तर पाहुडे पचास और अन्यतिर्थी की प्ररूपणा रूप पडिवृत्ति सब मीलकर ३८७ होवे॥२॥अब अंतर पाहुडे का कथन करते हैं. प्रथम पाहुडे के प्रथम अंतर पाहुडे में सूर्य मंडल कितने हैं, और रात्रिदिन की हानिवृद्धि का कथन है, दूसरे अंतर पाहुडे में सूर्य मंडल अर्ध उत्तर दक्षिण चले उस का कथन है, ३ तीसरा अंतर पाहुडा में सूर्य कितना क्षेत्र स्पर्श कर दूसरे क्षेत्र का आचरण करे, जंम्बूद्वीप में दो सूर्य हैं, उस में कौनसा सूर्य भरत का व कौनसा सूर्य एरवत का है, स्वतः की तरफ स्वतः क मांडले कौन से और अन्य के मांडले कौन से. यह कथन चौथा अंतर पाहुडा में है, दोनों सूर्य कितने अंतर से चलते हैं, सो कहा है. इन में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप छ पडिवृत्तियों कही है. ॥ १० ॥ पांचवे अंतर पाहुडे में सूर्य कितना क्षेत्र अवगाह करा चलते हैं उस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप पांच पडिवृत्तियों कही है, ६ छठे अंतर पाहुडे में सूर्य कितना क्षेत्र उल्लंघ कर चलता है इस का कथन है. इन में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप सात पडिवृत्तियों है ७ सातवे अंतर पाहुडे मे सूर्यादिक के मंडल कौन से संस्थान वाले हैं. इस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप आठ पडिवृत्तियों हैं. ८ आठवे अंतर पाहुडे में सूर्य मंडल का जाडपन, चौडाई व परिधि

अंतर पाहुडे में चंद्र की साथ युगकी आदि में प्रातःकाल व संध्या काल में नक्षत्र का योग होने उस का कथन है ५ पांचवे पाहुडे में कुल, उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्रों का चंद्र की साथ योग कहा है, ६ छट्ठे अंतर पाहुडे में पूर्णिमा की वक्तव्यता कही है, पूर्णिमा को जो नक्षत्र योग मीलावे वे कुल उपकुल व कुलोपकुल का वर्णन है. वैसे ही अमावास्या की तीथि का जानना—युग की ६२ पूर्णिमा ६२ अमावास्या मीलाकर १२४ पर्व हैं. उतनेही नक्षत्र का चंद्र की साथ योग होता है. सातवे अंतर पाहुडे में जो मास की पूर्णिमा में जिस नक्षत्र का चंद्र की साथ योग होता है वही नक्षत्र का किस मास की अमावस्या को चंद्रकी साथ योग होवे. यह कथन है. ८ आठ वे अंतरपाहुडे में अठावीस नक्षत्र के संस्थान कहे हैं. ॥ १६ ॥ ९ नववे अंतरपाहुडे मे अठाइस नक्षत्र के तारे कहे हैं. १० दशवे अंतर पाहुडे में जो २ नक्षत्र जिस मास की अहो रात्रि पूर्ण करे व जो तिथि में पौरसी आवे उस का कथन है ११ अग्यारहवे पाहुडे में चंद्र के मंडल में नक्षत्रों के मंडल से कहते है, चंद्र के जिस मांडले पर नक्षत्र हैं. और जिस मांदले पर नक्षत्र नहीं हैं. छत्र पर छत्र होवे सूर्य चंद्रके मंडल में नक्षत्रों के मंडल संक्रमते है, सूर्य चंद्रके विकंपन क्षेत्र, सूर्य मंडल पर चंद्र मंडल कितने भाग से मीश्रित और उत्तर दक्षिण नीकलता हुआ, चंद्र मंडल सूर्य मंडल की बीचमें तीर्छा अंतरा है. उस का
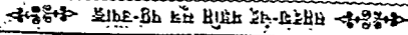
पडिवत्तीओ उदए, तह अत्थि मणेसुय॥भेय घाए कण्णकला,मुहुत्ताणगती तिय॥१३॥ निक्खममाणे सिग्घगती,पविसंते मंदगति तीयं॥चुलसीयसयंपुरिसाणं, तेसिंचपडिवत्ती-ओ ॥ १४ ॥ उदयंमि अट्ठभणिया, भेयग्घाए दुवेयपडिवत्ती चत्तारि मुहुत्तगती, होति वीयंमि पडिवत्ती ॥ १५ ॥ आवलियमुहुत्तग्गे, एवं भागाय जोगस्स॥ कुलाय-

तीसरे अंतरपाहुडेमें सूर्य मंडले २ एक मुहूर्त में कितना गमन करे ॥ १३ ॥ प्रथम मांडले से निकल कर बाहिर के मांडले पर यथोक्त जाते हुए शीघ्रगति होवे और सर्व के बाहिर के मंडल से अंदर के मांडले में प्रवेश करते मंदगति होवे यों १८४ मंडल को मुहुर्त के प्रमाण में गतिप्रमाण पुरुषपडिवृत्ति कही ॥ १४ ॥ अब जो तीन अंतर पाहुडे कहे उसमें से पहिले अंतर पाहुडे में आठ पडिवृति कही दूसरे अंतर पाहुडे में दो पडिवृति और तीसरे अंतर पाहुडे में चार पडिवृति कही; इस तरह दूसरे पाहुडे के तीन अंतर पाहुडे में अन्यतीर्थीकी प्ररूपना रूप चउदह पडिवृत्तियों हुइ ॥ १५ ॥ अब दशवे पाहुडे के बावीस अंतर पाहुडे कहते हैं १ प्रथम अंतर पाहुडे में नक्षत्र की आवलिका का कथन है अर्थात् चंद्रमा सूर्य दोनों का साथ कितने नक्षत्र में अनुक्रम से योग होता है इस में अन्य तीर्थी की प्ररूपना रूप पांच पडिवृति कही है. दूसरे अंतर पाहुडे में चंद्र की साथ नक्षत्र का कितने मुहुर्त तक योग होता है और सूर्य की साथ कितनी अहोरात्रि में योग होता है. ३ तीसरे अंतर पाहुडे में पूर्व,पश्चिम भाग की वक्तव्यता है ४ चौथे

तेणं कालेणं तेणं समएणं महिलाए णामं णयरीए होत्था वण्णओ तीसेणं महिलाए णामं णयरीए बाहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं माणिभद्दे नामंचेइए होत्था चिराइए वण्णओ ॥ १ ॥ तीसेणं महिलाए णयरीए जियसत्तू नामं राया धाराणि देवी वण्णओ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसाणिग्गया, धम्मोकहिओ परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

उस काल चौथे आरे में, चरम जिनेश्वर भगवंत महावीर स्वामी विचरतेथे उस समय में मिथिला नामकी नगरी थी, उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस मिथिला नगरी के बाहिर ईशान कौन में माणिभद्र नामक यक्ष का चैत्य-उद्यान था. उस का सब वर्णन उववाइ सूत्र में जैसे पूर्णभद्र नामक यक्षका वर्णन कहा वैसे कहना. उस मिथिला नगरी में जितशत्रु राजा राज करता था. उन को धारणी नाम की राणी थी. इन दोनों का वर्णन उववाइ में जैसे कूनिक राजा का कहा वैसे कहना. ॥१॥ उस मिथिला नगरी की ईशान कौन में माणिभद्र नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आइ, धर्म कथा सुनाई, परिषदा पीछीगइ वगैरह सब कथन उववाइ सूत्र में कहे अनुसार जानना. ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीके ज्येष्ठ शिष्य गौतम गौत्रिय, सातहाथ की अवगाहना वाले

णय अज्झयणा, मुहुत्ताणं णामधेजाइं ॥ १७ ॥ दिवसराईयवुत्ता, तिहिगुत्ता भोयणाणिय ॥ आइच्च चार मासाय, पंचसंवच्छरातिय ॥ १८ ॥ जोइसियं दाराइं, णक्खत्तविजयेतिय ॥ दसमे पाहुडपए बावीस पाहुडपाहुडा. ॥ * ॥

कथन है. १२ बारवे अंतर पाहुडे में अठाइस नक्षत्र के अधिष्ठायक देवों के नाम कहे हैं १३ तेरवे अंतर पाहुडे में एक अहो रात्रि के तीस मुहूर्त के नाम कहे हैं. ॥ १७ ॥ १४ चौदवे अंतर पाहुडे में एक पक्ष के पन्नरह दिन व रात्रि के नाम कहे हैं १५ पन्नरहवे अंतर पाहुडे में पन्नर तिथिओं के नाम कहे हैं १६ सोलहवे अंतर पाहुडे मे अठावीस नक्षत्र के गोत्र कहे हैं. १७ सत्तरवे अंतर पाहुडे मे अठाइस नक्षत्र में भोजनका कथन कहा है १८ अठारवे पाहुडे में सूर्य चंद्र चलने के लक्षण कहे है १९ उनीस वे पाहुडे में एक संवत्सर के कितने मास व उन के लौकिक व लोकोत्तर नाम कहे हैं. वीसवे अंतर पाहुडे में पांच संवत्सर की वक्तव्यता कही है,॥१८॥इक्कीसवे अंतर पाहुडे मे अठावीस नक्षत्र जिस द्वारवाले है उसका कथन है. मे अन्यातीर्थि की प्ररूपना रूप पांच पडिवृतियों कही है-और २२ बावीसमें पाहुडमें अठावीस नक्षत्र चन्द्र सुर्यकी साथ जोग जोडकर चले उसका निर्णय कहा है इन बावीस पाहुडमें बारह अंतर पाहुडमें अन्य तीर्थीकी प्ररूपणा रूप दश पडिवृति कही हैं ॥ १९ ॥ दश से सोलह पहुडे तक अंतर पाहुडे व पडिवृति नहीं है, सतरवे पाहुडमें पचीस पडिवृती, अठारवे पाहुडमें पचीस पडिवृति उन्नीसवे पाहुडमें बरह पडिवृति, और वीसवे पाहुडमें चार पडिवृति. सब मिलाकर ३५७ पडिवृति होतीहै. उस प्रकार चंद्र प्रज्ञप्ति के पाहुड, अंतर पाहुडे व पडिवृति का अधिकार हुआ,

तेणं कालेणं तेणं समएणं महिलाए णामं णयरीए होत्था वण्णओ तीसेणं महिलाए णामं णयरीए बहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं माणिभद्दे नामंचेइए होत्था चिराइए वण्णओ ॥ १ ॥ तीसेणं महिलाए णयरीए जियसत्तू नामं राया धारिणि देवी वण्णओ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसाणिग्गया, धम्मोकहिओ परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

उस काल चौथे आरे में, चरम जिनेश्वर भगवंत महावीर स्वामी विचरतेथे उस समय में मिथिला नामकी नगरी थी, उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस मिथिला नगरी के बाहिर ईशान कौन में माणिभद्र नामक यक्ष का चैत्य-उद्यान था. उस का सब वर्णन उववाइ सूत्र में जैसे पूर्णभद्र नामक यक्षका वर्णन कहा वैसे कहना. उस मिथिला नगरी में जितशत्रु राजा राज करता था. उन को धारणी नाम की राणी थी. इन दोनों का वर्णन उववाइ में जैसे कूनिक राजा का कहा वैसे कहना. ॥१॥ उस मिथिला नगरी की ईशान कौन में माणिभद्र नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आइ, धर्म कथा सुनाई, परिषदा पीछीगइ वगैरह सब कथन उववाइ सूत्र में कहे अनुसार जानना. ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीके ज्येष्ठ शिष्य गौतम गौत्रिय, सातहाथ की अवगाहना वाले

जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे, एवं वयासी-ता कहंते मुहुत्ताणं, वुड्ढोवुड्ढीय अहिएति वएज्जा? ताअट्ठसए ऊगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीसंच सत्तसट्ठी भागे मुहुत्तस्स अहिएति वएज्जा ॥३॥ ता जयाणं ते सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्व वाहिरं मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, सव्ववाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥ एसणं अद्धाकेवतियं

इन्द्रभूति नामक अनगार यथात् पर्युपासना करते हुवे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर इस प्रकार प्रश्न पुछने लगे कि अहो भगवन्! नक्षत्रमास, सूर्यमास, चंद्रमास तथा ऋतुमास के कितने मुहुर्त की हानिवृद्धि कही है अर्थात् किस प्रकार हानिवृद्धि होती है? अहो गौतम! १.नक्षत्रमास के ८१९ $\frac{27}{67}$ की हानिवृद्धि कही है युग के नक्षत्रमास ६७ हैं और युग कि दिन १८३० इस १८३० को चंद्रमास ६७ के भाग देने से एक मास के २७ दिन ९ मुहुर्त और शेष २७ भाग रहता है. इन को तीस मुहुर्त की साथ गुनाकार करनेसे ८१९ $\frac{27}{67}$ मुहुर्त होवे. ऐसे ही सूर्यमास के ९१५ मुहुर्त हैं. युग के सूर्यमास ६० हैं और दिन १८३० उस को ६० का भाग देने से एक मास के ३०॥ दिन होवे और इन को तीस मुहूर्त की साथ गुनाकार करने से एक मास के ९१५ मुहूर्त होवे. चंद्र मास के ८८५ $\frac{30}{62}$ मुहूर्त होवे. युग के चंद्र मास ६२ होवे और दिन १८३० होवे इसके ६२ का भाग देने से एक मास के २९॥ रात्रीदिन व बासठीया एक भाग होवे, उस को तीस मुहूर्त का गुनाकार करने से ८८५ $\frac{30}{62}$ मुहूर्त होते है. ऋतुमास ९०० मुहूर्त का होता है. युगकी ऋतु ३० है

रायंदियग्गोणं आहितेति वएज्जा ? तातिण्णिछावट्ठी रायंदियसए रायादियग्गोणं आहिएति वएज्जा ॥४॥ ता एएणं अद्धाए सूरिए कइ मंडलाइ चरंति ? कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ,कइमंडलाइ एगक्खुत्तो चरइ? ता चुलसीति मंडलसयं चरइ,बायासीयंच मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तजहा निक्खममाणेचेव पविसमाणेचेव दुवेय खलु मंडलाइं एगक्खुत्तो

और दिन १८३० है. इस से १८३० को ३० का भाग देने से एक ऋतु के रात्रि दिन ६० होवे उस से ३० मुहूर्त का गुनाकार करने से १८०० मुहूर्त होवे, और एक ऋतु के मास दो हैं तो १८०० को दो का भाग देने से ९०० होवे, अर्थात् एकमास के ९०० मुहूर्त; इस का यंत्र. ॥८॥अब गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि जब सूर्य सब से आभ्यंतर मांडले में से नीकलकर सबके बाहिर के मडले में चाल चले तथा सबके बाहिर के मांडले से नीकलकर सब के आभ्यंतर मडले में चाल चले तब यह काल कितने रात्रि दिन । होवे ? यहां तीन सो छासठ ३६६ रात्रि दिन का काल होवे ॥ ४ ॥ प्रश्न—पूर्वोक्त काल में सूर्य कितने मांडले पर चलता है, कितने मांडले पर एक वक्त चलता है और कितने मांडले पर दो वक्त चलता है ? उत्तर—सामान्य प्रकार से सूर्य १८४ मांडले पर चलता है जिस में से-१८२ मांडले पर सूर्य दो वक्त चलता है, और प्रथम व अन्तिम मांडले पर एक वक्त चलता है; क्योंकि बीचके १८२ मांडले पर सूर्य का आना व जाना होने से दो वक्त चलता है और प्रथम व

मास के मुहूर्त का यंत्र.

नाम	एक वर्ष के मास	एक मास के दिन	एक मास के मुहूर्त
नक्षत्र मास	६१	२७-१ $\frac{२७}{६७}$	८११ $\frac{२७}{६७}$
सूर्य मास	६०	३०॥	९१५
चंद्र मास	६२	२९॥ $\frac{१}{६२}$	८८५ $\frac{३०}{६२}$
ऋतु मास	६१	३०	९००

चरइ तंजहा सव्वब्भंतरंचेव मंडलं सव्वबाहिरंचेव मंडलं ॥ ५ ॥ जदि खलु तस्सेय आइच्च संवच्छरस्स सयं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं अट्ठारस मुहुत्ता राइ भवइ, सयं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं दुवालस मुहुत्ता राई भवइ, सेपढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारस मुहुत्ता राई, णत्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालस मुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ॥ दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे

अंतिम मांडले में जाकर पीछा दूसरे पर आ जाता है इस से दोनों मांडले पर एक वक्त ही चलता है ॥५॥ प्रश्न-इस आदित्य संवत्सर में क्या कभी अठारह मुहूर्त का दिन, कभी अठारह मुहूर्त की रात्रि, कभी बारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होवे ? उत्तर- पहिले के छ मास में अर्थात् सूर्य १८४ वे मांडले पर होता है तब अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है परंतु अठारह मुहूर्त का दिन नहीं होता है, और बारह मुहूर्त का दिन होता है परंतु बारह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है अर्थात् जब अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है तब बारह मुहूर्त का दिन होता है और बारह मुहूर्त का दिन होता है तब अठारह मुहूर्तकी रात्रि होती है. दूसरे छ मास में अर्थात् पहिले मांडले पर जब सूर्य होता है तब अठारह मुहूर्त का दिन

णत्थि अट्ठारस मुहुत्ताराईं, अत्थि दुवालस मुहुत्ता राईं णत्थिं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ पढमेवा छम्मासे दुचेवा छम्मासे णत्थि पण्णरस मुहुत्ते दिवसे भवति,णत्थि पण्णरस मुहुत्ताराईं भवइ॥६॥तत्थ को हेउ?अयण्णं जंबूद्दीवेद्दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्व-ब्भंतराए जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ ताजयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, तयाणं दुवालस मुहुत्ता राईं भवति, से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे

होता है परंतु अठारह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है और बारह मुहूर्त की रात्रि होती है परंतु बारह मुहूर्त का दिन नहीं होता है अर्थात् इस में अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. प्रथम छ मास अथवा दूसरे छ मास अर्थात् १८४ वे मांडले पर अथवा पहिले मांडले पर पन्नरह मुहूर्त का दिन व रात्रि नहीं होती है ॥ ६ ॥ प्रश्न—इस का क्या हेतु है? उत्तर—यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप सब द्वीप समुद्रों के बीच में रहा हुवा है. एक लाख योजन का लम्बा चौडा है, तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीन कोश,एक सो अठावीस धनुष्य,साढी तेरह अंगुल से कुछ अधिक परिधि है.इस में जब सब से आभ्यन्तर—अंदर के (मेरु पर्वत के पास के) मांडले पर सूर्य आकर चाल चलता है तब उत्तम

मास के मुहूर्त का यंत्र.

नाम	युग के मास	एक मास के दिन	एक मास के मुहूर्त
नक्षत्र मास	६१	२७-९ $\frac{२७}{६७}$	८१९ $\frac{२७}{६७}$
सूर्य मास	६०	३०॥	९१५
चंद्र मास	६२	२९॥ $\frac{१}{६२}$	८८५ $\frac{३०}{६२}$
ऋतु मास	६१	३०	९००

चरइ तंजहा सव्वब्भंतरंचेव मंडलं सव्वबाहिरंचेव मंडलं ॥ ५ ॥ जदि खलु तस्सेय आइच्च संवच्छरस्स सयं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं अट्ठारस मुहुत्ता राइ भवइ, सयं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं दुवालस मुहुत्ताराई भवइ, सेपढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारस मुहुत्ता राई, णत्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालस मुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ॥ दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे

अंतिम मांडले में जाकर पीछा दुसरे पर आ जाता है इस से दोनों मांडलों पर एक वक्त ही चलता है ॥८॥ प्रश्न-इस आदित्य संवत्सर में क्या कभी अठारह मुहूर्त का दिन, कभी अठारह मुहूर्त की रात्रि, कभी बारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होवे ? उत्तर- पहिले के छ मास में अर्थात् सूर्य १८४ वे मांडले पर होता है तब अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है परंतु अठारह मुहूर्त का दिन नहीं होता है, और बारह मुहूर्त का दिन होता है परंतु बारह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है अर्थात् जब अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है तब बारह मुहूर्त का दिन होता है और बारह मुहूर्त का दिन होता है तब अठारह मुहूर्तकी रात्रि होती है. दूसरे छ मास में अर्थात् पहिले मांडले पर जब सूर्य होता है तब अठारह मुहूर्त का दिन

राई भवइ चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिआ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ मंडलातो मंडलं संकममाणे दो दो एगट्ठी भाग मुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स निवुट्टेमाणे रयणि खेत्तस्स अभिवढ्ढेमाणे सव्व बाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं सव्वब्भंतर मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं रातिदिय सतेणं तिन्नि छावट्ठीएगट्ठी भागाट्ठि भाग मुहुत्तस्स दिवसं खेत्तस्स

मुहूर्त में एकसठीए चार भाग कम का दिन होता है अर्थात् १७ $\frac{५७}{६१}$ मुहूर्त का दिन व १२ $\frac{४}{६१}$ मुहूर्त की रात्रि होती है. इसी तरह नीकलता हुवा सूर्य अनंतर मांडला अंगीकार करे अर्थात् तीसरे से चौथे, चौथे से पांचवे यों अनंतर मांडले पर जाता हुवा सूर्य दिन विभाग में एकसठिये दो २ भाग कम करता है और उक्त दोनों भाग रात्रि क्षेत्र में बढाता है. इस तरह बढाता हुवा सब से बाहिर के १८४ वे मांडले पर जाता है. जब सूर्य सब से बाहिर के १८४ वे मांडले पर चाल चलता है तब १८३ रात्रि में एक मुहूर्त के एकसठिये ३६६ भाग दिन के क्षेत्र की हानि होती है और इतना ही रात्रि के क्षेत्र की वृद्धि होती है. उस समय अठारह मुहूर्त की रात्रि और बारह मुहूर्त का दिन होता है, यह पहिला छ मास हुवा, अब

पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारंचरंति ता जयाणं सूरिए अब्भंतराणंतरंमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एकट्ठि भाग मुहुत्तेहिं ऊणे दुवालस मुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया.से निक्खममाणे सूरिए दोचंपि अहोरत्तंसि अब्भंतरं मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारंचरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे दुवालस मुहुत्ता

काष्ट मास अर्थात् कर्क संक्रान्त को उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है और बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. फिर उस प्रथम मंडल से बाहिर नीकलता हुआ दूसरे मांडले में प्रवेश करे तब नया सूर्य संवत्सर होवे और नयी अयन स्पर्शे. उस समय अहोरात्रि में सब से आभ्यंतर जो पहिला मांडला उस से अनंतर दूसरा मांडला उस पर जाकर चाल चलता है. जब सूर्य दूसरे मांडले पर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एकसाठिये दो भाग कम दिन अर्थात् १७ $\frac{५९}{६१}$ मुहूर्त का दिन होवे और १२ $\frac{२}{६१}$ भाग की रात्रि होवे. वहां से नीकलता हुवा सूर्य प्रथम अयन की दूसरी अहोरात्रि में तीसरे आभ्यन्तर मांडले पर चाल चलता है. जब आभ्यन्तर तीसरे मांडले पर सूर्य चाल चलता है तब अठारह

पविसमाणं सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बहिरं तच्चंमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिए ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणं तराओ मंडलाओ मडलं संकममाणे दो दो एगट्ठीभाग मुहुत्ते एगमेगे मंडले राति-खेत्तस्स निव्वट्टमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढमाणेय २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए सव्वबाहिराओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता

उक्त दो २ भाग दिन के क्षेत्र में वृद्धि करता है. इस तरह करता हुवा सब अभ्यंतर अर्थात् पहिले मांडले पर्यंत चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मांडले से सब के आभ्यंतर मांडलेपर चाल चलता है तब सब का बाहिर का मांडला छोडकर १८३ रात्रि दिन में एकसठीये ३६६ भाग की रात्रि क्षेत्र में हानि हुई, और इतना ही भाग की दिन के क्षेत्र में वृद्धि हुइ, और इसी से वहां उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि हुई. यह दूसरा छ मास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर व आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. इसी से आदित्य संवत्सर में एक समय अठारह मुहूर्त का दिन, एक समय अठारह मुहूर्त की रात्रि होवे, एक समय बारह मुहूर्त का दिन होवे. एक समय बारह मुहूर्त की रात्रि होवे.

निव्वुट्टित्ता राइखित्तस्स अभिवट्टित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस्स मुहुत्ता राइ भवति जहण्णतं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवाति, एसणं पढमे छम्मासे एसणं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवासणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते राई भवति दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवाति, दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिए से

पहिले छ मास के पर्यवसान में जो सूर्य होता है वह दूसरे छ मास की अयन में पहिली रात्रि में सब से बाहिर के अनंतर दूसरे मांडले पर आता है, तब अठारह मुहूर्त में एकसठिये दो भाग कम की रात्रि होती है और बारह मुहूर्त पर एकसठिये दो भाग अधिक का दिन होता है. अब दूसरी अहोरात्रि में तीसरे मांडले पर सूर्य प्रवेश कर चाल चलता है. जब दूसरी अहोरात्रि में तीसरे मांडले पर आकर सूर्य चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एकसठिये चार भाग कम की रात्रि होती है और बारह मुहूर्त पर एकसठिये चार भाग अधिक का दिन होता है. इसी तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य अनंतर मांडले से दुसरे मांडले पर आता हुवा एकसठिये दो २ भाग रात्रि क्षेत्र में कमी करता है और

छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राति भवति, णात्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति अत्थि दुवालस मुहुत्ते दिवसे णत्थि दुवालस मुहुत्ता राइ भवति । दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति णात्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, अत्थि दुवालस मुहुत्ता राई णात्थि दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे, णात्थि पण्णरस मुहुत्ते दिवसे णात्थि पण्णरस मुहुत्ता राति भवति, णण्णत्थ राइंदियाणं वड्ढोवड्ढीए मुहुत्ताणं चयोवचनेणं, णण्णात्थवा अणुवाय गइयं पुव्वेणं दोण्णिभाग, पाहुडिया गाहाओ भाणियव्वा ॥ १ ॥ १ ॥ * * * * *

१५ $\frac{२}{६१}$ मुहूर्त का दिन होवे और रात्रि १४ $\frac{५९}{६१}$ मुहूर्त की होवे और १८३ वे मांडलेपर दिन १४ $\frac{५९}{६१}$ मुहूर्त का होवे और रात्रि १५ $\frac{२}{६१}$ मुहूर्त की होवे. इस कारन से पन्नरह मुहूर्त का दिन व पन्नरह मुहूर्त की रात्रि न होवे. इस तरह सूर्य के मांडलपर हानि वृद्धि कही. यहांपर छ भाग का खुलासा करते हैं. १८३ मांडलपर छ मुहूर्त की हानिवृद्धि होती है. इस में १८३ को तीन का भागदेने से ६१ होते हैं और छ मुहूर्त को तीन का भागदेने से दो होते हैं. इसी से एक मुहूर्त के एकसठिये दो भाग की हानिवृद्धि होवे. मर्यादा से वृद्धि व मर्यादा से हानि होवे. पन्नरह मुहूर्त के रात्रि दिन नहीं होते हैं. पूर्वोक्त दो भाग की हानिवृद्धि होती है. यह प्रथम पाहुडा प्रथम अंतर पाहुडा हुवा. ॥ १ ॥ १ ॥

चारं चरति तयाणं सव्वबाहिरमंडलं पणिहाय एगेणं तियासिएणं राइंदियसतेणं तिण्णि छावट्ठी एगसट्ठी भागमुहुत्तसतेणं रातिखेत्तस्स णिव्विट्टित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्डित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तमकट्ठ पत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राईभवति ॥ एसणं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवासणे एसणं आदिच्चसंवच्छरे अदिच्चसंवच्छरस्स एसणं पज्जवासणे, इति खलु तस्सेव अदिच्चसंवच्छरस्स सयं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, सयं अट्ठारस मुहुत्ता राइ भवति, सयं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति सयं दुवालस मुहुत्ताराई भवति, पढमे

इस में प्रथम छमास के अंते में अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है परंतु अठारह मुहूर्त का दिन नहीं होता है, और बारह मुहूर्त का दिन होता है परंतु बारह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है. दूसरे छ मास के अंतमें अठारह मुहूर्त का दिन होता है परंतु अठारह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती हैं, बारह मुहूर्त का दिन नहीं होता है परंतु बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. पहिले व दूसरे छ मास के अंत में पन्नरह मुहूर्त का दिन व पन्नरह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है. पन्नरह मुहूर्त की रात्रि व पन्नरह मुहूर्त का दिन कदापि नहीं होता है. क्यों कि छमास में सब मीलकर १८३ अहोरात्रि और छ मुहूर्त की हानिवृद्धि है. इस को अर्ध करने से ९१॥ वे दिन होवे. उस में पहिले का एक मांडला बढाने से ९२॥ मांडला होवे. उस वक्त पन्नरह मुहूर्त का दिन व पन्नरह मुहूर्त की रात्रि होवे. परंतु ९२ वे मांडलेपर सूर्य चलता होवे तब

दुवालस मुहुत्ता राती भवति॥से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तसाए पदेसाए अब्भंतराणंतरं उत्तरद्ध मंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, जयाणं सूरिए अब्भंतराणंतरं उत्तरद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एगट्ठीभाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि, उत्तराए अंतराए भागाए तसाए

भाग इतना उल्लंघ कर नया संवत्सर में आता है तब प्रथम अहोरात्रि स्पर्शता हुवा, दक्षिण दिशा के अंतर भाग में से उस दक्षिण दिशा के प्रथम मांडले के प्रदेश से, पहिला आभ्यंतर मांडले के अंतसे उत्तरार्ध मंडल पर रह कर चाल चलता है. जब दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग जितने बाहिर नीकलता हुवा सूर्य आभ्यंतर मंडल के अंत से उत्तरार्ध मंडल को अंगीकार कर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एक साठिये दो भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त में एकसठिये दो भाग अधिक की रात्रि होती है. फीर दूसरे मांडले से सूर्य नीकलता हुवा दूसरी अहोरात्रि में उत्तरार्ध भाग से उस प्रदेश से नीकलकर दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग उल्लंघ कर भ्यंतरा

ता कहंते अद्ध मंडल संठिई आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु इमा दुविहा अद्धमंडल संठिई पण्णत्ता तंजहा दाहिणा चेव उत्तराचेव ॥ १ ॥ ता कहंते दाहिणअद्ध मंडलसंठिई अहितेति वदेज्जा, ता अयण्णं जंबूद्दीवेदीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं ता जयाणं सूरिए सव्व भंतर दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, तताणं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णया

अब दूसरा अंतर पाहुडा में अर्धमंडल स्पर्शने का अधिकार कहा है. यहां गौतम स्वामी प्रश्न-पुछते हैं. अहो भगवन् ! एकेक सूर्य एकेक अहोरात्रि से एकेक मांडले के अर्ध विभाग को परिभ्रमण कर पूर्ण करे एकेक अहो रात्रि से आधे मंडल पर व्यवस्थित रहे यह कथन आप के मत में किस तरह है ? उत्तर—अर्ध मंडल दो प्रकार के कहे हैं १ दक्षिण दिशा की तरफ आधा मंडल रहा है और २ उत्तर दिशा के स्थान आधा मंडल रहा है. ॥ १ ॥ प्रश्न—दक्षिण दिशा के अर्धमंडल की संस्थिति कैसे कही है ? उत्तर— सब द्वीप समुद्र में यह जम्बूद्वीप यावत् परिधिवाला है. इस में जब सूर्य दक्षिणार्ध विभाग में सब के आभ्यंतर मांडले पर दक्षिण के अर्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होवे और जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होवे. अब वह सूर्य उस प्रथम मांडले पर से नीकल कर दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिर उत्तरअद्ध मंडल उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल से अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दूसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य-प्रत्येक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उल्लंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग इस प्रदेश में

मंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरअद्ध मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसाठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल से अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दूसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडलं संठिइं,उवसंकामित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है, तब अठारह मुहूर्त में एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य-मत्पेक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उल्लंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसाठिये ४८ भाग उस मंडल में

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरंअद्ध मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल मे अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दूसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह, उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य-प्रत्येक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उलंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसाठिये ४८ भाग उस प्रदेश में

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरंअद्ध मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल से अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दूसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य-प्रत्येक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उल्लंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसाठिये ४८ भाग उस प्रदेश से

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरंअद्ध मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल से अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दूसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है, तब अठारह मुहूर्त म एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य-प्रत्येक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उल्लंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग उस मंडल में

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरअद्ध मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल से अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दसरे मांडलेपर चाल

पदेसाए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्चं दाहिणं अद्ध मंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, तदाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिया भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्ताहिं अहिया॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं संकं तंसि देसंसि तंतं अद्धमंडलं संठिइं संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तसाए पदेसाते सव्वं बाहिरं उत्तरद्ध

के तीसरे मांडले को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर के तीसरे अर्ध मांडले के दक्षिणार्ध विभागपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एक योजन के एकसठिये चार भाग कम का दिन होता है और बारह मुहूर्त व एकसठिए चार भाग अधिक की रात्रि होती है. इस तरह उक्त उपाय से नीकलता हुवा सूर्य प्रत्येक मंडल के एक योजन के एकसठिये ४८ भाग और दो २ योजन क्षेत्र उल्लंघता हुवा तदनन्तर मंडल में प्रवेश करता हुवा एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध विभाग में, एक अहोरात्रि उत्तरार्ध विभाग में उन अर्ध मंडलपर संस्थित हो संक्रमता हुवा दक्षिणदिशा के दो योजन व एक योजन के एकसाठिये ४८ भाग उस प्रदेश से

मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ताजयाणं सूरिए सव्व बाहिरं उत्तरंअद्ध मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छमासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता

सर्व के बाहिर के मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रमकर चाल चलता है. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडलपर उत्तरार्ध विभाग में उपसंक्रम कर चलता है; तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. अब वह सूर्य सब से बाहिर के मंडल से फीरकर अंदर के दूसरे मंडलपर सन्मुख होता हुवा अंदर प्रवेश करता है. दूसरे छ मास की आदि करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में उत्तरदिशा के सब के बाहिर के मांडले से दो योजन व एक योजन के एकसठिये ४८ भाग क्षेत्र उल्लंघकर बाहिर के मंडल मे अनंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के मंडल से तदनंतर दसरे मांडलेपर चाल

चारं चरति, तयाणं दिवसप्पमाणे भाणियव्वं ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंपि अहोरत्तंसि दाहिण जाव पदेसाए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइ उवसंकामित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं रातिदिवसप्पमाणं तचेव भाणियव्व ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणं रातिदिवसप्पमाण तंचेव भाणियव्वं, ततं अद्ध-मंडलं संठिइ, संकममाणे २ उत्तराए जाव पदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं, अद्धमंडल

चलता है तब एक मुहूर्त के एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और दो भाग अधिक का दिन होता है. इस प्रकार वह प्रवेश करता हुवा सूर्य दुसरी अहोरात्रि को दक्षिण दिशा के अंतर भाग से उत्तरादिशा के अर्धभाग के आदि प्रदेशपर बाहिर के तीसरे मंडल के उत्तरार्ध मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है उस समय एकसाठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इस तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य प्रत्येक दो योजन व एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग जितना क्षेत्र संक्रम कर अनंतर मांडले में प्रवेश करता हुवा सूर्य एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध मंडलपर एक अहोरात्रि उत्तरार्ध

संठिइ उवसंकमित्ता चारं चराति, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चराति, तताणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे, एसणं दोच्च छम्मासस्स, पज्जवासणे॥ एसणं आइच्चे संवच्छरे, एसणं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवासणे॥२॥ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिइं आहितेति वदेज्जा ? ता जयाणं सूरिए सव्वभंतरं उत्तर अद्धमंडलसंठिइं उवसंकामित्ता चारं चराति, तयाण उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति॥

मंडलपर संस्थित हुवा एक मुहूर्त के एक सठिये दो २ भाग की दिन रात्रि में हानिवृद्धि करता हुवा यावत् सर्व आभ्यंतर मंडल के दक्षिणार्ध विभाग में संस्थित होकर उपसंक्रम कर चाल चलता है. [illegible] सूर्य सब के आभ्यंतर मंडलपर दक्षिणार्ध विभाग में संस्थित होकर उपसंक्रमकर चाल चलता [illegible] सब सबसे अधिक उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. यह [illegible] छ मास कहे और यह दूसरे छ मास का पर्यवसान कहा. यह आदित्य संवत्सर व आदित्य संवत्सर का [illegible] हुवा. यह दक्षिणार्ध मंडल का कथन संपूर्ण हुवा. यह दक्षिण दिशा के सूर्य के अर्ध मंडल [illegible] संवत्सर का कथन हुवा ॥२॥ अब उत्तर दिशा के सूर्य का अर्ध मंडल के आदित्य संवत्सर की पृच्छा

चारं चरति, तयाणं दिवसप्पमाणे भाणियव्वं ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंपि अहोरत्तंसि दाहिण जाव पदेसाए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइ उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं रातिदिवसप्पमाणं तचेव भाणियव्वं ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणं रातिदिवसप्पमाण तंचेव भाणियव्वं, ततं अद्ध-मंडलं संठिइ, संकममाणे २ उत्तराए जाव पदसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडल

चलता है तब एक मुहूर्त के एकसठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और दो भाग अधिक का दिन होता है. इस प्रकार वह प्रवेश करता हुआ सूर्य दुसरी अहोरात्रि को दक्षिण दिशा के अंतर भाग से उत्तरदिशा के अर्धभाग के आदि प्रदेशपर बाहिर के तीसरे मंडल के उत्तरार्ध मंडलपर संस्थित हो उपसंक्रम कर चाल चलता है उस समय एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इस तरह प्रवेश करता हुआ सूर्य प्रत्येक दो योजन व एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग जितना क्षेत्र संक्रम कर अनंतर मांडले में प्रवेश करता हुआ सूर्य एक अहोरात्रि दक्षिणार्ध मंडलपर एक अहोरात्रि उत्तरार्ध

तंचेव भाणियव्वं ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलं संठिइं जाव चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं दाहिणं अद्धमंडलं जाव चारंचरति ; तदाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णये दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ॥ एमणं पढमे छम्मासे, एसणं पढम छम्मासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए जाव पदेसाए बाहिराणं उत्तरं अद्धमंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए बाहिराणं उत्तरं

अहोरात्रि में दक्षिण के आभ्यंतर मंडल के प्रदेश के तीसरा आभ्यंतर उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है तब एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन होता है चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इसी तरह नीकलता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडल को उस २ देश में उस २ अर्ध मंडल संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर दक्षिण के अर्ध मंडलपर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह पहिला छ'मास हुवा और यह पहिला छ मास का पर्यवसान हुवा. पुनः वही सूर्य प्रवेश करता

स निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि, उत्ताराए जाव पएसाए अब्भंतराणंतर दाहिणं अद्ध मंडलं संठिइं उवंसकमित्ता चारं चरति। तदाणं सूरिए अब्भंतराणंतरं दाहिणं जाव चारं चरति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एगट्ठि भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ताराई भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ से निक्खममाणे सूरिए दोचांसि अहोरत्तांसि दाहिणाए जाव पदेसाए अब्भंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए अब्भंतराणं तच्चं उत्तरं जाव चारं चरति तदाणं दिवसरातिप्पमाणं

श्री गौतम स्वामी करते हैं. प्रश्न-उत्तर का अर्ध मंडल किस प्रकार रहा हुवा है? उत्तर—जब सूर्य सब से आभ्यंतर के उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को उपसंक्रम कर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है और जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य नवीन संवत्सर में गमन करता प्रथम अहोरात्रि में उत्तरार्ध मंडल के अंतिम प्रदेश से अभ्यंतर दूसरे दाक्षिण की अर्धमंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर दूसरी दाक्षिण की अर्ध मंडल की संस्थिति को उपसंक्रमकर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एकसठिये दो भाग कम का दिन होता है और एक सठिये दो भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य दूसरा

तंचेव भाणियव्वं ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलं सट्ठिइं जाव चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं दाहिणं अद्धमंडलं जाव चारंचरति ; तदाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णये दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ॥ एमणं पढमे छम्मासे, एसणं पढम छम्मासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए जाव पदेसाए बाहिराणं उत्तरं अद्धमंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति ॥ ता जयाणं सूरिए बाहिराणं उत्तरं

अहोरात्रि में दक्षिण के आभ्यंतर मंडल के प्रदेश के तीसरा आभ्यंतर उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है तब एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन होता है चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इसी तरह नीकलता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडल को उस २ देश में उस २ अर्ध मंडल संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर दक्षिण के अर्ध मंडलपर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह पहिला छ मास हुआ और यह पहिला छ मास का पर्यवसान हुवा. पुनः ही सूर्य प्रवेश करता

स निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि, उत्तराए जाव पएसाए अब्भंतराणंतरं दाहिणं अद्ध मंडलं संठिइं उवंसकमित्ता चारं चरति। तदाणं सूरिए अब्भंतराणंतरं दाहिणं जाव चारं चरति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एगट्ठि भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ताराई भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया ॥ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चांसि अहोरत्तांसि दाहिणाए जाव पदेसाए अब्भंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए अब्भंतराणं तच्चं उत्तरं जाव चारं चरति तदाणं दिवसरातिप्पमाणं

श्री गौतम स्वामी करते हैं. प्रश्न-उत्तर का अर्ध मंडल किस प्रकार रहा हुवा है ? उत्तर—जब सूर्य सब से आभ्यंतर के उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को उपसंक्रम कर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है और जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य नविन संवत्सर में गमन करता प्रथम अहोरात्रि में उत्तरार्ध मंडल के अंतिम प्रदेश से अभ्यंतर दूसरे दक्षिण की अर्धमंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर दूसरी दक्षिण की अर्ध मंडल की संस्थिति को उपसंक्रमकर चाल चलता है तब अठारह मुहूर्त में एकसठिये दो भाग कम का दिन होता है और एक साठिये दो भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य दूसरा

मंडल संठिइं उवसंकममाणे २ दाहिणाए जाव पदेसाए सव्वब्भंतरं उत्तरद्ध मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तर अद्ध मंडलं संठिइं जाव चारं चरति तदाणं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राती भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे एसणं दोच्च छम्मासस्स पज्जवासणे, । एसणं आइच्चसंवच्छरे एसणं आइच्च संवच्छरस्स पज्जवासणे ॥ पढमस्स वीअं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ २ ॥ * *

ता के ते चिण्हं पडिचरंति आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता

जब सूर्य सब से आभ्यंतर उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य सब से आभ्यंतर उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होवे और जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होवे. यह दूसरा छ मास हुवा यह दूसरा छ मास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर हुवा यह आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह पढिला पाहुडा का दूसरा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १ ॥ २ ॥

अब तीसरा अंतर पाहुडा कहते हैं. प्रश्न—गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि इस जम्बूद्वीपमें कितने सूर्य प्रतिक्षेत्र चाल चलते हैं ? अर्थात् अपना या अन्य के क्षेत्र को अंगीकार कर चलते हैं ? उत्तर—इस जम्बूद्वीप में दो सूर्य कहे हैं. १ भरत का सूर्य और २ एरवत का सूर्य. उक्त दोनों सूर्य अलग २ तीस२

अद्धमंडलं संठिइं जात्र चारं चरति तदाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्ताराए जात्र पदेसाए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलं संठिइं जात्र चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं जात्र चारं चरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिए॥एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरंसि तंसि २ देसंसि तं तं अद्ध

हुवा दूसरे छ मास की पहिली अहोरात्रि में दक्षिण के आभ्यंतर मांडले के प्रदेश मे बाहिर की उत्तर मांडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है. तब एकसठिये दो भाग कम की रात्रि होवे और दो भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होवे. अब दूसरी अहोरात्रि में प्रवेश करते उत्तर के अर्ध मंडल के प्रदेश से बाहिर का तीसरा दक्षिण का अर्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर यावत् विचरता है तब एक सठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इसी तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य एक पीछे एक मांडला के उस देश में उस अर्ध मंडल संस्थिति

मंडल संठिइं उवसंकममाणे २ दाहिणाए जाव पदेसाए सव्वब्भंतरं उत्तरद्ध मंडलं संठिइं उवसंकामित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तर अद्ध मंडलं संठिइं जाव चारं चरति तदाणं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राती भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे एसणं दोच्च छम्मासस्स पज्जवासणे, । एसणं आइच्चसंवच्छरे एसणं आइच्च संवच्छरस्स पज्जवासणे ॥ पढमस्स बीअं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ २ ॥ * *

ता के ते चिण्हं पडिचरंति आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता

को अंगीकार कर चाल चलता है. जब सूर्य सब से आभ्यंतर उत्तरार्ध मंडल की संस्थिति को अंगीकार कर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होवे और जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होवे. यह दूसरा छ मास हुवा यह दूसरा छ मास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर हुवा यह आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह पहिला पाहुडा का दूसरा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १ ॥ २ ॥

अब तीसरा अंतर पाहुडा कहते हैं. प्रश्न—गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं. कि इस जम्बूद्वीपमें कितने सूर्य प्रतिसंघ चाल चलते हैं ? अर्थात् अपना या अन्य के क्षेत्र को अंगीकार कर चलते हैं ? उत्तर—इस जम्बूद्वीप में दो सूर्य कहे हैं. १ भरत का सूर्य और २ एरवत का सूर्य. उक्त दोनों सूर्य अलग २ तीस २

सूत्र

जहा-भरहेचेव सूरिए एरवएचेव सूरिए । ता एएणं दुवे सूरिया तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेग अद्ध मंडलं चरंति सट्ठीए२मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं चरंति संघतेति, ता निक्खममाणे खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडि चरंति, पविसमाणे खलु एए दुवे चेव सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति ॥ १ ॥ तत्थणं कोहेउ वदेज्जा ? ता अयणं जम्बुद्दीवेदीवे जाव परिक्खवेणं, तत्थणं अयंभरहे चेव सूरिए जम्बुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायताए उदीण दाहिणताए

अर्थ

मुहूर्त में एकेक अर्ध मंडलपर चलते हैं. और साठ मुहूर्त में एकेक मांडले पर चलते हैं और साथ ही मांडले प्रतिपूर्ण करते हैं. वहां से नीकलते हुवे दोनों सूर्य परस्पर अपने क्षेत्र व अन्य के क्षेत्र पर नहीं चलते हैं, परंतु १८४ मांडले में प्रवेश करते उक्त दोनों सूर्य अपने २ क्षेत्र पर चलते हैं अन्य क्षेत्र में प्रवेश करते उद्योत करे नहीं. क्यों की भरत क्षेत्र का सूर्य अग्निकोन के बेकी मांडले स्पर्शे और वायव्य कौन के एकी मांडले स्पर्शे और एरवत क्षेत्र का सूर्य वायव्य कौन के बेकी मांडले स्पर्शे और अग्नि कौन के एकी मांडले स्पर्शे ॥ १ ॥ यहां गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि इस में कौनसा हेतु है ? उत्तर-यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप यावत् परिधि वाला है. इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाई व उत्तर दक्षिण की जिव्हा से चार

जीवा

छेत्तां दाहिण पुरत्थिमिलंसि चउभाग मंडलंसि जीवाए मंडलं चउवीससतेणं छेत्तां दाहिण पुरत्थिमिलंसि चउभाग मंडलंसि बाणउतिं सूरियमंताइं जाइं सूरिए अप्पणो चेव चिन्नं पडिचरंति उत्तर पच्चत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि एक्काणउतिं सूरियमंताइं जाइं सूरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरंति तत्थणं अयं भारहे सूरिए॥२॥ एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायताए उदीणं दाहिणताए जीवाए मंडलं चउवीस सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि बाणउतिं सूरियमंयाइं जाइं

भाग के एक मंडल के १२४ भाग करके उस का त्रिभाग करे. इस से प्रत्येक दिशामें एक २ मंडलके ३१ भाग रहे. इस तरह दक्षिण पूर्व अग्निकून के मंडल के ३१ भाग में सूर्य जब ९२ वे मांडले से नीकले तब भरत क्षेत्र का सूर्य भरत क्षेत्र में ही उद्योत करता हुवा चले और उत्तरपश्चिम-वायव्यकून के मांडले के चौथे भाग में जब सूर्य ९१ वे मांडले से नीकले तब भरत क्षेत्र का सूर्य एरवत क्षेत्र में उद्योत करता हुवा नीकले. यही भरत क्षेत्र का सूर्य जानना ॥ २ ॥ एरवत क्षेत्र के सूर्य के मंडल के १२४ भाग कर जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम की लम्बाइ, उत्तरदक्षिण की जिन्हा से छेदकर उत्तरपूर्व के चौथे भाग में ९२ वे मांडलेसे नीकलता हुवा सूर्य पर क्षेत्र अर्थात्-पूर्वमहाविदेह क्षेत्र में उद्योत करता हुवा चले, दक्षिण पश्चिम के नैऋत्यकून के चौथे भाग में ९१ वे मांडले से नीकलता सूर्य पर क्षेत्र सो पश्चिम महावि-

सूत्र

जहा-भरहेचेत्र सूरिए एरवएचेत्र सूरिए । ता एएणं दुवे सूरिया तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेग अद्ध मंडलं चरंति सट्ठीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं मडलं चरंति संघतेति, ता निक्खममाणे खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडि चरंति, पविसमाणे खलु एए दुवे चेत्र सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति ॥ १ ॥ तत्थणं कोहेउ वदेज्जा ? ता अयणं जम्बुद्दीविदीवे जाव परिक्खेवेणं, तत्थणं अयंभरहे चेत्र सूरिए जम्बुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायताए उदीण दाहिणताए

अर्थ

मुहूर्त में एकेक अर्थ मंडलपर चलते हैं. और साठ मुहूर्त में एकेक मांडले पर चलते हैं और साथ ही मांडले प्रतिपूर्ण करते हैं. वहां से नीकलते हुवे दोनों सूर्य परस्पर अपने क्षेत्र व अन्य के क्षेत्र पर नहीं चलते हैं, परंतु १८४ मांडले में प्रवेश करते उक्त दोनों सूर्य अपने २ क्षेत्र पर चलते हैं अन्य क्षेत्र में प्रवेश करते उद्यात करे नहीं. क्यों की भरत क्षेत्र का सूर्य अग्निकोने के बकी मांडले स्पर्शे और वायव्य कौन के एकी मांडले स्पर्शे और एरवत क्षेत्र का सूर्य वायव्य कौन के बकी मांडले स्पर्शे और अग्नि कौन के एकी मांडले स्पर्शे ॥ १ ॥ यहां गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि इस में कौनसा हेतु है ? उत्तर-यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप यावत् परिधि वाला है. इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाई व उत्तर दक्षिण की जिन्हा से चार

जीवा

जीवाए मंडलं चउवीससतेणं छेत्ता दाहिण पुरत्थिमिलंसि चउभाग मंडलंसि बाणउतिं सूरियमंताइं जाइं सूरिए अप्पणो चेत्र चिन्नं पडिचरंति उत्तर पच्चत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि एकाणउतिं सूरियमंताइं जाइं सूरिए अप्पणो चेत्र चिण्णं पडिचरंति तत्थणं अयं भारहे सूरिए॥२॥ एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायताए उदीणं दाहिणताए जीवाए मंडलं चउवीस सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि बाणउतिं सूरियमंयाइं जाइं

भाग के एक मंडल के १२४ भाग करके उस का विभाग करे. इस से प्रत्येक दिशामें एक २ मंडलके ३१ भाग रहे. इस तरह दक्षिण पूर्व अग्निकून के मंडल के ३१ भाग में सूर्य जब ९२ वे मांडले से नीकले तब भरत क्षेत्र का सूर्य भरत क्षेत्र में ही उद्योत करता हुवा चले और उत्तरपश्चिम-वायव्यकून के मांडले के चौथे भाग में जब सूर्य ९१ वे मांडले से नीकले तब भरत क्षेत्र का सूर्य एरवत क्षेत्र में उद्योत करता हुवा नीकले. यही भरत क्षेत्र का सूर्य जानना ॥ २ ॥ एरवत क्षेत्र के सूर्य के मंडल के १२४ भाग कर जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम की लम्बाइ, उत्तरदक्षिण की जिव्हा से छेदकर उत्तरपूर्व के चौथे भाग में ९२ वे मांडलेसे नीकलता हुवा सूर्य पर क्षेत्र अर्थात्-पूर्वमहाविदह क्षेत्र में उद्योत करता हुवा चले, दक्षिण पश्चिम के नैऋत्यकून के चौथे भाग में ९१ वे मांडले से नीकलता सूर्य पर क्षेत्र सो पश्चिम महावि-

सूत्र

सूरिए परस्स चिण्णं पाडिचरंति दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागं मंडलंसि एकाणउतिं सूरियमयाइं, जाइं सूरिए परस्स चिण्णं पडिचरंति तत्थणं अयं एरवए सूरिए ॥ ३ ॥ जंबूद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायताए उदिणदाहिणताए जीवाए मंडलं चउवीससएणं छेत्ता उत्तर पच्चत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि बाणउइ सूरिय मयाइं जाइं सूरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरंति दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि,एकाणउत्ति सूरिए मताइं अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरंति,तत्थणं अयं एरवए सूरिए ॥ ४ ॥ भारहस्स सूरियस्स जंबूद्दीवस्स पाईणपडीण

अर्थ

देह क्षेत्र में सूर्य उद्योत करता हुवा चले. यह एरवत का सूर्य कहा. जम्बूद्वीप की पूर्व पश्चिम की लम्बाइ से व उत्तर दक्षिण की जिन्हों से मांडले को १२४ भाग से छेद कर उत्तरपश्चिम. वायव्य कून के चौथे विभाग में ९२ वे मांडले से नीकलता हुवा सूर्य अपना क्षेत्र एरवतक्षेत्र में उद्योत करता हुवा चले और दक्षिण पूर्व के [अग्निकून] के चौथे भाग में एकाणवे मांडले से नीकलता हुवा सूर्य अपना क्षेत्र भरत क्षेत्र में उद्योत करता हुवा चले. यह एरवत क्षेत्र का सूर्य हुवा ॥ ४ ॥ जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम की लम्बाई व उत्तर दक्षिण की जिन्हों से एक मंडल के १२४ भाग को छेदकर दक्षिण पश्चिम (नैऋत्यकून)

ताए उदीणदाहिणताए जीवाए मंडलं चउवीससएणं छेत्ता दाहिणपच्चत्थि मिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउति सूरियमयाइं ॥ जाइं सूरिएपरस्स चिण्णं पडिचरंति उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागं मंडलंसि एक्काणउति सूरियमताइं, जाइं सूरिए परस्सचेत्र चिण्णं पडिचरंति, तत्थ अयं भारहे सूरिए ॥ ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति पविसमाणे खलु ते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति॥तं सयमेगं चोयालं गाहाओ॥चंद पण्णत्तिस्स पढमस्स

के चौथे भाग में ९२ वे मांडले से नीकलता हुवा पर क्षेत्र पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में उद्योत करता हुवा सूर्य चले. उत्तर पूर्व के (ईशानकून) के चौथे भागमें ९१ वे मांडले से नीकलता हुवा सूर्य पर क्षेत्र सो पूर्व महा विदेह में उद्योत करता हुवा चले. यह भरत क्षेत्र का सूर्य कहा. इसी हेतु से प्रथम मांडले में नीकलते हुवे दोनों क्षेत्र के सूर्य परस्पर के क्षेत्र में उद्योत करे नहीं, परंतु पर क्षेत्र में उद्योत करते हुवे चले. उक्त दोनों सूर्य १८४ मांडले में प्रवेश करते हुवे परस्पर क्षेत्र में उद्योत करे परंतु अन्य के क्षेत्र में उद्योत करे नहीं. इस तरह भरत क्षेत्र का सूर्य व एरवत क्षेत्र का सूर्य अन्य के क्षेत्र में परस्पर के क्षेत्र में चार दिशा व विदिशा से परिभ्रमण करते हुवे चलते हैं. इस की सतमेगं चोतालं यह गाथा का अर्थ नहीं करते हैं. क्यों कि यह गाथा अपूर्ण है. शेष का विच्छेद हुवा है. यह पहिला पाहुडे का [illegible]

तृतीयं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ ३ ॥

* *

सूत्र— ता केवइयं ते एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारंचरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा तत्थेगे एवं माहंसु एगं जोयण सहस्सं एगंच तेत्तीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु, सूरिया चारं चरंति आहितेति वएज्जा? एगेएवं माहंसु ॥ १ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता एगं जोयणसहस्सं एगं चउत्तिसं जोयणसतं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वएज्ज, एगे एव माहंसु ॥ २ ॥ एगेपुण एव माहंसु ता एगं जोयण सहस्सं, एगं च पन्नतीसंजोयणं अण्णमण्णं अंतरंकट्टु सूरिया चारं चरंति आहिते ति वएज्जा, एगेएवमाहंसु ॥ ३ ॥

अर्थ— अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ३ ॥
अब परस्पर सूर्य में अंतर रूप चौथा पाहुडा कहते हैं, प्रश्न—अहो भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के दोनों सूर्य परस्पर कितना अंतर रखकर चलते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! इस में अन्यतीर्थी की मतरूपणा छ पडिवृत्तियों कही हैं, इन का अलग २ कथन करते हैं—१ कितनेक ऐसा कहते हैं कि दोनों सूर्य परस्पर एक हजार एक सो तेत्तीस ११३३ योजन का अंतर रखकर चलते हैं, २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो चौतीस ११३४ योजन के अंतर से चलते हैं ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो पैंतीस ११३५ योजन के अंतर से चलते हैं, ४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक

एगेपुण एवं माहंसु, एगंदिवं एगंसमुद्द अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा एगेएवमाहंसु ॥४॥ एगेपुण एवं माहंसु ता दोण्णिदीवे दोण्णिसमुद्दे अण्णमण्णस्स अतरं कट्टु आहितेति वदेज्जा, एगेएवं सुहांम ॥५॥ एगेपुण एवमाहंसु ता तिण्णिदिवे तिण्णिसमुद्द,अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु जाव आहितेति वएज्जा, एगे एवं माहंसु॥६॥वयंपुण एवं वयामो-ता पंचपंच जोयणाइं पन्नतीसं एगजोयणाए एगसट्ठिभागा जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं, अभिहट्टमाणेवा निवट्टेमाणेवा सूरिया चारं चरंति अहितेति वदेज्जा ॥ १ ॥ तत्थणं को हेऊ वदेज्जा ता अयणं जंबुद्दीवे-

द्वीप व एक समुद्र का अंतर रखकर चलते हैं, ५ कितनेक ऐसा कहते हैं कि दो द्वीप व दो समुद्र का अंतर रखकर चलते और ६ कितनेक ऐसा कहते हैं कि तीन द्वीप व तीन समुद्र का अंतर रखकर सूर्य चाल चलते हैं. और हम ऐसा कहते हैं कि पांच २ योजन व एक योजन के एकसाठिये ३५ भाग ५$\frac{35}{61}$ योजन का परस्पर अंतर करते हुवे आभ्यन्तर मंडल से बाहिर के मांडले पर जावे और बाहिर के मांडले से आभ्यंतर के मंडलपर जावे. ॥ १ ॥ प्रश्न—इस में कौनसा हेतु है अर्थात् किस कारन से ऐसा चलता है? उत्तर—यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप यावत् परिधि वाला है जब उक्त दोनों सूर्य सबसे आभ्यंतर

मूल

दीवे जाव परिक्खेवेणं ता जयाणं एते दुवे सूरिया सव्वभंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, तयाणं णउणवति जोयणसहस्साइं छच्चचत्ताले जोयणसते अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं सूरिया चरंति, तयाणं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ताराई भवति॥२॥ते निक्खममाण सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जयाणं दुवे सूरिया अब्भंतराणंतरं जाव चारं चरंति तयाणं णउणवतिं जोयणसहस्साइं छच्चपणयाले जोयणसए पणतीसंच एगसट्ठीभाग जोयणस्स अंतरं कट्टु

अर्थ

मंडलपर रह कर चाल चलते हैं. तब निन्यानवे हजार छसो चालीस ९९६४० योजनका परस्पर अंतर होता है. क्यों कि एक लक्ष योजन के जम्बूद्वीप में दोनों सूर्य एकेक अस्सी योजन जगती की अंदर रहते हैं. १८० को दुगुने करने से ३६० होवे. इतना एक लक्ष योजन में कमी करने से ९९६४० योजन रहते हैं. इसलिये दोनों सूर्य आभ्यंतर के मंडलपर उक्त अंतर से चाल चलते हैं. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. ॥२॥ फीर आभ्यंतर मंडल से नीकलते हुवे दोनों सूर्य नवे संवत्सर में प्रवेश करते हुवे पहिली अहोरात्रि में दूसरे मांडलपर चलते हैं. जब वे दोनों सूर्य आभ्यंतर दूसरे मांडलेपर रह

चारं चरंति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई, दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं अहिया ॥ तेनिक्खममाणे सुरिया दोचंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ॥ जयाण एते दुवे सूरिया अब्भितरं तच्चं मंडलं जाव चारं चरंति तयाणं णवणवउति जोयण सहस्साइं छच्च एकावण जोयणसए णवएगट्ठी भागे जोयणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तयाण अट्ठारस्स मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठि भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस्स मुहुत्ता राई भवति, चउहिं एगट्ठि भाग मुहुत्तेहिं अहिया ॥ एवं खलु

कर चाल चलते हैं तब निन्यान वे हजार छसो पैंतालीस योजन व एक योजन के एक साठिये पैंतीस भाग जितना अंतर होजाता है. एक २ मंडल को दो २ योजन व एकसाठिये ४८ भाग का अंतर है. इतना अंतर दोनों तरफ होने से पांच योजन व एकसठिये ३५ भाग होवे. इस तरह दूसरे मंडलपर ९९६४५ $\frac{35}{61}$ योजन का अंतर रहता है और उस वक्त एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन व दो भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वे वहां से नीकलकर दूसरी अहोरात्रि में तीसरे आभ्यंतर मंडलेपर रहकर चाल चलते हैं. जब उक्त दोनों सूर्य तीसरे मंडलेपर रहकर चाल चलते हैं.

सूत्र

एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे एते दुवे सूरिया, तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा पंचपंच जोयणाइं पण्णतीसंच एगट्ठि भागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जयाणं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं एगजोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठि जोयणसते अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तयाणं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णेणं दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमछम्मासस्स पज्जवा

अर्थ

तब निन्यानवे हजार छसो एकावन योजन व एक साठिये नव भाग जितना अंतर होता है. उस वक्त एक साठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन व उक्त चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस उपाय से नीकलते हुए दोनों सूर्य प्रत्येक आगे के मंडल पर संक्रमते हुवे परस्पर पांच २ योजन व एक योजन के एकसाठिये पेंतीस भाग की परस्पर अंतर की वृद्धि करते हुवे और दिन के एकसाठिये दो भाग घटाते हुवे व रात्रि के भाग बढाते हुवे बाहिर के अंतिम मांडले पर होकर चाल चले. जब दोनों सूर्य बाहिर के अंतिम मांडले पर रहकर चाल चलते हैं तब दोनों सूर्य में एक लाख

साणे ॥ ३ ॥ सेपविसमाणे सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति॥तो जयाणं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं जाव चारं चरंति, तयाणं एगजोयण सयसहस्सं छच्च चउप्पण जोयणसए छव्विसंचएगट्ठी भागे जोयणस्स अंतरंकट्टु चारंचरंति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिंएगठी भाग जाव अहिए ॥ ते पविसमाणे सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरंतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता जाव चारंचरति ॥ ता जयाणंए ते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं जाव चारंचरंति तयाणं

छ सो साठ १००६६० योजन का अंतर होता है. उस वक्त उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि और जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह एक २ मंडल में ५$\frac{३५}{६१}$ योजन के अंतर के हिसाब से होता है. यह प्रथम छ मास व प्रथम छ मास का पर्यवसान हुवा. वहां से उक्त दोनों सूर्य प्रवेश करते हुवे प्रथम अहोरात्रि में बाहिर के अनंतर का दूसरा मंडल पर रहकर चाल चलते हैं. जब उक्त दोनों सूर्य बाहिर के मंडल पर यावत् चाल चलते हैं तब एक लाख छ सो चौपन योजन व एकसाठिये छब्बीस (१००६५४$\frac{२६}{६१}$) भाग का अंतर रहता है उस वक्त उत्कृष्ट एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य

श्रसू

एग जोयणसय सहस्सं छच्च अडयाले जोयणसेए बावण्णं च एगट्ठी भाग जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतर कट्टु चारं चरति, तयाणं अट्ठारस्स मुहुत्ता राती भवति चउहिंएगट्ठि भाग ऊ न ऊणे, दुवालस्स मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिंएगट्ठी भाग अहिए ॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं पविसमाणे एते दुवे सूरिया तदाणंतराओ तदाणंतरं मंडलं उवसंकममाणे २ पंच जोयणाइ पण्णतीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं निवुड्ढिमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जयाणं एते दुवे सुरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकामित्ता चारंचरति तयाणं णवणउति जोयण सहस्साइं छच्चचताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरंकट्टु,

अर्थ

उक्त दो भाग आधक बारह मुहूर्तका दिन होता है. फीर वे नीकलते हुवे दोनों सूर्य दूसरी अहोरात्रिमें तीसरे मांडले पर रहकर चाल चलते हैं. जब तीसरे मांडले पर रहकर चाल चलते हैं तब दोनों को परस्पर एक लाख छ सो अडतालीस योजन और एकसठिये बावन भाग का अंतर रहता है और उत्कृष्ट एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य उक्त चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है इसी तरह अंदर प्रवेश करते हुवे दोनों सूर्य प्रत्येक मंडल में पांच २ योजन व एकसठिये पैंतीस भाग अंतर. कम करते हुवे सब से आभ्यन्तर मंडल पर उपसंक्रम कर चलते हैं. जब दोनों सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर चाल चलते हैं तब ९९६४० योजन का परस्पर अंतर रहता है और अठारह

चारंचरंति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते जाव दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्तारती भवति, एसणं दोच्चे छम्मासे, एसणं दोच्चछम्मासस्स पज्जवसणे, एसणं आईच्च संवच्छरात्तिस्स पज्जवसाणे॥इति चंदपन्नत्तिस्स पढमस्स चउत्थं पाहुडं सम्मत्तं॥१॥४॥

ताकेवइयंतेदीवसमुद्द उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति आहितेति वदेज्जा ? तत्थखलु इमाओ पंचपडिवत्तीओ तंजहा-तत्थेगे एवमंहसु-एग जोयण सहस्सं एगंच तेत्तीसं

मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. यह दूसरा छ मास हुवा व दूसरा छ मास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर व आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह पहिला पाहुडे का चौथा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ४ ॥

० ०

अब द्वीप समुद्र में सूर्य कितनी दूर चलते हैं सो कहते हैं—अहो भगवन् ! सूर्य द्वीप का कितना क्षेत्र व समुद्र का कितना क्षेत्र अवगाहकर चाल चलते हैं ? भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि यहां अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप पांच प्रकार की पडिवृत्ति कही है. कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो तेंत्तीस ११३३ योजन द्वीप या समुद्र अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं, २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो चौंतीस योजन द्वीप या समुद्र अवगाहकर चाल चलते हैं, कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो पेंतीस योजन द्वीप या समुद्र अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं ४ कित-

जोयणंसतं दिवंत्रा समुदंत्रा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति अहितेति वदेज्जा, एग एव माहंसु॥१॥एगपुण एवं माहंसु ताएग जोयणहमस्सं एगंच चोत्तीसं जोयणसतं दिवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्ता सूरिए चार चरंति एगे एवं माहंसु ॥२॥ एगे पुण एवं माहंसु ता एगं जोयण सहस्स एगंच पणतीसं जोयणसत दीवंवा समुद्दवा उग्गाहित्त सूरिए चार चरति एगे एवं माहंसु ॥ ३ ॥ एगे पुण एवं माहंसु ता अवड्ढ दिवंवा समुद्दंवा उग्गाहिता सूरिए चारं चरंति एगे एवं माहं ॥ ४ ॥ एग पुण एवं माहसुता नो किंचि दीवंवा समुदंवा उग्गाहित्ता सरिए चारं चरति, ॥५॥ तत्थ जेते एवं माहंसु ता एग जोयण सहस्सं एगंच तत्तीस जोयण सतं दिववा समुद्दवा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति

नेक ऐसा कहते हैं कि आधा द्वीप व आधा समुद्र का क्षेत्र अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं, ५ कितनेक ऐसा कहते हैं कि किंचिन्मात्र द्वीप किंचिन्मात्र समुद्र अवगाहे बिना सूर्य चाल चलते हैं ॥ १ ॥ इन पांच में से जो ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो पेंतीस योजन द्वीप या समुद्र को अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं उन का कथन इस हेतु से है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर के मेरु के पास के मंडल पर रहकर चाल चलते हैं, तब जम्बूद्वीप का १,१३३ योजन अवगाहकर चाल चलते हैं उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल

ते एव माहंसु, जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, तयाणं जबूदीवं दिवं एगं जोयण सहस्सं एगच तेत्तिसं जोयण सतं उग्गाहित्ता चारं चरंति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस महुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ताराई भवति, ता जयाणं सूरिए सव्वबाहिरं मंडल उवसंकामित्ता चारं चरंति, तयाणंलवण समुद्दं एगं जोयण सहस्सं एगंचतेतीसं जोयणसतं उग्गाहिता चार चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता रात्ति भवति, जहण्णते दुवालस महुत्ते दिवसे भवति, एवं चोतीसं जोयणसतं, एवं पण्णत्तीसं जोयणसतं ॥ तत्थ जेते एवं माहंसु ता अवड्ढदिवं अवड्ढसमुद्दं उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति ते

चलते हैं तब लवण समुद्र में ११३३ योजन क्षेत्र अवगाहकर रहते हैं. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. ऐसे ही एक हजार चौवीस व एक हजार पेंतीस योजन वाले का मत कहना. उस में जो ऐसा कहते हैं कि आधा द्वीप आधा समुद्र अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं उन का कथन इस प्रकार है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर रहकर चाल चलते हैं, तब आधा जम्बूद्वीप का क्षेत्र अवगाहकर चाल चलते हैं उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. ऐसे ही सब बाहिर के मांडले पर रहकर सूर्य चाल चलते हैं तब आधा

जोयणंसतं दिवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति अहितेति वदेज्जा, एग एवं माहंसु॥१॥एगपुण एवं माहंसु ताएग जोयणहस्सं एगंच चोत्तीसं जोयणसतं दिवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्ता सूरिए चार चरंति एगे एवं माहंसु ॥२॥ एगे पुण एवं माहंसु ता एगं जोयण सहस्सं एगंच पणतीसं जोयणसत दीवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्त सूरिए चार चरंति एगे एवं माहंसु ॥ ३ ॥ एगे पुण एवं माहंसु ता अवड्ढ दिवंवा समुद्दंवा उग्गाहिता सूरिए चारं चरंति एगे एवं माह ॥ ४ ॥ एग पुण एवं माहंसुता नो किंचि दीवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्ता सरिए चारं चरंति, ॥५॥ तत्थ जेते एवं माहंसु ता एग जोयण सहस्सं एगंच तेत्तीस जोयण सतं दिववा समुद्दवा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति

नेक ऐसा कहते हैं कि आधा द्वीप व आधा समुद्र का क्षेत्र अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं, ८ कितनेक ऐसा कहते हैं कि किंचिन्मात्र द्वीप किंचिन्मात्र समुद्र अवगाहे विना सूर्य चाल चलते हैं ॥ १ ॥ इन पांच में से जो ऐसा कहते हैं कि एक हजार एक सो पैंतीस योजन द्वीप या समुद्र को अवगाहकर सूर्य चाल चलते हैं उन का कथन इस हेतु से है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर के मेरु के पास के मंडल पर रहकर चाल चलते हैं, तब जम्बूद्वीप का ११३३ योजन अवगाहकर चाल चलते हैं उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल

उग्गाहित्ता चारं चरंति, रातिदिय तहेव माहंसु ॥ वयं पुण एवं वयामो; ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तयाणं जंबूदीवं असीतं जोयण सतं उग्गाहित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति, ता जयाणं सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं लवणसमुद्दं तिण्णितिसे जोयणसए उग्गाहित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ इति चंदपन्नत्तिस्स पढमस्स पंचमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ ५ ॥ *

ताकेवइयं ते एगमेगेणं रातिदिएणं विकंपइ २ त्ता सूरिए चारं चरति

होता है. इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर चलते हैं तब जम्बूद्वीप का १८० योजन क्षेत्र अवगाहकर चाल चलते हैं. उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. और जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर चलते हैं तब लवण समुद्र का ३३० योजन क्षेत्र अवगाहकर चाल चलते हैं. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह पहिला पाहुडे का पांचवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ५ ॥

अब छठे अंतर पाहुडे में एक रात्रि दिन में सूर्य कितने क्षेत्र स्पर्श कर चलते हैं. प्रश्न—एक २ रात्रि

मूत्र

एवं माहंसु-जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तयाणं अवड्ड जंबूदिवं २ उग्गाहित्ता चारं चरंति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्तें उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राती भवति ॥ एवं सव्व बाहिरएवि, णवरं अवड्ड लवण समुद्द, तयाणं रायदियं तहेव ॥ तत्थ जेते एवं माहंसु ता नो किंचिदिवंवा समुद्दंवा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरंति, ते एवं माहंसु जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, तयाणं नो किंचि-दिवंवा, समुद्दंवा उग्गाहित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति; तहेव एवं सव्वे बाहिर मंडल णवरं नो किंचिलवणसमुद्दं

अर्थ

लवण-समुद्रका क्षेत्र अवगाहकर चाल चलते हैं और उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तकी रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्तका दिन होता है. जो ऐसा कहते हैं कि किंचिन्मात्र जम्बूद्वीप व किंचिन्मात्र लवण समुद्र अवगाहे बिन सूर्य चाल चलते हैं उन का कथन इस प्रकार है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मांडले पर रहकर चाल चलते हैं तब किंचिन्मात्र द्वीप क्षेत्र को अवगाहे बिना चाल चलते हैं, उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. और जब सूर्य सब के बाहिर के मंडल पर चाल चलता है तब किंचि-न्मात्र भी समुद्र अवगाहे बिना चलते हैं, उस समय अठारह मुहूर्त की रात्रि व बारह मुहूर्त का दिन

जोयणस्स एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपइत्ता चार चरांते आहितात वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ४ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता अड्ढुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं जाव वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ५ ॥ एगेपुण एवमाहंसु चत्तारि चउभागूणाइं जोयणाइं जाव आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ६ ॥ एगेपुण एवमाहंसु चत्तारि जोयणाइं अद्ध बावण्णंच तेत्तीसं सयभागे जोयणस्स एगमेगेणं रातिंदिएणं जाव आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ ७ ॥ वयं पुण एवं वदामो ता दोदो जोयणाइं अडयालीसंच एग सट्ठी भागे जोयणस्स एगमेगेणं मंडले, एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपावातित्ता सूरिए

भी कहते हैं कि तीन योजन व एक योजन के १३३ भाग करे वैसे ४५॥ भाग ($३\frac{४५॥}{१३३}$) जितना क्षेत्र एक अहोरात्रि में उल्लंघकर दूसरे मंडलपर जाकर चाल चलता है, ६ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चार योजन में चौथा भाग कम (३॥।) योजन क्षेत्र उल्लंघकर सूर्य चाल चलता है, ७ कितनेक ऐसा कहते हैं, कि चार योजन व एक के १८३ भाग में से ५१॥ भाग ($४\frac{५१॥}{१८३}$) क्षेत्र एक रात्रिदिन में उल्लंघकर सूर्य चाल चलता है. भगवंत कहते हैं कि इस कथनको मैं इसप्रकार कहता हुं कि दो योजन व एक साठिये अडतालीस भाग ($२\frac{४८}{६१}$) इतना क्षेत्र एक २ मंडल से एक रात्रि दिन में उल्लंघकर सूर्य चलता है ॥ १ ॥

सूत्र

आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा तत्थेगे एव माहंसु ता दो जोयणाइं अद्ध बयालीसंच तेत्तीसं सतभागे जोयणस्स एगमेगेणं रातिदिएणं विकंपइ२त्ता सूरिए चारं चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु॥ १ ॥एगे पुण एव माहंसु ता अड्डाइज्जाइं जोयणाइं, एगमेगणं रातिदिएणं विकंपइ२ता सूरिए चारं चरति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ २ ॥ एगे पुण एव माहंसु तिण्णितिभागूणाइं जोयणाइं एगमेगेणं रातिदिएणं विकंपइ२त्ता जाव चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ ३ ॥ एगेपुण एवमाहंसु, ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीयालीसंच तेत्तीसंसत्तभागे

अर्थ

दिन में कितना क्षेत्र विकंपन कर सूर्य चलता है अर्थात् अपने मंडल से कितना क्षेत्र जाता है ? उत्तर—इस विषय में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप सात पडिवृत्तियों कही है. तद्यथा—कितनेक ऐसा कहते हैं कि दो योजन व एक योजन के एक सो त्र्यासी भाग में से साढे एकतालीस भाग [२ $\frac{४१॥}{१८३}$] क्षेत्र एक रात्रि दिन में अपने मंडल से अन्य मंडल पर उल्लंघकर जाता है. २ कितनेक ऐसा कहते कि एक रात्रि दिन में सूर्य अढाइ (२॥) योजन क्षेत्र उल्लंघकर एक मंडल से दूसरे मंडलपर जाकर चाल चलता है ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि तीन योजन में तीसरा भाग कम क्षेत्र उल्लंघकर सूर्य चाल चलता है, ४ कितनेक ऐसा

अब्भंतरं, तच्चंमडलं उवसकमित्ता चारं चराति, ता जयाणं सूरिए अब्भंतरे तच्चंमंडलं उवसंकमित्ता चारं चराति तयाणं पंच जोयणाइं पण्णतीसंच एगट्ठीभागे जोयणस्स दोहिं रातिंदिएणं विकंपावातित्ता चारं चराति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठी भाग अहिया ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे दो दो जोयणाइं अडतालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स एगमेगेणं मंडले एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपमाणे २ सव्व वाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलातो उवसंकमित्ता सव्व बाहिरं मंडलं उवसं-

रात्रि में आभ्यन्तर तीसरा मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब आभ्यन्तर तीसरा मंडलपर रहकर सूर्य चाल चलता है तब पांच योजन व एकसाठिये पेंतीस भाग (५ $\frac{35}{61}$). जितना क्षेत्र दो रात्रि दिन में उल्लंघ कर चाल चलता है. तब एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन व चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इसी तरह से नीकलता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडल को संक्रमता हुवा २ $\frac{48}{61}$ योजन का क्षेत्र एक रात्रिदिन में उल्लंघता हुवा सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर रहकर चाल चलता है तब १८३ रात्रि दिन में ५१० योजन क्षेत्र

चारं चरंति अहितेति वदेज्जा ॥ १ ॥ तत्थणं कओ हेतुति वदेज्जा? अयणं जंबूदीवे-दीवे जाव परिक्खवेणं ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति, सेंनिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं दो जोयणाइं अडयालीसंच एगट्ठीभाग जोयणस्स एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपावातिता चारं चरंति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति दोहि एगट्ठीभाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठीभाग मुहुत्तेहिं अहिया. सेनिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि

अर्थ

प्रश्न-इस में क्या हेतु रहा है ? उत्तर-यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा यावत् परिधि वाला है. इस में जब सूर्य सब के आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य नया संवत्सर में प्रवेश करते प्रथम अहोरात्रिमें आभ्यंतर मंडलसे दूसरा मंडलपर रहकर चाल चलता है. तब दो योजन व एकयोजन के एकसठिये ४८ भाग (२.४८) सब एक रात्रिदिनमें उल्लंघकर चाल चलता है. उससमय उत्कृष्ट एकसठिये दोभाग कम अठारह मुहूर्तका दिन व दो भाग अधिक बारह मुहूर्तकी रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य दूसरी अहो

सेपविसमाणे सूरिए दोचांसि अहोरत्तांसि वाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरंति, ता जयाणं सूरिए वाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, तयाणं पंच जोयणाए पण्णतीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स दोहिं रातिंदिएणं विकंपावित्ता चारं चरति तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठी भाग मुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, चउहिं एगट्ठीभाग अहिते ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलातो मंडलं सकम माणे २ दो २ जोयणाइं अडयालसिंच एगसट्ठी भाग जोयणस्स, एगमेगं मंडले एगमेगे रातिंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वब्भंतरं मडलं उवसंकामित्ता चारं चरति ॥ जयाणं सूरिए सव्व

रहकर चाल चलता है. जब बाहिर से तीसरे मंडल पर रह कर चाल चलता है तब ५। ३५/६१ योजन भाग जितना क्षेत्र दो रात्रि दिन में अवगाहकर चाल चलता है. उस समय एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इसी तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडलपर रहता हुवा २ ४८/६१ योजन क्षेत्र एक २ रात्रिदिन में उल्लंघता हुवा सब से आभ्यंतर पहिले मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर से सब से आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है तब सब से बाहिर का मंडल छोडकर १८३ रात्रिदिन में ५१० योजन क्षेत्र उल्लंघकर

मूल — कमित्ता चारं चरति, तयाणं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तासिणं राइंदिय सतेणं पंचदसूत्तरे जोयण सते विकंपावइत्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे, एसणं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवासणे ॥ से पविसमाणे सूरिए दुच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं दो जोयणाति अडयालीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स एगेणं रातिंदिएणं विकंपावतित्ता चारं चरति, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, दोहिं एगट्ठी भाग ऊणे, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एगट्ठी भाग अहिया ॥

अर्थ — उल्लंघकर चलता है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छमास व प्रथम छमास का पर्यवसान हुवा ॥ २ ॥ अब वहां से आभ्यंतर मंडलों में प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरे छमास की अयन करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में बाहिर के अनंतर दूसरे मंडलपर रहकर चाल चलता है. तब दो योजन व एकसाठिये अडतालीस भाग $2\frac{48}{61}$ जितना क्षेत्र एक रात्रि दिन में उल्लंघकर चाल चलता है. उस समय एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व दो भाग अधिक बारह मुहूर्तका दिन होता है. वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में बाहिर से तीसरे मांडळ पर

आहितेति वदेज्जा ॥ एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता विसम चउरसं संठाण संठियाणं मंडलं संठिति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु ॥ २ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता समचउकोण संठियाणं मंडल संठिति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु॥३॥एगे पुण एव माहंसु ता विसम चउक्कोणं संठियाणं मंडलसंठिति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु ॥ ४ ॥ एगे पुणएवमाहंसु तासमचक्कवाल संठियाणं मंडल संठिति आहितेति वदेज्जा. एगे एव माहंसु ॥ ५ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता विसम चक्कवाल संठियाणं मंडल संठिति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ ६ ॥ एगे पुण एवमाहंसु ता चक्कद्ध चक्कवाल संठियाणं मंडलं संठिति आहितेति वदेज्जा, एगे

है २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि विषमचतुस्र संस्थान वाला मंडल है ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि समचतुष्कोन के संस्थान वाला मंडल है ४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि विषम चतुष्कोन संस्थान वाला मंडल है ५ कितनेक ऐसा हैं कि समचक्रवाल के संस्थान वाला मंडल है ६ कितनेक ऐसा कहते हैं विषम चक्रवाल संस्थान वाला मंडल है ७ कितनेक ऐसा कहते हैं, कि अर्धचक्रवाल के संस्थान वाला मंडल रहा हुवा है और कितनेक ऐसा कहते हैं कि छत्र के आकारवाला मंडल है. इस तरह अभिन्न भिन्न २ मतों से एक ही वस्तु की प्ररूपणा की. इस में अन्तिम प्ररूपणा

सूत्र

बाहिरातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं सव्व बाहिरं मंडलं पणिहाय एगमेगेणं तेसिय रातिंदियसतेणं पंचदसुत्तरे जोयणसए विकंपइत्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे, एसणं दोच्च छम्मासस्स पज्जवासणे, एसणं आइच्चे संवच्छरे, एसणं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवासणे ॥ इति पढमस्स छट्ठय चंदपण्णत्तिस्स पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ ६ ॥ * * * *

ताकहं ते मंडलसंठिति आहितेति वदेज्जा ॥ तत्थ खलु इमातो अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थएगे एवं माहंसु ता समचउरंस मंडलं संठियाणं मंडलं संठिति

अर्थ

चाल चलता है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. यह दूसरा छमास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह पहिला पाहुडे का छठा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १ ॥ ६ ॥ ० ० ०

अब सातवा अंतर पाहुडा मंडल के संस्थान आश्रीय कहते हैं. अहो भगवन् ! मंडल का संस्थान किस प्रकार कहा है ? उत्तर—इस कथन में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप आठ पडिवत्तियों कही है. तद्यथा—१. कितनेक ऐसा कहते हैं कि समचतुरस्र संस्थान वाला मंडल कहा

जायणसयं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं तिन्निय नवणउत्ति जोयण सते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ १ ॥ एगपुणे एवमाहंसु ता सव्वाविणं मंडलवया जोयणबाहल्लेणं एगं जोयण सहस्सं एगंच चउत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयण सहस्साइं चत्तारिवि उत्तर जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु॥ २॥ एगे पुण एवं माहंसु ता सव्वाविणं मंडलवया जोयण बाहल्लेणं, एगं जोयणं सहस्सं एगंच पण्णतीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं, तिण्णिय जोयण सहस्साइं चत्तारिय पंचुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥३॥ वयं पुण एवं वयामो ता सव्वाविणं मंडलं

के जाडे व एक हजार एकसो पेंतीस योजन के लम्बे चौडे हैं, और तीन हजार चारसो पांच योजन का परिधि वाले हैं. मैं इस कथन को इस प्रकार कहता हूं कि वे सब मंडल एक योजन के एक साठिये अडतालीस भाग के जाडे हैं. मंडल की लम्बाइ चौडाइ का कुच्छ नियम नहीं है ॥ १ ॥ इस का क्या कारन है ? उत्तर—यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा यावत् परिधि वाला है. इस में जब सूर्य सब से आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है तब वह मंडल एक योजन के एकसाठिये अडतालीस भाग का जाडा है और नन्यानवे हजार छ सो चालीस (९९६४०)

सूत्र

एवमाहंसु ॥ ७ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता छत्तागार संठाणं मंडल संठिति आहितेति वदेज्जा॥ एतेणं नाएणं णेयव्वं नोचेवणं इतरेहिं॥पढमस्स सत्तमं पाहुडं सम्मत्तं ॥१॥७॥ ता सव्वावि णं मंडलं च केवतियं बाहल्लेणं केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा, तत्थखलु इमातो तिन्नि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा-तत्थेगे एव माहंसु ता सव्वावि णं मंडलवया जोयण बाहल्लेणं एगजोयणं सहस्सं एगंचे तेत्तीसं

अर्थ

में भगवंतने अपना अभिप्राय कहा, अर्थात् चित्ते छत्राकार मंडल का संस्थान है. (अन्य स्थान अर्ध कविठ के फल जैसा कहा है वह अर्ध काविठ के फल का समविभाग उपर कीया हुवा और छत्र आकार बनाया है वही जानना परंतु अन्य इन सूत्रों से नहीं जानना. यह प्रथम पाहुडाका सातवा अंतरपाहुडा हुवा॥१॥७॥

अब आठवा अंतर पाहुडे में प्रमाण कहते हैं—प्रश्न—सब मंडल कितने जाडे हैं कितने लम्बे हैं, कितनी परिधि वाले हैं? उत्तर—इस में तीन पडिवृत्तियों कही है. इस में कितनेक ऐसा कहते हैं कि सबही मंडलं पृथक् २ एकेक योजन के जाडे हैं. एक हजार एकसो तेत्तीस योजन के लम्बे चौडे हैं, और तीन हजार तीनसो नन्यावे योजन की परिधि वाले हैं २ कितनेक ऐसा भी कहते है कि वे सब मंडल एक योजन के जाडे हैं, एक हजार एकसो चौत्तीस योजन के लम्बे चौडे हैं और तीन हजार चारसो दो (३०४०२) योजन की परिधि वाले हैं. ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि वे सब मंडलें एक योजन

भवति ॥ से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि अब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, जयाणं सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति,तयाणं सा मंडलवया, अडयालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणउति जोयण सहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसते पणतीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिन्नि जोयण सय सहस्साति पण्णरस सहस्साति

जब सूर्य दूसरे मंडल पर जाकर चाल चलता है तब वह दूसरा मंडल एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का जाडा है. और नन्यानवे हजार छ सो पेंतालीस योजन व एक योजन के एकसठिये ३५ भाग [९९६४५ $\frac{३५}{६१}$] इतना लम्बा चौडा है. आभ्यन्तर मंडल से दूसरा मंडल तक दो योजन व एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का अंतर है, इतना ही अंतर दूसरी तरफ है. इस से इन के दुगुने पांच योजन व एकसठिये ३५ भाग हुवा. यह पहिले मंडल की लम्बाइ चौडाइ में मीलाने से ९९६४५ $\frac{३५}{६१}$ योजन होवे. और ३१५१०६ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही. क्यों कि इस में ५ $\frac{३५}{६१}$ योजन की लम्बाइ चौडाइ की परिधि मीलाना. ५ $\frac{३५}{६१}$ की पूर्णांक में लाने से ३४० होवे,

सूत्र २

वया अडयालिसंच एगट्ठीभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, अणियया आयामविक्खंभेणं परिक्खे-
वेणं आहितेति वदेज्जा॥१॥ तत्थणं को हेतु वदेज्जा? ताअयणं जंबूद्दीवेदीवे जाव परिक्खेवेणं,
ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता, चारं चरति, तयाणं मंडलवया
अडयालीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणउति जोयण सहस्साइं छच्चचत्ताले
जोयण सते आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयण सहस्साति एगुणउति जोयणाइ परिक्खेवेणं॥
तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई,

अर्थ

योजन का लम्बा चौडा है, क्यों कि सब से आभ्यंतर का मंडल जम्बूद्वीप की जगती से पूर्व दिशा में १८० योजन अंदर है इतना ही पश्चिम दिशा में है दोनों मीलाने से ३६० योजन होते हैं. उक्त ३६० योजन एक लाख योजन के जम्बूद्वीप में से कम करते शेष ९९६४० योजन का मंडल लम्बाइ चौडाइवाला रहता है, इस की परिधि तीन लाख पन्नरह हजार निव्यासी ३१५०८९ योजन व्यवहार से जानना. निश्चय से ३१५०८९ योजन एक कोश, ७६८ धनुष्य, ५५ मंडल, ४ यव, ५ यूका, ६ लिख और एक बालाग्र के ६३०१७८ भाग में से ३४३९०२ भाग जितनी परिधि है. इस मंडल पर सूर्य आता है तब अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस मंडल से नीकलता हुवा सूर्य नवे संवत्सर में प्रवेश करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में आभ्यन्तर मंडल से अनंतर दूसरे मंडल पर जाकर चाल चलता है.

भवति ॥ से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमांसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, जयाणं सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति,तयाणं सा मंडलवया, अडयालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणउति जोयण सहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसते पणतीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिन्नि जोयण सय सहस्साति पण्णरस सहस्साति

जब सूर्य दूसरे मंडल पर जाकर चाल चलता है तब वह दूसरा मंडल एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का जाडा है. और नन्यानवे हजार छ सो पेंतालीस योजन व एक योजन के एकसठिये ३५ भाग [९९६४५ $\frac{35}{61}$] इतना लम्बा चौडा है. आभ्यन्तर मंडल से दूसरा मंडल तक दो योजन व एक योजन के एकसाठिये अडतालीस भाग का अंतर है, इतना ही अंतर दूसरी तरफ है. इस से इन के दुगुने पांच योजन व एकसाठिये ३५ भाग हुवा. यह पहिले मंडल की लम्बाइ चौडाइ में मीलाने से ९९६४५ $\frac{35}{61}$ योजन होवे. और ३१५१०६ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही. क्यों कि इस में ५ $\frac{35}{61}$ योजन की लम्बाइ चौडाइ की परिधि मीलाना. ५ $\frac{35}{61}$ को पूर्णांक में लाने से ३४० होवे,

सूत्र

वया अडयालिसंच एगट्ठीभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, अणियया आयामविक्खंभेणं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा॥ १॥ तत्थणं को हेतु वदेज्जा? ता अयणं जंबूदीवेदीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता, चारं चरति, तयाणं मंडलवया अडयालीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणउति जोयण सहस्साइं छच्चचत्ताले जोयण सते आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयण सहस्साति एगुणउति जोयणाइ परिक्खेवेणं॥ तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई,

अर्थ

योजन का लम्बा चौडा है, क्यों कि सब से आभ्यंतर का मंडल जम्बूद्वीप की जगती से पूर्व दिशा में १८० योजन अंदर है इतना ही पश्चिम दिशा में है दोनों मीलाने से ३६० योजन होते हैं. उक्त ३६० योजन एक लाख योजन के जम्बूद्वीप में से कम करते शेष ९९६४० योजन का मंडल लम्बाइ चौडाइवाला रहता है, इस की परिधि तीन लाख पन्नरह हजार निव्यासी ३१५०८९ योजन व्यवहार से जानना. निश्चय से ३१५०८९ योजन एक कोश, ७६८ धनुष्य, ४५ मंडल, ४ यव, ४ यूका, ६ लिख और एक बालाग्र के ६३०१७८ भाग में से ३४३९०२ भाग जितनी परिधि है. इस मंडल पर सूर्य आता है तब अगरह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस मंडल से नीकलता हुवा सूर्य नवे संवत्सर में प्रवेश करता हुवा प्रथम अहोरात्रि में आभ्यन्तर मंडल से अनंतर दूसरे मंडल पर जाकर चाल चलता है.

एगट्ठी भागे जोयणस्स अयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयण सयसहस्साइं पण्णरस सहस्साइं एगंच पणवीसं जोयण सयं परिक्खेवेणं,तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठी भाग ऊणे दुवालस मुहुत्ता राई भवति चउहिं आहिया॥एवं खलु एतेण उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतर मंडलाओ मंडलं उवसंकममाणे २ पंच जोयणाइं पणतीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स एगमेगेणं मंडले विक्खंभ वुड्ढि अभिवड्ढेमाणे अट्ठारस २ जोयणाइं परिक्खेवेणं

समय एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इस तरह नीकलता हुवा सूर्य एक मंडल से दूसरे मंडलपर जाता हुवा ५ ३५/६१ योजन की एक २ मंडल में लम्बाइ चौडाइ की वृद्धि करता हुवा और परिधि में अठारह योजन की वृद्धि करता हुवा सब से बाहिर के मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर चाल चलता है तब वह मंडल एक योजन के एकसठिये अडतालीस भागका जाडा है, एक लाख छ सो छासठ(१००६६०) योजन की लम्बाइ चौडाइ वाला है. इस में पहिला मंडल छोडकर शेष १८३ मंडलपर सूर्य चाल चलताहै. प्रत्येक मंडल में ५ ३५/६१ योजन की लम्बाइ चौडाइ की वृद्धि होती है. इस से ५ को १८३ से गुना करने से ९१५ योजन होवे और ३५ को १८३से गुना करने से ६४०५ भाग होवे उसे ६१ का भाग देने से १०५ होवे

सूत्र

एगंच छच्चुसरय परिक्खेवेणं तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, दोहिं एगट्ठिभागूणा, दुवालस मुहुत्ता राई दोहिं एगट्ठी भाग अहिया ॥ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चांसि अहोरत्तांसि अब्भंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए जाव चारं चरति, तयाणं सा मंडलवया अडयालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स णवणउत्ति जोयण सहस्साइं छच्चएकावणे जोयणसते णवय

अर्थ

करने से १०७८ होवे और इस को ६१ भाग से भाग देने से १७ योजन व शेष ३८२२८॥ है इसी को प्रथम मंडल की परिधि में मीलाने से ३१५१०६ योजन से कुछ अधिक होवे. इस समय यहां पर एकसठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन होता है और दो भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस तरह नीकलता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में आभ्यंतर तीसरे मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य आभ्यंतर तीसरे मंडल पर चाल चलता है तब वह तीसरा मंडल एक योजन के एकसाठिये अडतालीस भाग जाडा है और नन्यानवे हजार छ सो एकावन योजन एक योजन के एकसाठिये नव भाग ९९६५१$\frac{9}{61}$ जितना लम्बा चौडा है. दूसरे मंडल की लम्बाइ चौडाइ में ५ $\frac{35}{61}$ भाग मीलाने से इतने होते हैं. इस की परिधि तीन लाख पन्नरह हजार एक सो पचीस योजन से कुछ अधिक है (३१५१२५) इस

सूरिए दोच्चं छम्मासं आयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि वाहिराणंतरं मंडलं उवसं-कमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए जाव चारं चरति, तयाणं सा मंडलवया अडयालीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स वाहल्लेणं, एग जोयण सय सहस्सं छच्च चउ-प्पण्णे जोयण सते छव्वीसंच एगट्ठी भाग जोयणस्स आयामाविक्खंभेणं तिन्नि जोयण सयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोन्निय सत्ताणउए जोयण सते परिक्खेवेणं, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, दोहिंग एगट्ठी भाग ऊणे, दुवालस मुहुत्तेदिवसे भवति दोहिं एगट्ठी भाग अहिए ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चांसि अहोरत्तंसि वाहिरं तच्चं

बाहिर से अंतर दूसरे मंडलपर चाल चलता है. जब सूर्य दूसरे मंडलपर यावत् चाल चलता है तब वह मंडल एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का जाडा है और एक लाख छसो चौपन योजन व एकसठिये छब्बीस भाग १००६५४ $\frac{२६}{६१}$ का लम्बा चौडा है. अंतिम मंडल की लम्बाइ में से ५ $\frac{३५}{६१}$ भाग कम कीये और तीन लाख अठारह हजार दो सो सत्ताणवे ३१८२९७ योजन की परिधि है. बाहिर के मंडल की परिधि में से १८ योजन परिधि के कम कीये उस समय एकसठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व दो भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन

सुद्ध आभतरद्धमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, जयाणं सूरिए सव्व जाव चारं चराति, तयाणं मंडलवया अडयालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयण सयसहस्सं छच्चसट्ठीजोयण सते आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयण सयसहस्सति अट्ठारससहस्साति तिन्नियपण्णरमुत्तरं जोयणसते परिक्खेवेणं, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते रई भवति, जहण्णते दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ एसणं पढमे छम्मासे, एसणं जाव पज्जवासणे, ॥ २ ॥ से पविसमाणे

अर्थ

उसे उपर्युक्त२१८ में मीलाने से१०२० योजन की लम्बाइ चौडाइकी वृद्धि हुइ,इन प्रथम मंडल के९९६४० योजन में मीलाने से १००६६० होवे. यह अंतिम मंडल की लम्बाइ चौडाइ का प्रमाण जानना. अब परिधि का कहते हैं बाहिर के मंडलकी परिधि १००६६० योजन की है. इस का वर्ग १०१३२४३५६०० होवे,इस को दश गुना करने से १०१३२४३५६०००. होवे. इस का वर्ग मूल नीकाले तब ३१८३१५ योजन होवे इस की छेद राशी ५५३४०४ होती है और भागाकार राशी ६३६६२८ होती है इस से पन्नरह योजन से कुच्छ कम होवे; परंतु सूत्र कर्ताने व्यवहार नयसे पूर्ण पन्नरह लिया है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह प्रथम छमास व प्रथम छमास का पर्यवसान हुआ. ॥ २ ॥ वहां से प्रवेश करता हुआ सूर्य दूसरे छमास बनाता हुआ पहिली अहोरात्रि में

जोगणस्स, एगमेगेणं मंडले विक्खंभ वुड्ढिनिवुड्ढिमाणे २ अट्ठारस जोयणाइ परिक्खेवे वुड्ढिणिवुड्ढिमाणे २ सव्वब्भिंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चराति ॥ ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं जाव चारं चराति, तयाणं सा मंडलवया अडयालीसंच एगट्ठी भागे जोयणस्स वाहल्लेणं, णवणउतिं जोयण सहस्साइं छच्च चालिस जोयण सते आयामविक्खंभेणं, तिन्नि जोयण सय सहस्साइं पण्णरस सहस्साति एगूण उतिंच जोयण परिक्खेवेणं, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे, एसणं दोच्च

व चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन है. इस तरह अंदर प्रवेश करता हुवा सूर्य अनंतर मंडल पर आता हुवा प्रत्येक मंडल पर ५ $\frac{35}{61}$ योजन की लम्बाइ चौडाइ व अठारह योजन की परिधि कम करता हुवा सब से आभ्यन्तर मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सब से आभ्यन्तर मंडल पर चाल चलता है तब वह मंडल एक योजन के एकसाठिये अडतालीस भाग का जाडा है. उस की लम्बाइ चौडाइ ९९,६४० योजन की है और परिधि ३१५०८९ योजन की है. उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. यह दूसरा छमास हुवा, यह दूसरा छमास का पर्यवसान हुवा. यह आदित्य

सूत्र

मंडलं, उवसंकमित्ता, चारं चरति, ता जयाणं सूरिए बाहिरं जाव चारं चरति, तयाणं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठी भागे जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयण सयसहस्सं छच्च अडयाले जोयण बावण्णंच एगट्ठी भागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिन्नि जोयण सय सहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णिय अउणासी जोयणसए परिक्खेवेणं, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई चउहिं ऊणा, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, चउहिं अहिए ॥ एवं खलु एतेण उवाएणं से पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ, तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं जाव संकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसंच एगट्ठी भागे

अर्थ

होता है. वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में बाहिर के तीसरे मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के तीसरे मंडल पर रहकर चाल चलता है तब वह मंडल एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का जाडा है, एक लाख छ सो अडतालीस योजन व एकसठिये बावन भाग १००६४८ ५२/६१ योजन का लम्बा चौडा है, क्यों कि दूसरे मंडल की लम्बाइ में से ५ ३५/६१ योजन कम करते इतने शेष रहे. और परिधि तीन लाख अठारह हजार दो सो गुन्यासी ३१८२७९ योजन की है दूसरे मंडल की परिधि में से इतनी कम करे. यहां पर एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि

छम्मासस्स, पज्जवसाणे एसणं आदिच्चे संवच्छरे, एसणं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवासणे ॥ ३ ॥ तासव्वाविणं मंडलवया अडयालीसंच एगठि भागे जोयणस्स वाहल्लेणं, सव्वाविणं मंडलंतरिया दोजोयणाति विक्खंभेणं ॥ एसणं अद्धा एगतासिय सए स पडिपुण्णा पंचदसुत्तरं जोयण सए आहितेति वदेज्जा, ता अब्भनरातो मंडलवतातो बाहिरामडलवता, बाहिरामडलवतातो, अब्भतरा मंडलवया एसणं अद्धा पचदसुत्तरं जोयणसते, अडयालीसंच एगट्ठीभागे

संवत्सर व आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा ॥ ३ ॥ सब मंडल एक योजन के ६१ भाग में से ४८ भाग जितने जाडे हैं, सब मंडल का अंतर दो योजन का है. अर्थात् एक मंडल से दूसरे मंडल तक में दो योजन का अंतर रहा हुवा है. सूर्य उक्त सब मार्ग १८३ रात्रि दिन में पूर्ण करे. ५१० योजन में जावे. १८३ को दो योजन के अंतर से गुणाकार करने से ३६६ होवे और एकसठिये अडतालीस भाग से गुणने से ८७८४ की राशि बनाकर ६१ का भाग देने से १४४ हुए वह ३६६ में मीलाने से ५१० योजन होवे. आभ्यन्तर मंडल के अंदर के चरिमांत से बाहिर के मंडल के बाहिर के चरिमांत तक अथवा बाहिर के मंडल के बाहिर के चरिमांत से आभ्यन्तर मंडल के अंदर के चरिमांत तक सूर्य का मार्ग ५१० योजन का होता है, यहां पर सूर्य के प्रथम मंडल को जाडइ ग्रहण की है. आभ्यंतर

सूत्र

जोयणस्स अहिया, ता अब्भंतराए मंडलवयाते बाहिरा मंडलवत्ता बाहिराए मंडलवताए अब्भंतरा मंडलवता एसणं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयण सते तेरस एगट्ठीभागे जोयणस्स आहितेति वदेज्जा, अब्भंतराते मंडलवताते, बाहिराए मंडलवताए बाहिरा मंडलवया, अब्भंतरा मंडलवता अद्धा केवतियं आहितेति वदेज्जा, ता पंचदसुत्तरे जोयसते आहितेति वदेज्जा ॥ चंदपण्णत्तिस्स पढमस्स अट्ठमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ ८ ॥ इति पढमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १ ॥ × ÷

अर्थ

मंडल के बाहिर के चरिमांत से बाहिर के मंडल के अंदर के चरिमांत और बाहिर के मंडल के अंदर के चरिमांत से अभ्यंतर मंडल के बाहिर चरिमांत तक सूर्य का मार्ग ५०२ $\frac{13}{61}$ योजन का होता है. और अभ्यन्तर मंडल के अंदर के चरिमांत से व बाहिर के मंडल के अंदर के चरिमांत से बाहिर के मंडल के बाहिर के चरिमांत तक और अभ्यन्तर मंडल के बाहिर के चरिमांत तक सूर्य का मार्ग ५१० योजन का कहा है. यह पहिला पाहुडे का आठवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ८ ॥ यह पहिला पाहुडा समाप्त हुवा ॥ १ ॥

एगेपुण एव माहंसु, ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंताओ पादो सूरिए आगासातो तिट्ठइ सेणं इमं लोगं तिरियं करेति २ त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ २ त्ता अहे पडियागच्छति, अहे पुणरवि अवरभु पुरत्थिमिल्लातो लोगंतातो पातो सूरिए आगासातो तिउट्ठति, एगे एव माहंसु ॥२॥ एगे पुण एवमाहंसु ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंतातो पातो सूरिए पुढविपातो उतिट्ठइ, सेणं इमं लोगं तिरियं करेति २ त्ता, पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसति, एगे एवमाहंसु

में प्रकाश करके पश्चिम के चरिमांत में संध्या समय आकाश में प्रवेशकर अधो लोक में जाता है. वहां वह प्रकाश करता है. फीर पृथ्वी में से नीकलकर लोक के अंत में प्रभात में सूर्य आकाश में रहता है., इस तीसरे मत से यह लोक वर्तुलाकारवाला है एसा होता है. इस से सूर्य दिन को उपर के भाग में और रात्रिको नीचे के भाग में प्रकाश करता है. जहां प्रकाशता है वहां दिन और जहां अदृश्य होता है वहीं रात्रि. यह मत पुराण प्रसिद्ध व विदेशीय प्रजाका है. उक्त तीनों मत वाले में विशेषता है सो बताते हैं. पहिला का कथन है कि यह सूर्य का विमान नहीं है, देवता रूप सूर्य भी नहीं है परंतु किरणोंके संघातरूप गोलाकार है. लोकोंके अनुभव से प्रतिदिन पूर्वदिशा के आकाश में उत्पन्न हो सर्व स्थान प्रकाश करता है. दूसरे

सूत्र

॥ द्वितीय प्राभृतम् ॥

ता कहंते तिरच्छगाति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—तत्थ एगेएव माहंसु-ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति,सेणं इमं लोगं तिरियं करेति २ त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसति एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगेपुण एव माहंसु ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंताओ पातो सूरिए आगासातो तिट्ठति, सेणं इमंलोयं तिरियं करेति २ त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विहरति, एगे एवमाहंसु ॥ २ ॥

अर्थ

अब दूसरा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! सूर्य की तीर्च्छीगति किस प्रकार की है ? उत्तर—अहो शिष्य! इस में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप आठ पडिवृत्तियों कही है. उन में से कितनेक ऐसा कहते हैं कि पूर्वदिशा के लोक के चरिमांत से प्रभात में सूर्य आकाश में नीकलता है. वह तीर्च्छे लोक में प्रकाश करके पश्चिम दिशा के लोक के अंत में संध्या समय में विनाश को प्राप्त होवे, २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि पूर्वदिशा के लोक के चरिमांत से प्रभात में सूर्य आकाश में रहता है. वही सूर्य तीर्छे लोक में प्रकाश करके पश्चिमदिशा के लोकांत में संध्या समय में आकाश में विचरे. ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि पूर्वदिशा के लोक के चरिमांत में प्रभात में सूर्य आकाश में, रहता है. वह तीर्च्छा लोक

अणुपविसति, एगे एवमाहंसु ॥ ६ ॥ एगेपुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंतातो पातो सूरिए आउकायंसिउत्तिट्ठंति, सेणं इमं लोगं तिरियं करेति २ त्ता पचत्थिमिल्लंसि लोगंसि सायं सूरिए आउकाय अणुपविसइ २त्ता, अहे पडियागच्छति २त्ता पुणरवि अवरभू पुरत्थिमिल्लातो लोगंतातो पातो सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठंति, एगे एवमाहंसु ॥ ७ ॥ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंताओ बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाति, बहूइं जोयणसहस्साति उड्ढं दूरं उप्पतित्ता एत्थणं पातो सूरिए आगासातो उत्तिट्ठंति, सेणं इमं दाहिणड्ढलोगं तिरियं

करता है. और वहां अधोलोक में प्रकाश करता है. फीर वहां से पूर्व के लोकांत में प्रगट होता हुवा सूर्य पृथ्वी में से नीकलता है ६ कितनेक एसा कहते हैं. कि पूर्वदिशा के लोकांत में प्रातःकाल में उदय होता हुवा सूर्य अप्काय-समुद्र में से नीकलता है और तीच्छा लोक में प्रकाश करके संध्या समय पश्चिम दिशा के लोकांत में समुद्र में प्रवेश कर अस्त होजाता है. ७ कितनेक ऐसा कहते हैं. कि पूर्व के लोकांत से प्रातः समय में सूर्य अप्काय के समुद्र समुद्र में से नीकलता वह तीच्छालोक में प्रकाश करता हुवा संध्या समय पश्चिम के लोकांत में समुद्र में प्रवेश करता है. वहां नीचे जाकर नीचे के लोक से पूर्व के लोक के अंत में प्रगट होकर सूर्य अप्काय में से नीकलकर रहता है ८ कितनेक ऐसा कहते कि पूर्व के

॥ ४ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता पुरत्थिमिल्लातो लोगंतातो पाओ सूरिए पुढवीआतो उतिट्ठइ सेणं इमं लोगं तिरियं करति २ त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंसि सायं सूरिए पुढविकायं अणुपविसति २ त्ता पुढवि अहे पडिगच्छति, अहे २ पुणरवि अवरभू पुरत्थिमिल्लातो लोगंताओ पादो सूरिए पुढवियातो उत्तिट्ठति, एगे एव माहंसु ॥ ५ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता पुरत्थिमिल्लाओ लोगंताओ पादो सूरिए आउकाए उत्तिट्ठति सेणं इमं लोगं तिरिच्छं करेति २ त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोगंसि सायं सूरिए आउकायं

का कथन यह है कि यह देवतारूप सूर्य तथाविध जगत के स्वभाव से आकाश में उत्पन्न होता है और अस्त होता है और तीसरे का कथन यह है कि यह देवतारूप सूर्य सदैव स्थित पृथ्वीपर प्रदक्षिणा करता है. अब आगे और भी तीन मत आकाशोदय व समुद्रोदय के कहते हैं. ४ अब चतुर्थ मत वाले कितनेक अन्यतीर्थि ऐसा कहते हैं कि पूर्वदिशा के लोकांत के चरिमांत से प्रभात करता हुवा सूर्य पृथ्वी में से नीकलता है और तीर्च्छे लोक में प्रकाश करता हुवा पश्चिमदिशा के लोक के अंत में संध्या समय पृथ्वी में ही अस्त होता है. कितनेक ऐसा कहते हैं कि पूर्व दिशा के लोकांत में प्रातःसमय में सूर्य पृथ्वी में से नीकलकर तीर्च्छा लोक में प्रकाश करता हुवा संध्या समय में पश्चिमदिशा के लोकांत में पृथ्वी में प्रवेश

उप्पातिच्चा, एत्थणं पातो दुवे सूरिया आगासातो उत्तिट्ठंति, तेणं इमाति दाहिणुत्तराति जंबूद्दीव भागाति तिरियं करेति २ त्ता पुरत्थिम पच्चत्थिमाइं जंबूद्दीवस्स भागाति तामेवराताती पच्चत्थिम पुरत्थिमाइं जम्बूद्दीव भागाइं तिरियं करेति २ त्ता दाहिणुत्तराति जंबूद्दीव भागाइं तामेवरातातो तेण इमाइं दाहिणुत्तराति पुरत्थिम पच्चत्थिमाति जंबूद्दीव भागाइं तिरियं करेति २ त्ता जंबूद्दीवस्स २ पाईण पडीणायताए तंचेव, एत्थणं पातो दुवे सूरिया आगासातो उत्तिट्ठंति ॥ इति वीय पाहुडस्स पढमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ २ ॥ १ ॥ * * *

कून, वायव्यकून, नैऋत्यकून व ईशानकून. इन चारकून में इस रत्नप्रभा पृथ्वी के समरमणीय भूमिभाग से ८०० योजन ऊंचे जावे तब दो सूर्य प्रकाश करते हैं. व आकाश में उदित होते हैं. वे दोनों में एक सूर्य दक्षिणदिशा के विभाग में प्रकाशकरे और दूसरा उत्तरदिशा के विभाग में प्रकाशकरे तब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम विभाग में रात्रि होवे. और जब पूर्वपश्चिम विभाग में प्रकाशकरे तब उत्तर दक्षिण विभाग में रात्रि होवे. इस तरह वे दोनों सूर्य जम्बूद्वीप के दक्षिण उत्तर विभाग में रात्रि व पूर्वपश्चिम विभाग में प्रकाश करते हुवे जम्बूद्वीप की पूर्वपश्चिम रेखा वगैरह प्रभात करते हुवे दोनों सूर्य आकाश में प्रकाश करते हैं. यह दूसरा पाहुडा का पहिला अंतर पाहुडा हुवा ॥ २ ॥ १ ॥ * *

करेति २ त्ता, उत्तरद्धं लोगं तामेवराती सेणं उत्तरद्धं लोगंतिरियं करेइ २ त्ता, दाहिणद्धं लोगं तामेवरातो सेणं इमाति दाहिणुत्तरद्ध लोगाइं तिरियं करेइ २ त्ता पुरात्थिमिल्लातो लोगताओ बहूतिं जोयणतिं तंचेव जाव उड्ढं उप्पतित्ता दूरं, एत्थणं पातो सूरिए आगासातो उत्तिट्ठति एगे एव माहंसु ॥ ८ ॥ वयं पुण एवं-वयामो—ता जंबूद्दीवस्स २ पाईण पडीणायताए उदिणादाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्विसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमंसिया उत्तरपच्चात्थिमंसिया चउभाग मंडलंसि इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो अट्ठजोयणसयाति उड्ढं

अर्थ लोक के अंत से बहुत योजन, बहुत सो योजन बहुत सहस्र योजन ऊंचा जाकर प्रभात समय सूर्य आकाश में रहा हुवा तीच्छी दक्षिणार्ध में प्रकाश करता हुवा उत्तरार्ध में जाता है. जब दक्षिणार्ध में दिन होता है तब उत्तरार्ध में रात्रि होती है और जब उत्तरार्ध में दिन होता है. तब दक्षिणार्ध में रात्रि होती है. इस तरह दक्षिणार्ध व उत्तरार्ध दोनों में तीच्छी प्रकाश करता हुवा पूर्वदिशा के लोकांत से बहुत योजन, बहुत सो योजन व बहुत सहस्र योजन दूर आकाश में प्रकाश करता हुवा रहता है. इस कथन को हम ऐसे कहते हैं. कि इस जंबूद्वीप नामक द्वीप में पूर्व पश्चिम की रेखा व उत्तर दक्षिण की जिव्हा अर्थात् सूर्य के विमान को ग्रहण करने के मंडल को १२४ भाग से छेदकर चार भाग करना. तद्यथा—अग्नि

अयं दोसो ॥ १ ॥ तत्थणं जे ते एव माहंसु मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्ण कलं निव्वट्टेति, तेसिणं अयं दोसो जेणंतरेण मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्ण कलं निव्वट्टेति, एवतियं चणं अद्ध-पुरतो गच्छति, पुरओ आगच्छमाणे २ मंडल कालं परिहावेति, ते सिणं अयं दोसो ॥ तत्थ जे ते एवमाहंसु ता मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्णकलं निव्वट्टेति एएणं णएणं णेयव्वं नो चेवणं इतरेणं णेयव्वं ॥ इति बीय पाहुडस्स तितियं पाहुड. सम्मत्त ॥ २ ॥ २ ॥

* *

ता कवतियं खेत्तं एगमेगेण मुहुत्तेणं सूरिए गच्छति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु

उन को यह दोष है. जो सूर्य अभ्यन्तर मंडल पर रहकर कर्ण कला की हानि करता है वह अद्धा लोक में अर्ध मंडल पूरता हुवा जावे और अर्ध मंडल पूरता हुवा आवे. यह मंडल से काल प्रतिपूर्ण कर ॰ ई. इसी से अन्यतीर्थि को यह दोष है. इन में जो ऐसा कहते हैं कि एक मंडल से दूसरे मंडलपर जाता हुवा सूर्य कर्ण कला की हानि करता है इसी कारण से उन का मत नहीं है. यहां कोई अन्यन्याय से नहीं होता है. यह दूसरा पाहुडा का दूसरा अंतर पाहुडा हुवा ॥ २ ॥ २ ॥

अब तीसरा अंतर पाहुडा कहते हैं—अहो भगवन् ! आपके मत से सूर्य एकेक मुहूर्त में कितना क्षेत्र जाता है ? अहो शिष्य ! इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणारूप चार पडिवत्ति कही है अर्थात् इस में भिन्न २ चार मत हैं. १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक २ मुहूर्त में सूर्य छह हजार योजन चलता है, २ कितनेक

मूत्र

ता कहते मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा तत्थ एगे एव माहंसु ता मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेदघाते सकमति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्ण, कला निवद्देति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु ॥ २ ॥ तत्थणं जेते एव माहंसु ता मंडलातो मंडल संकममाणे २ सूरिए भेदघातं सकमति तेसिणं अयं दोसो जेणंतरेणं मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए भेदघाओ संकमति, एव तियं चणं अद्धं पुरतोण गच्छति, पुरओ आगच्छमाणे मंडल कालं परिहावेति, तेसिणं

अर्थ

अब दूसरा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन्! एक मंडल से दूसरे मंडलपर सूर्य किस प्रकार चलता है ? अहो शिष्य ! इस विषय में दो पडिवृत्तियों कही हैं. कितनेक ऐसा कहते हैं कि सूर्य मंडलपर चलता हुवा भेद घात करता हुवा चले २ कितनेक अन्यतीर्थि ऐसा कहते हैं कि मंडल २ पर चलता हुवा सूर्य कर्णकला की हानि करता हुवा चले. उक्त दोनों में से जो ऐसा कहते कि मंडल २ पर संक्रमता हुवा भेद घात कर चले उन को यह दोष है. अंतर मंडल २ पर रहकर जो सूर्य भेद घात से चलता है वह लोक में अर्ध मंडल पूरता हुवा जावे और अर्ध-मंडल पूरता हुवा आवे. और जो अंतर मंडल २ पर पूरता हुवा कर्ण कला की हानि करता हुवा चले ऐसा जो अन्यतीर्थि कहते हैं

सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति आहितेति वदेज्जा ॥ ४ ॥ १ ॥ तत्थ खलु जे ते एव माहंसु छछ जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तेणं एव- माहंसु-ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते । वसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति, तंसिंचणं दिवसंसि एगं जोयण सयसहस्सं अट्ठ जोयण सहस्साति ताव खेत्ते पण्णत्ते ॥ ता जयाणं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता

७२ हजार योजन का कहा है. बारह को छ गुने करने से ७२ होते हैं २ जो ऐसा कहते हैं कि सूर्य एक मुहूर्तमें पांच हजार योजन चलता है उनका कथन इसहेतुसे है कि जब सूर्य सबसे आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तका दिन जघन्य बारह मुहूर्तकी रात्रि होती है. इस समयमें ताप क्षेत्र ९०हजार योजनकाहै. अठारहको पांचसे गुणनेसे९० हजार योजन होतेहैं. जब सूर्य बाहिरके मंडलपर चलता है तब अठारह मुहूर्त की रात्रि व बारह मुहूर्तका दिन होता है इससमय ताप क्षेत्र६० हजार योजन का है. बारह को पांच से गुणने से ६० होते हैं. जो ऐसा कहते है कि एक २ मुहूर्त में सूर्य चार २ हजार योजन चलता है उन का कथन इस हेतु से है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर चलता है तब अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है, उस समय ताप क्षेत्र बहत्तर हजार योजन का है क्योंकि

इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा तत्थ एगे एवमाहंसु ता छ छ जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एवमाहंसु ता पंच २ जोयणं सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति आहिताति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ २ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता चत्तारि २ जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ३ ॥एगेपुण एवमाहंसु ता छावि पंचवि चत्तारिवि जोयण सहस्साइं

अर्थ

ऐसा कहते हैं कि एक २ मुहूर्त में सूर्य पांच २ हजार योजन चलता है. ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक २ मुहूर्त में सूर्य चार २ हजार योजन चलता है ४ और कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक २ मुहूर्त सूर्य छ हजार, पांच हजार और चार हजार योजन भी चलता है. इस में जो ऐसा कहते हैं कि सूर्य एक २ मुहूर्त में छ २ हजार योजन चलता है. उन का कथन इस हेतु से है कि जब सूर्य सब से आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस समय एक लाख आठ हजार योजन का तापत् क्षेत्र कहा है. एक मुहूर्त में छ २ हजार। योजन चलने से १८ मुहूर्त में एक लाख आठ हजार योजन चले और सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर चलता है, तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि और बारह मुहूर्त का दिन होता है. इस समय में ताप क्षेत्र

भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ तेसिं चणं दिवसंसि णउतिं जोयण सहस्साति तावं खेत्ते पण्णत्ते ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडलं जाव चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए जाव राई भवति जहण्णिए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥तेसिं चणं दिवसंसि सट्ठि जोयण सहस्साति ताव खेत्ते पण्णत्ते तयाणं पंच२ जोयण सहस्साति एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति॥२॥तत्थणं जे ते एवमाहंसु चत्तारि२ जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति,तेणं एवमाहंसु ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं जाव चारं चरति तयाणं दिवस राति तहेव ,तेसिंचणं दिवसंसि बावत्तरि जोयण सहस्साति तावखेत्ते पण्णत्ते,ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडल जाव चारं चरति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ तेसिंचणं दिवसंसि अडयालीसं जोयण सहस्साति ताव

मंडल पर चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. इस समय ९१ हजार योजन का ताप क्षेत्र होता है. उदय व अस्त के मुहूर्त में सूर्य की छ २ हजार योजन की गति होती है. इस लिये दोनों मुहूर्त के बारह हजार योजन, बीच के १६ मुहूर्त रहे उस में प्रत्येक बीच के

उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णये दुवाल मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ तेसिं चणं दिवसंसि बावत्तरि जोयण सहस्सातिताव खेत्ते, पण्णत्ते, तयाणं छछ जोयण सहस्साति एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति ॥ १ ॥ तत्थ जे ते एवमाहंसु ता पंच जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति तेणं एवमाहंसु ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं उत्तम जाव दिवसे

चार हजार को अठारह गुना करने मे बहत्तर हजार होते हैं. और जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर रहता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तकी रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. इस समय अडतालीस हजार योजन का ताप क्षेत्र होता है, चार हजार को बारह गुना करने से इतने होते हैं. अब जो ऐसा कहते हैं कि सूर्य छ, पांच व चार हजार योजन एक २ मुहूर्त में चलता है उनका कथन इस हेतु से है कि सूर्य उदय पाता हुवा अस्त होता हुवा बहुत शीघ्र गति से चलता है. और तब एक २ मुहूर्त में छ २ हजार योजन चलता है. जब मध्यम क्षेत्र में सूर्य रहता है तब उस की गति मध्यम रहती है इस समय एक २ समय में पांच २ हजार योजन चलता है, और जब मध्य बीच के क्षेत्र पर चलता है तब उस की गति मंद होती है, इस समय एक २ मुहूर्त में चार २ हजार योजन चलता है. यह कथन किस हेतु से है ? उत्तर–यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप यावत् परिधिवाला है. इस में सूर्य जब सब से आभ्यन्तर

मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ तेसिंचणं दिवसंसि एकाणउति जोयण सहस्साति ताव खेत्ते पण्णत्ते ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडलं जाव चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ तेसिं चणं दिवसंसि एगट्ठी जोयण सहस्साइं ताव खेत्ते पण्णत्ते, तयाणं छत्ति पंचाति चत्तारित्रि जोयण सहस्साति एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, एगे एव माहंसु ॥ ४ ॥ २ ॥ वयं पुण एवं वयामो, तासाति रेगायं पंच २ जोयणसहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, आहितेति वदेज्जा ॥ तत्थणं को हेउति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबूद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवे

४ हजार और शेष नव मुहूर्त के ४५ हजार यों सब मीलाकर १२×४×४५=६१ हजार योजन होते हैं ॥ २ ॥ इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं कि सूर्य एक २ मुहूर्त में पांच हजार योजन से कुछ अधिक चलता है. इस में क्या हेतु है ? यह जम्बूद्वीप यावत् परिधिवाला है. जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर रहता है तब सूर्य पांच हजार दो सो एकावन योजन व एक योजन के साठिये गुनतीस भाग (५२५१ २९/६०) इतना एक मुहूर्त में चलता है. क्यों कि दो सूर्य एक अहोरात्रि में एक संपूर्ण मंडल पर चलते हैं. इस से दोनों सूर्य के ६० मुहूर्त होते हैं और प्रथम मंडल की परिधि व्यवहार नय से

सूत्र

खेत्ते पण्णत्ते, तयाणं चत्तारि २ जोयण सहस्साति सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति॥तत्थणं जेते एव माहंसु, ता छावि पंचवि चत्तारिवि जोयण सहस्साइ सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तेणं एव माहंसु ता सूरिए उग्गमण मुहुत्तंसि अत्थमणं मुहुत्तंसि य सिग्घंगाति भवति, तयाणं छच्छ जोयण सहस्साति एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ॥ मज्झिम तावखित्ते समासाते मज्झिमगाति, भवति, तयाणं पंच २ जोयण सहस्साति एगमेगणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिम मज्झिम तावखेत्तं संपत्ते सूरिए मंदा गई भवति, तयाणं चत्तारि जोयणसहस्साति एगमेगेण मुहुत्तेणं गच्छति॥ तत्थणं को हेउ वदेज्जा? ताअयण्णं जंबूद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भं-तरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसते अट्ठारस

अर्थ

मुहूर्त की चार हजार योजन और शेष पन्नरह मुहूर्त मे पांच २ हजार योजन. यों सब मीलाकर १२+४+७५=९१ हजार योजन हुवे. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है इस में ताप क्षेत्र ६१ हजार योजन का होता है. उदय काल व अस्त काल यों दो मुहूर्त के १२ हजार योजन मध्य बीचके मुहूर्त के

सूत्र

त्तेणं, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतर मंडलं जाव चारं चरति, तयाणं पंच जोयण सहस्साति दोण्णिय एकावण्णे जोयणसते एगूणतीसं सठि भागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति॥ तयाणं इहं गतस्स मणुसस्स सतालिसाते जोयणसहस्साति दोहि तेवट्ठीहिं जोयण सतेहिं एकवीसा सट्ठिभागे जोयणस्स चक्खुफासं हव्वमागच्छति॥ तयाणं उत्तम जाव दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ ३ ॥ से निक्खममाणे सूरिए, णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जयाणं सूरिए अब्भंतराणं मंडलं उवसं-

अर्थ

३१५०८९ योजन की है उसको ६० का भागदेने से ५२५१ योजन पूर्ण आवे शेष २९ रहते, इस समय यहां भरत क्षेत्र के मनुष्य को ४७२६३ २१/६० योजन दूर से सूर्य देखने में आता है. प्रथम मंडलपर अठारह मुहूर्त का दिन है और एक २ मुहूर्त में ५२५१ २९/६० भाग चले, इस से इन को १८ से गुना करने से एक दिनमें ९४५२६ ४२/६० योजन चले, इस के अर्ध भाग से दृष्टि गोचर होने से इस आधे ४७२६३ २१/६० योजन होवे. उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥३॥ अब वहां से नीकलता हुवा सूर्य नविन संवत्सर में प्रवेश कर के प्रथम अहो रात्रि मे आभ्यंतर मंडल से अनंतर दूसरे मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य दूसरे मंडल पर रहकर चाल चलता है, तब पांच हजार दो सो

चारं चरति, ता जयाणं अब्भंतरं तच्चं मंडलं जाव चारं चरति तयाणं पंच जोयण सहस्साति दोण्णिय बावण्णेजोयणसते पंचसट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति, तयाणं इहगयस्स मणुसस्स सतालीसाए जोयण सहस्सेहिं छण-

१७२१७८६१६ की राशि को ३६६० से भाग देने से ४७१७२ योजन पूर्ण आवे और ३५२६ शेष रहे. उसे साठ से गुणाकार करने से २०९७६० की साठिया राशि हुइ, इसे ६० का भाग देने से ५७ भाग होवे, शेष ११४० साठिया की राशि हुइ. इस के ६१ ये भाग करने से ६१ से गुणाकार करना जिस से ६९५४० होवे, उसे ३६६० का भाग देने से १९५ पूर्ण आवे. इसी कारन से ४७१७९ योजन साठिये ५७ भाग और साठिये एक के एकसाठिये १९ भाग इतना दूरसे भरतक्षेत्र के मनुष्य को सूर्य देखने मे आवे. यह निश्चय नय से कहा. परंतु व्यवहार नय से ४७१७९ योजन साठीया १ भाग और ६१ या २१ भाग. प्रथम मंडल ४७२६३ $\frac{२१}{६०}$ योजन दूर से सूर्य चक्षुदृष्टि में आवे और अंतिम १८४वे मांडले पर ३१८३१॥ योजन दूर से दृष्टिगोचर आवे. इसे प्रथम मंडल के योजन में से बाद करे तो शेष १५४११ $\frac{२५}{६०}$ रहे. १८३ अहोरात्रि में इतना भेद होने से १८३ से भाग देना. जिस से ८४ योजन साठिये १९ भाग और एक साठीये के एक सठीये भाग करे उस में से ३८ भाग प्रत्येक मंडलपर कम दृष्टिगोचर आवे. पहिले मंडलपर ४७२६३ $\frac{२१}{६०}$ योजन दूर से दृष्टि में आता है दुसरे मंडल

जोयस्स सट्ठिभागंच एगट्ठीया छेत्ता एकूणवीसाए चुण्णिया भागेहिं चक्खु फासं हव्व मागच्छति ॥ तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे दोहिं एगट्ठीभागेहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ता राई दोहिं अहिया ॥ से निक्खममाणे सूरिए दोचंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चं मंडलं जाव

अर्थ

५७ भाग और १८३ के ११५ चुरणी ये भाग होवे. यह एक अहो रात्रि का प्रमाण बतलाया. अब एक २ मुहूर्त में कितना शीघ्र गति से चले सो बताते हैं. १७ साठिया भाग को १८३ से गुनाकार करने से ३१११ होवे, उस में २१५ मीलना तब ३२२६ होवे. एक अहोरात्रि के तीस मुहूर्त होने से तीस का भाग देना, इस से १०७ भाग १८३ के आये और शेष के १६ भाग रहे. इस से एक मुहूर्त में १८३ के १०७ भाग और तीस के १६ भाग इतना योजन सूर्य चले. इस समय भरतक्षेत्र के मनुष्य को ४७१७९ $\frac{५७}{६०}$ योजन व एक साठ भाग को फीर ६१ का भाग देकर उस में से १९ भाग में इतनी दूर से सूर्य दृष्टि गोचर में आवे. यहां पर एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त का दिनमान है. उस में के अर्ध भाग से सूर्य दृष्टि गोचर में आवे. इस से १८ को ६१ का गुना करते १०९८ होवे उसमें से दो भाग कम करते १०९६ होवे इस को आधा करने से ५४८ होवे और इस मंडलकी परिधि ३१५१०७ योजन की है इस से इन की साथ गुना करने से १७२६७८६३६ योजनकी राशि हुइ एक मांडला ६० मुहूर्त का है इस से उस को भी ६१ से गुना करने से ३६६० होवे. अब मगध की

वाहिरं जाव चरं चरति, तयाणं पंच जोयण सहस्साति तिण्णिय पंचुत्तरे जोयणसते पणरस सट्ठीभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणंगच्छति, तताणं इहगतस्स मणुसस्स एकतीसाए जोयण सहस्सेहिं अट्ठहिं इक्कतीसेहि जोयणसतेहि, तीसाएय सट्ठीभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति,तयाणं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्त दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे एसणं पढम छमासस्स पज्जवासणे,॥६॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छमास अयमाणे पढमंसि

४२ भाग और १८३ के ४३ भाग सूर्य दूर से दृष्टि में आता है. इस समय एक साठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन और चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है.॥८॥ अब वहां से नीकलता हुवा सूर्य अभ्यंतर एक पीछे एक मंडलपर रहता हुवा व्यवहार नय से एक योजन के साठिये अठारह भाग निश्चय से एक योजन के साठिये १७ भाग और १८३ के ११८ चूर्णिये भाग गति में एक मुहूर्त में बढाता हुवा और ८४ योजन साठिये १९ भाग व ६१ ये ३८ चूर्णिये भाग की यहां भरत क्षेत्र के मनुष्य को चक्षुस्पर्श में कम करता हुवा सब से बाहिर के १८४ वे मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर रहकर चाल चलता है तब ५३०५। योजन एक २ मुहूर्त में चलता है. और यहां पर भरत क्षेत्र में रहे हुवे मनुष्य को ३१८३१॥ योजन दूर से दृष्टि में आता है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह पहिला छमास व पहिला छमास का पर्यवसान हुवा. ॥९॥

सूत्र

उत्ति जोयणस्स तेत्तीसाएय २ ट्ठीभागे जोयणस्स सट्ठीभागं एगट्ठिया छेत्ता दोहिं चुण्णिया भागेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छति,तयाणं अट्ठारस जात्र दिवसे चउऊणा, दुवालस राई चउ अहिया ॥ एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए, तयाणं तराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठीभागे जोयणस्स एगमेगेणं मंडले मुहुत्तगति अभिवड्ढेमाणे २ चुलसिं सायरेगं जोयणाइ पुरिसछायं निवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिर मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए सव्व

अर्थ

पर ८४ योजन साठिये १९ एक साठिये ३८ चूर्णिये भाग बाद करने ४७१७९ योजन साठिये एकभाग व एकसाठिये २३ चूर्णिये भाग दूर से दृष्टि में सूर्य आवे. इस समय एकसाठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन और दो भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ ४ ॥ वहां से नीकलता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में आभ्यंतर तीसरा मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य अभ्यंतर तीसरे मंडलपर रहकर चाल चलता है तब एक २ मुहूर्त में ५२५२ $\frac{?}{६०}$ योजन चलता है. उस समय यहां रहे हुवे भरत क्षेत्र के मनुष्य ४७०९६ $\frac{३३}{६०}$ योजन और साठिये एक भाग के एकसठिये दो चूर्णिये भाग इतना दूर से सूर्य देख सकते हैं. यहांपर तीसरा मंडल की परिधि ३१५१२५ योजनकी व्यवहार नय से है और एक मुहूर्त में सूर्य का गमन व दृष्टिगोचर भी व्यवहार नय से लिया है. निश्चय नय से ५२५२ योजन साठिये चार भाग और १८३ के ४७ भाग सूर्य एक मुहूर्त में चलता है. और ४७०९६ योजन साठिये

साएय सट्ठीभागं,सट्ठीभागंच एगसट्ठिए छेत्ता सठिए चुण्णे भागेहिं चक्खुफासं हव्वमा-
गच्छति; तयाणं अट्ठारस राई भवति दोहिंऊणा,दुवालस मुहुत्ते दिवसे दोहिं अहिए॥७॥से
पविसमाणं सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडल उवसंकमिता चारंचरति,ता जयाणं
सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं जाव चारं चरति, तयाणं पंच जोयण सहस्साति तिण्णिय
चउजोयसए एग ऊणयालीसंच सठीभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति,

वे मंडलपर दृष्टि गोचर होवे. इस समय साठिये दो भाग कम अठार मुहूर्त की रात्रि और दो भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होवे. ॥ ७ ॥ वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में बाहिर के तीसरे मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के तीसरे मंडलपर रहकर चाल चलता है तब एकमुहूर्त में ५३०४ योजन चलता है यह व्यवहार नय से हुवा. निश्चय नय से ५३०४ योजन साठिये ३९ भाग और १८३ के १३६ चूर्णिये भाग. बाहिर के दूसरे मंडलपर सूर्य ५३०४ साठिये ५७ भाग और १८३ के ४८ चूर्णिये भाग चलता है. उस में से एक योजन के साठिये १७ भाग व १८३ के ११९ भाग मंद चलने से बाद करते इतने योजन चलता है. उस समय यहां भरत क्षेत्र के मनुष्य को ३२००१ योजन साठिये ४९ भाग और एक भाग के एकसाठिये भाग के तेवीस भाग इतना दूर से सूर्य दृष्टि में आवे. यह व्यवहार नय से हुवा. अब निश्चय नय से ३२००० योजन साठिये नव भाग व एकसाठिये १९

अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, जयाणं सूरिए बाहिराणंतरे मंडलं जाव चारंचरंति तयाणं पंच जोयण सहस्सेहिं तिण्णिय चउ जोयणसते सत्ता वण्णं चउसट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तयाणं इहगतस्स मणुसस्स एकतीसाए जोयण सहस्सेहिं णवाहिय जोयसतेहिं सोलसुत्तर जोयणसये एगुणपत्ताली-

वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरे छमास की अयन बनाता हुवा पहिली अहोरात्रि में बाहिर के अनंतर दूसरे अर्थात् १८३ वे मंडलपर सूर्य रहकर चाल चलता है. जब सूर्य बाहिर के दूसरे मंडलपर रहकर चाल चलताहै तब ५३०४ योजन एक मुहूर्तमें सूर्य चलता है तब भरतक्षेत्र में रहे हुवे मनुष्यको ३१९१६ योजन और एकसठिये६० चूर्णिया भाग इतना दूर से सूर्य दृष्टिमें आवे. यह कथन व्यवहार नय से कहा है. निश्चय नय मे ५३०४ योजन साठिये ५७ भाग और १८३के ६८ भाग चले, क्यों कि बाहिर के १८४ वे मंडलपर ५३०५ योजन एक मुहूर्त में चलता है. आभ्यन्तर मंडल पर प्रवेश करने मंद गति होती है. एक मंडल से दूसरे मंडल पर जाते एक योजन के साठिये १७ भाग और १८३ के ११९ भाग मंद गति से चलता है, यह प्रथम के मंडल की गति में से बाद करते ५३०४ योजन साठिये ५७ भाग और १८३ के ६८ भाग होवे. दृष्टिगोचर प्रथम मंडल पर ३१८३१ योजन होवे उस में ८४ योजन साठिये १९ भाग व एकसाठिये १८ भागकी वृद्धि करने से ३१९१६ योजन साठिये गुनपचास भाग और६१ ये ३८ चूर्णिये भाग१८३

सूत्र
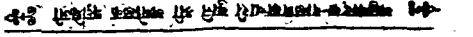
कमित्ता चारं चरति, तयाणं पंच जोयण सहस्साति, दोण्णिय एकावण्णे जोयणसए एगूणतीसंच एगसट्ठीभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छाति, तयाणं इहगतस्स मणुसस्स सीतालीसाए जोयण सहस्सेहिं दोहिय तेवट्ठीहिं जोयण सतेहिं एगवीसाएय सट्ठीभागेहिं जोयणस्स चक्खुफासं हव्व मागच्छाति, तयाणं उत्तम कट्ठपत्त उक्कोसं अट्ठारस मुहुत्त दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति॥ एसणं दोच्चे छमासे एसणं दोच्च जाव पज्जवासणे ॥ एसणं आइच्चे संवच्छरे, एसणं आइच्च संवच्छरस्स पज्जवासणे॥ इति. वितीयस्स ततीयं पाहुडं सम्मत्तं ॥२॥३॥ इति वितियं पाहुडं सम्मत्तं ॥२॥

अर्थ

हुवा सब से आभ्यंतर मंडलपर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से आभ्यंतर मंडलपर चाल चलता है उस समय ५२५१ [illegible] योजन एक २ मुहूर्त में चलता है. और यहां भरत क्षेत्र में रहे हुवे मनुष्य को ४७२६३ [illegible] योजन दूरसे सूर्य दृष्टि गोचर होता है. इस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तका दिन और जघन्य बारह मुहूर्तकी रात्रि होवे. यह दूसरा छमास व दूसरा छमासका पर्यवसान हुवा. यह आदित्य संवत्सर व आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह दूसरा पाहुडा का तीसरा अंतर पाहुडा हुवा. ॥ २ ॥ ३ ॥ यह दूसरा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ २ ॥

तयाणं इहगयस्स मणुसस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए सट्ठीभागेहिं जोयणसट्ठिभागंच एगसट्ठीया छेत्ता तेवीसाएय चुण्णिया भागेहिं चक्खुफास हव्वमागच्छति. तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति चउहिं ऊणा दुवालस मुहुत्ते दिवसे चउहिं अहिया॥८॥ एवं खलु एतेण उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतर मंडलातो मंडलं संकममाणे २ अट्ठारसट्ठी भागे जोयणस्सए किंचि ऊणे एगमेगेमंडलं मुहुत्तगति णिवुड्डेमाणे २ सातिरेगाति चउरासी पुरिसच्छाए अभिवड्डेमाणे २ सव्वब्भतरं मडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसं-

भाग होवे. क्यों की बाहिर के तीसरे मंडलपर सूर्य ३१९१५ योजन, साठिये४९ भाग और एकसाठिये ३८ भाग इतना दूर से दृष्टि गोचर आता है उस में ८४ योजन साठिये १९ भाग व एकसाठिये १८ भाग दृष्टि गोचर में दूर से ३२००० योजन साठिये नव भाग व ६१ ये १५ भाग हुवे. उस समय एकसाठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व उक्त चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. ॥८॥इसी तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य आभ्यंतर मंडल २ पर रहता हुवा प्रत्येक मंडल से किंचित् कम एक योजन के साठिये अठारह भाग अर्थात् साठिये १७ भाग व १८३ भाग के १९५ चूर्णिये भाग एक२ मुहूर्त में गति में मंद होता हुवा और ८४ योजन से कुच्छ अधिक भरत क्षेत्र के मनुष्य के चक्षु दृष्टि का विषय बढाता

सत्त समुद्दे चंदिम सुरिया जाव पभासंति जाव वदेज्जा, एगे एवमाहंसु॥४॥एगेपुण एवमाहंसु ता दसदीवे दससमुद्दे चंदिमा जाव पभासंति वदेज्जा. एगे एवमाहंसु ॥ ५ ॥ एगेपुण एवमाहंसु दुवालसदीवे दुवालससमुद्दे चंदिम जाव पभासंति वदेज्जा, एग एवमाहंसु ॥ ६ ॥ एगेपुण ता बयालीसंदीवे बयालीसंसमुद्दे चंदिम जाव पभासंति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥७॥एगेपुण बावत्तरिदीवे बावत्तरि समुद्दे चंदिम सूरिया जाव पभासंति, वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ ८ ॥ एगेपुण ता बयालीसं दीवसयं बयालीसं समुद्द

हैं कि चंद्र सूर्य बीयालीस द्वीप बीयालीस समुद्र में प्रकाश करते हैं, ८ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य बहुत्तर द्वीप बहुत्तर समुद्र में प्रकाश करते हैं, ९ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य एक सो बयालीस द्वीप एक सो बयालीस समुद्र में प्रकाश करते हैं, १० कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक सो बहुत्तर द्वीप एक सो बहुत्तर समुद्र में चंद्र सूर्य प्रकाश करते हैं, ११ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य बयालीस हजार द्वीप बयालीस हजार समुद्र में प्रकाश करते हैं और १२ कितनेक ऐसा कहते हैं कि बहुत्तर हजार द्वीप बहुत्तर हजार समुद्र में चंद्र सूर्य प्रकाश करते हैं. ॥१॥इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं कि यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप यावत् परिधिवाला है. इस जम्बूद्वीप की चारों तरफ जगती (कोट) है.

॥ तृतीय प्राभृतम्. ॥

सूत्र

ता केवतियं ते चंदिम सरियातो भवति उज्जोविति तविति पभासेति आहितति वदेज्जा? तत्थ खलु इमातो दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एवमाहसु ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंद सूरिया जाव पभासंति आहितेति वदेज्जा,एगे एवमाहंसु ॥१॥ एगेपुण एवमाहंसु ता तिण्णिदीवे तिण्णि समुद्देचंदिम सूरिया जाव आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ २ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता अट्ठदीवे अट्ठसमुद्दे चंदिम जाव पभासंति, आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ३ ॥ एगेपुण एवमाहंसु-ता सत्तदीवे

अर्थ

अब तीसरा पाहुडा कहते हैं. प्रश्न—अहो भगवन् ! चंद्रमा सूर्य से कितने क्षेत्र में होवे, उद्योत करे, तपे व प्रकाश करे ? उत्तर—अहो शिष्य ! यहां अन्य तीर्थि की प्ररूपणा रूप बारह पडिवृत्तियों कही हैं. तद्यथा—यहां कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्रमा सूर्य एक द्वीप व एक समुद्र में यावत् प्रकाश करते हैं २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य तीनद्वीप तीनसमुद्र में यावत् प्रकाश करतेहैं, ३ कितनेक ऐसा कहते हैं. चंद्र सूर्य आठ द्वीप आठ समुद्र में प्रकाश करते हैं, ४ कितनेक ऐसा कहते हैं चंद्र सूर्य सात द्वीप सात समुद्र में प्रकाश करते हैं ५ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य दश द्वीप दश समुद्र में प्रकाश करते हैं ६ कितनेक ऐसा कहते हैं कि बारह द्वीप बारह समुद्र में प्रकाश करते हैं, ७ कितनेक ऐसा कहते

जाव परिक्खेवे सेणं एगाए जगतीए सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, साणं जगति अट्ठ जोयणायं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं जहा जंबुद्दीव पण्णत्तीए, तहेव निरवसेसं जाव चोद्दससालिला सयसहस्सा छप्पणंच सलिला सहस्सा तवुति भवंतिति मक्खायं॥ जंबुद्दीवे पंचक्कभागं ( ) ठिए आहिएति वदेज्जा ॥ ता जयाणं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णिए चक्कभागातो भासंति उज्जोवंति पभासंति तंजहा एगेवि सूरिए एगदीवड्ढयं पंच चक्कभागे जाव पभासंति ॥ एगेवि सूरिए एग दिवड्ढय पंचचक्क भागे जाव भासंति ॥ तयाणं

एक भाग में मकाश करे. इस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होवे ॥ २ ॥ अब यहां पर प्रत्येक मंडल पर कितना २ मकाश करे सो नीकालने की विधि—जम्बूद्वीप के चक्रवाल के पांच भाग करे जिन में से एक भाग के ७३२ भाग की कल्पना करे तो पांच भाग के ३६६० भाग होवे इसमें से पहिले मंडल पर एक सूर्य देढ भाग उद्योत करे इससे देढ भाग के १०९८ भाग हुवे वैसे ही दूसरे सूर्य का १०९८ भाग मीलाने से २१९६ भाग उद्योत करे. शेष १४६४ भाग अंधकार कार है. अर्थात् दोनों बाजु दोनों सूर्य के ७३२ भाग अंधकार होवे. अब सब के बाहिर के मंडलपर सूर्य एकभाग उद्योत करे जिसके ७३२ भाग होवे और देढ भाग अंधकार करे जिस के १०९८ भाग होवे

सूत्र

सयं चंदिम पभासंति जाव वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ९ ॥ एगेपुण बावत्तरि दीवसयं बावत्तरि समुद्द सयं जाव एवं वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ १० ॥ एगेपुण बयालीसं दीव सहस्सं बयालीसं समुद्द सहस्सं चंदिमा पभासंति जाव वदेज्जा एगे एवं माहंसु॥ ११ ॥एगेपुण बावत्तरि दीवसहस्सं बावत्तरि समुद्द सहस्सं चंदिमा ओभासंति जाव वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ १२ ॥ १ ॥ वयंपुण एवं वयामो तां अयणं जंबूद्दीवे दीवे

अर्थ

यह जगती आठ योजन की ऊंची है यों जिस प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में जगती का कथन कीया, यह सब जानना यावत् इस जम्बूद्वीप में चौदह लाख छप्पन हजार नदियों हैं. इस जम्बूद्वीप की परिधि के पांच भाग करना. इस जम्बूद्वीप में जब दोनों सूर्य सब से आभ्यन्तर मंडल पर चलते हैं तब उस पांच भाग में से तीन भाग में उद्योत करते हैं, तपते हैं. यावत् प्रकाश करते हैं. एक सूर्य पांच भाग में से डेढ भाग प्रकाश करता है, वैसे ही दूसरा सूर्य भी डेढ भाग प्रकाश करता है. दोनों मीलाकर तीन भाग प्रकाश करते हैं. और दो भाग में अंधेरा रहता है. इस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब दोनों सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल चलते हैं तब जम्बूद्वीप की परिधि के पांच चक्र भाग करे उस में से दो भाग में उद्योत करे यावत् प्रकाश करे और तीन भाग में अंधकार करे. एक सूर्य पांच के एक भाग में प्रकाश करे और दूसरा सूर्य भी पांच के

॥ चतुर्थ प्राभृतम्. ॥

ता कहंते सेय आतिसंट्ठिए आहिएति वदेज्जा?तत्थ खलु इमातो दुविहा संठाण संठिइ पण्णत्ता तंजहा–चंदय सूरिया संठिती, ताव खत्तं संट्ठियं ॥ ता कहते चंदिय सूरिय संठिइ आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एव माहंसु ता समचउरस संठियाणं चंदिम सूरिया सठिती आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु॥१॥ एगे पुण ताविसमचउरसं संठियाणं चंदिम सूरियं संट्ठिति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ २ ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं समचउक्कोण

अब चौथा पाहुडा कहते हैं.—अहो भगवन् ! श्वेत वर्ण वाला ताप क्षेत्र का कौनसा संस्थान कहा है ? उत्तर—इस के दो प्रकार से संस्थान कहे हैं-१ चंद्र सूर्य का संस्थान और २ दूसरा ताप क्षेत्र का संस्थान इस में चंद्रमा सूर्य का संस्थान किस प्रकार कहा है ? उत्तर—इस की सोलह पडिवृत्तियों कही है. १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य के विमान समचतुस्र संस्थान वाले हैं, २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि विपम चतुस्र संस्थान वाले चंद्र सूर्य के विमान हैं, ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि समचतुष्कोन के संस्थान वाले हैं, ४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि विपम चतुष्कोन संस्थान वाले हैं, ५ कितनेक ऐसा कहते हैं कि समचक्र वाल संस्थान वाले हैं, ६ कितनेक ऐसा कहते हैं. की विषम चक्रवाल संस्थान वाले हैं ७ कितनेक ऐसा कहते हैं कि अर्धचक्रवाल के संस्थान वाले हैं ८ कितनेक ऐसा कहते हैं कि छत्र के आकार

सूत्र

उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसा अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ ता जयाणं एते दुवे सूरिया सव्व बाहिरं जाव चरति, तयाणं जंबूद्दीव दीवस्स दुन्नि पंच चक्कवाल भागे जाव पभासंति तंजहा एगेवि सूरिए एगं पंचचक्क भागे जाव भासंति जाव पभासंति, एगेवि एगं पंचचक्कभागाओ भासंति जाव पभासंति ॥तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, जहण्णियां दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ २ ॥ इति ततियं पाहुडं सम्मत्तं ॥ ३ ॥

अर्थ

इस की एक २ बाजु पर ७४२ भाग होवे. दोनों सूर्य मीलकर १४६४ भाग उद्योत करे २१०९८ भाग में अंधकार रहे. पहिले अभ्यंतर मंडल पर एक सूर्य का १०९८ भाग का उद्योत और ७३२ भाग का अंधकार और सब से बाहिर के मंडलपर ७३२ भाग का उद्योत व १०९८ भाग का अंधकार. इस से १०९८ में से ७३२ भाग बाद करते ३६६ भाग उद्योत के कमी रहे. इतना फरक १८३ मंडल में होता है इस से इस को १८३ का भाग देने से दो भाग उद्योत की हानि प्रत्येक मंडल पर होवे. जैसे एक सूर्य का कहा वैसे ही दूसरा सूर्य का जानना. यह तीसरा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

संठियाणं चंदिया ॥ १४ ॥ ताहामिहतलं संठियाणं चंदिमा ॥ १५ ॥ एगे पुण एव माहंसु वालग्गणेतिया संठियाणं चंदिम सूरिए संठिति आहिया ॥ १६ ॥ जे एव म हंसु ताःसमचउरंस संठाणं चंदिम सूरियं संठिति आहितेति वदेज्जा, एवं एएणं पाएण णेयव्वं,णो चेवणं इतरेहिं,॥१॥ता कहंते ताव खेत्ते संठिइ आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाता सोलस पडिवत्तिओ पण्णत्ताओ, तंजहा—तत्थ एगे एव माहंसु तागेहागार संठियाणं ताव खेत्तं संठिति, आहितेति वदेज्जा, एवंताओ चेव

गोला के संस्थान वाले हैं. यहां इन का विवरण करते हैं. सब काल में सुखमासुखम काल युग की आदि है. उस दिन श्रावण की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा आती है. उसदिन उदय होता हुआ एक सूर्य पूर्वदक्षिण-अग्निकून में चले और दूसरा सूर्य पश्चिमउत्तर-वायव्यकून में चले. एक चंद्र पूर्वउत्तर —ईशान कूनमें चले, और दूसरा चंद्र पश्चिमदक्षिण—नैऋत्यकून में चले. इसलिये युग की आदिमें सूर्यका समचतुस्र संस्थान है. और वहां से नीकलते हुवे वर्तुलाकार से नीकले इस से चंद्र सूर्य के संस्थान अर्ध कविठ के आकारवाले हैं तथा चन्द्र सूर्य के विमान अर्ध कवीठ के आकारवाले हैं॥२॥अब तापक्षेत्र का संस्थान कहते हैं. अहो भगवन्! ताप क्षेत्र का संस्थान किस प्रकार कहा? उत्तर—इसमें अन्य तीर्थी की प्ररूपणा रूप सोलह पडिवृ-

संठियाणं चंदिमा ॥ ३ ॥ ता विसमचउक्कोण संठियाणं चंदिमा ॥ ४ ॥ ता स... चक्कवाल संठियाणं चंदिमा ॥ ५ ॥ ता विसमचक्कवाल संठियाणं चंदिमा ॥ ६ ॥ ताचक्कद्ध चक्कवाल संठियाणं चंदिमा ॥ ७ ॥ ता छत्तागार संठियाणं चंदिमा ॥८॥ ता गेहागार संठियाणं चंदिमा ॥ ९ ॥ तागेहावण संठियाणं चंदिमा सूरियाणं संठिति आहितेति वदज्जा ॥ १० ॥ तापासाय संठियाणं चंदिमा ॥ ११ ॥ तागोपुर संठियाणं चंदिमा ॥ १२ ॥ ता पिच्छाघर संठियाणं चंदिमा ॥ १३ ॥ तावलभि

वाले हैं ९ कितनेक ऐसा कहते हैं कि गृह के आकार वाले हैं १० कितनेक ऐसा कहते हैं कि गृहापण [दूकान] के आकारवाले हैं ११ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रासाद के आकारवाले हैं १२ कितनेक ऐसा कहते हैं कि गोपुर के आकारवाले हैं १३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रेक्षगृह के आकारवाले हैं १४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि वलभी (वर्णकुडा) के आकारवाले हैं १५ कितनेक ऐसा कहते हैं कि मीहत के आकारवाले हैं और १६ कितनेक ऐसा कहते हैं कि वालकपोत बालकों को क्रीडा करने की नावा के आकारवाले चंद्र सूर्य के विमान हैं. इन सोलह में से जो ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य के विमान समचतुस्र संस्थान से रहे हुए हैं इन का ही कथन ग्रहण करना; परंतु अन्य का नहीं ग्रहण करना. जैन मत में चंद्र सूर्य के विमान अर्ध कबिठ के आकारवाले कहे हैं और चंद्र के मंडल आश्री समचतुस्र

एवमाहंसु॥१४॥एगेपुण तासेयाणग संठियाणं ताव खेत्तं संठिइ एगे एवं माहंसु॥१५॥ एगेपुण सेयणपिट्ठ संठियाणं ताव खेत्तं संठिइ, आहितेति वदज्जा ॥ एग एव माहंसु ॥ १६ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता उद्ध मुहकलंबूया पुप्फ संठियाणं ताव खेत्तं संठिति आहितेति वदेज्जा, अंतो संकुडा वाहिं विच्छिण्णा अंतो वट्टा वाहिं पहूला अंतो अंकमुहुत्त संठिया वाहिं सत्थीमुह संठिया, उभओपासिती से दुवे वाहाओ अवट्ठियाओ भवंति, पणयालीसं २ जोयण सहस्साति आयामेणं दुवे वाहा, तीसेणं दुवे वाहातो अण-

कितनेक ऐसा कहते हैं सींचानक के आकार वाला तापक्षेत्र है और १६ कितनेक ऐसा कहते हैं कि सींचान के पृष्ठ भाग के आकार वाला ताप क्षेत्र है. ॥ २ ॥ मैं इस कथन को इस प्रकार करता हूं कि ऊर्ध्वमुख कलंबु (धतुरे) के पुष्प के संस्थान वाला तापक्षेत्र है. वह अंदर से मेरुपर्वत की पास सकडा और वाहिर लवण समुद्र में चौडा है. वाहिर समुद्र की तरफ विस्तीर्ण अंदर वर्तुलाकार. वाहिर चौडा अंदर अंकमुहूर्त के संस्थान वाला. जैसे कोइ मनुष्य मेरु की तरफ पृष्ठ कर बैठे और समुद्रकी तरफ पालखी कर बैठे तब उस की पालखी का संस्थान मेरु की तरफ सकडा व समुद्र की तरफ चौडा है ऐसा ही सूर्य के तापक्षेत्र का संस्थान जानना. उस तापक्षेत्र की मेरु पर्वत के दोनों तरफकी दोनों वांये पैंतालीस२ हजार योजन की लम्बी है चौडाइ अनवस्थित है. अहो भगवन्! यह किस हेतु से कहा है? उत्तर—यह

सूत्र

अट्ठ पडिवत्तीओ णेयव्वातो जाव ता वालग्ग णेतिय संठियाणं तावखेत्तं संठिती आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥८॥ एगे पुण ता जं संठिएणं जंबूद्दीवे दीवे ता संठियाणं ताव खेत्ते संट्ठिइ आहितेति वदेज्जा एगे एवं माहंसु ॥९॥ एगेपुण एव माहंसु ता भरहे वासे संठिएणं ता वखेत्ते एगसंठियाणं आहितेति वदेज्जाएगेएव माहंसु ॥१०॥ता उज्जाणं संठियाणं ताव खेत्ते॥११॥ निज्जाण संठियाणं ताव खेत्ते ॥१२॥ ता एगंनिसह ताव संठियाणं ताव खेत्ते ॥ १३ ॥ दुहुतो निसह संठियाणं ताव खेत्तें संठिति, एगं

अर्थ

त्तियों कही. ९ कितनेक ऐसा कहते हैं गृद के आकारवाला चंद्र सूर्य का ताप क्षेत्र है इस ही प्रकार ऊपर कहे अनुसार नवमी से सोलवी तक आठ पडिवृत्तियों कहना यावत् वालगपोत बालकों को क्रीडा की नावा के आकार वाला चंद्र सूर्यका प्रकाश है, ९ कितने ऐसा कहते हैं जम्बूद्वीप संस्थानवाला तापक्षेत्र है१.० १०कितनेक ऐसा कहते हैं, कि भरतक्षेत्र संस्थानवाला है,११ कितनेक ऐसा कहते हैं उद्यानके संस्थानवाला तापक्षेत्र है, १२ कितनेक ऐसा कहते हैं कि नगर के निकलने के संस्थान वाला ताप क्षेत्र है, १३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि रथ को एक तरफ एक बैल जोता हुवा होवे वैसा संस्थान वाला ताप क्षेत्र है, १४ कितनेक ऐसा कहते हैं, कि रथ को दोनों तरफ बैल जोते हुवे होवे वैसा संस्थान वाला ताप क्षेत्र है १९

णरस परिक्खेवेणं तंजहा-परिक्खेवेतिहिं गुणिया दसहिं भागेहिं भागे हीरमाणे २ एसणं परिक्खेव विसेस अहितेति वदेज्जा ॥ तीसेणं सव्व बाहिरिया बाहा लवणसमुद्दं तेणं चउणवतिं जोयणसहस्साइं अट्ठयं अट्ठसट्ठे जोयणसते चत्तारि दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं॥तीसेणं परिक्खेवे विसेसे कतो आहिया ?ता जेणं जंबुद्दीवस्स परिक्खेवे तिहिं गुणिया दसहिं भागेहीरमाणे २ एयणं परिक्खेव विसेसे आहितेति वदेज्जा॥तीसेणं ताव खेत्ते केवतियं आयामेणं आहितेति वदेज्जा, ता अट्ठोत्तरि जोयणसहस्साति तिण्णिय

लवण समुद्र में ९४८६८ $\frac{4}{10}$. योजन की परिधि है. जंबूद्वीप की परिधि व्यवहार नय से ३१६२२८ योजन की है इस को तीगुना करने से ९४८६८४ इस को दश का भागदेवे तब ९४८६८ $\frac{4}{10}$ योजन होवे. अब तापक्षेत्र की लम्बाइ चौडाइ कहते है. प्रश्न-यह तापक्षेत्र की लम्बाइ कितनी कही है ? उत्तर अठहत्तर हजार तीनसो तेत्तीस योजन व एक योजन के तीन भाग में एक भाग ७८३३३ $\frac{1}{3}$ योजन तापक्षेत्र लम्बाइ कही है. जिसमें से जम्बूद्वीप के ४५००० हजार योजन ग्रहण करना क्यों कि एकलाख योजनका जम्बूद्वीप लम्बा है जिस में से दश हजार योजन का मेरु पर्वत बाद करते ९० हजार योजन रहे, उस के दो भाग करने से ४५ हजार योजन होवे. और लवण समुद्र ३३३३ $\frac{1}{3}$ लम्बा है क्यों कि लवण समुद्र दो लाख योजन का है जिस के छठे भाग में ताप क्षेत्र है इस से ३३३३ $\frac{1}{3}$ योजन होवे सो

वट्टियाओ भवंति ॥ ता सव्वब्भंतरियाचेव वाहा सव्व वाहिरिया चेव वाहा ॥ तत्थ कोहेंऊ वदेज्जा ? ता अयणं जंबूद्दीवेदीवे जाव परिक्खेवेणं ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चराति. तयाण उद्धमुह कलंबुया पुप्फ संठियाणं ताव खेत्तं संठिति, अहितेति वदेज्जा, अंतो संकुडा वाहिंवित्थिण्णा जाव सव्ववाहिरया चेव वाहा॥ तीसेणं सव्वब्भंतरिया वाहा मंदरपव्व तेणं णव जोयण सहस्साति चत्तारिय छासीए जोयणसतेया णवयदस भागे जोय-

जम्बूद्वीप यावत् परिधि वाला है इन में जब सूर्य सब से आभ्यंतर के मंडलपर रहकर चाल चलता है तब ऊर्ध्व मुख कलंबुक के संस्थान वाला तापक्षेत्र कहा है. अंदर संकडा बाहिर चौडा यावत् सब के बाहिर के बांय मेरु पर्वत की पास ९४८६॥ योजन की परिधि है. मेरुपर्वत की समभुमि की जो परिधि है उस का वर्ग नीकला के दश से गुणा करना फीर इस का वर्ग नीकाल कर जो आवे उस तीन गुनी करके दश के भाग से छेदनी. क्योंकी सब से अभ्यंतर मंडलपर जब सूर्य रहता है तब तीन भाग में उद्योत और दो भाग में अंधकार रहता है. इस से वर्ग तीन गुना कर के दश में छेदनी जिस से यथोक्त तापक्षेत्र का प्रमाण आवे. मेरुपर्वत समभूमिपर १०००० योजन का चौडा है इस की परिधि करने वर्ग १००००००००योजन होवे इसकी दश गुना करने से सो क्रोड होवे. इसका वर्ग मूल नीकाले तब ३१६२३ योजन की परिधि होवे. इस को तीन गुना करने ९४८६९ योजन होवे उसे दश का भाग देने से ९४८६॥ योजन होवे. अब लवण समुद्र में बाहिर परिधि का प्रमाण कहते हैं. सब से बाहिर की वाहा

तंपरिक्खेवे दोहिं गुणिया दसहिं भागे हीरमाणे २ एसणं परिक्खेवे विसेसे आहितेति वदेज्जा॥तीसेणं सव्व बाहिरिया बाहा लवण समुदं तेणं तेवट्ठिं जोयण सहस्साति दोण्णिय पणयाले जोयणसते छचदसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं तीसेणं परिक्खेवेवि- सेसं कतो आहितेति वदेज्जा? ता जेणं जंबूद्दिवस्स दीवस्स परिखेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणिया दसहि भागे हीरमाणे २ एसणं परिक्खेव विसेसे आहितेति वदेज्जा ॥ तीसेणं अंधकारं केवतियं आयामेणं आहितेति वदेज्जा? ता अट्ठत्तरं जोयण सहस्साति तिण्णि

चक्रवाल क्षेत्र अनुसार दश भाग में के तीन भाग प्रकाश करे तब दो भाग अंधकार रहे, यों दोनों सूर्यके मिलाकर दश के छ भाग प्रकाश ४ भाग अंधकार होवे, इस लिये मेरु की परिधि ३१६२३ योजन की है इस को दुगुनी करे तब ६३२४६ होवे, इस को दश का भाग देवे ६३२४ ६/१० प्राप्त होवे इतना अंधकार क्षेत्र जानना. अंधकार की पंक्ति में बाहिर की बाहा लवण समुद्र के अंत में त्रेसठ हजार दो सो पैंतालीस योजन और एक योजन के दश भाग में के छ भाग जितनी है. प्रश्न—किस तरह इतनी बाहा कही? उत्तर— इस जम्बूद्वीप की परिधि को दुगुनी करके दश के भाग से छेदना. जैसे इस जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है इसे दुगुनी करने से ६३२४५६ होवे, इसे दश का भाग देने से ६३२४५ ६/१० योजन

सूत्र

तेच्चिय जोयणसते एगेति भागे जोयणस्स आयामेणं आहितेति वदेज्जा ॥ ३ ॥ तयाणं किं अंधकार संठिया आहितेति वदेज्जा ? ता उद्धमुहं कलंबुया पुप्फसंठाया आहितेति वदेज्जा, अतो संकुडा बाहिं वीच्छिण्णा, तंचेव जाव तीसेणं दुवे बाहाओ अणवट्ठिताओ भवंति, ता सव्वब्भंतरिया चेव बाहा, सव्वबाहिरिया चेव बाहा॥ तीसेणं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदर पव्वातेणं छ जोयणसहस्साति तिण्णिय चउवीसे जोयणसते, छच्दस भागे जोयणस्स परिक्खेवेणं॥ तिसेणं परिक्खेवेणं विसेसकतो आहिया? ता जेणं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेव

अर्थ

उपर्युक्त भाग में मीलाने से ४८३३३ $\frac{1}{3}$ योजन होवे ॥ ३ ॥ अब संस्थान कहते हैं. प्रश्न—उस समय अंधकार का क्या संस्थान है ? उत्तर—ऊर्ध्व मुख कलंबु का संस्थान कहा है, वह अंदर से सकडा बाहिर से चौडा यावत् पूर्वोक्त प्रकार. उस को दोनों बांहा अनवस्थित होती है. सब से आभ्यन्तर की बांहा व सब से बाहिर की बांहा. उस में सब से आभ्यन्तर की बांहा मेरु पर्वत की पास छ हजार तीन सो चौवीस योजन और एक योजन के दश भाग में से छ भाग ६३२४ $\frac{6}{10}$ योजन की परिधिवाली है. किस तरह आभ्यन्तर बांहा की परिधि कही ? जो मेरु पर्वत की परिधि है उस से दुगुनी परिधि करना क्यों कि सर्व आभ्यन्तर मंडल में चार काल में एक सूर्य जम्बूद्वीप के चक्रवाल में प्रवेश करते हुवे प्रोक्त

तंपरिक्खेवे दोहिं गुणिया दसहिं भागे हीरमाणे २ एसणं परिक्खेवे विसेसे आहितेति वदेज्जा॥तीसेणं सव्व बाहिरिया बाहा लवण समुद्दतेणं तेवट्ठिं जोयण सहस्साति दोण्णिय पणयाले जोयणसते छच्चदसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं तीसेणं परिक्खेवेवि-सेसं कतो आहितेति वदेज्जा? ता जेणं जंबूद्दिवस्स दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणिया दसहि भागे हीरमाणे २ एसणं परिक्खेवे विसेसे आहितेति वदेज्जा ॥ तीसेणं अंधकारं केवतियं आयामेणं आहितेति वदेज्जा? ता अट्ठत्तरं जोयण सहस्साति तिण्णि

चक्राल क्षेत्र अनुसार दश भाग में के तीन भाग प्रकाश करे तब दो भाग अंधकार रहे, यों दोनों सूर्यके मीलाकर दश के छ भाग प्रकाश ४ भाग अंधकार होवे, इस लिये मेरु की परिधि ३१६२३ योजन की है इस को दुगुनी करे तब ६३२४६ होवे, इस को दश का भाग देवे ६३२४ ६/१० प्राप्त होवे इतना अंधकार क्षेत्र जानना. अंधकार की पंथ म बाहिर की बाहा लवण समुद्र के अंत में त्रेसठ हजार दो सो पैंतालीस योजन और एक योजन के दश भाग में के छ भाग जितनी है. प्रश्न—किस तरह इतनी बाहा कही? उत्तर—इस जम्बूद्वीप की परिधि को दुगुनी करके दश के भाग से छेदना. जैसे इस जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है इसे दुगुनी करने से ६३२४५६ होवे, इसे दश का भाग देने से ६३२४५ ६/१० योजन

सूत्र

तेत्तिसे जोयणसय एगतीभागे जोयणस्स आयामेणं आहितेत्ति, वदेज्जा तयाणं उत्तम कट्टपत्ते उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता दिवसा भवंति, जहण्णियां दुवालस मुहुत्ता राई भवंति। ॥ ४ ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं उद्धमुह कलंबुया पुप्फ संठिया ताव खेत्तं संठिति अंतोसकूडा बाहिंविच्छडा जाव सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्व बाहिरिया चेव बाहा॥ तिसेसव्वभंतरिया बाहा मंदर पव्वयतेणं छज्जोयण सहस्साति तिण्णिय चउवीसे जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्सं एवं जं पमाणं,

अर्थ

होवे. अब अंधकार की लम्बाइ बताते हैं. प्रश्न—वह अंधकार कितनी लम्बाइ चौडाइ में होता है? उत्तर—७८३३३ १/३ योजन का होता है. उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ ४ ॥ जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर चलता है तब ताप क्षेत्र का संस्थान कलम्बु पुष्प का होता है. वह अंदर से संकोचित व बाहिर से चौडा यावत् सब से आभ्यन्तर की बाहा सब से बाहिर की बाहा. उस में से सब से आभ्यन्तर की बाहा मेरु पर्वत की पास ६३२४ ६/१० यों जो प्रमाण आभ्यंतर मंडलपर अंधकार का कहा वह सब यहां कहना. अर्थात् मेरुपर्वत की परिधि को दुगने करके दश भाग देवे उस में जितने आवे उतनी मेरु की पास की अंधकार की बाहा. और बाहिर की लवण

अब्भंतर मंडले अंधकार संठिई तेतं इमाएवि तावखेत्ते संठितिति णेयव्वं, बाहिरं मंडले आयामो सव्वत्थ ॥ तयाणं किं संठिया अंधकार संठिई आहितेति वदेज्जा. उद्धीमुह कलंबुया पुप्फसंठिया अंधकार संठिइ आहितेति वदेज्जा. अंतो-संकुडा वाहिं विच्छडा तंचेव जाव सव्वब्भतरिया वाहा, सव्वबाहिरिया चेव वाहा तीसेणं सव्वब्भंतरिया वाहा मदर पव्वयंतेणं णव जोयण सहस्साति चत्तारिय छयासीते जोयणसते नवदस भागे, एवं ज पमाणं अब्भंतरं मंडलं ठिइए सुरिए ताव खेत्तं संठिइ तचेव णेयव्वं जाव आयामो तयाणं उत्तम उक्कोस अट्ठारस मुहुत्ता राई

समुद्र में त्रेसठ हजार दोसो पेंतालीस योजन और एक योजन के दश भाग में के ६ भाग ६३२४५ $\frac{६}{१०}$ है. इस की परिधि जम्बूद्वीप की परिधि से दुगुनी कर दश का भाग देवे जितने आवे उतनी परिधि. उस परिधि की लम्बाइ ३२३२३ $\frac{३}{१०}$ है. अब अंधकार के संस्थान का प्रमाण कहते हैं. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडल पर रहता है तब रात्रि में अंधकार का संस्थान किस प्रकार रहता है ? उत्तर—ऊर्ध्व मुखकलम्बुक पुष्प के संस्थान से रहता है. वह अंदर से संकुडा बाहिर से चौडा यावत् सब के आभ्यंतर के बाहा सब से बाहिर की बाहा. उस में सब से आभ्यंतर की बाहा मेरु पर्वत समीप बहत्तर हजार चारसो चालीस और एक योजन के दश के नव भाग ७२४४० $\frac{९}{१०}$ योजन है. उस समय अठारह मुहूर्त की

तेतिसे जोयणसय एगतीं भागेजोयणस्स आयामेणं आहितेति, वदेज्जा तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता दिवसा भवंति, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवंति॥ ॥ ४ ॥ ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तयाणं उद्धमुह कलंबुया पुप्फ संठिया ताव खेत्तं संठिति अंतोसकुडा बाहिंविच्छडा जाव सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्व बाहिरिया चेव बाहा॥ तिसेसव्वभंतरिया बाहा मंदर पव्वयतेणं छज्जोयण सहस्साति तिण्णिय चउवीसे जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्स एवं जं पमाणं,

होवे. अब अंधकार की लम्बाइ बताते हैं. प्रश्न—वह अंधकार कितनी लम्बाइ चौडाइ में होता है? उत्तर—७८३२३ ३/१० योजन का होता है. उस समय अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ ४ ॥ जब सूर्य सब से बाहिर के मंडल पर चलता है तब ताप क्षेत्र का संस्थान कलम्बु पुष्प का होता है. वह अंदर से संकुचित व बाहिर से चौडा यावत् सब से आभ्यन्तर की बाहा सब से बाहिर की बाहा. उस में से सब से आभ्यन्तर की बाहा मेरु पर्वत की पास ६३२४ ६/१० यों जो प्रमाण आभ्यंतर मंडलपर अंधकार का कहा वह सब यहां कहना. अर्थात् मेरुपर्वत की परिधि को दुगने करके दश भाग देवे उस में जितने आवे उतनी मेरु की पास की अंधकार की बाहा. और बाहिर की लवण

अब्भंतर मंडले अंधकार संठिई तेतं. इमाएवि तावखेत्ते संठितिति णेयव्वं, बाहिरं मंडले आयामो सव्वत्थ ॥ तयाणं किं संठिया अंधकार संठिई आहितेति वदेज्जा अंतो-वदेज्जा ता उद्धीमुह कलंवुया पुप्फसंठिया अंधकार संठिइ आहितेति वदेज्जा संकुडा वाहिं विच्छडा तंचेव जाव सव्वब्भंतरिया वाहा, सव्वबाहिरिया चेव वाहा तीसेणं सव्वब्भंतरिया वाहा मंदर पव्वयतेणं णव जोयण सहस्साति चत्तारिय छयासीते जोयणसते नवदस भागे, एवं ज पमाणं अब्भंतरं मंडलं ठिइए सुरिए ताव खेत्तं संठिइ तंचेव णेयव्वं जाव आयामो तयाणं उत्तम उक्कोस अट्ठारस मुहुत्ता राई

समुद्र में त्रेसठ हजार दोसो पैंतालीस योजन और एक योजन के दश भाग में के ६ भाग ६३२४५ $\frac{6}{10}$ है. इस की परिधि जम्बूद्वीप की परिधि से दुगुनी कर दश का भाग देवे जितने आवे उतनी परिधि. उस परिधि की लम्बाइ ३२३२३ $\frac{1}{3}$ है. अब अंधकार के संस्थान का प्रमाण कहते हैं. जब सूर्य सब के बाहिर के मंडल पर रहता है तब रात्रि में अंधकार का संस्थान किस प्रकार रहता है ? उत्तर—ऊर्ध्व मुखकलम्बुक पुष्प के संस्थान से रहता है. वह अंदर से संकुडा बाहिर से चौडा यावत् सब के आभ्यंतर के बाहा सब से बाहिर की बाहा. उस में सब से आभ्यंतर की बाहा मेरु पर्वत समीप बहत्तर हजार चारसो चालीस और एक योजन के दश के नव भाग ७२४४० $\frac{9}{10}$ योजन है. उस समय अठारह मुहूर्त की

सूत्र

भवति, जहण्णिए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ ता जंबूद्दीवे २ सूरिया केवतियं खत्तं उड्ढं तवंति, केवतियं खत्तं अहे तवंति, केवतियं खत्तं तीरियं तवंति, ता एगं जोयणसय उड्ढं तवंति, अट्ठारस जोयणसतायं अहे तवंति, सीतालीसं जोयण सहस्साति दोण्णय तेवट्ठी जोयणसते एकवीस सट्ठीभागे जोयणस्स तिरियं तवंति ॥ इति चउत्थ पाहुडं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

अर्थ

रात्रि व बारह मुहूर्त का दिन होता है. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में सूर्य ऊंचा कितना तपता है, नीचा कितना तपता है और तीर्च्छा कितना तपता है ? उत्तर—सूर्य अपने विमान से सो योजन उपर अठारह सो योजन नीचे क्योंकि अधो गामिनी विजय १००० योजन ऊडी है और समभूमि से सूर्य ८०० योजन ऊंचा है और ४७२६३ योजन तीर्च्छा तपता है. यह चौथा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ ४ ॥

॥ पंचम प्राभृतम् ॥

ता किंसणं सूरियस्स लेसा पडिहंता आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो वीसं पडिवत्तीतो पण्णत्ताओ तंजहा तत्थेगे एव महंसु ता मंदर पव्वयंमि सूरियस्स लेसा पडिहंता आहितेति वदेज्जा ॥ १ ॥ एगे पुण एवमाहंसु तामेरूपव्वयमि सूरियस्स लेस्सा जाव वदेज्जा ॥ २ ॥ एवं एएणं अभिलावेणं ता मणोरमंमि पव्वयंसि ॥ ३ ॥ सुदंसण पव्वयं ॥ ४ ॥ ता सयपभांसिणं पव्वयं ॥ ५ ॥ ता गिरिरायंसि पव्वयं ॥६॥ ता रयणच्चुयं णं पव्वयं ॥ ७ ॥ सिलुच्चयं पव्वयंसि ॥ ८ ॥ ता लोगमज्झंसि

अब पांचवा पाहुडा लेश्या के प्रतिघातका कहते हैं प्रश्न-सूर्य की लेश्या-आताप का प्रतिघात कहां होता है ? उत्तर-इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणारूप बीस पडिवृत्तियों कही हैं. इन में कितनेक ऐसा कहते हैं कि मंदर पर्वत से सूर्य की लेश्या का प्रतिघात होता है, २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि मेरु पर्वत से होवे, ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि मनोरम पर्वत से ४ कितनेक ऐसा कहते हैं सुदर्शन पर्वत से ५ स्वयंप्रभ से ६ गिरिराज से ७ रत्नच्युत पर्वत से ८ शिला के उच्चय से ९ कितनेक ऐसा कहते हैं कि लोक मध्य में पर्वत है उस से सूर्य की लेश्या का प्रतिघात होता है. १० लोक की नाभि के स्थान पर्वत से

सूत्र

पव्वयंसि ॥९॥ ता लोगणाभिसिणं पव्वयंसि॥ १० ॥ ता अत्थिसिणं पव्वयं ॥११॥ ता सूरियावत्तांसि पव्वयंसि ॥ १२ ॥ सूरिया वरणासिणं पव्वयंसि ॥ १३ ॥ ता उत्तमंसिणं पव्वयंसि ॥ १४ ॥ ता दिसीणं पव्वयंसि ॥ १५ ॥ ता अवत्तसंणं पव्वयंसि ॥ १६ ॥ ता धराणिक्खीलंसिणं पव्वयंसि ॥ १७ ॥ ता धराणिसिगंसिणं पव्वयंसि ॥ १८ ॥ ता पव्वयंदसिणं पव्वयंसि ॥ १९ ॥ ता पव्वयरायंसिणं पव्वयंसि ॥ २० ॥ वयं पुण एवं वयामो-ता मदरेत्ति प वुच्चाति मेरुत्ति पवुच्चाति जाव पव्वयरायात्ति पवुच्चाति, ता जेणं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति. तेणं

अर्थ

११ अच्छिशिला निर्मल जांबुनंद पर्वत से १२ सूर्यावर्त पर्वत से १३ सूर्यावर्ण पर्वत से १४ उत्तम पर्वत से १५ दिशी की उत्पत्ति करनेवाला पर्वत से १६ सब में अवतंसक पर्वत से १७ पृथ्वी में शीला समान पर्वत से १८ धरणीशृंग पर्वत से १९ पर्वतेन्द्र पर्वत से और २० पर्वत राज पर्वत मे सूर्य की लेश्या हणावे. इस कथन को हम इस प्रकार कहते हैं कि मंदर नामक पर्वत यावत् पर्वत राजपर्वत मे सूर्य की लेश्या हणावे. क्यों कि उक्त २० ही नाम मेरु पर्वत के ही हैं मात्र गुणनिष्पन्न मे पृथक् २ हो गये हैं. जैसे मंदर नामक देवता मालिक होने से मंदर कहा गया. सब क्षेत्रों के मध्य में होने से मेरु कहा गया, यों सब जानना. उक्त मतवाले एकांत

पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति अतिट्ठाविणं पोग्गला सूरियस्स लेसं पडिहणंति, चरमलेसं तरगताविणं पोग्गला सूरियस्स लेसं पडिहणंति आहितेति वदेज्जा ॥ इति पंचमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ ५ ॥

पक्ष ग्रहण करते हैं इस लिये उन का वचन मिथ्या है. इन में जो पुद्गल सूर्य की लेश्या स्पर्शते हैं वे ही पुद्गल सूर्य की लेश्या की घात करते हैं. कठिन पुद्गलों सूर्य की लेश्या का प्रतिघात करते हैं, चरम लेश्या कि जो पर्वत में नहीं भेदाती है वही सूर्य की लेश्या का घात करती है; यह पांचवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥

॥ षष्ठ प्राभृतम् ॥

सूत्र ताकहंते ओजसंठिई आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो पण्णवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-तत्थ एगे एवं माहंसु अणुसमयमेवसूरियस्स ओया अण्णाओ उप्पजइ अण्णेवेत्ता आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ १ ॥ एगेपुण अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स उया अण्णुप्पज्जइ,अण्णा वेति आहितेति वदेज्जा ॥ एवं एएणं अभिलावेणं ता अणुरातिंदिय एवमेव सूरिया ॥ ३ ॥ अणुपक्खमेव सूरिया ॥ ४ ॥ ता अणुमासमेव सूरिया ॥ ५ ॥ ता अणुउडमेव सूरिया ॥ ६ ॥ ता अणुअयणमेव सूरिया ॥ ७ ॥ ता अणुसंवच्छर मेव सूरिया ॥ ८ ॥ ता अणुजुगमेव सूरिया ॥ ९ ॥

अर्थ अब छठे पाहुडे में प्रकाश का कथन कहते हैं. अहो भगवन्! सर्व काल में सूर्य एकरूप अवस्थापने अथवा अन्यथापने प्रकाशता है ? अहो गौतम ! इस में अन्यतीर्थी की पच्चीस रूप पच्चीस पडिवृत्तियों कही हैं. १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि क्षण २ में सूर्य का प्रकाश अन्य उत्पन्न होता है और अन्य प्रकाशता है. २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रत्येक मुहूर्त में सूर्य का प्रकाश अन्य होता है और अन्य प्रकाशता है ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रत्येक रात्रि में सूर्य का प्रकाश अन्य उत्पन्न होता है और अन्य प्रकाशता है ४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि सूर्य का प्रकाश प्रत्येक पक्ष में अन्य उत्पन्न होता है और अन्य

ता अणुवास सयमेव सूरिया ॥ १० ॥ ता अणुवास सहस्समेव सूरिया ॥ ११ ॥ या अणुवास सय सहस्स मेव सूरिया ॥ १२ ॥ ता अणुपुव्वमेव सूरिया ॥ १३ ॥ ता अणुपुव्वसतमेव सूरिया ॥ १४ ॥ ता अणुपुव्व सहस्स मेव सूरिया ॥ १५ ॥ ता अणुपुव्वसतसहस्समेव सूरिया ॥ १६ ॥ ता अणुपलिओवम मेव सूरिया ॥ १७ ॥ ता अणुपलिओवम सतमेव सूरिया ॥ १८ ॥ अणु पलिओवम सहस्समेव सूरिया ॥ १९ ॥ ता अणुपलिओवम सत सहस्समेव सूरिया ॥ २० ॥ ता अणुसागरोवममेव सूरिया ॥ २१ ॥ ता अणुसागर सयमेव सूरिया

प्रकाशता है ५ कितनेक ऐसा कहते हैं सूर्य का प्रकाश प्रत्येक पास में अन्य होता है और अन्य प्रकाशता है ६ एसे ही प्रत्येक ऋतु में ७ प्रत्येक अयन में ८ प्रत्येक संवत्सर में ९ प्रत्येक युग में १० प्रत्येक वर्ष शत में ११ प्रत्येक वर्ष सहस्र में १२ प्रत्येक लक्ष वर्ष में १३ प्रत्येक पूर्व में (चोरासी लाख छपन्न हजार वर्ष को एक क्रोडगुना करने से एक पूर्व होता है) १४ प्रत्येक सो पूर्व में १५ प्रत्येक हजार पूर्व में १६ प्रत्येक लाख पूर्व में १७ प्रत्येक पल्योपम में १८ प्रत्येक सो पल्योपम में १९ प्रत्येक हजार पल्योपम में २० प्रत्येक लाख पल्योपम में २१ प्रत्येक सागरोपम में २२ प्रत्येक सो सागरोपम में २३ प्रत्येक हजार सागरोपम

सूत्र

॥ २२ ॥ अणुसागर सहस्समेव सूरिया ॥ २३ ॥ ता अणुसागरोवम सतसंहस्समेव सूरिया ॥ २४ ॥एगेपुण एवमाहंसु ता अणुउसप्पिणी ओसप्पिणिमेव सूरियस्स अण्णा-उप्पज्जइ अण्णावेति आहितेति वदेज्जा ॥ २५ ॥१ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता तीस मुहुत्तं सूरियस्स ओयाओ अवट्ठीयाओ भवंति तेणपरं सूरियस्स उया अणवट्ठिताओ भवंति ॥ छम्मास सूरिया ओयं णिवुड्ढेति, छम्मासं सूरिया उयं अभिवट्टेति निक्खम-माणा सूरिए णिवुट्टेति पविसमाणे सूरिए उयं अभिवट्टाति ॥ २ ॥ तत्थणं को हेतूति

अर्थ

में २४ प्रत्येक लाख सागरोपम में और २५ कितनेक एसा कहते हैं कि प्रत्येक अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल में सूर्य का प्रकाश अन्य उत्पन्न होता है और अन्य प्रकाशता है, ॥ १ ॥ इस कथन को मैं इस प्रकाश कहता हूं कि तीस मुहूर्त पर्यंत सूर्य का प्रकाश अवस्थित रहता है क्यों की प्रत्येक मंडलपर एक सूर्य तीस मुहूर्त तक रहता है. इस से जोर मंडलपर होवे उस आश्री अवस्थित और दूसरे मंडल आश्री अनवस्थित है उस में कितनेक मंडलपर प्रकाश होवे और कितनेक मंडलपर अंधकार होवे. प्रथम छमास में सूर्य का प्रकाश कमी होता है, और दूसरे छमास में सूर्यका प्रकाश वृद्धि पाता है. अर्थात् नीकलता हुवा सूर्य प्रकाश की हानि करता है, प्रवेश करता हुवा सूर्य प्रकाश की वृद्धि करता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् इस में

वदेजा ? ता अयं जंबुद्दीवेदीवे जाव परिक्खेवेणं ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ से निक्खममाणे रिए-णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं जाव चारं चर ति तयाणं एगं भागं उयाए, एगेण रातिंदिएणं दिवस खेत्तस्स निव्विट्टित्ता रातिखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति अट्ठारस तीसेहिं सतेहिं मंडलच्छेया, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे

क्या हेतु है ? अहो गौतम ! यह जम्बूद्वीप नामक यावत् परिधिवाला है. इस में जब सूर्य सब से आभ्यंतर पहिले मंडलपर रहकर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य नविन संवत्सर में आया हुवा पहिली अहोरात्रि में आभ्यंतर के अनंतर दूसरे मंडलपर जब चाल चलता है तब एक रात्रि दिन में एक भाग प्रकाश का दिन के क्षेत्र में हीन कर रात्रि क्षेत्र में बढाकर चाल चलता है. यहां मंडल के १८३० भाग करना ऐसा एक भाग जानना. (१८३० भाग करने का कारन कहते हैं. एक मंडल को दो सूर्य एक अहोरात्रि में पूर्ण करते हैं. एक अहोरात्रि में एक सूर्य के तीस मुहूर्त होते हैं वैसे ही दूसरे सूर्य के तीस मुहूर्त मीलाने से ६० मुहूर्त होते

सूत्र

भवति, दोहिं एगट्ठी भाग ऊणे. दुवालस्स मुहुत्ता राई भवति दोहिं अहिया ॥ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चं मंडल जाव चार चरति ॥ ता जयाणं सूरिए अब्भंतरं तच्च संडलं जाव चारं चरति तयाणं दो भाग उयाए दोहिं राइंदिएहिं दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता राइखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चार चरति, अट्ठारसातेसट्ठिहिं सते मंडल छेत्ता, तयाण अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे चउहिं ऊणे, दुवालस मुहुत्ताराई भवति चउहिं अहिया॥एवं खलु एएण उवाएणं निक्खममाण सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ रातिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्व बाहिरं

अर्थ

उस को ६१ से गुना करने से ३६६० होवे, इस को दो का भागदेने से को एक २ सूर्य के प्रत्येक मंडल के १८३० भाग होवे वैसे एक भाग क्षेत्र की हानि वृद्धि करना) इस समय एकसठिये दो भाग कम का दिन व दो भाग अधिक की रात्रि होती है. वहां से नीकलता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में यावत् चाल चलता है. जब सूर्य तीसरे मंडलपर चाल चलता है तब एक मंडल के १८३० के भाग बना कर उस में के दो भाग प्रकाश का दिन के क्षेत्र में कमी कर रात्रि के क्षेत्र में बढाकर चाल चलता है. इस समय एकसाठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य चार भाग अधिक बारह मुहूर्त की रात्रि है. इस तरह नीकलता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडल पर रहता हुवा

मंडलंजाव चारं चरति॥तयाणं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेराइंदिएसएणं एगं तसीतं भागसयं उयाए दिवस खेत्तस्स निवुड्ढित्ता राइखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति, अट्ठारस तिसेहिं मंडलं छेत्ता, तयाणं उत्तम कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुर्ता राई भवति जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, एसणं पढमे छम्मासे एसणं जाव पज्जवासणे ॥ ३ ॥ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमांसि अहोरत्तांसि मंडलं जाव चारं चरति,तयाणं एगं भागं उयाए एगेणं राइंदिएणं राइखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवस खेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति, अट्ठारस तीसेहि सएहिं

एक मंडल के १८३० भाग में का एक भाग प्रकाश एक रात्रिदिन में दिन के क्षेत्र में कमी करता हुवा और रात्रि मे बढाता हुवा सब से बाहिर के मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब से आभ्यंतर मंडल से नीकलकर सब से बाहिर के मंडलपर रहकर चाल चलता है तब १८३ रात्रि दिन में एक मंडल के १८३० भाग में के १८३ भाग प्रकाश का दिन के क्षेत्र में कमी कर रात्रि के क्षेत्र में बढाकर चलता है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहुर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. यह पहिला छमास व पहिला छमास का पर्यवसान हुवा. ॥ ३ ॥ वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरे छमास मे आता हुवा पहिली अहोरात्रि में बाहिर से अनंतर दूसरे मंडलपर रहकर चाल चलता है. उस समय

सूत्र

मंडलं छेत्ता, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई दोहिं ऊणा, दुवालस मुहुत्ते दिवसे दोहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं जाव चराति ॥ ता जयाणं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं जाव चराति तयाणं दो भाग उयाए दोहिं राइंदिएहिं राइखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति, अट्ठारसंतिसेहिं सएहिं मडलं छेत्ता, तयाणं अट्ठारस मुहुत्ता राई चउ ऊणे दुवालस मुहुत्ते दिवसे चेउहिं अहिए ॥ एव खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणं तरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ एगभागं उयाए एगमेगं मंडलं रातिदिएणं

अर्थ

एक मंडल के १८३० भाग में का २ भाग प्रकाश का रात्रि क्षेत्र में कमी कर दिन के क्षेत्र में बढाकर चाल चलता है. उस समय उत्कृष्ट एकसठिये दो भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य दो भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. वहां से प्रवेश करता हुवा सूर्य दूसरी अहोरात्रि में बाहिर के तीसरे मंडल पर यावत् चाल चलता है. जब सूर्य तीसरे मंडल पर चाल चलता है तब १८३० भाग में से दो भाग प्रकाश का एक रात्रि दिन में कम कर दिन का बढा कर चाल चलता है. उस समय एकसठिये चार भाग कम अठारह मुहूर्त की रात्रि व चार भाग अधिक बारह मुहूर्त का दिन होता है. इसी तरह प्रवेश करता हुवा सूर्य एक पीछे एक मंडल पर रहता हुवा १८३० के एक भाग प्रकाश के

राइखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे दिवस खेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकामित्ता चारं चरति, ता जयाणं सूरिए सव्व बाहिराती मंडलाती सव्वब्भंतरं मंडलं जाव चरति, तयाणं सव्व बाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइदिएणं सतेणं एगं तेसीतं भागं उयाए राइखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरति अट्ठारस तीसेहिं मंडल छेत्ता ॥ तयाणं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोस अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति ॥ एसणं दोच्चे छम्मासे एसणं जाव पज्जवासणे एसणं आइच्चे संवच्छरे, एसणं जाव पज्जवासणे ॥ इति चंदपन्नत्तिस्स छट्ठं पाहुडं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

रात्रि क्षेत्र में कम कर दिन के क्षेत्र में बढाकर सब से आभ्यन्तर मंडल पर रहकर चाल चलता है. जब सूर्य सब में बाहिर के मंडल से प्रवेश कर सब से आभ्यन्तर मंडल पर रहकर चाल चलता है तब सब से बाहिर का मंडल छोडकर १८३० रात्रि दिन में १८३० के १८३ भाग प्रकाश का रात्रि क्षेत्र में कम कर दिन के क्षेत्र में बढकर चाल चलता है. उस समय उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. यह दूसरा छ मास व दूसरे छ मास का पर्यवसान हुवा, यह आदित्य संवत्सर व आदित्य संवत्सर का पर्यवसान हुवा. यह छठा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ६ ॥

॥ सप्तम प्राभृतम् ॥

सूत्र

ता किंते सूरिए चरति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो वीस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ खलु एगे एवं माहंसु ता मंदरेणं पव्वते सूरियं चरति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुणतामे रूणं पव्वए सूरिए चरति आहितेति एवं एतेणं अभिलावेणं जाव वीसइमा पडिवत्ती जाव ता पव्वयरायं पव्वते सूरियं चरति आहितेति,वदेज्जा एग एव माहंसु ॥ २ ॥ वयं पुण एवं वयामो-मंदरेवि पवुच्चति मेरुवि पवुच्चति, एवं जाव पव्वयराएणं पवुच्चति ता जेणं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति

अर्थ

अब सातवा पाहुडा कहते हैं, अहो भगवन् ! आपके मत में सूर्य प्रकाश कैसे करता है ? अहो गौतम ! इस विषय में अन्यतीर्थीकी प्ररूपणा रूप वीस पडिवत्तियों कही हैं १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि मंदर पर्वत से सूर्य प्रकाश करे २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि मेरु पर्वत से सूर्य प्रकाश करे यावत् पर्वतराज से सूर्य प्रकाश करे. यों जिस प्रकार पांचवे पाहुड में सूर्य की लेश्या का कथन किया वैसे ही यहां मतांतरों कहना. मैं इस कथन को ऐसे कहता हूं कि मंदर मेरु यावत् पर्वत राज से सूर्य प्रकाश करता है क्यों कि सब नाम एक अर्थवाची है. यों जो पुद्गल सूर्य के आताप को स्पर्शते हैं उनहीं पुद्गल

तेणं पोग्गला सुरियं चरंति, अणिट्ठाविणं पोग्गला सुरियं चरंति चरमलेस्संतरगता विणं पोग्गला सुरियं चरंति आहितेति वदेज्जा ॥ चंदपन्नत्तीए सत्तमं पाहुडं सम्मत्तं ॥७॥

मे सूर्य प्रकाश करता है. नहीं देखा सके वैसे सूक्ष्म पुद्गल भी सूर्य का प्रकाश करे. चरम लेश्या में रहे हुवे पुद्गलों सूर्य का प्रकाश करे. यों चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र में सातवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ७ ॥

॥ अष्टम प्राभृतम् ॥

सूत्र

ता कहंते उदयमाठि'ति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एव माहंसु ता जयाणं जंबुद्दीवदीवे दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, तयाणं उत्तरड्ढेवि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, ता जयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्त दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्त दिवसे भवति ता जयाणं दाहिणड्ढे सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढेवि सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति. जयाणं दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढेवि सत्तरस मुहुत्ते

अर्थ

अब आठवे पाहुडे में सूर्य के उदय की मर्यादा का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत से सूर्योदय की संस्थिति कैसे कही है ? उत्तर—अहो गौतम! इसमें अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप तीन पडिवृत्ति कही है ? कितनेक एसा कहते हैं कि अब जम्बूद्वीप नामक द्वीप के दक्षिणार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी अठारह मुहूर्त का दिन होता है और जब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिणार्ध में भी अठारह मुहूर्त का दिन होता है. ऐसे ही दक्षिणार्ध में जब सतरह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तरार्ध में भी सतरह मुहूर्त का दिन होता है और जब उत्तरार्ध में सतरह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिणार्ध में भी सतरह मुहूर्त का दिन होता है. यों इस अभिप्राय से अब

दिवसे भवइ, जयाणं उत्तरड्ढे सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढेवि सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ एवं एएणं अभिलावेणं सोलसमुहुत्ते, पण्णरस मुहुत्ते चोद्दस मुहुत्ते, तेरसमुहुत्ते, ता जयाणं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, ता जयाणं उत्तरड्ढे बारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं जम्बुद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं सया पण्णरस मुहुत्ते दिवसे भवति, सया पण्णरस मुहुत्ता राई भवति

दक्षिणार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी सोलह मुहूर्त का दिन होवे, और जब उत्तरार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे, और जब उत्तरार्ध में पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में चउदह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी चउदह मुहूर्त का दिन, और जब उत्तरार्ध में चउदह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी चउदह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में तेरह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी तेरह मुहूर्त का दिन, और जब उत्तरार्ध में तेरह मुहूर्त का दिन तब दक्षिणार्ध में भी तेरह मुहूर्त का दिन, जब दक्षिणार्ध

॥ अष्टम प्राभृतम् ॥

सूत्र

ता कहंते उदयसंठिति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एव माहंसु ता जयाणं जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्डे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, तयाणं उत्तरड्डेवि अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति, ता जयाणं उत्तरड्डे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्डे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति ता जयाणं दाहिणड्डे सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्डेवि सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति. जयाणं दाहिणड्डे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्डेवि सत्तरस मुहुत्ते

अर्थ

अब आठवे पाहुडे में सूर्य के उदय की मर्यादा का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत से सूर्योदय की संस्थिति कैसे कही है ? उत्तर—अहो गौतम! इसमें अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप तीन प्रतिपत्ति कही है ? कितनेक ऐसा कहते हैं कि अब जम्बूद्वीप नामक द्वीप के दक्षिणार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी अठारह मुहूर्त का दिन होता है और जब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिणार्ध में भी अठारह मुहूर्त का दिन होता है. ऐसे ही दक्षिणार्ध में जब सतरह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तरार्ध में भी सतरह मुहूर्त का दिन होता है और जब उत्तरार्ध में सतरह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिणार्ध में भी सतरह मुहूर्त का दिन होता है. यों इस अभिप्राय से जब

दिवसे भवइ, जयाणं उत्तरड्ढे सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढेवि सत्तरस मुहुत्ते दिवसे भवति ॥ एवं एएणं अभिलावेणं सोलसमुहुत्ते, पण्णरस मुहुत्ते चोद्दस मुहुत्ते, तेरसमुहुत्ते, ता जयाणं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, ता जयाणं उत्तरड्ढे बारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं जम्बूद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं सया पण्णरस मुहुत्ते दिवसे भवति, सया पण्णरस मुहुत्ता राई भवति

दक्षिणार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी सोलह मुहूर्त का दिन होवे, और जब उत्तरार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में सोलह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे, और जब उत्तरार्ध में पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी पन्नरह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में चउदह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी चउदह मुहूर्त का दिन, और जब उत्तरार्ध में चउदह मुहूर्त का दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी चउदह मुहूर्त का दिन होवे; जब दक्षिणार्ध में तेरह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी तेरह मुहूर्त का दिन, और जब उत्तरार्ध में तेरह मुहूर्त का दिन तब दक्षिणार्ध में भी तेरह मुहूर्त का दिन. जब दक्षिणार्ध

अवट्ठियाणं तत्थराातिंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एव माहंसु-ताजयाणं जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंनरे दिवसे भवति जयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढेवि अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति एवं परिहरियव्वं सत्तरस मुहुत्ताणंतरे सोलसमुहुत्ताणंतरे पण्णरस मुहुत्ताणंतरे, चउद्दसमुहुत्ताणंतरे, तेरसमुहुत्ताणंतरे, ता जयाणं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति,

में बारह मुहूर्त का दिन होवे तब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त का दिन और जब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त का दिन तब दक्षिणार्ध में भी बारह मुहूर्त का दिन होवे. इस समय जम्बूद्वीप की पूर्व पश्चिम में सदैव पन्नरह मुहूर्त का दिन व पन्नरह मुहूर्त की रात्रि होती है. वहां रात्रिदिन अवस्थित रहते हैं. २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में अठारह मुहूर्त अंतर (अठार मुहूर्त में कम) दिन होता है तब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त में कम दिन होता है और जब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त में कम दिन है तब दक्षिणार्ध में भी अठारह मुहूर्त कम का दिन होता है. इसी तरह एक २ कम करना. दक्षिणार्ध में सत्तरह मुहूर्तांतर दिन होवे तब उत्तरार्ध में सत्तरह मुहूर्तांतर दिन होवे और उत्तरार्ध में सत्तरह मुहूर्तांतर

तयाणं उत्तरद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, जयाणं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तयाणं दाहिणद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, तयाणं जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे पच्चत्थिमेणं नो सया पण्णरस मुहुत्ते दिवसे भवति, नो सया पण्णरस मुहुरता राई भवति अणवट्ठियाणं तत्थ रातिंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवं माहंसु ॥ २ ॥ एगे पुण एव माहंसु-ता जयाणं जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढे दुवालस मुहुत्त राई भवति; जयाणं उत्तरड्ढे

दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी सत्तरह मुहूर्तानंतर दिन होवे, जब दक्षिणार्ध में सोलह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी सोलह मुहूर्तानंतर दिन होवे और जब उत्तरार्ध में सोलह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब दक्षिणार्ध में भी सोलह मुहूर्तानंतर दिन होवे. जब दक्षिणार्ध में पन्नरह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब उत्तरार्ध में पन्नरह मुहूर्तानंतर दिन और जब उत्तरार्ध में पन्नरह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब दक्षिण में भी पन्नरह मुहूर्तानंतर दिन. होवे, जब दक्षिण में चउदह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब उत्तरार्ध में भी चउदह मुहूर्तानंतर दिन और जब उत्तरार्ध में चउदह मुहूर्तानंतर दिन तब दक्षिणार्ध में चउदह मुहूर्तानंतर दिन, जब दक्षिणार्ध में तेरह मुहूर्तानंतर दिन होवे तब उत्तरार्ध में तेरह मुहूर्तानंतर दिन,

सूत्र

अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं दाहिणड्ढे दुवालस मुहुत्ता राई भवति ता जयाणं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ता णंतरे दिवसे तयाणं उत्तरड्ढे दुवालस मुहुत्ता राई भवति, जयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, तयाणं दाहिणड्ढे दुवालस मुहुत्ता राई भवति एवं सत्तरस मुहुत्ते दिवसे,सत्तरसमुहुत्ताणंतरे,सोलसमुहुत्ते,सोलस मुहुत्ताणंतरे,पण्णरसमुहुत्ते,पण्णरसमुहुत्ताणंतरे, चउद्दसमुहुत्ते, चउद्दसमुहुत्ताणंतरे तेरस

अर्थ

और जब उत्तरार्ध में तेरह मुहूर्तानंतर दिन तब दक्षिणार्ध में भी तेरह मुहूर्तानंतर दिन; जब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्तानंतर दिन तब उत्तरार्ध में भी बारह मुहूर्तानंतर दिन और जब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्तानंतर दिन तब दक्षिणार्ध में भी बारह मुहूर्तानंतर दिन होवे. इस समय जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व पश्चिम में पन्नरह मुहूर्तानंतर दिन व पन्नरह मुहूर्तानंतर रात्रि होती है. यहां रात्रि दिन अनवस्थित कहे हैं ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब दक्षिणार्ध में अठारह मुहूर्त में कम दिन होता है तब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जब उत्तरार्ध में अठारह मुहूर्त में कम दिन होता है तब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. ऐसे ही सतरह मुहूर्त, सतरह मुहूर्त में कम का दिन, सोलह मुहूर्त, सोलह

मुहुत्ते, तेरसमुहुत्ताणंतरे बारसमुहुत्ते बारसमुहुत्ताणंतरे ता जयाणं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढे बारस मुहुत्ता राइ भवति, जयाणं उत्तरड्ढे बारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, तयाणं जम्बूद्दीवदीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं णेवत्थि पण्णरस मुहुत्ते दिवसे णेवत्थि पण्णरस मुहुत्ता राई भवति वोछिण्णाणं तत्थ रातिंदियाणं पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एव माहंसु ॥३॥ १ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता जंबूद्दीवेदीवे सूरिया उदीण पाईणं मुवगच्छंति पाईण दाहिणं आगच्छति पाईण

मुहूर्त में कुछ कम दिन, पन्नरह मुहूर्त, पन्नरह मुहूर्त में कुछ कम दिन, चउदह मुहूर्त, चउदह मुहूर्त में कुछ कम दिन, तेरह मुहूर्त तेरह मुहूर्त में कुछ कम दिन, और रात्रि सर्व स्थान बारह मुहूर्त की जानना. जब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. तब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त का दिन होता है. जब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त में कम दिन होता है तब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और जब उत्तरार्ध में बारह मुहूर्त कुछ कम दिन होता है तब दक्षिणार्ध में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. उस समय जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में पन्नरह मुहूर्त का पूर्ण दिन नहीं होता है वैसे ही पन्नरह मुहूर्त की रात्रि नहीं होती है. क्यों कि वहां रात्रि दिन का व्यवच्छेद कहा है ॥ १ ॥ अहो शिष्य ! इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं कि इस जम्बूद्वीप में सूर्य उत्तर पूर्व-ईशान कौन में उदय पाते हैं और पूर्व दक्षिण अग्नि कौन में अस्त होते हैं भरतक्षेत्र

सूत्र

दाहिण मुवगच्छंति दाहिणपडीणमागच्छंति. दाहिणपडीण उवगच्छंति, पडीणउदीण मागच्छंति, पाडीणउदीण मुवगच्छंति, उदीण पाइण मागच्छंति, ॥ २ ॥ ता जयाणं जंबूदीवेदीवे दाहिणद्धे दिवसे भवति, तयाणं उत्तरद्धे दिवसे भवति, जयाणं उत्तरद्धे

अर्थ

अपेक्षा पूर्व दक्षिण-अग्नि कौन में उदय पाते हैं दक्षिणपश्चिम-नैऋत्यकून में अस्त होते हैं पश्चिम महा विदेह क्षेत्र आश्री. नैऋत्यकून में उदय पाते हैं पश्चिमउत्तर-वायव्यकून में अस्त होते हैं ऐरवत क्षेत्र आश्री. और वायव्यकून में उदय पाते हैं ईशानकून में अस्त होते हैं पूर्व महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा. यह सामान्य से सूर्योदय का कथन किया. अब विशेषपना से कहते हैं. एक सूर्य दक्षिणपूर्व दिशा में उदय पावे तब दूसरा सूर्य पश्चिमउत्तर दिशा में उदय पावे. दक्षिणपूर्व का भरतादि क्षेत्र मेरु के दक्षिणदिशा के प्रधान मंडल पर प्रकाश करे और दूसरा पश्चिमउत्तर का सूर्य मेरु से उत्तर दिशा में एरवत क्षेत्र में प्रकाश करे. अब भरत क्षेत्र का सूर्य दक्षिण पश्चिम में अस्त पाकर पश्चिम महाविदेह क्षेत्र में उदय पावे और एरवत क्षेत्र का सूर्य उत्तरपूर्व महाविदेह में उदय पावे. तब दक्षिणपूर्व में उदय पाया हुवा सूर्य आगे मंडल में परिभ्रमण कर, अपरविदेह में प्रकाश करे और उत्तरपूर्व में उदय पाया हुवा पूर्व विदेह में प्रकाश करे. तब पूर्व विदेह का सूर्य दक्षिण भरत क्षेत्र में आकर प्रकाश करे. और अपरविदेह का पश्चिम उत्तर में आकर एरवत क्षेत्र में प्रकाश करे. यह जम्बूद्वीप में सूर्योदय होने की विधि कही ॥ २ ॥ अब क्षेत्र विभाग से दिन का विभाग कहते हैं. इस जम्बूद्वीप में जब दक्षिणार्ध में दिन होता है तब
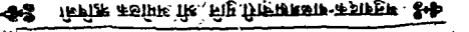
दिवसे भवति, तयाणं जंबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं राई भवति, जयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तयाणं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवति, जयाणं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवति, तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर दाहिणाणं राई भवति ॥३॥ ता जयाणं जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति, ता जयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे तयाणं पच्चत्थिमेणंवि

उत्तरार्धमें भी दिन होता है और जब उत्तरार्ध में दिन होता है तब पूर्व और पश्चिम में रात्रि होती है ऐसेही जब इस जम्बूद्वीपमें पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पश्चिममें दिन होता है तब उत्तर और दक्षिणमें रात्रि होती है.॥३॥ जब जंबूद्वीपमें दक्षिणार्धमें उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तरार्ध में भी उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है, जब उत्तरार्ध में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब पूर्वपश्चिम में जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पूर्व में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब पश्चिम में भी

उक्कोसए आव दिवसे भवति, जयाणं पच्चत्थिमेणंवि उक्कोसए आव दिवसे भवति तयाणं जंबुद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर दाहिणेणं जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवति, एवं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, सातिरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवति, सत्तरस मुहुत्ते दिवसे तेरस मुहुत्ता राई भवति, सत्तरस मुहुत्ताणतरे दिवसे, सातिरेगा तेरस मुहुत्ता राई भवति, सोलसमुहुत्ते दिवसे चउद्दस मुहुत्ता राई भवति, सोलस मुहुत्ताणंतर दिवसे, सातिरेगा चउद्दस मुहुत्ता राई भवंति, पण्णरस मुहुत्ते दिवसे भवति, पण्णरस मुहुत्ता राई भवति, पण्णरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, सातिरेगा पण्णरस मुहुत्ता राई भवति, चउद्दस मुहुत्ते दिवसे भवति सोलस

भी उत्कृष्ट अठारह मुहुर्त का दिन होता है और भी जब पूर्व पश्चिम में अठारह मुहुर्त का दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती, ऐसे ही अठारह मुहूर्त में कम दिन होवे तब बारह मुहूर्त से कुच्छ अधिक की रात्रि होवे सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि होवे सतरह मुहूर्त में कम दिन तेरह मुहूर्त से कुच्छ अधिक की रात्रि सोलह मुहूर्त का दिन चौदह मुहूर्त की रात्रि, सोलह मुहूर्त में कम का दिन चौदह मुहूर्त से अधिक रात्रि, पनरह मुहूर्त का दिन पनरह मुहूर्त की रात्रि, पनरह मुहूर्त में कम का दिन पनरह मुहूर्त मे अधिक रात्रि, चउदह मुहूर्त का

मुहुत्ता राई भवति, चउद्दस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति सातिरेगा सोलसमुहुत्ता राई, तेरस मुहुत्ते दिवसे, सत्तरस मुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगा सत्तरस मुहुत्ता राई, ता जयाणं जंबुद्दीवदीवे दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं उत्तरड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति, ता जयाणं उत्तरड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे, तयाणं जंबुद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति, ता जयाणं जंबुद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं पच्चत्थिमेणवि जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति

दिन सोलह मुहुर्त की रात्रि, चौदह मुहूर्त में कम का दिन सोलह मुहुर्त से अधिक रात्रि; तेरह मुहुर्त का दिन सत्तरह मुहुर्त की रात्रि, तेरह मुहूर्त मे कमका दिन सतरह मुहूर्त से अधिक का रात्रि. एसेही जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में जब बारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तरार्ध में भी बारह मुहूर्त का दिन होता है और जब उत्तरार्ध से बारह मुहूर्त का दिन होता है तब मेरु पर्वत के पुर्व पश्चिम मे उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है. जब जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पूर्व में जघन्य बारह मुहुर्त का दिन होता है तब पश्चिम में भी बारह मुहूर्त का दिन होता है और जब पश्चिम में बारह मुहूर्त का दिन होता है तब

सूत्र

जयाणं पच्चत्थिमेणं जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे, तयाणं जम्बूद्दीवे दीवे मंदरस्स उत्तरेणं दाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवति ॥ ४ ॥ ता जयाणं जम्बूदीवे दाहिणे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तयाणं उत्तरद्धेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तयाणं जम्बूदीवे द्वीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण अणंतर पुराकडे काल समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तयाणं जम्बूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतर

अर्थ

उत्तर दक्षिण में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ ४ ॥ जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है तब उत्तरार्ध में भी वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है, जब उत्तरदक्षिणार्ध में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है तब मेरु पर्वत से पूर्वपश्चिम के अनंतर पुराकृत काल में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है, अर्थात् उत्तरदक्षिण के दूसरे समय में पूर्वपश्चिम का प्रथम समय होता है. जब जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम में वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है तब अनंतर पश्चातकृत समय में वर्षा का पहिला समय प्रतिपूर्ण होता है. जैसे यह वर्षाकाल का कहा वैसे ही समय का कहना. अर्थात् उत्तर दक्षिण में प्रथम समय तत्पश्चात् दूसरे समय में पूर्व पश्चिम का पहिला समय, ऐसे ही आवलिका उत्तर दक्षिण में प्रथम आवलिका का समय दूसरे समय में पूर्व पश्चिम में प्रथम आवलिका का समय, उत्तर दक्षिण में आणपाणु प्रथम समय (श्वासोश्वास) तत्पश्चात् दूसरे समय में पूर्व पश्चिम में आणपाणु का प्रथम समय. उत्तर दक्षिण

पच्छाकडे समयंसि वासाणं पढमे समए पडिपुण्णे भवति॥तहा समए एवं आवलिया आणपाणु, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, पक्खे, मासे, ऊऊ एए दस आलावगा वासाणं भाणियव्व । ॥ ५ ॥ ता जयाणं जम्बूद्दीवे दाहिणद्धे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति तयाणं उत्तरद्धेवि हेमताणं पढमे समए पाडिवज्जति, तयाणं जम्बूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं अणंतरं पुराकडे काल समयंसि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति, एतस्स दस आलावगा जाव ऊऊ भाणियव्वा ॥ ६ ॥ ता

में थोव का प्रथम समय होवे तत्पश्चात् दूसरे समय पूर्व पश्चिम में थोव का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में लव का प्रथम समय तत्पश्चात दूसरे समय पूर्व पश्चिम में लव का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में मुहूर्त का प्रथम समय तत्पश्चात दूसरे समय पूर्व पश्चिम में मुहूर्त का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में अहोरात्रि का प्रथम समय तत्पश्चात् दूसरे समय पूर्व पश्चिम में अहोरात्रि का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में पक्ष का प्रथम समय होवे तत्पश्चात् दूसरे समय पूर्व पश्चिम में पक्ष का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में मास का प्रथम समय होवे तत्पश्चात् दूसरे समय पूर्व पश्चिम में मास का प्रथम समय, उत्तर दक्षिण में ऋतु का प्रथम समय तत्पश्चात् दूसरे समय पूर्व पश्चिम में ऋतु का प्रथम समय, यों दश आलापक कहना ॥ ५ ॥ ऐसे ही जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में हेमंत के दश आलापक कहना ॥ ६ ॥ जब जम्बूद्वीप

जयाणं जम्बूद्दीवे २ दाहिणद्धे गिम्हाणं पढम समए पडिवज्जति तयाणं उत्तरद्धेवि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जति ता जयाणं उत्तर दाहिणड्ढ गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जति तयाणं जम्बूद्दीवे २ पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं अणंतर पुराकडे काल समयंसि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जति एतस्स दस आलावगा जाव ऊऊ भाणिव्वा॥७॥ ता जयाणं जम्बूद्दीवेद्दीव दाहिणड्ढ पढमे समए अयमाणे पडिवज्जति,तयाणं उत्तरद्धेवि पढमे समए अयमाणे पडिवज्जति,जयाणं उत्तरद्ध पढमेसमए अयमाणे पडिवज्जति तयाणं जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण अणंतरपुराकडे कालसमयंसि पढमे अयमाणे

के दक्षिणार्ध में ग्रीष्म ऋतु का प्रथम समय होता है तब उत्तरार्ध में भी प्रथम समय होता है. जब जम्बूद्वीप के उत्तर दक्षिण में ग्रीष्म ऋतु का प्रथम समय होता है तब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम मे अनंतर पुराकृत काल में ग्रीष्म ऋतु का प्रथम समय होता है यों इस के भी ऋतु पर्यंत दश आलापक कहना ॥ ७ ॥ जब जम्बूद्वीप के दक्षिण में प्रथम अयन होती है तब उत्तर में भी अयन होती है और जब उत्तर दक्षिण में प्रथम अयन होती है तब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम में अनंतर पुराकृत काल में अर्थात् दूसरे समय में अयन का प्रथम समय होता है. जब जम्बूद्वीप के मेरु से पूर्व में

पडिवज्जति, ता जयाणं जंबूद्दीवे मंदरस्स पुरत्थिमेणं पढमे समए अयमाणे पडिवज्जति, तयाणं पच्चत्थिमेणवि पढमे समए अयमाणे पडिवज्जति ता जयाणं पच्चत्थिमेणं पढमेसमए अयमाणे पडिवज्जति, तयाणं जंबू मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतर पच्छाकड कालसमयंसि पढमे समए अयमाणे पडिपुन्ने भवति॥ एवं संवच्छरं, जुगं, वाससए, वाससहस्से, वाससतसहस्से, पुव्वंगपुव्वे, तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, हुहूयंगे, हुहूए, उप्पलंगे, उप्पले पउमंगे पउमे, णलिणंगे णलिणे अत्थिणिपूरंगे अत्थिणिपूरे अउयंगे, अउए, नउयंगे, णउए, चूलियंगे चूलिए, सीसपहेलियंगे सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे, ॥

अयन का प्रथम समय होता है तब पश्चिम में भी अयन का प्रथम समय होता है. जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम में अयन का प्रथम समय होता है तब जम्बूद्वीप के उत्तर दक्षिण में अनंतर पश्चात् कृत [एक समय पहिले ही] अयन का प्रथम समय परिपूर्ण होता है. ऐसे ही संवत्सर, युग, वर्ष वर्षशत, वर्ष सहस्र, वर्षशतसहस्र (लाख वर्ष) पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित, अडडांग, अडड, अववांग, अवव, हुहुकांग, हुहुक, उत्पलांग, उत्पल, पद्मांग, पद्म, नलिनांग, नलिन, अस्तिनीपुरांग, अस्तिनीपुर, अउयांग, अउय, नययांग, नयय, चूलितांग, चूलिया, शीर्षप्रहेलितांग, शीर्षप्रहेलित, पल्योपम साग रोपम का

मूल

ता जयाणं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणद्धे पढमे समए उसप्पिणि जाव पडिवज्जति, तयाणं उत्तरद्धेवि पढमे समए उसप्पिणी पडिवज्जति, तयाणं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं ओसप्पिणी णेवत्थि, तत्थ कालेपण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ८ ॥ एवं लवणसमुद्दे धायतिसंडे कालोए ता अब्भंतर

अर्थ

कहना. जब इस जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में प्रथम उत्सर्पिणी होती है तब उत्तरार्ध में प्रथम उत्सर्पिणी होती है, जब उत्तरार्ध दक्षिणार्ध में प्रथम उत्सर्पिणी होती है तब जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के पूर्वपश्चिम में अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी नहीं होती है वहां सब समान काल है अहो आयुष्मन्॥८॥ऐसेही लवणसमुद्र का जानना. जैसे जंबूद्वीप में दो सूर्य के उदय अस्त का, दिशा विदिशा का वर्णन कहा तैसा लवण समुद्र का भी कहना. परंतु इतना विशेष लवण समुद्र में चार चंद्र चार सूर्य हैं. जिन में से दो सूर्य जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध के सूर्य की श्रेणी में हैं और दो सूर्य जंबूद्वीप की उत्तरार्ध के सूर्य की श्रेणी में हैं. जब जंबूद्वीप में एक सूर्य दक्षिण पूर्व के मध्य उदय पावे तब उस की समश्रेणिसे प्रतिबद्ध दो सूर्य लवण समुद्र में दक्षिण पूर्व में उदय पावे यों जंबूद्वीप गत सूर्य उस से सम प्रतिबद्ध दो सूर्य और भी लवण समुद्र के पश्चिम उत्तर में उदय पावे यों उदय की विधि जंबूद्वीप के सूर्य जैसा जानना. इस ही प्रकार लवण समुद्र के दक्षिणार्ध में दिन होता है तब लवणसमुद्र के उत्तरार्ध में भी दिन होता है और जब उत्तरार्धमें दिन होता तब दक्षिणार्ध में भी दिन होवे ऐसेही जब लवणसमुद्र के उत्तरदक्षिण में दिन होता तब लवण समुद्र के पूर्वपश्चिम विभाग में रात्रि होती है. और जब लवण समुद्र के पूर्व पश्चिम विभाग में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण विभाग में रात्रि होती है. जितना दिन का प्रमाण जम्बूद्वीप में कहा उतना ही लवण समुद्र में जानना. यावत्
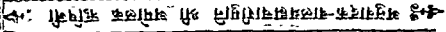
पुक्खरद्धेणवि सूरिया उत्तरपाईण मुवगच्छंति, पाईण दाहिणं आगच्छंति ॥ एवं जंबूद्दीवं वत्तव्वया भाणियव्वा जाव उसप्पिणिवि ॥ इति चंदपन्नत्तीए अट्ठमं पाहुड सम्मत्तं ॥ ८ ॥ * * * *

ह सर्पिणी काल लवण समुद्र में नहीं है यों सब कहना. जैसे लवण समुद्र की वक्तव्यता कही वैसे ही धात की खंड की वक्तव्यता जानना. परंतु यहां क्षेत्र की विशालता होने से बारह चंद्र व बारह सूर्य हैं. जिनमें छ सूर्य दक्षिण में व छ उत्तर में प्रकाश करते हैं. उक्त बारो ही सूर्य जम्बूद्वीप व लवण समुद्र गत सूर्यों की श्रेणी से बंधाये हुवे हैं. इन की उदय अस्त की विधिरूप जंबुद्वीप जैसी जानना. जब धातकी खंड के दक्षिणार्ध में दिन होता है तब उत्तरार्ध में भी दिन होता है. जब धात की खंड के उत्तर दक्षिण विभाग में दिन होता है तब मेरु से पूर्व पश्चिम विभाग में रात्रि होती ऐसे ही उत्सर्पिणी अवसर्पिणी का आलापक कहना. कालोदधि समुद्र की वक्तव्यता लवण समुद्र जैसी कहना. परंतु यहां क्षेत्र की विशालता से ४२ चंद्रमा ४२ सूर्य कहे हैं. जिन में २१ दक्षिण में और २१ उत्तर विभाग में हैं. दिन रात्रि का क्षेत्र सब वैसे ही जानना. अब अभ्यंतर पुष्करार्ध द्वीप के सूर्य चंद्र की वक्तव्यता जम्बूद्वीप जैसी ही कहना परंतु यहांपर ७२ चंद्रमा व ७२ सूर्य, दिन, रात्रि, अवसर्पिणी उत्सर्पिनी आदि सब वक्तव्यता जम्बूद्वीप जैसी कहना. यों अढाइद्वीप में १३२ चंद्र १३२ सूर्य निरंतर परिभ्रमण करते हैं. इति चंद्र प्रज्ञप्ति का आठवा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ ८ ॥ ८ ० ०

॥ नवम प्राभृतम् ॥

ताकति कट्टं ते सूरिए पोरिसी च्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमातो तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एव माहंसु ता जेणं पोग्गला सूरियस्सलेसं फुसंति तेणं पोग्गला संतप्पंति तेणं पोग्गला संतप्पमाणा, तयाणंतराइं बाहिराति पोग्गला संतावेंतीति, एसणं से समिते तावखेत्ते एगे एवं माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता जेणं पोग्गला सूरियस्सलेसं फुसंति तेणं पोग्गला नो संतप्पंति, तेणं पोग्गला असंतप्पमाणे तताणंतराइं बाहिराति पोग्गलाति नो संतावेंति, एसणं से समिते तावखेत्ते एगएव माहंसु ॥ २ ॥ एगेपुण एवं माहंसु जेण

अब नववे पाहुडे में पुरुष छाया (पौरुष) का प्रमाण कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में कितने प्रमाण से पुरुष छाया होती है ? अहो शिष्य ? इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणारूप तीन पडिवत्तियों कहा है. जिन में एक ऐसा कहते हैं जितने पुद्गल सूर्य की लेश्या को स्पर्शते है वे पुद्गल सूर्य की लेश्या से तपते हैं. सूर्य की लेश्या से तपते हुए वे पुद्गलों बाहिर के पुद्गल तपाते हैं. यह साथित मर्यादापने में उत्पन्न हुवा तापक्षेत्र है २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि जो पुद्गल सूर्य की लेश्या को स्पर्शते हैं वे पुद्गल नहीं तपते हैं-ऊष्ण नहीं होते हैं परंतु पीठफलगगत पुद्गल को सूर्य स्वयमेव रूप से सूर्य ताप लेश्या करे नहीं अब वे पुद्गल तदनंतर बाहिर के पुद्गल तपावे नहीं. यह सथित मर्यादापने हुवा ताप क्षेत्र जानना. कितनेक ऐसा

पोग्गला -रियस्स लेसं फुसंति तेणं पोग्गला अत्थेगतिया संतप्पंति, अत्थेगतिया नो संतप्पंति, अत्थगतिया संतप्पमाणा तयाणंतराति बाहिराति पोग्गलाति संतावेंति अत्थेगतिया असंतप्पमाणा तयाणतराइ बाहिराइ पोग्गलाइं ना संताविंतिति॥ एसणं स समिए तावखेत्त एगे एव माहंसु॥ २॥ वयं पुण एव वयामो-ता जाती इमातो चदिमसूरियाणं देवाण विमाणे हिंतो लेसातो बहिया अभिणिसडाओ पयावेति. एतासिणं लेसाणं अंतरेसु अणंतरातो छिन्नलेसातो समुच्छति, तएणं तती छिन्न लेसातो समुच्छिन्नातो. समाणितो तेणं तेराति बाहिराति पोग्गलाति संतावेंति, एसणं सं समिए ताव खेत्ते ॥ १ ॥ ता कति

कहते हैं कि जो पुद्गल सूर्य की लेश्या को स्पर्शते हैं इन में से कितनेक पुद्गल तपते हैं और कितनेक नहीं तपते हैं. कितनेक तपते हुवे पुद्गल तदनंतर बाहिर के पुद्गल तपाते हैं और कितनेक नहीं तपते हुवे तदनंतर बाहिर के पुद्गल नहीं तपाते हैं. यह समित मर्यादापने ताप क्षेत्र हुवा. इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हुं कि यह जो चंद्रसूर्य के विमान हैं उन में से लेश्या बाहिर नीकलती है और सन्मुख दिशा में प्रकाश करती है. इन विमान से नीकली हुइ लेश्या आंतराओ में अन्य मूल लेश्यां पर तपे. अब मूल लेश्या में से तदनंतर बाहिर के पुद्गल तपावे. यह समित क्षेत्र मर्यादा पने ताप क्षेत्र उत्पन्न हुवा. यह ताप क्षेत्र का

कहं ते, सूरिए पोरसीच्छायं निव्वत्तेइ आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु इमातो पण्णविसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थएगे एव माहंसु ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तेइ आहितेति वदेज्जा॥ एवं एएणं अभिलावेणं जातो चेव ओय संठिए पण्णविसं पडिवत्तीओ, तातो चेव णेयव्वातो जाव तासु अणुउसप्पिणि उसप्पिणिमेव सूरिए पोरसीच्छायं निव्वतेति आहितेति वदेज्जा, एगे एवं माहंसु ॥ वयं पुण एवं वयामो

कथन हुवा ॥ १ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! आप के मत में सूर्य कितने प्रमाण में पुरुषछाया बनाता है ! अहो शिष्य ! इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणारूप पच्चीस पडिवृत्तियों कही हैं तद्यथा—१ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रतिसमय मे सूर्य से नीकलती हुई लेश्या पुरुष-छाया बनावे. यहां लेश्या से पोरसी छाया होवे इस में कारणकार्य उपचार है. पोरसीछाया को लेश्या बतलाइ क्योंकी क्षण २ में सूर्य अन्य लेश्या बनावे यों इस अभिलाप मे यावत् जैसे छठे पाहुडे में प्रकाश के संस्थान की पच्चीस पडिवृत्तियों कही वैसे ही यहां पर भी कहना. यावत् प्रत्येक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी में सूर्य पौरसी छाया बनाता है इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हुं कि जब सूर्य लेश्या छोडता हुआ ऊंचा चढता है तब छाया हीन है अर्थात् लोक व्यवहार में जब सूर्य उदय होवे तब छाया बडी होवे परंतु पीछे ज्यों ज्यों सूर्य चढता जाता है त्यों त्यों छाया हीन होती जाती है; यों मध्यान्ह पर्यंत होती है. और ज्यों२ छाया बढती है

ता सूरियस्सणं उच्चंत्तं लेसंच पडुच्च छाया उद्देस उच्चत्तं छाय पडुच्चलेसुद्देसलेसं पडुच्च
ता सूरियस्सणं उच्चंत्तं लेसंच पडुच्च छाया उद्देस उच्चत्तं छाय पडुच्चलेसुद्दे तंजहा
पडुच्च उचत्त उद्देसो ॥ २ ॥ तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा
एगे एव माहंसु ता अत्थिणं से दिवसे जंसिंचणं दिवसंसि सूरिए चउपोरासिच्छायं
निव्वत्तेति अहवा दुपुरिसीच्छाया निव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा, एगेएव माहंसु ॥ १ ॥
एगेपुण एव माहंसु-ता अत्थिणं से दिवसे जंसिं च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसि छायं निव्व-

त्यों २ लेश्या हीन होती है अर्थात् मध्यान्ह पीछे सूर्य अस्त होता जावे त्यों छाया बढती जावे यह दूसरा उद्देशा लेश्या व छाया दोनों आश्री अर्थात् मध्यान्ह समयमें सूर्य अपने मस्तकपर रहताहै इससे छायां आगे पीछे नहीं होती है यह तीसरा उद्देशा. यह लेश्या का स्वरूप कहा॥२॥अब पुरुष छायां प्रमाण में अन्यतीर्थि कहते हैं. इसमें अन्यतीर्थिकी दो पडिवृत्तियो कही हैं. १कितनेक ऐसा कहते हैं कि दिनमें जब सूर्यका उदय होता है तब उदित होता सूर्य चार पुरुष की छाया बनावे. अथवा उदित होता सूर्य दो पुरुष छाया बनावे और २ कितनेक ऐसा कहते हैं दिन में उदित होता सूर्य दो पुरुष छाया बनावे अथवा किंचिन्मात्र छाया बनावे न०१. उन में जो अन्यतीर्थि ऐसा कहते हैं कि ऐसा दिन हैं कि जिस में उदित होता सूर्य चार पुरुष छाया बनावे अथवा ऐसा भी दिन है कि जिस में उदित होता सूर्य दो पुरुष छाया बनावे

सूत्र

कहूं ते, सूरिए पोरसीच्छायं निव्वत्तेइ आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु इमातो पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थएगे एव माहंसु ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसीछायं निवत्तेइ आहितेति वदेज्ज॥ एवं एएणं अभिलावेणं जातो चेव ओय संठिए पणविसं पडिवत्तीओ, तातो चेव णेयव्वातो जाव तासु अणुउसप्पिणि उसप्पिणिमेव सूरिए पोरसीच्छाय निव्वतेति आहितेति वदेज्जा, एगे एवं माहंसु ॥ वयं पुण एवं वयामो

अर्थ

कथन हुवा ॥ १ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! आप के मत में सूर्य कितने प्रमाण में पुरुषछाया बनाता है ! अहो शिष्य ! इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणारूप पच्चीस पडिवृत्तियों कही हैं तद्यथा—१ कितनेक ऐसा कहते हैं कि प्रतिसमय मे सूर्य मे नीकलती हुई लेश्या पुरुष-छाया बनावे. यहां लेश्या से पोरसी छाया होवे इस में कारणकार्य उपचार है. पोरसीछाया को लेश्या बतलाइ क्योंकी क्षण २ में सूर्य अन्य लेश्या बनावे यों इस अभिलाप मे यावत् जैसे छठे पाहुडे में प्रकाश के संस्थाने की पच्चीस पडिवृत्तियों कही वैसे ही यहां पर भी कहना. यावत् प्रत्येक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी में सूर्य पोरसी छाया बनाता है इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हुं कि जब सूर्य लेश्या छोडता हुवा ऊंचा चढता है तब छाया हीन है अर्थात् लोक व्यवहार में जब सुर्य उदय होवे तब छाया बडी होवे परंतु पीछे ज्यों ज्यों सूर्य चढता जाता है त्यों त्यों छाया हीन होती जाती है: यों मध्यान्ह पर्यंत होती है. और ज्यों२ छाया बढती है

सूरिए सव्वबाहिरं मंडलंउवसंकमित्ता चारं चरंति तयाणं उत्तम कट्ठपत्ते अट्ठारस मुहुत्ताराई भवति जहण्णियां दुवालस मुहुत्ते दिवसे, तंसिचणं दिवसंसि सूरिए दुपोरसी छायं निव्वत्तेति तं० उग्गमण मुहुत्तंसि अत्थमणमुहुत्तंसि तं लेसं अभिवड्ढेमाणेवा निवुड्ढेमाणेवा आहितेति वदेज्जा. एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता जयाणं सूरिए सव्वब्भतर मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तेसिं चणं दिवसंसि सूरिए दुपोरसी छायानिव्वतेति तंजहा उग्गमण मुहुत्तेसि अत्थमण मुहुत्तंसि तलेसं अभिवड्ढेमाणेवा निवुड्ढेमाणेवा, ता जयाणं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरंति तेसिंचणं दिवसंसि सूरिए नोकिंचिवि पोरासिच्छायं निव्वत्तेति, तंजहा-उग्गमण मुहुत्तंसि अत्थमण मुहुत्तंसि तलेसं नोचेवणं अभिवड्ढेमाणेवा निवुड्ढेमाणेवा आहितेति,

सूर्य सब से आभ्यंतर मंडलपर चाल चलता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. उस दिन सूर्य दो पुरुष छाया बनाता है तद्यथा-उद्गमन मुहूर्त में व अस्त मुहूर्त में, उद्गमन मुहूर्त में सूर्य की लेश्या में वृद्धि होती है और अस्त मुहूर्त में सूर्य की लेश्या की हानि होती है. जब सूर्य सब से बाहिर के मंडलपर चाल चलता है तब किंचित छाया भी नहीं बनाता है—उद्गमन

तोति आहितेति वदेज्जा एगेएवमाहंसु ॥ तत्थ जेते एवं माहंसु अत्थिणं से दिवसे जंसिचणं दिवसं सूरिए चउपोरसी छायं निवत्तेति अहवा अत्थिणं से दिवसे जंसिचणं दिवसंसि सूरिए दुपोरसिच्छायं निव्वत्तेति, तेणं एव माहंसु, ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तयाणं उत्तम उक्कोसे अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे जहण्णए दुवालस मुहुत्ताराई भवति, जंसिचणं दिवसंसि सूरिए चउपोरसि छायं निव्वत्तेति तंजहा उग्गमण मुहुत्तंसिच, अत्थमण मुहुत्तंसिच लेसं अभिवड्ढेमाणे वा, निवुड्ढेमाणेवा॥ ता जयाणं

उन का कथन इस तरह है कि जब सूर्य सब से आभ्यन्तर मांडल पर होता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. उस दिन उदित होता सूर्य चार पुरुष छाया बनावे. उदित मुहूर्त में व्रद्धे लेश्या से पुरुष छाया बनावे उदित होता हुवा सूर्य लेश्या की वृद्धि करे और अस्त होता सूर्य लेश्या की हानि करे. अब जब सूर्य सब से आभ्यंतर मंडलपर रहता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व जघन्य बारह मुहूर्त का दिन होता है. उस दिन सूर्य दो पुरुष छाया बनावे उद्गमन मुहूर्त व अस्तमुहूर्त में दो पुरुष छाया बनावे. उदित होता सूर्य लेश्या की वृद्धि करे और अस्त होता सूर्य लेश्याकी हानि करे. यह प्रथम अन्यतीर्थीका कथन हुवा. जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं कि उदित होता सूर्य किसी दिन में दो पोरसी छाया बनाता है उन का कथन इस हेतु से है कि, जब

तरसणं सव्वहिट्ठिमातो सूरिएपडिहाओ वहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं तवणिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जाव दितंसूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवतिएगाए आए अद्धाए, एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए एत्थणं से सूरिए एगे पोरसिछायं निव्वत्तेति ॥ तत्थ जेते एव माहंसु अत्थिणं से दिवस जंसिचणं दिवसंसि सूरिए दुपोरसिच्छायं निव्वत्तइ तेण एव माहंसु ता सूरिए तस्सणं सव्व हेट्ठिमाओ सूरिए पडिहतो वहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं वाहिं तवणिज्ज-माणेहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जाव

अर्थात् जो पदार्थ जितना लम्बा होवे उस से छायागुनी छाया होवे. इन में जो अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं कि दिन में एक पुरुष छाया सूर्य बनावे उस का कथन इस हेतु से है कि सब से नीचे रहा हुवा सूर्य अंधकार को नष्ट कर बाहिर नीकली हुइ तपनीय लेश्या सहित इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से पूर्व दिशामें प्रकाश करता पूर्वमें से उपर आवे यह एक अर्थ से एक छाया का अनुमान प्रमाण होवे. इस तरह सूर्य एक पुरुष छाया बनावे. जो ऐसा कहते हैं कि सूर्य दिन में दो पुरुष छाया बनावे उन का कथन इस हेतु से है कि सब से नीचे रहा हुवा सूर्य अंधकार नष्ट कर बाहिर नीकली हुई तपती हुई लेश्या सहित इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से पूर्व दिशा में प्रकाश करता हुवा पूर्व दिशा में

सूत्र

वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ २ ॥-ता कति कट्ठंते सूरिए पोरसिच्छायं निव्वत्तेति, आहितेति वदेज्जा, तत्थ खलु इमातो छण्णउति पडिवत्तीओ-तत्थ एगे एवमाहंसु ता अत्थिणं से दिवसे जंसिचणं दिवसंसि सूरिए एग पोरिसिच्छायंनिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा, एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण ता अत्थिणं से दिवसे जंसिचणं दिवसंसि सूरिए दु पोरसि च्छायं निव्वत्तेति, आहितेति वदेज्जा ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जाव छण्णउति पोरसिच्छायं निव्वतेति॥तत्थ जेते एव माहंसु ता अत्थिणं से दिवसे जंसिचणं दिवसंसि सूरिए एग पोरसिच्छायं निव्वत्तेति तेणं एव माहंसु ता सूरिए

अर्थ

मुहुर्त में व अस्त मुहुर्त में. उस की लेश्या की भी हानि वृद्धि नहीं है, क्यों की पुरुष छाया बनावे नहीं॥२॥ गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं. कि कितने काष्ट प्रमाण सूर्य पुरुष की छाया बनाता है? उत्तर— इस में अन्यतीर्थिकी प्ररूपणा रूप छन्नु पाडवा कहीं हैं तद्यथा कितनेक ऐसा कहते हैं कि किसी दिन सूर्य एक पुरुष छाया बनावे अर्थात् जो पदार्थ जितना लम्बा होवे उतनी छाया बनावे. २ दुसरा अन्यतीर्थि ऐसा कहते हैं कि दिन में सुर्य दो पुरुष छाया बनावे अर्थात् जो पदार्थ होवे उ। से दुगुनी छाया बनावे, इसी तरह से तीसरा अन्यतीर्थी तीन पुरुष छाया बनाने का कथन करे, यावत् पंचाणवा अन्यतीर्थी पंचाणवे पुरुष की छाया बनाने का कहे और छन्नुवा अन्यतीर्थी छन्नु पुरुष छाया बनाने का कहे.

तरसणं सव्वहिट्ठिमातो सूरिएपडिहाओ वहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं तवणिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जाव दितंसूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवतिएगाए आए अट्ठाए, एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए एत्थणं से सूरिए एगे पोरसिछायं निव्वत्तेति ॥ तत्थ जेत एव माहंसु अत्थिणं से दिवस जंसिचणं दिवसंसि सूरिए दुपोरसिच्छायं निव्वत्तइ तेण एव माहंसु ता सूरिए तस्सणं सव्व हेट्ठिमाओ सूरिए पाडिहतो वहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताहिं तवणिज्ज-माणेहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जाव

अर्थात् जो पदार्थ जितना लम्बा होवे उस से छगुनी छाया होवे. इन में जो अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं कि दिन में एक पुरुष छाया सुर्य बनावे उस का कथन इस हेतु से है कि सब से नीचे रहा हुवा सूर्य अंधकार को नष्ट कर बाहिर नीकली हुइ तपनीय लेश्या सहित इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से पूर्व दिशामें प्रकाश करता पूर्वमें से उपर आवे यह एक अर्थ स एक छाया का अनुपात प्रमाण होवे. इस तरह सूर्य एक पुरुष छाया बनावे. जो ऐसा कहते हैं कि सूर्य दिन में दो पुरुष छाया बनावे उन का कथन इस हेतु से है कि सब से नीचे रहा हुवा सूर्य अंधकार नष्ट कर बाहिर नीकली हुई तपती हुई लेश्या सहित इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से पूर्व दिशा में प्रकाश करता हुवा पूर्व दिशा में

सूत्र

तं सूरिए उद्धं उच्चत्तेणं एवति ताहिं दो अट्ठाहिं दोहिं छायाणुमाणुप्पमाणाहिं उमाए-तत्थणं से सूरिए दुपोरिसिच्छायं निव्वत्तेति ॥ एवं एक्काए पडिवत्तीए भाणियव्वं जाव छण्णउतिमा पडिवत्तिज्ज एगे एव माहंसु ॥ ४ ॥ वयं पुण एवं वयामो सातिरेगं एगुणट्ठि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा, ता अवड्ढ पोरसीणं छाया दिव-

अर्थ

से निकले, इस तरह व्यवसाय से दो पुरुष छाया के प्रमाण से अनुमान होवे. इस तरह सूर्य दो पुरुष छाया बनावे. यों एक पडिवृत्ति में एक २ पुरुष अधिक २ कहना अर्थात् तीसरी में तीन पुरुष छाया, चौथी में चार पुरुष छाया यावत् पंचाणु में पंचाणु पुरुषछाया और छन्नुवी पडिवृत्ति में छन्नु पुरुष छाया बनावे ॥४॥ इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं कि सूर्य गुणसठ पुरुष से अधिक पुरुष छाया बनावे. प्रश्न—अर्ध पुरुष छाया आवे तब कितना दिन व्यतीत हुवा और कितना दिन शेष रहा ? उत्तर—अर्ध पुरुष छाया आवे तब दिन का तीसरा भाग व्यतीत होवे, अर्थात् प्रथम मंडल पर जब सूर्य होवे तब ३६ घडी का दिन मान होवे, इस से ३६ को तीन का भाग देने से बारह घडी का दिन मान होवे, अर्थात् बारह घडी दिन मान व्यतीत होवे, और २४ घडी दिन शेष रहे. सूर्यास्त समय में २४ घडी दिन व्यतीत होवे और बारह घडी दिन शेष रहे. एक पुरुषछाया आवे तब कितना दिन व्यतीत होवे और कितना दिन शेष रहे ? उत्तर-चौथा भाग दिनव्यतीत होवे अर्थात् एक दिन ३६ घडी का होता है जिस में से

सहस्स किंगते वा सेसेवा ता ति भागे गएवा ता सेसेवा पोरिसिणं छाया दिवसस्स किंगएवा सेसेवा जाव चउभाग गएवा सेसेवा ता दिवड्ढ पोरिसीणछाया दिवसस्स किंगते वा सेसेवा, ता पंच भागेगतेव्वा सेसेवा, एवं अवड्ढ पोरिसीणं छाया पुच्छा दिवसस्स भागं छोड्डुवा

९ घडी का दिन मान जाते और २७ घडी दिन शेष रहते पुरुष छाया आवे. देढ पुरुष छाया आवे तब कितना दिन व्यतीत होवे और कितना दिन शेष रहे ? उत्तर—देढ पुरुष छाया आवे तब पांच भाग दिन जावे अर्थात् ३६ घडी दिन मान का पांचवा भाग करते ७ घडी १२ पल होवे इतना दिन व्यतीत होवे और २८ घडी ४८ पल दिन शेष रहे. सूर्योदय समय में २८ घडी ४८ पल इतना समय व्यतीत हुवा होवे और ७ घडी १२ पल दिन शेष रहा होवे तब देढ पुरुष छाया होवे. यह प्रथम मंडल पर सूर्य होवे उस समय का जानना. इस सिवाय दूसरे मंडल से १८४ वे मंडल तक उपर्युक्त गणित करना नहीं. क्यों कि उत्तराध्ययन के २६ वे अध्ययन में कहा है कि अषाढ शुदी १५ पूर्णिमा को उत्कृष्ट दिनमान होवे तब घुंटण से छाया मापते दो पांव छाया होवे उस समय दिवस का चौथा भाग जावे घुंटण पर्यंत दो पांव की लम्बाइ होती है. इस से जो पदार्थ जितना लम्बा होता है उतनी उस की छाया होती है. यह पुरुष छाया जानना. जब पुरुष छाया आवे तब दिन का चौथा भाग व्यतीत होवे. यह प्रथम मंडल आश्री जानना. अन्य किसी मंडल पर इस तरह पोरसी नहीं आती है. ऐसे ही और भी

सूत्र

गरणं जाव ता अगुलट्ठि पोरिसीणछाया दिवसरस किं गएवा सेसेवा ता एकूण वीसमर्न भागगएवा, सेसेवा सातिरेग अगुणसट्ठि पोरिसीणं च्छाया दिवसरस किं गतेवा सेसेवा, ताणं किंगत किंचिविगतेवा सेसेवा॥ ५ ॥ तरथ खलु इमा पण्णवीसंतिविहा छाया पण्णत्ता तंजहा-खंभच्छाया ॥ १ ॥ रज्जुच्छाया ॥ २ ॥ पासायच्छाया

अर्थ

अ ं पुरुष छाया की पृच्छा ? दिनामान थोडा जावे और शेष बहुत रहे अर्थात् ३६ घडी के दिन में १२ घडी का दिन जावे और २४ घडी दिन शेष रहे वगैरह सब पन्नरहवे पाहुडे में कहा वैसे कहना. जब गुणसठ पुरुष छाया होवे तब कितना दिन जावे व कितना दिन शेष रहे ? उत्तर-दिन का ११९ वा भाग जावे अर्थात् पहिले मंडल ३६ घडी का दिन होता है ३६ घडी को ११५ का भाग देने से १८ पल और एक पल के ११९ भाग करे वैसे १८ भाग आवे. इतना भाग दिन जावे और ३५ घडी ४१ पल और एक पल के ११९ भाग में से १०१ भाग बाकी रहे तब गुणसठ पुरुष छाया का प्रमाण आवे. प्रश्न-जब सातिरेक गुणसठ पुरुष छाया होवे तब दिन का कितना भाग जावे व कितना शेष रहे ? उत्तर-सूर्य की किंचित् गति व किंचित् दिन जावे और शेष सब दिन रहे तब साधिक गुणसठ पुरुष छाया का प्रमाण होवे ॥ ५ ॥ छाया के पच्चीस भेद कहे हैं. तद्यथा—१ स्तंभ की छाया, २ रस्सी की छाया, ३ प्राकार की छाया, ४ प्रासाद की छाया, ५ शिखरबन्ध महेल की छाया ६ अनुलोम छाया, ७ प्रति-

॥ ३ ॥ पागारच्छाया ॥ ४ ॥ उच्चच्छाया ॥ ५ ॥ अणुलोमच्छाया ॥ ६ ॥ पडिलोमच्छाया ॥ ७ ॥ आराहिता ॥ ८ ॥ उवाहिया ॥ ९ ॥ समाएपाडिहता ॥ १० ॥ खील च्छाया ॥ ११ ॥ पंथच्छाया ॥ १२ ॥ पुरआदगा पिठओदगा ॥ १४ ॥ पुरम कट्टभागोवगया ॥ १४ ॥ पच्छिम कट्टभागोवगया ॥ १५ ॥ छायाणुवादिणो ॥ १६ ॥ कट्ठाणु वादिणि ॥ १७ ॥ छायादिकंपेदिहायं सगडच्छाया, ॥ तत्थ खलु इमा अट्ठविहा गोलच्छाया, पण्णत्ता, तंजहा- गोलछाया अवड्ढगोल छाया, गोल २ छाया, अवड्ढगोल२छाया, गोलावलिछाया,

1 छाया, ८ लकडी गाडे उस की छाया, ९ उठाइ हुइ की छाया, १० हाथ में पकडकर रखे उस की, छाया, ११ लोहा अथवा लकड के खील की छाया, १२ रस्ते चलते हाथ से चलाकर चले वह छाया १३ पहिला हाथ ऊंचा करे पीछे नीचा करे उस की छाया १४ काष्ठ के भाग में गज जैसे निशानीकर नार में रखते छाया होवे सो १५ पीछे नीचे देखकर चले सो छाया १६ छाया का अनुवाद प्रमाण करे सो छाया १७ काष्ठ को प्रमाण करे ड वह छाया १८ छ गादिक कम्प गाडी या एक दीर्घपनासे खडा रहे. गाडिया इस में आठ प्रकार की गोल छाया कही तद्यथा गोल छाया १९ अर्ध गोल छाया २० गोलगोल छाया चुडी जैसे २१ अर्ध गोल गोल छाया कांचकेगोले जैसे २२ मध्य समयमें सूर्य देखा जावे वैसे गोलवती

सूत्र

अवड्ढगोलावलिच्छाया गोलपुंजच्छाया, अवड्ढगोल पुंजच्छाया ॥ इति चंदपण्णत्तीए नवमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ ९ ॥

* * * * *

अर्थ

छाया २१ पूर्णिमा का चंद्र मध्य रात्रि में देखावे वह अर्ध गोलावर्ती छाया, २४ खजुर की छाया सो गोलपुंज छाया और २८ अर्ध गोलपुंज छाया ॥ यह चंद्र प्रज्ञप्ति का नववा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ९ ॥

॥ दशम प्राभृतम् ॥

ता जोगेति वत्थुस्स आवलिय निवाए आहितेति वदेज्जा ? ता कहंते जोगवत्थुस्स आवलियानिवाए आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थ एगे एवमाहंसू जोगं जोतेति ता सव्वेविणं नक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसिया आहितेति वेदज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ १ ॥ एगे पुण एवमाहंसु-ता सव्वेविणं णक्खत्ता महादिया आमलेस पज्जवसिया आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ २ ॥ एगेपुण एवमाहंसु ता सव्वेविणं नक्खत्ता धणिट्ठा दिया सवण पज्जवसिया आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ ३ ॥ एगेपुण एव माहंसु-ता सव्वेविणं णक्खत्ता असिणिआदिया रेवति पज्जवसिया आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ॥ ४ ॥ एगेपुण-ता सव्वेविणं णक्खत्ता

अब दशवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में चंद्रमा सूर्य की साथ नक्षत्रों अनुक्रम से कैसे जोग जोडते हैं! अहो भगवन्! नक्षत्र चंद्रमा व सूर्य की साथ कैसे चलते हैं? अहो शिष्य ! इस में अन्यतीर्थी की प्ररूपणा रूप पांच पडिवत्तियों कही है. जिन में से एक ऐसा कहते कि कृत्तिका से भरणी पर्यंत सब नक्षत्र चंद्रमा सूर्य की साथ जोग करते हैं, २ दूसरे कितनेक ऐसा कहते हैं. कि मघादि से अश्लेषा पर्यंत सब नक्षत्र चंद्रमा सूर्य की साथ योग करते हैं, ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि धनिष्टादि से श्रवण पर्यंत सब नक्षत्र चंद्रमा सूर्य की साथ जोग करते हैं, ४ कितनेक ऐसा कहते हैं कि अश्विनी से रेवती पर्यंत सब नक्षत्र

सूत्र

भरणादिया असिणिपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ॥ ५ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता सव्वेविणं णक्खत्ता अभियादिया उत्तरासाढापज्जवसिया आहितेति वदेज्जा, तजहा-अभिचे, सवणे, धणिट्ठा, सत्तीभसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया, रेवति, असिणि, भरणि, कत्तिया, रोहिणी, मिगसिर, अद्दा, पुनव्वसु, पुस्सो, असलेस्सा, महा, पुव्वाफगुणी, उत्तराफगुणी, हत्थो, चित्ता,साति, विसाहा, अणुराहा, जेट्ठा, मुलो, पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥ दसमस्स पढमं पाहुड सम्मत्तं॥ १० ॥ १ ॥

अर्थ

चंद्रमा सूर्य के साथ जोग करते हैं ५ कितने ऐसा कहते हैं भरणि आदि से अश्विनी पर्यंत सब नक्षत्र चंद्रमा सूर्य की साथ योग करते हैं. और मैं इस कथनको ऐसे कहता हूं कि अभिचादि से उत्तराषाढ पर्यंत सब नक्षत्र चंद्रमा सूर्य की साथ योग करते हैं. जिन के नाम-१ अभिच २ श्रवण ३ धनिष्ठा ४ शतभिषा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ उत्तरा भाद्रपद ७ रेवती ८ अश्वनी ९ भरणी १० कृत्तिका ११ रोहिणी १२ मृगसर १३ आर्द्रा १४ पुनर्वसु १५ पुष्य १६ अश्लेषा १७ मघा १८ पूर्वाफाल्गुनी १९ उत्तरा फाल्गुनी २० हस्त २१ चित्रा २२ स्वाति २३ विशाखा २४ अनुराधा २५ ज्येष्ठा २६ मूल २७ पूर्वाषाढा और २८ उत्तराषाढा. उक्त अठावीस नक्षत्र चंद्र सूर्य की साथ योग करते हैं. वैसे ही युग की आदि से पुष्य नक्षत्र से पुष्य नक्षत्र पर्यंत योग करे. यह दशवा पाहुडा का प्रथम अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ १ ॥

ता कहंते मुहुत्तगे आहितेति वदेजा ? ता एएसिणं अट्ठाविसए णक्खत्ताण, अत्थि णक्खत्ता, जेणेव णक्खत्ता णवमहुत्ते सत्तावीसंच सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोगं जोयंति.अत्थि णक्खत्ता जेण पण्णरस मुहुत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोयंति अत्थि णक्खत्ता जेणं नक्खत्ता तिसं मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोतति अत्थिणं णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता पणयालिसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोयति ॥ १ ॥ एएसिणं अट्ठाविसए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जेण नक्खत्त नवमुहुत्ते सत्ताविसंच सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति, सेणं एगे अभिए ॥ तत्थणं केते णक्खत्ता जेणं नक्खत्ता

अब दूसरा अंतर पाहुडा कहते है. अहो भगवन् ! आप के मत में चंद्र की साथ नक्षत्र की मुहूर्त गति कैसे कही है ? अहो शिष्य ! उक्त अठाइस नक्षत्रों में कितनेक नक्षत्र ऐसे हैं जो चंद्रमा की साथ नव मुहूर्त और एक मुहूर्त के सडसठ भाग में के सत्तावीस भागसे जोग करते हैं और कितनेक नक्षत्र एसे हैं कि जो चंद्रमा की साथ पन्नरह मुहूर्त योग करते हैं. कितनेक ऐसे भी नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमा की साथ तीस मुहूर्त जोग करते हैं और कितनेक नक्षत्र ऐसे भी हैं कि जो चंद्रमा की साथ पेतालीस मुहूर्त जोग करते हैं ॥ १ ॥ अब इन का खुलासा करते हैं. अहो भगवन् ! इन अठावीस नक्षत्र में से ऐसे कौन से नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमा की साथ नव मुहूर्त व सडसठिये सत्तावीस भागसे योग करते हैं ? उत्तर

सूत्र

पण्णरस मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति; तेणं छ नक्खत्ता तंजहा-सतभिसया, भरणि, अद्दा, असलेसा, साति, जेट्ठा, ॥ तत्थणं केते नक्खत्ता, जेणं नक्खत्ता तित्तं मुहुत्त चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति. तेणं पण्णरस तंजहा सवणं, धणिट्ठा, पुव्वभद्दवया, रेवति, अस्सिणी, कत्तिया मिगसिर, पुस्सो, महा, पुव्वाफग्गुणि, हत्थो, चित्ता, अणुराहा, मूलो, पुव्वासाढा, ॥ तत्थ केते णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता पणयालीस मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति एतेणं छ तंजहा -उत्तर भद्दवया, रोहिणी, पुणव्वसु, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा ॥२॥ ता एतासिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि

अर्थ

अहो शिष्य ! एक अभिच नक्षत्र नव मुहूर्त व एक मुहूर्त के सडसाठिये सत्ताईस भाग से योग करता है. क्यों की अभिच नक्षत्र एक अहोरात्रि के सडसाठिये इक्कीस भाग से चंद्रमा की साथ योग करता है. इस मे २१ भाग को ३० गुना (एक अहो रात्रि के तीस मुहूर्त होने से) करने से ६३० भाग होवे. पीछे उस ६७ का भाग देने से नव मुहूर्त व सडसाठियें २७ भाग होवे. अहो भगवन् ! ऐसे कौन से नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमा की साथ पन्नरह मुहूर्त योग करते हैं ! अहो शिष्य ! ऐसे छ नक्षत्र हैं. जिनके नाम-१ शतभिषा-२ भरणी ३ आर्द्रा ४ अश्लेषा ५ स्वाति और ६ जेष्ठा. क्योंकि एक अहो रात्रि में सडसाठये ३३॥ भाग से चंद्रमा की साथ योग करते हैं इस से ३३॥ ×३०=१००५ इस राशि को

णक्खत्ते जेणं णक्खत्ते चत्तारि अहोरत्ते छच्चमुहुत्ते सूरिएणं जोगं जोएति अत्थि नक्खत्ते जेणं छ अहोरत्ते एकवीसंचमुहुत्ते सूरिएणं

६७ का भागदेवे तब १५मुहूर्त होवे. अहो भगवन्! ऐसे कितने नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमा की साथ तीस मुहूर्त से योग करते हैं! अहो शिष्य ! ऐसे पनरह नक्षत्र हैं जिन के नाम १-श्रवण, २ धनिष्ठा, ३ पूर्व भाद्रपद, ४ रेवती, ५ अश्विनी, ६ कृत्तिका, ७ मृगशर, ८ पुष्य, ९ मघा, १० पूर्वाफाल्गुनी, ११ हस्त, १२ चित्रा, १३ अनुराधा १४मूल और १५पूर्वापाढा. ये तीस मुहूर्त से योग करते हैं; क्योंकी एक अहोरात्रि के ६७ये ६७ भाग से योग करते हैं. उन को मुहूर्त के भाग करते ३० गुना करे तब २०१० होवे. इस राशि को ६७ का भागदेवे तब तीस मुहूर्त होवे. अहो भगवन् ! ऐसे कितने नक्षत्र हैं कि जो चंद्र की साथ पैंतालीस मुहूर्त में योग करते हैं ? अहो शिष्य ऐसे छ नक्षत्र हैं कि जो चंद्र की साथ पैंतालीस मुहूर्त से योग करते हैं जिन के नाम-१ उत्तराभाद्रपद, २ रोहिणी, ३ पुनर्वसु, ४ उत्तराफाल्गुनी, ५ विशाखा और ६ उत्तरापाढा. क्योंकि एक अहोरात्रि के ४७ सडसठिये १००॥ भाग से चंद्रमा की साथ उक्त छ नक्षत्रों योग करते हैं. इस से इस को ३० गुना करने से ३०१५हुवे फीर इसे ६७का भागदेने से ४५मुहूर्त आवे.॥२॥अब सूर्य की साथ नक्षत्रों के योग का कथन करते हैं. इन अठावीस नक्षत्रों में से ऐसे नक्षत्रों हैं कि जो चार अहोरात्रि व छ मुहूर्त में सूर्य की साथ योग करते हैं, कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं कि जो छ अहो रात्रि २१ मुहूर्त में सूर्य

संहि जोगं जोएति, अत्थि नक्खत्ते जेणं पक्खत्ता तेरस अहोरत्ते दुवालस
मुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोगं जोएति, अत्थि णक्खत्ते जेणं पक्खत्ता वीसं अहोरत्ते तिन्निय

की साथ योग करते हैं, कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं कि जो तेरह अहोरात्रि और बारह मुहूर्त में सूर्य की
साथ योग करते हैं, कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं कि जो बीस अहोरात्रि तीन मुहूर्त में सूर्य की साथ
योग करते हैं. इन अठावीस नक्षत्र में से कौन से नक्षत्र ऐसे हैं कि जो सूर्य की साथ चार दिन व छ
मुहूर्त में योग करते हैं कौन २ नक्षत्र छ अहोरात्रि इक्कीस मुहूर्त योग करते हैं, कौन २ नक्षत्र
तेरह अहोरात्रि बारह मुहूर्त योग करते हैं, और कौन २ नक्षत्र हैं कि जो बीस अहोरात्रि तीन मुहूर्त
योग करते हैं ? उत्तर-इन अठावीस नक्षत्र में से जो नक्षत्र चार अहोरात्रि छ मुहूर्त सूर्य की साथ योग
करते हैं वह एक अभिच नक्षत्र है. ऐसे जैसे पहिले चंद्र के साथ नक्षत्रों का योग कहा वैसे ही यहां
कहना. यावत् शब्द से जो छ नक्षत्र चंद्र की साथ पन्नरह मुहूर्त योग करते हैं वे यहां सूर्य की साथ छ
अहोरात्रि इक्कीस मुहूर्त योग करते हैं, जो पन्नरह नक्षत्र चंद्र साथ तीस मुहूर्त योग करते हैं वे
यहां सूर्य की साथ तेरह अहोरात्रि बारह मुहूर्त में योग करते हैं, वगैरह इन अठावीस नक्षत्रों में से
जो बीस अहोरात्रि व तीन मुहूर्त सूर्य की साथ योग करते हैं वे छ नक्षत्र हैं जिनके नाम १ उत्तरा
भाद्रपद २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ उत्तरा फाल्गुनी ५ विशाखा और ६ उत्तराषाढा. जो नक्षत्र चंद्र

मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोगं जोएति॥ता एतेसिणं अट्ठाविसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जेणं नक्खत्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्चमुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ कयरे णक्खत्ते जेणं छ अहोरत्ते दुवालस मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ कयरे

की साथ ९ मुहूर्त व सडसठिये २७ भाग योग करे वह नक्षत्र सूर्य की साथ चार अहोरात्रि छ मुहूर्त योग करे, चंद्र की साथ जो छ नक्षत्र १५ मुहूर्त योग करे वही छ नक्षत्र सूर्य की साथ छ अहोरात्रि २१ मुहूर्त योग करे, चंद्र की साथ जो पनरह नक्षत्र तीस मुहूर्त योग करे वे ही सूर्य की साथ १३ अहोरात्रि १२ मुहूर्त योग करे, चंद्र की साथ जो छ नक्षत्र ४५ मुहूर्त योग करे वे ही सूर्य की साथ बीस अहोरात्रि तीन मुहूर्त योग करे. ऐसा योग होने की विधि बताते हैं. एक युग में चंद्रमा साथ नक्षत्र ६७ वार योग करते हैं, और सूर्य साथ पांच वार योग करते हैं. जो नक्षत्र चंद्रकी साथ ९ मुहूर्त ६७ ये २७ भाग योग करता है उस को ६७ से गुना करना. क्योंकि एक युग में ६७ वार चंद्रकी साथ योग करता है. इस से ९$\frac{२७}{६७}$×६७=६३० मुहूर्त होवे. इस को एक अहोरात्रि के ३० मुहूर्त होने से ३० का भाग देना, जिससे २१ होवे. यह २१ दिन चंद्रकी साथ योग करे. यही नक्षत्र पांच वार सूर्य की साथ योग करे, इससे इस को पांच का भागदेने से चार अहोरात्रि और ६ मुहूर्त में सूर्य की साथ योग करे.

सूत्र

णक्खत्ते जेणं नक्खत्ता तेरस अहोरत्ते दुवालस मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोएति कयरे णक्खत्ते जेणं णक्खत्ता वीसं अहोरत्ते तिन्निय मुहुत्ते सूरिएणंसद्धिं जोगं जोएति? ताएयासिणं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं जे से णक्खत्ते चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोगं जोएति सेणं एगे अभिए एवं वयासी उच्चारेयव्वा जाव तत्थणं जेते णक्खत्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णिय मुहुत्ते सूरिएणंसद्धिं जोगं जोएति

अर्थ

जितने नक्षत्र चंद्र की साथ १५ मुहूर्त योग करते हैं वे एक युग में १००५ मुहूर्त में योग करते हैं क्यों कि १५ को ६७ का भागदेने से १००५ होवे, इस को ३० का भागदेने से ३३॥ अहोरात्रि होवे. और इस को पांच का भागदेने से ६ अहोरात्रि व २१ मुहूर्त होवे. जो ३० मुहूर्त में योग करते हैं. इनको ६७ से गुनाकार करने से २०१० होवे, उसे फीर ३० का भागदेने से ६७ होवे उसे पांच का भाग देने से १३ अहोरात्रि और १२ मुहूर्त हुए. जो नक्षत्र चंद्र की साथ ४५ मुहूर्त योग करते हैं उस ४५ को ६७ से गुनने से ३०१५ मुहूर्त होवे, उसे ३० का भाग देने से १००॥ अहोरात्रि होवे, उसे पांच का भाग देने से २० अहोरात्रि व तीन मुहूर्त होवे. इन का यहां यंत्र देते हैं.

तेणं छ नक्खत्ता तंजहा उत्तरभद्दवया जाव उत्तरासाढा॥ दसमस्स बिइतियं पाहुडं ॥ २ ॥

नक्षत्र.	चंद्र साथ. मुहूर्त.	भाग.	सूर्य साथ. अहोरात्रि.	मुहूर्त.	नक्षत्र.	चंद्र साथ. मुहूर्त.	भाग.	सूर्य साथ. अहो रात्रि.	मुहूर्त.
१ अभिच	९	२७	४	६	१५ पुष्य	३०	०	१३	१२
२ श्रवण	३०	०	१३	१२	१६ अश्लेषा	१५	०	६	२१
३ धनिष्ठा	३०	०	१३	१२	१७ मघा	३०	०	१३	१२
४ शतभिषा	१५	०	६	२१	१८ पूर्वा फाल्गुनी	३०	०	१३	१२
५ पूर्वाभाद्रपद	३०	०	१३	१२	१९ उत्तरा फल्गुनी	४५	०	२०	३
६ उत्तरा भाद्रपद	४५	०	२०	३	२० हस्त	३०	०	१३	१२
७ रेवती	३०	०	१३	१२	२१ चित्रा	३०	०	१३	१२
८ अश्वनी	३०	०	१३	१२	२२ स्वाति	१५	०	६	२१
९ भरणी	१५	०	६	२१	२३ विशाखा	४५	०	२०	३
१० कृत्तिका	३०	०	१३	१२	२४ अनुराधा	३०	०	१३	१२
११ रोहिणी	४५	०	२०	३	२५ जेष्ठा	१५	०	६	२१
१२ मृगशर	३०	०	१३	१२	२६ मूल	३०	०	१३	१२
१३ आर्द्रा	१५	०	६	२१	२७ पूर्वाषाढा	३०	०	१३	१२
१४ पुनर्वसु	४५	०	२०	३	२८ उत्तराषाढा	४५	०	२०	३

यह दशवा पाहुडा का दूसरा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ २ ॥

सूत्र

ता कहतं एवंभागा आहितेति वदेज्जा, ? ता एतासिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता, पुव्वंभागा समक्खेत्ता तिसंतिमुहुत्ता पण्णत्ता, अत्थिणं नक्खत्ता, जेणं नक्खत्ते पच्छाभागा समाक्खेत्ता तीसइं मुहुत्ता पण्णत्ता अत्थिणक्खत्ता. जेग नक्खत्ते णत्तं भागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरस मुहुत्ता पण्णत्ता, अत्थिणं णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसं मुहुत्ता पण्णत्ता ॥ १ ॥ ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता. जेणं णक्खत्ता पुव्वभागा समक्खेत्ता तिसति मुहुत्ता पण्णत्ता, कयरे णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता पच्छाभागा समक्खेत्ते तिसति मुहुत्ता पण्णत्ता ॥

अर्थ

अब दशवेका तीसरा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन्! किस तरह इन नक्षत्रों के भाग कहे हैं. अहो शिष्य! इन अठावीस नक्षत्रों में से ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो नक्षत्र पूर्वभाग समक्षेत्र वाले तीस मुहूर्त के कहे हैं. कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं कि जो पश्चात्भाग समक्षेत्र वाले तीस मुहूर्त के कहे हैं, कितनेक नक्षत्र ऐसे है कि अर्धभाग वाले पन्नरह मुहूर्त के कहे हैं, और कितनेक नक्षत्र ऐसे है कि जो उभय भाग के देढ दिन के क्षेत्रवाले ४५ मुहूर्त के कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ? इन अठावीस नक्षत्रों में से कौन नक्षत्रों ऐसे हैं कि जो पूर्व भाग सम क्षेत्र तीस मुहूर्त का कहा है, कौनसे नक्षत्रों पश्चात भाग समक्षेत्र

कयरे णक्खत्ते जेणं णक्खत्ते णंतं भागा अवढ्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता कयरे णक्खत्ते जेणं णक्खत्ता उभयंभागा दिवढ्ढक्खेत्ते पणयालिस मुहुत्ता पण्णत्ता, ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं, तत्थणं जेते णक्खत्तेणं णक्खत्ता पुव्वभागा समक्खेत्ता तिसति मुहुत्ता पण्णत्ता:तेणं छ तंजहा-पुव्वभद्दवया कात्तिया महा, पुव्वाफग्गुणि, मूलो, पुव्वासाढा ॥ तत्थणं जेते नक्खत्त पच्छा भाग समखेत्ते तिसइ मुहुत्ता पण्णत्ता, तेणं दस तंजहा-अभिते, सवणे, धणिट्ठा, रेवति, अस्सिणि, मगसिर, पुस्सो, हत्थो, चित्ता, अणुराहा पच्छा भाग दस हवंति ॥

तीस मुहूर्त के हैं, कौनसे नक्षत्रो अर्धक्षेत्र पन्नरह मुहूर्त के हैं और कौन से नक्षत्र दोनों विभाग देढ क्षेत्र पैतालीस मुहूर्त वाले हैं ? उत्तर-अहो शिष्य ! इन अठावीस नक्षत्रों में से जो नक्षत्र पूर्वभाग समक्षेत्र में तीस मुहूर्त पर्यंत चंद्रमा साथ योग करे (अर्थात् क्षेत्र मंडल के चार विभाग करना. पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण द $\frac{पू}{प}$ उ इस में जो पूर्व दक्षिण की मध्य में योग करे वह पूर्व भाग योग जानना, ऐसे छ नक्षत्र कहे हैं जिन के नाम १ पूर्वाभाद्र पद, २ कृत्तिका, ३ मघा, ४ पूर्वा फाल्गुनी, ५ मूल और ६ पूर्वाषाढा. यह छे नक्षत्र पूर्व भागमें चंद्र साथ योग करतेहैं. जो नक्षत्र पश्चिमतरफ समक्षेत्र तीस मुहूर्त के हैं वे दश नक्षत्र हैं (नव नक्षत्र समक्षत्रीय है और एक अभिच नक्षत्र समक्षेत्र के ६७ भाग २१ वैसे २१ भाग क्षेत्रवाला हैं तथापि समक्षेत्र में ही इस की गिणना की है

तत्थणं जेते णक्खत्ता णच्चभागा, अवड्ढ खेत्ता पण्णरस मुहुत्ता तेणं छ तंजहा-सतभिसा भरणि, अद्दा, असलेसा, साति, जेट्ठा, ॥ तत्थणं जेते णक्खत्ता, तेणं नक्खत्ता उभयभागा, दिवड्ढ खेत्ता, पणयालीसाति मुहुत्ता पण्णत्ता तेणं छ तंजहा-उत्तरभद्दवया, रोहिणि, पुणवसु, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा ॥ दसमस्स पाहुडस्स ततियं पाहुडं ॥ १० ॥ ३ ॥ + +

ता कहंते जुगस्स आदि आहितेति वदेज्जा ? ता अभिया, सवणा, खलु दुवे णक्ख

इन दश नक्षत्र के नाम, १ अभिच २ श्रवण ३ धनिष्ठा ४ रेवति ५ अश्विनी ६ मृगसर ७ पुष्य ८ हस्त ९ चित्रा और १० अनुराधा. उक्त दश नक्षत्र पश्चिम तरफ अर्थात् दक्षिण से पश्चिम तरफ जाते योग करते हैं. वहां जो नक्षत्र पश्चिम के अंत जाते रात्रि में अर्ध क्षेत्र पन्नरह मुहूर्त में योग करे वे छ नक्षत्र हैं जिन के नाम—१ शतभिषा २ भरणि ३ आर्द्रा ४ अश्लेषा ५ स्वाति और ६ ज्येष्ठा. और जो नक्षत्र पूर्वपश्चिम दोनों भाग में देढ क्षेत्र के ४५ मुहूर्त योग करे वे नक्षत्रों छ हैं जिन के नाम. १ उत्तराभाद्रपद २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ उत्तराफाल्गुनी ५ विशाखा और ६ उत्तराषाढा. उक्त छ नक्षत्रों पूर्वपश्चिम भाग में योग करते हैं. यह दशवा पाहुडा का तीसरा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ३ ॥ ०

अब चौथा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! युग की आदि कैसे कही? अर्थात् बैठते युगमें चंद्रमा
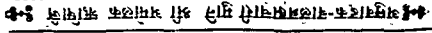
त्ता पच्छाभागा समक्खेत्ता सातिरेगा उणयालिसंति मुहुत्ता, तं पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति, ततोपच्छा अवरसातिरेगं दिवसं एवं खलु अभितं सवणे दुवेत्ते णक्खत्ता एगं रायं एगंचसातिरेगं दिवसं चंदेणंसद्धिं जोगं जोएति जोगं जोतित्ता जोगं अणुपरियट्टांति, जोगं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदे धणिट्ठाणं समप्पिंति ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छाभागे समक्खेत्ते तिसति मुहुत्ते तं

साथ नक्षत्र का योग कैसे होवे सो कहीये ? अहो गौतम ! अभिजित व श्रवण ये दोनों नक्षत्र पश्चात् भाग समक्षेत्र साधिक ३९ मुहूर्त में पहिले दिन संध्या को चंद्रमा की साथ योग करे. अर्थात् युग की आदि प्रभात से होती है, और वहां से प्रथम अभिजित नक्षत्र के योग का प्रारंभ होता है. अभिजित नक्षत्र का योग ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये और ३९ भाग ६७ ये चंद्र की साथ होता है. यह नक्षत्र सहमठीये २१ भाग श्रवण नक्षत्र की साथ समक्षेत्री है. अभिजित नक्षत्र पीछे श्रवण नक्षत्र का योग होता है वह तीस मुहूर्त पर्यंत रहता है. उक्त दोनों नक्षत्रों का योग दक्षिण से पश्चिम तक के क्षेत्र में चंद्र साथ होवे. यद्यपि अभिजित् नक्षत्र प्रातःकाल से ही लगता है परंतु ६७ ये २१ भाग का श्रवण नक्षत्र की साथ समक्षेत्री होने से पश्चात भाग क्षेत्री में लिया है. उक्त दोनों नक्षत्र एक रात्रि और

पढमयाए सायं चंदेणसद्धिं जोगंजोएतित्ता जोगंअणुपरियट्टंति जोगं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदे सतभिसताणं समप्पिंतिता सतभिसता खलु णक्खत्ते णंत्तं भागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस मुहुत्ते तं पढमयाए सायं चंदेणसद्धिं जोगं जोतेति नोलभइ अवरं दिवसं ॥ एवं खलु सयाभिसया णक्खत्ते एगंरातिं चंदेणसद्धिं जोगं जोतेति जोगंजोतेत्ता जोगं अणुपरियट्टित्ता, पातोचंदे पुव्वाणं पोट्ठवयाणं

साधिक एक दिन पर्यंत चंद्रमा साथ रहते हैं अर्थात् युगके दूसरे दिन में दूसरा श्रवण नक्षत्र की ९ $\frac{२४}{६१}$ $\frac{३९}{६७}$ भाग में समाप्ति होवे वहां से चंद्रमा उस नक्षत्र से पीछा नीवर्ते फीर युग के दूसरे दिन में ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ यें गये पीछे पश्चातभाग संध्याकाल में धनिष्ठा नक्षत्र का योग होवे दूसरे दिन के उक्त साधिक ९ मुहूर्त व्यतीत होते और शेष ८ मुहूर्त ३२ भाग ६१ ये २८ भाग ५७ ये शेष रहे उस के प्रथम समय में संध्याकाल से धनिष्ठा नक्षत्र तीस मुहूर्त योग करे. योग कर के युग के तीसरे दिन में ९ मुहुर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ यें तक मे योग की समाप्ति करे और दिन का ८ मुहूर्त ३० भाग ६१ में २८ भाग ६७ शेष रहें. इस के प्रथम समय में संध्याकाल से शतभिषा नक्षत्र प्राप्त होवे, यह नक्षत्र नक्त भागी [रात्रि भाग] पन्नरह मुहूर्त का होवे, इस से दुसरा दिन
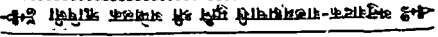
समप्पंति, ता पुव्वपोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समखेत्ते तिसति मुहुत्ते पातो-चंदेणसद्धिं जोगं जोएति, ततोपच्छा अवरराय ॥ एवं खलु पुव्वा पोट्ठवया णक्खत्ते एगंच दिवसं एगं च राति चंदेणं सद्धिं जोगजोएति २ त्ता, जोगं अणुपरि यट्टति २ त्ता पातो चंदे उत्तरापोट्ठवयाणं समप्पेति तम उत्तरापोट्ठवया, खलुण-क्खत्ते उभयभागे दिवड्ड खेत्ते पणयालीसति मुहुत्ते, तं पढमयाए पातो चंदेणंसद्धिं

प्राप्त करे नहीं परंतु रात्रि में ही चंद्र की साथ योग करे अर्थात् युग के तीसरी दिन की रात्रि में ६ मुहूर्त ३० भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ तक में शतभिषा नक्षत्र के योग की समाप्ति होवे, रात्रि का शेष भाग ५ मुहूर्त ३६ भाग ६१ ये और २९ भाग ६७ रहे, वहां से प्रथम समय में पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र पूर्व की रेखा से दक्षिण की रेखा पर्यंत तीस मुहूर्त तक योग करे, इससे वह नक्षत्र तीसरा दिन की शेष रात्रि पूर्ण करे चौथा दिन पूर्ण करे और चौथा दिन की रात्रि के ६ मुहूर्त ३२ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये पूर्ण करे. और शेष ५ मुहूर्त २६ भाग ६१ ये २८ भाग ६७ ये रहे इस के प्रथम समय में उत्तराभाद्रपद नक्षत्र प्राप्त होवे. यह उत्तराभाद्रपद नक्षत्र उभयभागी ४५ मुहूर्त का है. यह प्रभात से अर्थात् जो शेष रात्रि रही है वहां से चंद्र की साथ योग करते हुवे

सूत्र

जोग जोएति, अवरं च रायं. ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु उत्तरा पोट्ठवयानक्खत्ते दोय दिवसं एगंच राई चंदेणसद्धिं जोगं जोएति २ त्ता जोगं अणुपरियट्टति२त्ता, सायं चंदे रेवातिणं समप्पिति ता रेवाति खलु णक्खत्ते पच्छा भागे समक्खेत्ते तिसाति मुहुत्ते तं पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोगंजोएति ततो

अर्थ

वह रात्रि युगका पांचवा दिन व रात्रि पुर्ण करे और युग के छठे दिन में ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ व्यतीत होवे वहां तक रहे. इस तरह उत्तराभाद्रपद नक्षत्र दो दिन साठेरा व एक रात्रि से कुछ अधिक इतना काल तक चंद्र की साथ रहे, इतना रह कर सायंकाल में रेवति नक्षत्र की प्राप्ति होवे यह नक्षत्र पश्चात भागी तीस मुहूर्त का है. युग के छठे दिन में ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे प्रथम समय में सायंकाल में चंद्र की साथ योग होवे. यह रेवती नक्षत्र एक रात्रि एक दिन रह कर युग के सात वे दिन के ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये योग करे. योग की प्राप्ति से निवर्त कर सायंकाल को अश्विनि नक्षत्र की प्राप्ति होवे. यह अश्विनी नक्षत्र पश्चात भागी तीस मुहूर्त का होने से इस का योग सायंकाल से होता है. युग के सातवे दिन ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ में गये पीछे प्रथम समय मे सायं काल को चंद्र की साथ योग करे. तत्पश्चात एक रात्रि एक दिन तक अश्विनी नक्षत्र योग कर के युग के आठवे दिन ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७

पच्छा अवरादिवसं एवं खलु रेवाति णक्खत्ते, एगं राइं एगंच दिवसं चंदेणसद्धिं जोगं जोएति २ त्ता जोगं अणुपरियट्टंति २ त्ता सायं चंदे अस्सणिणं समप्पेति ता अस्सणि खलु णक्खत्ते पच्छाभागे समखेत्ते तिसति मुहुत्ते पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति २ त्ता, ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु अस्सणि णक्खत्ते, एगं च रायं एगंचादिवसं चंदेणसद्धिं जोगं जोतेति २ त्ता जोगं अणुपरियट्टति २ त्ता सायं चंदे भरणीणं समप्पेति ता भरणि खलुणक्खत्तेणत्तं भागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस मुहुत्ते तं पढमयाए

ये तक रहे. तत्पश्चात प्रथम समय में भरणी नक्षत्र आवे. यह भरणी नक्षत्र नक्तभागी अर्धक्षेत्री पन्नरह मुहूर्त का है. इस से इस का योग हुवे पीछे इस नक्षत्र में दूसरा दिन नहीं आसकता है; परंतु रात्रि में ही यह नक्षत्र पूर्ण होता है. रात्रि के ९ मुहूर्त ४० भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये तक यह नक्षत्र रहता है. इतना रात्रि समय गये पीछे प्रथम समय में कृत्तिका नक्षत्र प्राप्त होवे. यह पूर्वभाग समक्षेत्री तीस मुहूर्त का है. यह नक्षत्र युग के आठवे दिन की रात्रि के ९ मुहूर्त ४८ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे प्रथम समय में लगता है, प्रातःकाल में चंद्रमा की साथ योग करे. यह कृत्तिका नक्षत्र एक दिन एक रात्रि तक चंद्रमा की साथ तीस मुहुर्त में योग करे, और युगके नवबे दिन के रात्रि में ६ मुहूर्त ४२ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे निवर्ते. इस से आगे प्रातःकाल में रोहिणी नक्षत्र

सायं चंदेणसाद्धिं जोगं जोतेति नो लब्भति अवरं दिवसं एवं खलु भरणि णक्खत्ते, एगं राइं चंदेणसाद्धिं जोगं जोतेति २त्ता जोग अणुपरियट्टति २त्ता पातोचंदे कत्तियाणं समप्पेति ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे समक्खेत्ते तिसति मुहुत्ते तंपढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोगं जोतेति, ततो पच्छा राईं, एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते एगंच दिवसं एगंचराति, चंदेणसाद्धिं जोगं जोएइ २ त्ता जोगं अणुपरियट्टति २ त्ता

का प्रारंभ होवे. यह नक्षत्र उभय भागी देढ क्षेत्री पैंतालीस मुहुर्त का है. यह नक्षत्र युग के नवे दिन की शेष रही हुई रात्रि, दशवा दिन व दशवे दिन की रात्रि व अग्यारहवे दिन के ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये तक रहे. यह नक्षत्र वहां से निवर्ते पीछे प्रथम समय में मृगशर नक्षत्र धनिष्टा जैसे योग करे. मृगशर नक्षत्र पश्चिम भागी सम क्षेत्री तीस मुहूर्त का है. अग्यारवे दिन ९ मुहूर्त २४ भाग ६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे योग करे. बारहवे दिन में उतनेही मुहुर्त तक रहता है. यहां से निवर्ते पीछे आर्द्रा नक्षत्र का योग होता है. इस का शतभिषा जैसे जानना. यह आर्द्रा नक्षत्र भी नक्त भागी अर्धक्षेत्री पन्नरह मुहूर्त का है. युग के बारहवे दिन ९ मुहूर्त २४ ६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे इसका प्रारंभ होता है, उस दिन की रात्रि के ६ मुहुर्त ४८ भाग

पातोचंदे रोहिणीणं समंप्पिति रोहिणि जहा उत्तरभद्दवया, मिगसिरं जह धणिट्ठा, एवं अद्दा जहा सतभिसया तहा नत्तं भागा णेयव्वा, जहा पुव्वभद्दवया तहा पुव्वा-भागा छप्पिनेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा पच्छा भागा णेयव्वा जहा सतभिसया तहा णत्तं भागा णेयव्वा जहा उत्तरा भद्दवया तहा उभय भागा णेयव्वा, जाव एवं खलु उत्तरासाढा णक्खत्ते दोय दिवसे एगंचरातिं, चदेणसद्धिं जोगं जोसेति २ त्ता जोगं अणुपरियट्टति २ त्ता, सायं चंदे अभिति सवणं समप्पिाति॥दसमस्स चउत्थं पाहुडं समत्तं॥

६१ ये ३९ भाग ६७ ये गये पीछे योग पूर्ण करे, जैसे पुर्व भाद्रपद नक्षत्र का कहा वैसेही पूर्व भागी छ नक्षत्रों का कहना. वे प्रातःकाल में चंद्रकी साथ तीस मुहूर्त एक रात्रि एक दिन तक रहे; जैसे धनिष्ठा का कहा वैसे ही पश्चात भागी नक्षत्र का कहना. वे सायंकाल में चंद्रमा साथ तीस मुहुर्त तक योग करते हैं. जैसे शतभिषा का कहा वैसेही नक्त भागी का कहना. यह सायंकाल में चंद्रकी साथ पन्नरह मुहूर्त तक रहे, यों नक्षत्रों रात्रि में ही पुर्ण होवे, दूसरे दिन तक रहे नहीं, जैसे उत्तराभाद्रपदका कहा है वैसे उभय भागी जानना. वे प्रातःकाल से चंद्र साथ ४५ मुहूर्त में दो दिन एक रात्रि तक रहे, यों उत्तराषाढा नक्षत्र दो दिन एक रात्रि तक चंद्र की साथ योग करके सायंकाल में अभिजित नक्षत्र का योग होवे, अहो अयुष्यमंत श्रमणो ! युग की आदि में नक्षत्र मास का योग कहा. यह दशवा पाहुडे का चौथा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ ४ ॥ ० ०

चंद्रके साथ नक्षत्रों के योग का यंत्र. नक्षत्र मास.

नं०	नक्षत्र	प्रातः समय	सांय समय	युग का दिन	दिन में नक्षत्र संपूर्ण करे			दिनमें नीचे का नक्षत्र भोगवे			रात्रि नक्षत्र संपूर्ण करे			रात्रिमें नीचे का नक्षत्र भोगवे		
					मुहूर्त	भाग ६१	भाग ६७	मुहूर्त	भाग ६१	भाग ६७	मुहूर्त	भाग ६१	भाग ६७	मुहूर्त	भाग ६१	भाग ६७
१	अभिच	०	१	१	९	२४	३९	८	३४	२८	०	०	०	०	०	०
२	श्रवण	०	१	२	९	२४	३९	८	३२	२८	०	०	०	०	०	०
३	धनिष्ठा	०	१	३	९	२४	३९	८	३०	२८	०	०	०	०	०	०
४	शतभिषा	०	१	३	०	०	०	०	०	०	६	३०	३९	५	३६	२८
५	पूर्वाभाद्रपद	१	०	४	०	०	०	०	०	०	६	३२	३९	५	३६	२८
६	उत्तराभाद्र.	१	०	६	९	२४	३९	८	२४	२८	०	०	०	०	०	०
७	रेवति	०	१	७	९	२४	३९	८	२२	२८	०	०	०	०	०	०
८	अश्विनी	०	१	८	९	२४	३९	८	२०	२८	०	०	०	०	०	०
९	भरणी	०	१	८	०	०	०	०	०	०	६	४०	३९	५	३६	२८
१०	कृत्तिका	१	०	९	०	०	०	०	०	०	६	४२	३९	५	३६	२८
११	रोहिणी	१	०	११	९	२४	३९	८	१४	२८	०	०	०	०	०	०
१२	मृगसर	०	१	१२	९	१४	३९	८	१२	२८	०	०	०	०	०	०

१३	आर्द्रा	०	१	१२	०	०	०	०	०	०	६	४८	३९	५	३६	२८
१४	पुनर्वसु	१	०	१४	९	२४	३९	८	८	२८	०	०	०	०	०	०
१५	पुष्य	०	१	१५	९	२४	३९	८	६	२८	०	०	०	०	०	०
१६	अश्लेषा	०	१	१५	०	०	०	०	०	०	६	५४	३९	५	३६	२८
१७	मघा	१	०	१६	०	०	०	०	०	०	६	५६	३९	५	३६	२८
१८	पूर्वा फाल्गुनी	१	०	१७	०	०	०	०	०	०	६	५८	३९	५	३६	२८
१९	उत्तरा फाल्गु.	१	०	१९	९	२४	३९	७	५९	२८	०	०	०	०	०	०
२०	हस्त	०	१	२०	९	२४	३९	७	५७	२८	०	०	०	०	०	०
२१	चित्रा	०	१	२१	९	२४	३९	७	५५	२८	०	०	०	०	०	०
२२	स्वाति	०	१	२२	०	०	०	०	०	०	७	५	३९	५	३६	२८
२३	विशाखा	१	०	२३	९	२४	३९	७	५१	२८	०	०	०	०	०	०
२४	अनुराधा	०	१	२४	९	२४	३९	७	४९	२८	०	०	०	०	०	०
२५	जेष्ठा	०	१	२४	०	०	०	०	०	०	७	११	३९	५	३६	२८
२६	मूल	१	०	२५	०	०	०	०	०	०	७	१३	३९	५	३६	२८
२७	पूर्वाषाढा	१	०	२६	०	०	०	०	०	०	७	१५	३९	५	३६	२८
२८	उत्तराषाढा	१	०	२८	९	२४	३९	७	४१	२८	०	०	०	०	०	०

सूत्र

ता कहंते कुला उवकुला,कुलावकुला आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमा बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलावकुला पण्णत्ता ॥ बारस कुला तंजहा—धणिट्ठाकुलं उत्तराभद्दवयाकुलं, अस्सिणी कुलं, कत्तियाकुलं मिगसिरकुलं, पुस्सोकुलं, महाकुलं, उत्तराफग्गुणी कुलं, चित्ताकुलं, विसाहा कुलं, मूलो कुलं उत्तरापाढा कुलं ॥

अर्थ

अब पांचवे पाहुडे में कुल, उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र का कहते हैं—अहो भगवन् ! आपके मत में कुल नक्षत्र कितने हैं, उपकुल नक्षत्र कितने हैं, कुलोपकुल नक्षत्र कितने हैं ? अहो शिष्य ! बारह नक्षत्र कुल हैं, बारह नक्षत्र उपकुल हैं और चार नक्षत्र कुलोपकुल हैं. जो बारह नक्षत्र कुल हैं जिनके नाम-श्रवण मास के तीन नक्षत्र हैं, जिनमें धनिष्ठा श्रावण मास की पूर्णिमा को होवे तो कुल, २ भाद्रपद मास में तीन नक्षत्र हैं परंतु पूर्णिमा को उत्तराभाद्रपद कुल है, ३ आश्विन मास में दो नक्षत्र हैं जिन में पूर्णिमा को अश्विनि नक्षत्र कुल, ४ कार्त्तिक मास में दो नक्षत्र हैं, जिस में कार्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका कुल, ५ मृगसर मास में दो नक्षत्र हैं जिस में पूर्णिमा को मृगसर नक्षत्र कुल है, ६ पोष मास में तीन नक्षत्र जिस में पूर्णिमाको पुष्य नक्षत्र कुल, ७ माघ मास में दो नक्षत्र जिन में पूर्णिमा को मघा नक्षत्र कुल, ८ फाल्गुन मास में दो नक्षत्र जिनमें पूर्णिमाको उत्तरा फाल्गुनी कुल है, ९ चैत्र मास में दो नक्षत्र हैं, जिस में पूर्णिमा को चित्रा कुल, १० वैशाख मास में दो नक्षत्र जिस में विशाखा कुल, ११ ज्येष्ट मास में

बारस उवकुला पण्णत्ता तंजहा-सवणो उवकुलं, पुव्वभद्दवया उवकुलं, रेवति उवकुलं, भरणि उवकुलं, रोहिणी उवकुलं, पुणवसुउवकुलं, असलेसा उवकुलं, पुव्वाफग्गुणी उवकुलं, हत्थेउवकुलं साति उवकुलं, जेट्ठा उवकुलं, पुव्वासाढा उवकुलं ॥ चत्तारि कुलावकुला पण्णत्ता तंजहा- अभिति कुलावकुलं, सतभिसया कुलावकुलं, अद्दाकु-

तीन नक्षत्र जिस में पूर्णिमा को मूल कुल और १२ अषाढ मास में दो नक्षत्र जिन में पूर्णिमाको उत्तराषाढ कुल नक्षत्र जानना. अथ बारह उपकुल नक्षत्र कहते हैं. जो कुल नक्षत्र हैं उनकी पूर्वके नक्षत्र यदि उस मासकी पूर्णिमाको आवे तो उपकुल होते हैं तद्यथा १ श्रावणकी पूर्णिमा को श्रवण उपकुल, २ भाद्रपद की पूर्णिमा को पूर्वाभाद्रपद उपकुल, ३ अश्विन मास की पूर्णिमा को रेवति नक्षत्र उपकुल, ४ कार्तिक मास की पूर्णिमा को भरणी उपकुल, ५ मृगशर मास की पूर्णिमा को रोहिणी उपकल, ६ पोष मास की पूर्णिमा को पुनर्वसु उपकुल, ७ माघ मास की पूर्णिमा को अश्लेषा उपकुल, ८ फाल्गुन मास की पूर्णिमा को पूर्वाफाल्गुनी उपकुल, ९ चैत्र मास की पूर्णिमा को हस्त नक्षत्र उपकुल, १० वैशाख मास की पूर्णिमा को स्वाति नक्षत्र उपकुल, ११ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र उपकुल, और १२ अषाढ मासकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढा उपकुल होते है. अब कुलोपकुल नक्षत्र का कथन करते हैं--जो उपकुल नक्षत्र पूर्णिमा को आते हैं उन से पूर्व के नक्षत्रों उस ही पूर्णिमा को कुलोपकुल कहाते हैं वे चार ही नक्षत्र हैं तद्यथा—१ श्रावण मास की पूर्णिमा को अभिजित

	नक्षत्र.	कु.	उ.	कुलो.	नक्षत्र.	कु.	उ.	कुलो.	नक्षत्र.	कु.	उ.	कुलो.
१	अभिजित	०	०	१	११ रोहिणी	०	१	०	२१ चित्रा	१	०	०
२	श्रवण	०	१	०	१२ मृगसर	१	०	०	२२ स्वाती	०	१	०
३	धनिष्ठा	१	०	०	१३ आर्द्रा	०	०	१	२३ विशाखा	१	०	०
४	शतभिषा	०	०	१	१४ पूनर्वसु	०	१	०	२४ अनुराधा	१	०	१
५	पूर्वाभाद्रपद	०	१	०	१५ पुष्य	१	०	०	२५ जेष्ठा	०	१	०
६	उत्तराभाद्रपद	१	०	०	१६ अश्लेषा	०	१	०	२६ मूल	१	०	०
७	रेवती	०	१	०	१७ मघा	१	०	०				
८	अश्विनी	१	०	०	१८ पूर्वाफाल्गुनी	०	१	०	२७ पूर्वाषाढा	०	१	०
९	भरणि	०	१	०	१९ उत्तराफाल्गुनी	१	०	०				
१०	कृत्तिका	१	०	०	२० हस्त	०	१	०	२८ उत्तराषाढा	१	०	०

लावकुलं, अणुराहा कुलावकुलं ॥ इति दसमस्स पंचम पाहुडं सम्मत्तं ॥१०॥५॥ *

नक्षत्र कुलोपकुल हैं २ भाद्रपद मास की पूर्णिमा को शतभिषा नक्षत्र कुलोपकुल हैं, पौष मास की पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र कुलोपकुल हैं, और ४ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को अनुराधा नक्षत्र कुलोपकुल हैं. यह दशवा पाहुडे का पांचवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ५ ॥

ता कहंते पुण्णमासी आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो बारस पुण्णमासीओ बारस अमावसाओ पण्णत्ताओ तंजहा-साविट्ठी, पोट्ठवती, आसोइ, कत्तिया, मगासिरा, पोसी, माही, फग्गुणि, चेती, विसाही, जेट्ठामुला, असाढी ॥१॥ ता सावट्ठी पोण्णिमं कतिणक्खत्ता जोतेति ? ता तिण्णि नक्खत्ताँ जोयंति तंजहा-अभिये, सवणे, धनिट्ठा ता पुट्ठवतीणं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोतेति ? ता तिणि णक्खत्ता जोयंति ? तंजहा-सताभिसया, पुव्वपोट्ठवया, उत्तरापोठवया ॥ आसोतीणं पुण्णिमं काति णक्खत्ता

अब छठा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में पूर्णिमा व अमावास्या किस तरह पूर्ण होती हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! एक संवत्सरकी बारह पूर्णिमा व बारह अमावास्या कही है. तद्यथा—१.श्रावण मासकी श्राविष्ठा, २भाद्रपदकी पौष्टवती, ३ आश्विनकी आसोई ४ कार्तिककी कृत्तिका ५मृगशरकी मृगशिरा, ६ पौष की पोषी, ७ माघ की माघी, ८ फाल्गुन की फाल्गुनी, ९चैत्र मास की चैत्री १० वैशाख मास की विशाखी, ११ ज्येष्ठ मास की ज्येष्ठमूली और १२ अषाढ मास की अषाढी ॥१॥ अहो भगवन् ! श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन कितने नक्षत्र योग करते हैं ? अहो शिष्य ! तीन नक्षत्र योग करते हैं जिन के नाम—अभिजित, २ श्रवण और ३ धनिष्ठा. अहो भगवन् ! भाद्रपद मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र चंद्र की साथ योग करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र योग करते हैं. जिन के नाम—१ शतभिषा, २ पूर्वा-

सूत्र

जोतेति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोयंति तंजहा-रेवति, अस्सिणी ॥ ता कत्तियाणं पोण्णिमं कतिणक्खत्ता जोतेति? ता दो णक्खत्ता जोतेति तंजहा-भरणी कतिया ॥ ता मिगसिरिणं पुण्णिमं कइ नक्खत्ता जोतेति ? ता दोण्णि नक्खत्ता जोयंति, तंजहा रोहिणी, मिगसिरं॥ता पोसिणं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोतेति ? ता तिण्णि नक्खत्ता जोतेति तंजहा-अद्दा,पुणवसु,पुस्सो॥ता माहीणं पुण्णिमं कति नक्खत्ता जोतेति? ता दोण्णि नक्खत्ता तंजहा-अस्सलेसा, महाय॥ ता फग्गुणीणं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोतेति? ता

अर्थ

भाद्रपद और २उत्तराभाद्रपद. अहो भगवन्! आश्विन मासकी पूर्णिमाको कितने नक्षत्र योग करे? अहो शिष्य! दो नक्षत्र योग करे जिन के नाम-१ रेवती २ अश्विनी. अहो भगवन् ! कार्तिक मासकी पूर्णिमाको कितने नक्षत्र योग करे ? अहो शिष्य ! दो नक्षत्र योग करे जिन के नाम-१ भरणि और २ कृत्तिका. अहो भगवन् ! मृगसर मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र योग करे ? अहो शिष्य ! दो नक्षत्र योग करे १ रोहिणी और २ मृगशर. अहो भगवन् ! पोष मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र योग करें ? अहो शिष्य ! तीन नक्षत्र का योग होवे जिन के नाम-१ आर्द्रा २ पुनर्वसू और ३ पुष्य. अहो भगवन् ! माघ मासकी पूर्णिमा को कितने नक्षत्रका योग होवे ? अहो शिष्य ! दो नक्षत्रका योग होवे जिनके नाम-१ अश्लेषा और २ मघा.

दोण्णिणक्खत्ता जोतेति ? तंजहा पुव्वाफग्गुणिय, उत्तराफग्गुणिया ॥ ता चेत्तीणं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोतेति ? ता दोण्णि नक्खत्ता जोतेति तंजहा हत्थो, चित्ताय, ॥ ता विसाहि पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोतेति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोयंति ? तंजहा—साती, विसाहाय॥ता जेट्ठामुलीणं, पोण्णमासीणं कति णक्खत्ता जोतेति ? ता तिण्णि नक्खत्ता जोतिति, तंजहा—अणुराहा, जेट्ठा, मूल य॥ ता आसाढीणं पोण्णमासि कति नक्खत्ता जोतेति? ता दोण्णि नक्खत्ता जोतेति

अहो भगवन् ! फाल्गुन मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होवे ? अहो शिष्य! दो नक्षत्रोंका योग होवे जिन के नाम—१ पूर्वाफाल्गुनी और २ उत्तराफाल्गुनी. अहो भगवन् ! चैत्र मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होवे ? अहो शिष्य! दो नक्षत्र का योग होवे जिनके नाम—१ हस्त और २ चित्रा. अहो भगवन् ! वैशाखी पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होवे ? अहो शिष्य ! दो नक्षत्र का योग होवे जिन के नाम—स्वाति और विशाखा. अहो भगवन् ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होवे ? अहो शिष्य ! तीन नक्षत्रों का योग होवे जिन के नाम—१ अनुराधा २ ज्येष्ठा और ३ मूल. अहो भगवन् ! अषाढ मासकी पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होवे ? अहो शिष्य ! दो

सूत्र

तंजहा-पुव्वासाढा, उत्तरासाढा ॥ २ ॥ ता सावत्ति, ... जोतेति उवकुलं जोतेति, कुलावकुलं जोतेति ? ता सावि० तंज... कुलंवा जोतेति उवकुलंवा जोतेति. कूलावकुलंवा जोतेति, कुलं जोएमाणे धणिट्ठा... जोतेति. उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोतेति. कुलावकुलं जोएमाणे अभिय णक्खत्ते जोतेति ता साविट्ठिपुण्णिमा कुलं जोतेति, उवकुलंवा जोतेति, कुलावकुलंवा जोतेति कुलेणवा जुत्ताउव-

अर्थ

नक्षत्रका योग होवे जिनके नाम-१ पुर्वाषाढा और २ उत्तराषाढा॥२॥अब कुल उपकुलका खुलासा करते हैं-अहो भगवन्! श्रावण मासकी पुर्णिमाको क्या कुल नक्षत्र योग करे, उपकुल नक्षत्र योग करे,अथवा कुलोपकुल नक्षत्र योग करे? अहो शिष्य! कुल नक्षत्र भी योग करे,अथवा उपकुल नक्षत्र भी योग करे,अथवा कुलोपकुल नक्षत्र भी योग करे. कुल नक्षत्र का योग होवे तो धनिष्टा नक्षत्र होवे. उपकुल नक्षत्र का योग होवे तो श्रवण नक्षत्र होवे और कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे तो अभिजित नक्षत्र होवे. इस से श्रावण मास की पुर्णिमा को कुल नक्षत्र योग करे, अथवा उपकुल नक्षत्र योग करे, अथवा कुलोपकुल नक्षत्र योग करे. इसी से यह पुनम कुल नक्षत्र से युक्त, उपकुल नक्षत्र से युक्त व कुलोपकुल नक्षत्र से भी युक्त है. यह श्रावण मास के पूर्णिमा के वक्तव्यता हुई. अहो भगवन्! भाद्रपद मास की पूनम क्या कुल नक्षत्र का योग करे, उपकुल नक्षत्र का योग करे अथवा कुलोपकुल नक्षत्र का योग करे ? अहो शिष्य ! कुल
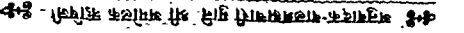
कुलेणंवा जुत्ता, कुलावकुलेणवा जुत्ता, सावट्ठि पोण्णिमाजुत्ताति वत्तव्वंसिया ॥ ता-पुट्ठव-तीपुण्णिमं । किं कुल जोतेति उवकुल जोतेति, कुलावकुलं जोतेति? कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवए णक्खत्ते जोतेति, उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोतेति, कुलावकुलं जोए-माणे सतभिसया णक्खत्ते जोतेति ॥ पाट्ठवताणं पुण्णिमासीणं कुलंवा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलावकुलंवा जोएति तंचेव जाव पोट्ठवया पुण्णिमा जोतेते वत्तव्वंसिया ॥ ता आसोइण पुण्णमासीणं किं कुलं जोतेति पुच्छा, ता कुलंपिजोतेति उवकुलंपि

नक्षत्र का योग करे, अथवा उपकुल नक्षत्र का योग करे. व कुलोपकुल नक्षत्र का योग करे कुल नक्षत्र का योग करे तो उत्तराभाद्रपद, उपकुल नक्षत्र का योग करे तो पूर्वाभाद्रपद और कुलोपकुल नक्षत्र का योग करे तो शतभिषा. इसी से भाद्रपद मास की पूर्णिमा कुल नक्षत्र का योग करे, उपकुल नक्षत्र का योग करे, और कुलोपकुल नक्षत्र का योग करे. और इसी से भाद्रपद मास कुल नक्षत्र से युक्त, उपकुल नक्षत्र से युक्त व कुलोपकुल नक्षत्र से युक्त है. आश्विन मास की पूर्णिमा की पृच्छा? अहो शिष्य ! कुल नक्षत्र का योग करे और उपकुल नक्षत्र का भी योग करे परंतु कुलोपकुल नक्षत्र का योग नहीं करे. कुल नक्षत्र का योग होवे तो अश्विनी और उपकुल नक्षत्र का योग होवे तो रेवती इस से आश्विन-पूर्णिमा कुल अथवा उपकुल नक्षत्र का योग करे. इसी से आश्विन पूर्णिमा कुल अथवा उपकुल नक्षत्र से युक्त होवे. यह आश्विन

नो कुलावकुलं ॥ कुलं जोएमाणे अस्सिणि णक्खत्ते जोतेति उवकुलं जोएमाणे रेवति णक्खत्तं जोतेति आसाढीणं पुण्णिमं कुलंवा जोतेति, उवकुलंवा जोतेति. कुलेणवा जुत्ता उवकुलेणवा जुत्ता आसाढीणं पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, जाव एएणं अभिलावेणं पोसिपाण्णिमाए जेट्ठामूलं पोण्णिमाए कुलाकुलं भाणियव्वा अवसेसा कुलावकुला णत्थि जाव असाढी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥ ३ ॥

पूर्णिमा की वक्तव्यता हुइ. इसी अभिलापसे कार्तिक मासकी पूर्णिमा में कुल नक्षत्र कृत्तिका और उपकुल नक्षत्र भरणि है. मृगशर मास की पूर्णिमा को कुल न॰त्र मृगशर का योग होवे और उपकुल नक्षत्र रोहिणी का योग होवे. पोष मास की पूर्णिमा को कुल पुष्य नक्षत्र उपकुल पुनर्वसु और कुलोपकुल आर्द्रा नक्षत्र का योग होवे यावत् ज्येष्ट मास की पूणिमा के दिन कुल मूलनक्षत्र, उपकुल ज्येष्टा और कुलोपकुल अनुराधा. १ श्रावण २ भाद्रपद ३ पोष और ४ ज्येष्ट इन चार मास की पूनम में कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे. शेष मास में कुलोपकुल नक्षत्र नहीं है यावत् शब्द से माघ मास की पूर्णिमा को कुल मघा और उपकुल अश्लेषा. फाल्गुन मास की पूर्णिमा को कुल उत्तराफाल्गुनी उपकुल पूर्वाफाल्गुनी, चैत्र मास की पूर्णिमा को चित्रा कुल नक्षत्र और हस्त उपकुल नक्षत्र. वैशाख मास पूर्णिमाको विशाखा कुल और स्वाति उपकुल. अषाढ मासकी पूर्णिमा को उत्तराषाढा कुल और पूर्वाषाढा उपकुल ॥३॥

कुल उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र का यंत्र.

नं०	मास	कुल	उपकुल	कुलोपकुल	नं०	मास	कुल	उपकुल	कुलोपकुल
१	श्रावण शु. १५	धनिष्ठा	श्रवण	अभिजित	७	महा शु. १५	मघा	अश्लेषा	०
२	भाद्रपद शु. १५	उत्तरा भा.	पूर्वाभाद्रपद	शतभिषा	८	फाल्गुन शु १५	उ० फा०	पूर्वा फा०	०
३	अश्विन शु. १५	अश्विनी	रेवती	०	९	चैत्र शु. १५	चित्रा	हस्त	०
४	कार्तिक शु. १५	कृत्तिका	भरणी	०	१०	वैशाख शु. १५	विशाखा	स्वाति	०
५	मृगश शु. १५	मृगशर	रोहिणी	०	११	ज्येष्ठ शु. १५	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा
६	पोष शु. १५	पुष्य	पुनर्वसु	आर्द्रा	१२	अषाढ शु. १५	उत्तराषाढा	पू. षाढा	०

पर्व तिथि का नक्षत्र नीकालने की विधि. दो ध्रुवराशि बनाना, जिन में एक ५४९०० और दूसरी २०१० नक्षत्र मास २१ दिन ९ मुहूर्त २५ भाग ६७ या इतना है. इस को पूर्णांक में लाने के लिये २७ को ३० मुहूर्त का एक दिन होने से ३० से गुनना, और नव मुहूर्त बढाना. २७+३०=८१०+२=८१२. एक मुहूर्त के ६७ भाग करने का है इस से इस संख्या को ६७ से गुनाकार कर २७ भाग बढाना ८१२×६७=५४४०४×२७=५४९०० इतनी राशि ६७ ये भाग की हुई. यह एक नक्षत्र

नो कुलावकुलं ॥ कुलं जोएमाणे अस्सिणि णक्खत्ते जोतेति उवकुलं जोएमाणे रेवति णक्खत्ते जोतेति आसोईणं पुण्णिमं कुलंवा जोतेति, उवकुलंवा जोतेति. कुलेणवा जुत्ता उवकुलेणवा जुत्ता आसोईणं पुण्णमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, जाव एएणं अभिलावेणं पोसिपाण्णिमाए जेट्ठामूलं पोण्णिमाए कुलाकुलं भाणियव्वा अवसेसा कुलावकुला णत्थि जाव असाढी पुण्णमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥ ३ ॥

पूर्णिमा की वक्तव्यता हुइ. इसी अभिलापसे कार्तिक मासकी पूर्णिमा में कुल नक्षत्र कृत्तिका और उपकुल नक्षत्र भरणि है. मृगशर मास की पूर्णिमा को कुल न' त्र मृगशर का योग होवे और उपकुल नक्षत्र रोहिणी का योग होवे. पोष मास की पूर्णिमा को कुल पुष्य नक्षत्र उपकुल पुनर्वसु और कुलोपकुल आर्द्रा नक्षत्र का योग होवे यावत् ज्येष्ठ मास की पूणिमा के दिन कुल मूलनक्षत्र, उपकुल ज्येष्ठा और कुलोपकुल अनुराधा. १ श्रावण २ भाद्रपद ३ पोष और ४ ज्येष्ठ इन चार मास की पूनम में कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे. शेष मास में कुलोपकुल नक्षत्र नहीं है यावत् शब्द से माघ मास की पूर्णिमा को कुल मघा और उपकुल अश्लेषा. फाल्गुन मास की पूर्णिमा को कुल उत्तराफाल्गुनी उपकुल पूर्वाफाल्गुनी, चैत्र मास की पूर्णिमा को चित्रा कुल नक्षत्र और हस्त उपकुल नक्षत्र. वैशाख मास पूर्णिमाको विशाखा कुल और स्वाति उपकुल. अषाढ मासकी पूर्णिमा को उत्तराषाढा कुल और पूर्वाषाढा उपकुल ॥३॥

की तिथि १७ मुहूर्त और २६ भाग ६२ ये तक पूर्ण होवे. और पूर्णिमाकी तिथि२९ मुहूर्त ३२ भाग ६२ ये की है. इस मे इस में से १७ मुहूर्त २६ भाग ६२ ये बाद करना, शेष १२ मुहूर्त ६ भाग ६२ ये रहे. और १४८ वे दिन में से एक दिन के ३० मुहूर्त करना, उस में से १२ $\frac{६}{६२}$ मुहूर्त बाद करना शेष १७ $\frac{५६}{६२}$ रहे, इस से १४७ वे दिन १७ $\frac{५६}{६२}$ मुहूर्त संपूर्ण हुए पीछे ५७ वे भाग के प्रथम समय में मृगशर शुदी १५ का प्रारंभ होवे. अब मृगशर शुदी १५ को कौनसा नक्षत्र होवे इस की रीति. मृगशर शुदी पूर्णिमा १४८ दिन में संपूर्ण होती है. इस में से एक बाद करने से १४७ रहे. क्यों कि १४७ वे दिन से पूनम का प्रारंभ होता है. इस को एक दिन के मुहूर्त की राशि से गुनाकार करने से १४७ दिन के २२५४७० की राशि होवे. इस राशि को ५४९०० मास राशि से भाग देने से पांच पूर्ण नक्षत्र मास हुए. शेष २०९७० की राशि रही. इस के मुहूर्त करने के लिये ६७ का भाग देना जिस से ३१२ मुहूर्त और शेष ६६ रहे. नक्षत्र के छठे मास के मुहूर्त गिनने के लिये अभिजित नक्षत्र से गिनना. अभिजित के ९ $\frac{२७}{६७}$ श्रवण के ३०, धनिष्ठा के ३०, शतभिषा के १५, पूर्वा भाद्रपद ३० उत्तरा भाद्रपद ४५, रेवती ३०, अश्विनी ३०, भरणी १५, कृत्तिका ३०, और रोहिणी ४५ मुहूर्त यों सब मिलाकर ९ $\frac{२७}{६७}$+३०+३०+१५+३०+४५+३०+३०+१५+३०+४५=३०९ $\frac{२७}{६७}$ मुहूर्त रोहिणी नक्षत्र पर्यंत होवे. इतना भाग ३१२ $\frac{६६}{६७}$ मुहूर्त में से

मास की ध्रुवराशि हुई. वैसे ही एक दिन के मुहूर्त ३० हैं इस को ६१ से गुनाकार करने से २०१० होते हैं. यह एक दिन की ध्रुवराशि हुई. अब युग का दिन उन तिथि में कितना होता है उसे निकालने को भी दो ध्रुवराशि बनाना. एक १८३० और दूसरी १८६०. जिस पर्व की तिथि पर युग का दिन निकालना होवे वह तिथि श्रावण वदी १ मे कितनी है अर्थात् श्रावण वदी १ से इस तिथि तक कितनी तिथि होती हैं. जितनी तिथियों आवे उन सब को १८३० से गुणा करना और जो राशि आवे उसे १८६० का भाग देना. इस में जो पूर्ण अंक आवे और शेष कुछ रहे तो पूर्णांकमें एक बढाना. इतना युगका दिन जानना. यदि बढे नहीं तो एक बढाना नहीं. जो शेष संख्या रही हुई है वह मुहूर्त के ६२ ये भाग की जानना. दृष्टांत-प्रथम संवत्सर के मृगशर शुदी १५ को युग का दिन कितना था, कितने मुहूर्त में संपूर्ण होवे, कौनसा नक्षत्र था, और कौन से नक्षत्र में पूर्णिमा का प्रारंभ हुवा? श्रावण वदी १ से मृगसर शुदी १५ तक में १५० तिथी होवे. इस को १८३० से गुणा करने से २७४५०० की राशि होवे. इस को १८६० का भाग देने से १४७ पूर्ण आवे और शेष १०८० की राशि होवे इस से एक बढाना इस से १४८ वा युग का दिन जानना. और १०८० भाग रहे यह प्रथम संवत्सर के मृगशर शुदी १५ के ६२ ये भाग की राशि रही. इस को मुहूर्त करने के लिये ६२ का भाग देना, जिस से १७ मुहूर्त और शेष २६ भाग ६२ वे रहे. इस से युग के १४८ वे दिन मृगशर शुदी १५
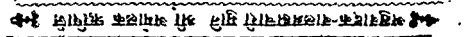
प्रथम नक्षत्र से अंतिम नक्षत्र पर्यंत मुहूर्त जानने का.

	नक्षत्र,	मुहूर्त	भाग ६७		नक्षत्र	मुहूर्त	भाग ६७		नक्षत्र	मुहूर्त	भाग ६७
								१९	उत्तराफाल्गुनी	५४९	२७
१	अभिजित	९	२७	१०	कृत्तिका	२६४	२७	२०	हस्त	५७९	२७
२	श्रवण	३९	२७	११	रोहिणी	३०९	२७	२१	चित्रा	६०९	२७
३	धनिष्ठा	६९	२७	१२	मृगशर	३३९	२७	२२	स्वाति	६२४	२७
४	शतभिषा	८४	२७	१३	आर्द्रा	३५४	२७	२३	विशाखा	६६९	२७
५	पूर्वाभाद्रपद	११४	२७	१४	पुनर्वसु	३९९	२७	२४	अनुराधा	६९९	२७
६	उत्तराभद्रपद	१५९	२७	१५	पुष्य	४२९	२७	२५	ज्येष्ठा	७१४	२७
७	रेवति	१८९	२७	१६	अश्लेषा	४४४	२७	२६	मूल	७४४	२७
८	अश्विनी	२१९	२७	१७	मघा	४७४	२७	२७	पूर्वाषाढा	७७४	२७
९	भरणि	२३४	२७	१८	पूर्वाफाल्गुनी	५०४	२७	२८	उत्तराषाढा	८१९	२७

बाद करते ३ ३१/६७ मुहूर्त रहे. यह मृगशर नक्षत्र का जानना. इस मृगशर नक्षत्र के ३ ३१/६७ मुहूर्त गये पीछे ४० वे भाग के प्रथम समय में युग का १४८ वे दिन का प्रथम समय प्रारंभ होवे. यह मृगशर नक्षत्र ३० मुहूर्त का है इस में से ३ ३१/६७ मुहूर्त बाद करते २६ ३६/६७ मुहूर्त रहे. इतना मुहूर्त तक युग के १४८ वे दिन मृगशर नक्षत्र संपूर्ण होवे. युग के १४८ वे दिन मृगशर शुदी १५ १७ मुहूर्त २६ भाग ६२ ये की है और १४७ वे दिन मृगशर नक्षत्र ३ मुहूर्त ३१ भाग ६७ ये हैं. इस से इन दोनों को मिलाने से २१ मुहूर्त, ० भाग ६२ ये और ६ भाग ६७ ये होवे. नक्षत्र का इतना भाग गये पीछे युग के १४८ वे दिन मृगशर शुदी १५ की तिथि संपूर्ण होवे. इस तिथि का प्रारंभ कोन से नक्षत्र में हुवा सो कहते हैं. शुदी १५ की तिथि २९ मुहूर्त ३२ भाग ६२ ये की है उस में से २१-०-६ बाद करने से शेष ८-३१-६१ रहे. मृगशर नक्षत्र पहिले रोहिणी नक्षत्र ४५ मुहूर्त का है उस में से ८-३१-६१ बाद करने से ३६-३०-६ रहे. इतना रोहिणी नक्षत्र गये पीछे सातवे भाग के प्रथम समय में मृगशर शुदी १५ की तिथि के प्रथम समय का प्रारंभ हुवा. और रोहिणी नक्षत्र ८ मुहूर्त ३१ भाग ६२ ये ६१ भाग ६७ ये मृगशर शुदी १५ की तिथि में चंद्रमा की साथ योग करे. और मृगशर नक्षत्र २१ मुहूर्त ० भाग ६२ ये ६ भाग ६७ ये मृगशर शुदी १५ को योग करके तिथि संपूर्ण करे

द्वितीय संवत्सर

पर्व	मास तीथी	युगके दिन	मुहूर्त	भाग६२	नक्षत्र	मुहूर्त	भाग६२	भाग६७	मास नं.
१३	श्रावण शुदी १५	३८३	८	१४	श्रवण	२९	२१	२७	१९
	३९०	३८४	२१	१८	धनिष्ठा	०	१०	४०	१९
१४	भाद्रपद शुदी १५	४१३	२२	४६	शतभिषा	८	११	५१	१९
	४२०	४१४	६	४८	पूर्वा भाद्रपद	२१	२०	१६	१६
१५	आशो शुदी १५	४४२	७	१६	उत्तरा भाद्रपद	१७	६	५०	१७
	४५०	४४३	२२	१६	रेवति	१२	२५	१७	१७
१६	कार्तिक शुदी १५	४७२	२१	४८	अश्विनी	११	६	२४	१८
	४८०	४७३	७	४६	भरणी	१५	०	०	१८
					कृत्तिका	३	५	४३	१८
१७	मृगशर शुदी १५	५०१	६	१८	रोहिणी	१०	३	११	१९
	५१०	५०२	२३	१४				गये	
१८	पोष शुदी १५	५३१	२०	५०	रोहिणी	३०	३५	११	१९
	५४०	५३२	८	४४	आर्द्रा	१३	५१	२२	२०
१९	माघ शुदी १५	५६०	५	२०	पुनर्वसु	१५	३५	४५	२०
	५७०	५६१	२४	१२	पुष्य	२२	४८	४६	२१
२०	फाल्गुन शुदी १५	५९०	१२	५२	अश्लेषा	६	४५	२१	२१
	६००	५९१	९	४२	मघा	१	४३	४५	२२
२१	चैत्र शुदी १५	६१९	४	२२	पूर्वा फाल्गुनी	२७	५०	२२	२२
	६३०	६२०	२५	१०	उत्तरा फाल्गुनी	१०	३८	४४	२३
२२	वैशाख शुदी १५	६४९	१८	५४	हस्त	१८	५५	२३	२३
	६६०	६५०	१०	४०	चित्रा	४	३३	४३	२४
					स्वाति	१५	०	०	२४
२३	ज्येष्ठ शुदी १५	६७८	३	२४	विशाखा	९	६०	२४	२४
	६९०	६७९	१९	८	अनुराधा	२८	२८	४२	२५
					ज्येष्ठा	१	३	२५	२५
२४	आषाढ शुदी १५	७०८	१७	५६	मूल	७	२३	४१	२६
	७२०	७०९	११	३८	पूर्वाषाढा	२२	८	२६	२६

प्रथम संवत्सर.

मास	मासतीथी	युगके दिन	मु०	भा ६२	नक्षत्र	मु०	भा. ६२	भा ६७	न० मा
१	श्रावण शुदी १५	२९	१४	२	श्रवण	२	६१	६६	२
	३०	३०	१५	३०	धनिष्टा	२६	४२	२	२
२	भाद्रपद शुदी १५	५९	२८	३४	पू भाद्रपद	११	४६	६४	३
	६०	६०	०	६०	उत्तरा भाद्रपद	१७	४७	३	३
३	अश्विन शुदी १५	८८	१३	४	रेवती	२०	४१	६०	४
	९०	८९	१६	२८	अश्विनी	८	५२	७	४
४	कार्तिक शुदी १५	११८	२७	३६	कृत्तिका	०	२५	५ गये	५
	१२०	११९		१५८	कृत्तिका	२९	५७	५	५
५	मृगशर शुदी १५	१४७	१२	६	रोहिणी	८	३१	६१	६
	१५०	१४८	१७	२६	मृगशर	२१	०	६	६
६	पोष शुदी १५	१७७	२६	३८	पुनर्वसु	१२	३९	७ गये	७
	१८०	१७८	२	५६	पुनर्वसु	४२	५	७	७
७	महा शुदी १५	२०६	११	८	अश्लेषा	१९	२६	३४	८
	२१०	२०७	१८	२४	मघा	१८	५	३३	८
८	फाल्गुन शुदी १५	२३६	२५	४०	पूर्वा फाल्गुनी	५	१६	५८	९
	२४०	२३७	३	५४	उत्तराफाल्गुनी	२४	१५	९	९
९	चैत्र शुदी १५	२६५	१०	१०	हस्त	१४	१६	३२	१०
	२७०	२६६	१२	२२	चित्रा	१५	१५	३५	१०
१०	वैशाख शुदी १५	२९५	२४	४२	विशाखा	६	५५	१ ग	११
	३००	२९६		४६२	विशाखा	३६	२५	११	११
११	ज्येष्ट शुदी १५	३२४		२१२	अनुराधा	२	१	५५	१२
	३३०	३२५	२०	२०	जेष्टा	१२	०	०	१२
					मूल	१०	३०	१२	१२
१२	अशाढ शुदी १५	३५४	२३	४४	पूर्वापाढा	११	१	२२	१३
	३६०	३५५		५५०	उत्तरापाढा	१८	३०	३८	१३

चतुर्थ संवत्सर.

पर्व	मास तीथी	युगांक दिन	मुहूर्त	भाग ६२	नक्षत्र	मुहूर्त	भाग ६७	भाग [illegible]	नक्षत्रमास
३८	श्रावण शुदी १५	१.१२१	११	८	श्रवण	१६	३	२९	४२
	१.१४०	१.१२२	१८	२४	धनिष्ठा	१३	२८	१२	४२
३९	भाद्रपद शुदी १५	१.१५१	२०	४०	पूर्वा भाद्रपद	२२	६०	२४	४३
	१.१७०	१.१५२	३	५४	उत्तरा भाद्रपद	४	३३	४३	४३
४०	अश्विन शुदी १५	१.१८०	१०	१०	उत्तरा भाद्रपद	३	५५	२३	४४
	१.२००	१.१८१	१०	२२	रेवती	२५	३४	४४	४४
४१	कार्तिक शुदी १५	१.२१०	२४	४२	भरणी	१२	५१	२२	४५
	१.२३०	१.२११	४०	२	कृत्तिका	१६	४३	४५	४५
४२	मृगशर शुदी १५	१.२३१	०	१२	रोहिणी	२१	४५	२१	४६
	१.२६०	१.२४०	२०	२०	मृगशर	७	४८	४६	४६
४३	पोष शुदी १५	१.२६१	२३	४४	आर्द्रा	०	४०	२०	४७
	१.२९०	१.२७०	५	५०	पुनर्वसु	२८	५३	४७	४७
४४	माघ शुदी १५	१.२९८	८	१४	पुष्य	९	३६	१९	४८
	१.३२०	१.२९९	२१	१८	अश्लेषा	१५	०	०	४८
					मघा	४	५८	४८	४८
४५	फाल्गुन शुदी १५	१.३२८	२२	४६	पूर्वा फाल्गुनी	१८	३०	१८	४९
	१.३५०	१.३२९	६	४८	उत्तरा फाल्गुनी	११	१	४९	४९
४६	चैत्र शुदी १५	१.३५७	७	१६	हस्त	२७	२५	१७	५०
	१.३८०	१.३५८	२२	१६	चित्रा	२	६	५०	५०
४७	वैशाख शुदी १५	१.३८७	२१	४८	स्वाति	६	२०	१६	५१
	१.४१०	१.३८८	७	४६	विशाखा	२३	११	५१	५१
४८	ज्येष्ठ शुदी १५	१.४१६	६	१८	अनुराधा	१२	१५	१५	५२
	१.४४०	१.४१७	२३	१४	ज्येष्ठा	१४	१६	५२	५२
४९	अशाढ शुदी १५	१.४४६	२०	५०	पूर्वाषाढा	२४	१०	२४	५३
	१.४७०	१.४४५	८	४४	उत्तरषाढा	५	२१	५३	५३

तृतिय संवत्सर.

पर्व	मास तीथी	युगके दिन	मुहूर्त	भाग ६२	नक्षत्र	मुहूर्त	भाग ६२	भाग ६७	न. मास
२५	श्रावण शुदी १५	७३७	२	२६	उत्तराषाढा	१५	८	४०	२७
	७५०	७३८	२७	६	अभिजित	९	२४	६६	२८
					श्रवण	४	५०	२८	२८
२६	भाद्रपद शुदी १५	७६७	१६	५८	धनिष्ठा	१२	३८	३८	२९
	७८०	७६८	१२	३६	शतभिषा	९	५५	२९	२९
२७	आश्विन शुदी १५	७९६	१	२८	उत्तराभाद्रपद	१	२८	३०	३०
	८१०	७९७	२८	४	उत्तरा भाद्रपद	३०	६१	गये ३०	३०
२८	कार्तिक शुदी १५	८२६	१५	६०	रेवती	७	२८	३६	३१
	८४०	८२७	१३	३४	अश्विनी	२२	३	३१	३१
२९	मृगशर शुदी १५	८५५	०	३०	कृत्तिका	१६	२३	३५	३२
	८७०	८५६	२९	२	रोहिणी	१३	८	३२	३२
३०	प्र०पौष शुदी १५	८८५	१५	०	मृगशर	२५	१८	३४	३३
	९००	८८६	१४	३२	आर्द्रा	४	१३	३३	३३
३१	द्वि०पौष शुदी १५	९१५	२९	३२	पुनर्वसु	१९	१३	३३	३४
	९३०	०	०	०	पूष्य	१०	१८	३४	३४
३२	महा शुदी १५	९४४	१४	२	मघा	२८	८	३२	३५
	९६०	९४५	१५	३०	पूर्वाफाल्गुनी	१	२३	३०	३५
३३	फाल्गुण शुदी १५	९७४	२८	३४	उत्तराफाल्गुनी	७	५८	३६	३६
	९९०	९७५	०	६०	उत्तराफाल्गुनी	३७	२८	गये ३६	३६
३४	चैत्र शुदी १५	१००३	१३	४	हस्त	०	६०	३०	३७
	१०२०	१००४	१६	२८	चित्रा	२८	३३	३७	३७
३५	वैशाख शुदी १५	१०३३	२७	३६	विशाखा	२४	५५	३९	३८
	१०५०	१०३४	१	५८	अनुराधा	४	३८	३८	३८
३६	ज्येष्ठ शुदी १५	१०६२	१२	६	ज्येष्ठा	३	५०	२८	३९
	१०८०	१०६३	१७	२६	मूल	२५	४३	३२	३९
३७	आषाड शुदी १५	१०९२	२६	३८	उत्तराषाढा	२	१६	४०	४०
	१११०	१०९३	२	५६	उत्तराषाढा	३१	४८	गये ४०	४०

असाढाय अमावासाए कुलोवकुलं, भाणियव्वं ॥ सेसाणं कुलोवकुलंणत्थि जाव असाढी अमावासं कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेणं वा जुत्ता, असाढी अमावासं जुत्ताति वतव्वं सिया ॥ इति दसमस्स छठ्ठं पाहुडं सम्मत्तं ॥१०॥६॥ +

में कुलोपकुल नक्षत्र नहीं हैं. यावत् शब्द मे भाद्रपद की अमावास्या में ज्येष्ठ मास की अमावास्या पर्यंत कहना. आषाढ माघ की अमावास्या कुल युक्त उपकुल युक्त व कुलोपकुल युक्त है. इस तरह बारह मास की अमावास्या में कुल, उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र का यंत्र जानना. यह दशवा पाहुडे का छठा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ ६ ॥

कुल उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र का यंत्र.

नं०	मास	कुल	उपकुल	कुलोपकुल	नं०	मास	कुल	उपकुल	कुलोपकुल
१	श्रावण वद ३०	मघा	अश्लेषा	०	७	महा वद ३०	धनिष्ठा	श्रवण	अभिजित
२	भाद्रपदवद ३०	उ० फा०	पूर्वा फा०	०	८	फाल्गुन वद ३०	उत्तरा भा.	पूर्वाभाद्रपद	शतभिषा
३	अश्विन वद ३०	चित्रा	हस्त	०	९	चैत्र वद ३०	अश्विनी	रेवती	०
४	कार्तिकवद ३०	विशाखा	स्वाति	०	१०	वैशाख वद ३०	कृत्तिका	भरणी	०
५	मृगशर वद ३०	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	११	ज्येष्ठ वद ३०	मृगशर	रोहिणी	०
६	पोष वद ३०	उत्तरापाढा	पूर्वाषाढा	०	१२	अषाढ वद ३०	पुष्य	पुनर्वसु	आर्द्रा

भरणि, कत्तियाय ॥ जेट्ठामूलं दोण्णि णक्खत्ता तंजहा- रोहिणी, मिगसिरं॥ता असाढीणं अमावासं कति णक्खत्ता जोयेति. ता तिण्णि णक्खत्ता जोतेति तंजहा-अद्दा, पुणव्वसु, पुसो ॥ ४ ॥ ता सावट्ठीणं अमावासं किं कुलं जोतेति उवकुलं जोतेति, कुलावकुलं जोतेति? ता कुलं वा जोतेति उवकुलं वा जोतेति नो लब्भति कुलावकुलं,कुलं व जोएमाणे महाणक्खत्तेजोतेति उवकुलजोएमाणे असेसा नक्खत्ते जोतेति ॥ ता सावट्ठीणं अमावासं कुल वा जोतेति उवकुलं वा जोतेति कुले वा जुत्ता उवकुलेणवाजुत्ता सावट्ठी अमावासा जुत्ताति वतव्वंसिया एवं णेयव्वं णवरं मगसिरिए महाए फग्गुणीए

भाद्रपद व उत्तराभाद्रपद. ९ चैत्र में दो नक्षत्र रेवति व अश्विनी. १० वैशाखी अमावास्या के दो नक्षत्र-भरणी कृत्तिका. ११. ज्येष्ठ मास की अमावास्या के दो नक्षत्र रोहिणी व मृगशर और १२ आषाढ मास की अमावास्या को तीन नक्षत्र आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावण मास की अमावास्या को क्या कुल नक्षत्र का योग होवे अथवा उपकुल नक्षत्र का योग होवे. अथवा कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे. ? अहो शिष्य ! कुल नक्षत्र का योग होवे, अथवा उपकुल नक्षत्र का योग होवे परंतु कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे नहीं. कुल का योग होवे तो मघा नक्षत्र, और उपकुल में अश्लेषा नक्षत्र का योग होवे. इस से कुल का योग होवे अथवा उपकुल का योग होवे. और इसी से कुल युक्त व उपकुल युक्त कहलाती है यह श्रवण मास की अमावास्या की वक्तव्यता कही. ऐसे ही शेष मास की अमावास्या का जानना. परंतु मृगशर, माघ फाल्गुन और आषाढ मास इन चार मास की अमावास्या में कुलोपकुल कहना. और शेष आठ मास

प्रथम संवत्सर.

वर्ष	मासतीथी	युगके दिन	मु०	भा ६२	नक्षत्र	मु०	भा ६२	भा ६७	न० मा.
१	श्रावण वदी ३०	१४	६	४८	पुष्य	५६	१०	६६	१
	२५	१५	२२	४६	अश्लेषा	१३	२१	५	१
२	भाद्रपद वदी ३०	४४	२१	१८	पूर्वा फाल्गुनी	२५	५	६५	२
	४५	४५	८	१४	उत्तराफाल्गुनी	४	२६	२	२
३	आश्विन वदी ३०	७३	५	५०	उत्तराफाल्गुनी	४	०	६४	३
	७५	७४	२३	४४	हस्त	२५	३१	३	३
४	कार्तिक वदी ३०	१०३	२०	२०	स्वाति	१२	५७	६३	४
	१०५	१०४	९	१२	विशाखा	१६	३६	४	४
५	मृगशर वदी ३०	१३२	४	५२	अनुराधा	२१	५२	६२	५
	१३५	१३३	२४	४२	जेष्ठा	७	४१	५	५
६	पोष वदी ३०	१६२	१९	२२	मूल	०	४७	६१	६
	१६५	१६३	१०	१०	पूर्वाषाढा	२८	४६	६	६
७	महा वदी ३०	१९१	३	५४	उत्तराषाढा	८	४२	६०	७
	१९५	१९२	२५	४०	अभिजित	९	०४	६६	८
					श्रवण	११	२६	८	८
८	फाल्गुन वदी ३०	२२१	१८	२४	धनिष्ठा	११	०	५८	९
	२२५	२२२	११	८	शतभिषा	१५	०	०	९
					पूर्वाभाद्रपद	२	३१	९	९
९	चैत्र वदी ३०	२५०	४	५६	उत्तराभाद्रपद	८	४	१०ग	१०
	२५५	२५१	२६	३८	उत्तराभाद्रपद	१७	३६	१०	१०
१०	वैशाख वदी ३०	२८०	१७	२६	रेवती	१	५२	५६	११
	२८५	२८१	१२	६	अश्विनी	२८	४१	११	११
११	ज्येष्ठ वदी ३०	३०९	११	५८	कृत्तिका	२	४७	५५	१२
	३१५	३१०	२७	३६	रोहिणी	१२	४६	१२	१२
१२	अषाढ वदी ३०	३३९	१६	२८	मृगशर	१८	४२	५४	१३
	३४५	३४०	१३	४१	आर्द्रा	१०	५१	१३	१३

प्रथम संवत्सर.

पर्व	मासतीथी	युगके दिन	मु०	भा ६२	नक्षत्र	मु०	भा ६२	भा ६७	न० मा.
१	श्रावण वदी ३०	२४	६	४८	पुष्य	१६	१०	६६	१
	१५	१५	२२	४६	अश्लेषा	१३	२१	१	१
२	भाद्रपद वदी ३०	४४	२१	१८	पूर्वा फाल्गुनी	२५	५	६५	२
	४५	४५	८	१४	उत्तराफाल्गुनी	४	२६	२	२
३	आश्विन वदी ३०	७४	५	५०	उत्तराफाल्गुनी	४	०	६४	३
	७५	७४	२३	४४	हस्त	२५	३१	३	३
४	कार्तिक वदी ३०	१०३	२०	२०	स्वाति	१२	५७	६३	४
	१०५	१०४	९	१२	विशाखा	१६	३६	४	४
५	मृगशर वदी ३०	१३२	४	५२	अनुराधा	२१	५१	६२	५
	१३५	१३३	२४	४२	जेष्ठा	७	४१	५	५
६	पोष वदी ३०	१६२	१९	२२	मूल	०	४७	६१	६
	१६५	१६३	१०	१०	पूर्वाषाढा	२८	४६	६	६
७	महा वदी ३०	१९१	३	५४	उत्तराषाढा	८	४२	६०	७
	१९५	१९२	२५	४०	अभिजित	९	१४	६६	८
					श्रवण	११	२६	८	८
८	फाल्गुन वदी ३०	२२१	१८	२४	धनिष्ठा	११	०	५८	९
	२२५	२२२	११	८	शतभिषा	१५	०	०	९
					पूर्वाभाद्रपद	२	३१	९	९
९	चैत्र वदी ३०	२५०	२	५६	उत्तराभाद्रपद	८	४	[illegible]	१०
	२५५	२५१	२६	३८	उत्तराभाद्रपद	१७	३६	१०	१०
१०	वैशाख वदी ३०	२८०	१७	२६	रेवती	[illegible]	५२	५६	११
	२८५	२८१	१२	६	अश्विनी	२८	४१	११	११
११	ज्येष्ठ वदी ३०	३०२	११	५८	कृत्तिका	२	४७	५५	१२
	३१५	३१०	२७	३६	रोहिणी	१२	४६	१२	१२
१२	अषाढ वदी ३०	३३९	१६	२८	मृगशिर	१८	४२	५४	१३
	३४५	३४०	१३	४१	आर्द्रा	१०	५१	१३	१३

.तृतीय संवत्सर.

पर्व	मास तीथी	युगके दिन	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	गत
२५	श्रावण वदी ३०	७२३	२५	१०	पुनर्वसु	९	५२	२७ गये
	७३५	७२४	४	१२	पुनर्वसु	३५	२२	२७
२६	भाद्रपद वदी ३०	७५२	९	४२	अश्लेषा	१७	५९	३९
	७६५	७५३	१९	५२	मघा	११	३४	२८
२७	आश्विन वदी ३०	७८२	२४	१२	पूर्वाफाल्गुनी	११	५४	३८
	७९५	७८३	५	२०	उत्तराफाल्गुनी	१७	३९	२९
२८	कार्तिक वदी ३०	८११	८	५४	हस्त	२०	४९	३७
	८२५	८१२	२०	५०	चित्रा	८	४४	३०
२९	मृगशर वदी ३०	८४१	२३	१४	विशाखा	०	१७	३१
	८५५	८४२	६	१८	विशाखा	२९	४९	३१ गये
३०	प्र०पौष वदी ३०	८७०	७	४६	अनुराधा	८	३२	३५
	८८५	८७१	२१	४८	ज्येष्ठा	१५	०	०
					मूल	९	५४	३२
३१	द्वि०पौष वदी ३०	९००	२२	१६	पूर्वाषाढा	१७	३४	३४
	९१५	९०१	७	१६	उत्तराषाढा	११	५२	३३
३२	महा वदी ३०	९२९	६	४८	अभिजित	५	५४	३[illegible]
	९४५	९३०	२२	४६	श्रवण	२३	३२	३[illegible]
३३	फाल्गुण वदी ३०	९५९	२०	१८	शतभिषा	१४	४२	३१
	९७५	९६०	८	१४	पूर्वाभाद्रपद	१४	४४	२६
३४	चैत्र वदी ३०	९८८	५	५०	उत्तराभाद्रपद	२३	४४	३०
	१००५	९८८	२३	४४	रेवति	५	४२	२७
३५	वैशाख वदी ३०	१०१८	२०	२०	अश्विनी	१७	३२	२९
	१०३५	१०१९	९	१२	भरणी	११	५४	३८
३६	ज्येष्ठ वदी ३०	१०४७	४	५२	रोहिणी	३	२७	३१ ग
	१०६५	१०४८	२४	४२	रोहिणी	३२	५९	३९
३७	आषाढ वदी ३०	१०७७	१९	२२	मृगशर	५	२२	२७
	११२५	१०७८	१०	१०	आर्द्रा	१५	०	०
					पुनर्वसु	९	२	४०

ता कहंते सन्निवाते आहितेति वदेज्जा ता जयाणं सावट्ठी पोण्णिमा भवाति, तयाणं माहि अमावासा भवति, जताणं माहि पुण्णिमा भवाति, तयाणं सावट्ठी अमावासा भवाति.जयाणं पोट्ठवतीण पोण्णिमा भवाति,तयाणं फगुणी अमावासा भवति जयाणं फग्गुणी पुण्णिमा भवाति तयाण पोट्ठवाति अमावासा भवाति॥जयाणं असोइ पुण्णिमा भवाति तयाणं चेति अमावासा भवाति, जयाणं चेता पुण्णिमा भवाति, तयाण असोइ अमावासा भवाति,

अब दशवे पाहुडे का मानवा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आपके मत में सन्निपात कैसे कहा ? अर्थात् पूर्णिमा अमावास्या नक्षत्र योग आश्री कैसे कहा ? अहो शिष्य ! व्यवहार नय से जो तीन नक्षत्र श्रावण मास की पूर्णिमा को होते हैं, वे ही तीन नक्षत्रों माघ मास की अमावास्या को होते हैं, जो दो नक्षत्रों माघ मास की पूर्णिमा को होते हैं वे ही नक्षत्रों श्रावण मास की पूर्णिमा को होते हैं, जो तीन में से कोई भी नक्षत्र भाद्रपद मास की पूर्णिमा को होते हैं वे ही तीन नक्षत्रों में से कोई भी फाल्गुन मास की अमावास्या को होते हैं. और फाल्गुन मास की पूर्णिमा को जो दो नक्षत्रों में से कोई भी होते हैं वे ही भाद्रपद मास की अमावास्या को होते हैं आश्विन मास की पूर्णिमा को जो नक्षत्र होते हैं वे चैत्र मास की अमावास्या को आते हैं और जो चैत्र मास की पूर्णिमा को होते हैं वे ही आश्विन मास की अमावास्या को होते हैं. कार्तिक पूर्णिमा को जो नक्षत्र होते हैं वे ही वैशाख मास की अमावास्या को

मास	कुलोपकुल	उपकुल	कुल नक्षत्र	मास
श्रावण शुदी १५	अभिच	श्रवण	धनिष्ठा	माघ वदी ३०
भाद्रपद शुदी १५	शतभीषा	पूर्वभाद्रपद	उत्तरा भाद्रपद	फाल्गुन वदी ३०
अश्विन शुदी १५	०	रेवति	अश्विनी	चैत्र वदी ३०
कार्तिक शुदी १५	०	भरणि	कृत्तिका	वैशाख वदी ३०
मृगशर शुदी १५	०	रोहिणी	मृगशर	ज्येष्ठ वदी ३०
पोष शुदी १५	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आशाढ वदी ३०
माह शुदी १५	०	अश्लेषा	मघा	श्रावण वदी ३०
फाल्गुन शुदी १५	०	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	भाद्रपद वदी ३०
चैत्र शुदी १४	०	हस्त	चित्रा	अश्विन वदी ३०
वैशाख शुदी १५	०	स्वाति	विशाखा	कार्तिक वदी ३०
जेठ शुदी १५	अनुराधा	ज्येष्ठा	मुल	मृगशर वदी ३०
आशाड शुदी १५	०	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	पोष वदी ३०

सूत्र

एवं कत्तियविसा हियायेय मगसिरिए जेट्ठामूलीयेय ता जयाणं पोसि पुण्णिमा भवति तयाणं असाढी अमावासा भवति, जयाणं असाढी पुण्णिमा भवति, तयाण पोसि अमावासा भवति॥इति दसम पहुडस्स सत्तमं पाहुडं सम्मत्तं ॥१०॥७॥

अर्थ

आते हैं और जो वैशाख मास की पूर्णिमा को होते हैं. वे कार्तिक मास की अमावास्या को आते हैं. मृगशर मास की पूर्णिमा को जो नक्षत्र होते हैं. वे ज्येष्ट मास की अमावास्या को आते हैं और जो ज्येष्ट मास की अमावास्या को होते हैं वे मृगशर की पूर्णिमा को आते हैं. जो पोष मास की पूर्णिमा को नक्षत्र आते हैं वे आषाढ अमावास्या को आते हैं और जो आषाढ अमावास्या को आते हैं वे पौष पूर्णिमा को आते हैं. यह दशवा पाहुडे का सातवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ७ ॥

सगड संठिते पण्णत्ते ॥ ११ ॥ मगसिर, णक्खत्ते मिगसीसावलि संठिते पण्णत्ते ॥ १२ ॥ अद्दाणं रुहिर विंदु संठिए ॥ १३ ॥ पुणव्वसूणं तुलासंठिते ॥ १४ ॥ पुसेणं वद्धमाणग संठिते पण्णत्ते ॥ १५ ॥ असेसाणं पडाग संठिए पण्णत्ते ॥ १६ ॥ महाणं पागार संठिए पण्णत्ते ॥ १७ ॥ पुव्वाफग्गुणीणं अद्धपलियंक संठिते पण्णत्ते ॥ १८ ॥ उत्तराओ एवं ॥ १९ ॥ हत्थे हत्थ संठिते पण्णत्ते ॥ २० ॥ चित्ताणं मुहफुलंग संठिते पण्णत्ते ॥ २१ ॥ सातिणं खीलग संठिए पण्णत्ते ॥ २२ ॥ विसाहाणं दामणि संठिए पण्णत्ते ॥ २३ ॥ अणुराहा णक्खत्ते एगावलि संठिते

गृह के आकार से है, ११ रोहिणी नक्षत्र शकट अथवा रथ की धूरी के आकार से है, १२ मृगशर नक्षत्र मृग मस्तक के संस्थान से है, १३ आर्द्रा नक्षत्र रुधिर बिन्दु के संस्थान से है. १४ पुनर्वसु नक्षत्र चूला के संस्थान से है १५ पुष्य नक्षत्र वर्धमान के आकारसे है, १६ अश्लेषा नक्षत्र ध्वजा पताका के आकारसे है १७ मघा नक्षत्र प्राकार के आकार से है १८ पूर्वाफाल्गुनी अर्ध पल्यंक के संस्थान से है १९ उत्तरा फाल्गुनी अर्ध पल्यंक के आकार से है. २० हस्त नक्षत्र हथेली के संस्थान से है २१ चित्रा नक्षत्र महुडे फूल के संस्थान से है २२ स्वाति नक्षत्र खीले के संस्थान से है, २३ विशाखा नक्षत्र सादामिणी के

ता कहंते णक्खत्ते संठिति आहितेति वदेजा ? ता एएसिणं अट्ठाविसाए णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते गोसिसावलि संठिए पण्णत्ते ॥ १ ॥ सवणे णक्खत्ते काहार संठिए पण्णत्ते ॥ २ ॥ धणिट्ठा णक्खत्ते सउणी पलिण संठिए प. ॥ ३ ॥ सतभिसया णक्खत्ते पुप्फोवयार संठिए पण्णत्ते ॥ ४ ॥ एवं पुव्वभद्दवया णक्खत्ते उत्तरभद्दवया णक्खत्ते अद्धवावि संठिए पण्णत्ते ॥ ५ ॥ ६ ॥ रेवति नक्खत्ते नावा संठिते ॥ ७ ॥ अस्सिणि आसक्खंधग संठिए ॥ ८ ॥ भरणि णक्खत्ते भगसंठिए पण्णत्ते ॥ ९ ॥ कत्तिया णक्खत्ते खुरघरग संठिए ॥ १० ॥ रोहिणि णक्खत्ते

अब दूसरा पाहुडे का आठवा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आपके मत में नक्षत्र के संस्थान किस प्रकार कहे हैं सो कहो ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रों में से १ अभिजित नक्षत्र गोशृंग के आकार से है, २ श्रवण नक्षत्र कावड के आकार से है, ३ धनिष्ठा नक्षत्र पक्षी के पींजर के आकार से है, ४ शतभिषा नक्षत्र पुष्पपचार अर्थात् पुष्प की राशि के आकार से है, ५-६ पूर्वाभाद्रपद व उत्तराभद्रपद दोनों नक्षत्रों अर्ध वावडी के आकारवाले हैं, ७ रेवति नक्षत्र नावा के आकार से है, ८ अश्विनी नक्षत्र अश्वस्कंध के आकार से है, ९ भरणी नक्षत्र स्त्री की योनि के आकार से है, १० कृत्तिका नक्षत्र

पण्णत्ते ॥ ८ ॥ भरणि तितारे ॥ ९ ॥ कत्तिया छ तारे ॥ १० ॥ रोहिणि पंचतारे ॥ २१ ॥ मिगसिरे तितारे ॥ १२ ॥ अद्दा एगतारे ॥ १३ ॥ पुणवसु पंचतारे ॥ १४ ॥ पुस्से तितारे ॥ १५ ॥ असलेसा छत्तारे ॥ १६ ॥ महासत्ततारे ॥ १७ ॥ पुव्वा फग्गुणी दुतारे ॥ १९ ॥ एवं उत्तरावि ॥ १९ ॥ हत्थे पंचतारे ॥ २० ॥ चित्ताणं एगतारे ॥ २१ ॥ सातिणं एगतारे ॥ २२ ॥ विसाहाणं पंचतारे ॥ २३ ॥ अणुराहा चउतारे ॥ २५ ॥ जेट्ठा तितारे ॥ २५ ॥ मूले णक्खत्ते एगारसतारे ॥ २६ ॥ पुव्वासाढा चउतारे ॥ २७ ॥ उत्तरासाढा णक्खत्ते चउतारे

भाद्रपद के दो तारे, ७ रेवती के बत्तीस तारे, ८ अश्विनी के तीन तारे, ९ भरणी के तीन तारे, १० कृत्तिका के छ तारे, ११ रोहिणी के पांच तारे, १२ मृगशर के तीन तारे, १३ आर्द्रा का एक तारा १४ पुनर्वसु के पांच तारे, १५ पुष्य के तीन तारे, १६ अश्लेषा के छ तारे, १७ मघा के सात तारे, १८ पूर्वाफाल्गुनी के दो तारे, १९ उत्तरा फाल्गुनी के दो तारे, २० हस्त के पांच तारे, २१ चित्रा का एक तारा, २२ स्वाति का एक तारा, २३ विशाखा के पांच तारे, २४ अनुराधा के चार तारे, २५ ज्येष्ठा के तीन तारे, २६ मूल के अग्यारह तारे, २७ पूर्वाषाढा के चार तारे और २८ उत्तराषाढा नक्षत्र के चार

सूत्र

पण्णत्ते ॥ २४ ॥ जेट्ठा णक्खत्ते गयदंत संठिए पण्णत्ते ॥ २५ ॥ मूले णक्खत्ते विच्छुयलगोल संठिते ॥ २६ ॥ पुव्वासाढा णक्खत्तेय पत्तिकम संठते पण्णत्ते ॥ २६ ॥ उत्तरासाढा णक्खत्ते सीहाणीसाति संठिते पण्णत्ते ॥ इति दसमस्स अट्ठमं पाहुड सम्मत्तं ॥ १० ॥ ८ ॥ × +

ता कहते णक्खत्ते तारगा आहितेति वदेज्जा ? ता एएसिणं अट्ठाविसाए णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥ १ ॥ सवणे णक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥ २ ॥ धणिट्ठापंचतारे ॥ ३ ॥ सयभिसया दसतारे ॥ ४ ॥ पुव्वभद्दवया दुतारे ॥ ५ ॥ उत्तरभद्दवया दुतारे ॥ ६ ॥ रेवति बत्तीस तारे पण्णत्ते ॥ ७ ॥ अस्सिणि तितारे

अर्थ

संस्थान से है ॥ २४ अनुराधा नक्षत्र एकावलि के संस्थानसे है ॥ २५ ज्येष्ठा नक्षत्र गजदंतके आकारसे है ॥ २६ मूल नक्षत्र बिच्छु के आकार से है ॥ २७ पूर्वापाढा नक्षत्र हस्तिकी चाल के आकार से है ॥ २८ उत्तरापाढा नक्षत्र बैठे सिंहके आकार से है ॥ यों दशवा पाहुडका आठवा अंतरपाहुडा संपूर्ण॥

अब नववा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में नक्षत्र के तारे कितने २ कहे हैं ? अहो शिष्य ! उक्त अठावीस नक्षत्रों में से १ अभिजित के तीन तारे, २ श्रवण नक्षत्र के तीन तारे, ३ धनिष्ठा के पांच तारे, ४ शतभिषा नक्षत्र के १०० तारे, ५ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे, ६ उत्तरा-

तंजहा-उत्तरासाढा, अभिए, सवणे धणिट्ठा ॥ उत्तरासाढा णक्खत्ते चउद्दस अहोरत्ते-णेति, अभिये णक्खत्ते सत्त अहोरत्ते णेति ॥ २ ॥ सवणे णक्खत्ते अट्ठ अहोरत्ते

और ४ उत्तराभद्रपद. इसी अभिलाप से जैसे जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति में कहा वैसे ही कहना. यावत् शब्द में पूर्ण करना. पौष शुदी १५ पर्यंत चार अंगुल प्रतिमास में वृद्धि पावे, महा वदी १ से

मास		नक्षत्र व दिन.			
१	श्रावण	उत्तराषाढा १४	अभिच ७	श्रवण ८	धनिष्ठा १
२	भाद्रपद	धनिष्ठा १४	शतभिषा ७	पूर्वा भा० ८	उत्तरा भा० १
३	आश्विन	उत्तरा भाद्रपद १४	रेवती १५	अश्विनी १	०
४	कार्तिक	आश्विनी १४	भरणी १५	कार्तिक १	०
५	मृगशर	कृत्तिका १४	रोहिणी १५	मृगशर १	०
६	पौष	मृगशर १४	आर्द्रा ८	पुनर्वसु ७	पुष्य १
७	महा	पुष्य १४	अश्लेषा	मघा १	०
८	फाल्गुण	मघा १४	पूर्वा फा. १५	उत्तरा फा० १	०
९	चैत्र	उत्तराफाल्गुनी १४	हस्त १५	चित्रा १	०
१०	वैशाख	चित्रा १४	स्वाति १५	विशाखा १	०
११	ज्येष्ठ	विशाखा १४	अनुराध ८	ज्येष्ठा ७	मूल १
१२	असाढ	मूल १४	पूर्वाषाढ १५	उत्तराषाढा १	०

अषाढ शुदी १५ तक पुरुष छाया प्रतिमास चार २ अंगुल हीन होवे. ॥ २ ॥ चंद्र सूर्य का मंडल शुदी १५ को चरम समय में समचतुस्र संस्थान वाला होता है. पीछे न्यग्रोध परि मंडल संस्थान वाला होता है. छाया सहित मनोहर समान प्रमाण सहित पुरुष

पण्णत्ते ॥ २८ ॥ इति दसमस्स पाहुडस्स नवमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ९ ॥

ता कहं ते णेया आहितेति वदेज्जा ? ता वासाणं पढम मासं चत्तारि णक्खत्ता णेति

तारे. यह दशवा पाहुडा का नवबा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ ९ ॥

अथ दशवा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में कौन २ से नक्षत्र अहोरात्रि संपूर्ण करे ? अहो शिष्य ! वर्षाकाल के प्रथम मास अर्थात् श्रावण मास में चार नक्षत्र अहोरात्रि संपूर्ण करे जिन के नाम-१ उत्तराषाढा २ अभिजित-३ श्रवण और ४ धनिष्ठा. उत्तराषाढा चउदह अहो रात्रि संपूर्ण करे अर्थात् श्रावण वदी १ से श्रावण वदी १४ पर्यंत, अभिजित नक्षत्र ७ अहोरात्रि संपूर्ण करे अर्थात् श्रावण वदी ३० से श्रावण शुदी ६, श्रवण नक्षत्र आठ अहो रात्रि संपूर्ण करे अर्थात् श्रावण शुदी ७ से १४ तक और धनिष्ठा एक अहो रात्रि संपूर्ण करे, अर्थात् श्रावण शुदी १५ की रात्रि संपूर्ण करे. उक्त चार नक्षत्र श्रावण मास संपूर्ण करे. चार अंगुल पुरुषछाया से सूर्य परिभ्रमण करे. श्रावण मास की प्रथम अहोरात्रि वदी प्रतिपदा से प्रतिदिन एक २ मंडल पर चलता हुवा सूर्य उस मास के चरिम दिन अर्थात् श्रावण शुदी १५ को दो पांव और चार अंगुल की पौरषी होवे. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वर्षाकाल के दूसरे मास में कितने नक्षत्र अहोरात्रि संपूर्ण करे ? अहो शिष्य ! दूसरा भाद्रपद मास में चार नक्षत्र अहोरात्रि संपूर्ण करे. जिन के नाम १ धनिष्ठा २ शतभिषा ३ पूर्वाभाद्रपद

अंगुलाति पोरिसि भवति ॥ १८ ॥ वासाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेति ता चत्तारि णक्खत्ता णेति तजहा-धणिट्ठा, सतभिसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जहेव जंबूदीव पण्णत्तीए, तहेव एत्थंपि भाणियव्वं जाव

जिस पर्व में जो तिथि की पौरसी छाया जानने की इच्छा होवे तब पूर्व युग की आदि से जितने पर्व गये होवे उन का अंक रखना. जो आंक आवे उसे पन्नरह से गुणाकार करना. और विवक्षित तिथि से जितनी तिथि गइ होवे उतनी मिलाना. अब अयन के १८३ मंडल हैं, उस में चंद्र की तिथि १८६ होवे, इस से आये हुवे आंक को १८६ से भाग देना, और जो भाग का आंक होवे उसे सम्यक् प्रकार से जानना ॥ १ ॥ यदि विषम आंक अर्थात् १-३-५-७-९ आवे और शेष रह जावे तो दक्षिण अयन पूर्ण होकर उत्तरायण वर्तता है, और सम आंक २-४-६-८-१० आवे और शेष रहे तो उत्तरायण पूर्ण होकर दक्षिणायण जानना. विषम आंक आवे और शेष रहे नहीं तो दक्षिणायन जानना. सम आंक आवे और शेष रहे नहीं तो उत्तरायण जानना. भाग देते लब्धांक कुच्छ भी आवे नहीं और शेष राशि रहे तो दक्षिणायन जानना ॥ २ ॥ जो शेष राशि रहे वह अयन की गत तिथि जानना. उसे चार गुना करना और पर्व के चतुर्थ भाग से भाग देना. उस में जो लब्धांक आवे सो अंगुल और शेष रहे सो भाग. इस तरह पौरसी की क्षय व वृद्धि जानना ॥ ३ ॥ दक्षिणायन में पुरुष छाया को दो पांव करसे

सूत्र ...णेति ॥ ३ ॥ धणिट्ठा णक्खत्ते एगं अहोरत्तो णेति ॥ तंसिं चणं मासंसि चउरंगुल पोरसिए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति तस्सणं मासस्स चरमदिवसे दे पायाणि चत्तारि

अर्थ छाया की प्रतिदिन मांडले २ पर हानिवृद्धि करता हुवा प्रवर्ते. और चरिम अशाड शुदी १५ को दो पांव से पौरसी होवे. यह व्यवहार नय से कहा. परंतु निश्चय नय से साढी तीस अहोरात्रि में चार अंगुल की हानि वृद्धि होवे और चंद्रतिथि एकतीस में चार अंगुल की हानि वृद्धि होवे. इस कथन को पूर्वाचार्योंने गाथा से बतलाया है सो कहते हैं.गाथा—पवे पन्नरस गुणे तिहि। सहिए पोरसीए अयणे ॥ छुलसी सयविभत्ते। जलधंतं विजाणाहि ॥ १ ॥ जं होइ विसमं लद्धं। दक्खिण पइणं हविज्ज णायव्वं ॥ अह हवइ समं लद्धं। णायव्वं उत्तर अयणं ॥ २ ॥ अयणे गय तिथि रासी। चउगुण पव्वपायं भयथांमे ॥ जलद्धं गुलाणीया। खयं वुड्ढीय पोरसीएओ ॥ ३ ॥ दाहिण वुड्ढी दुपयाओ। अंगुलाणं तुहोइ णायव्वो ॥ उत्तर अयणे हाणी। कायव्वा चउहि पायाहिं ॥ ४ ॥ सावण बहुल पडिया। दुपाया पोरसी धूवा ॥ चत्तारि अंगुलाइ। मासेण वड्ढए ततो ॥ ५ ॥ इकतीसइ भागा तिहिए। पुण अंगुलस्स चत्तारि ॥ दाहिण अयणे वुड्ढी। जाव चत्तारि पयाइं ॥ ६ ॥ उत्तर अयणे हाणी। चउहि पायाहिं जाव दो पया ॥ एवं पोरसी होइए। वुड्ढी खयाहोति णायव्वा ॥ ७ ॥ वुड्ढी वा हाणी णायव्वा। जायइया पोरसीए दिट्ठाओ ॥ ततो दिवसगएणं। जं लद्धं तत्त अयणगयं ॥ ८ ॥ इस का अर्थ—युग में

अंगुलाति पोरिसि भवति ॥ १८ ॥ वासाणं वितियं मासं कति णक्खत्ता णेति ता चत्तारि णक्खत्ता णेति तजहा-धणिट्ठा, सताभिसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जहेव जंबूद्दीव पण्णत्तीए, तहेव एत्थंपि भाणियव्वं जाव

जिस पर्व में जो तिथि को पौरसी छाया जानने की इच्छा होवे तब पूर्व युग की आदि से जितने पर्व गये होवे उन का अंक रखना. जो आंक आवे उसे पन्नरह से गुणाकार करना. और विवक्षित तिथि से जितनी तिथि गइ होवे उतनी मिलाना. अब अयन के १८३ मंडल हैं, उस में चंद्र की तिथि १८६ होवे, इस से आये हुवे आंक को १८६ से भाग देना, और जो भाग का आंक होवे उसे सम्यक् प्रकार से जानना ॥ १ ॥ यदि विषम आंक अर्थात् १-३-५-७-९ आवे और शेष रह जावे तो दक्षिण अयन पूर्ण होकर उत्तरायण वर्तती है, और सम आंक २-४-६-८-१० आवे और शेष रहे तो उत्तरायण पूर्ण होकर दक्षिणायण जानना. विषम आंक आवे और शेष रहे नहीं तो दक्षिणायन जानना. सम आंक आवे और शेष रहे नहीं तो उत्तरायण जानना. भाग देने लब्धांक कुच्छ भी आवे नहीं और शेष राशि रहे तो दक्षिणायन जानना ॥ २ ॥ जो शेष राशि रहे वह अयन की गत तिथि जानना. उसे चार गुना करना और पर्व के चतुर्थ भाग से भाग देना. उस में जो लब्धांक आवे सो अंगुल और शेष रहे सो भाग. इस तरह पौरसी की क्षय व वृद्धि जानना ॥ ३ ॥ दक्षिणायन में पुरुष छाया को दो पांव ऊपरसे

सूत्र

तेसिं चणं मासंसि वड्ढीए ॥ ४ ॥ समचउरंस संठियाए णग्गोह परिमंडलाए सकाय मणुरंगिणीए छायाए सूरिय अणुपरियट्टति तस्सणं मासस्स चरमदिवसे लेहट्ठाति

अर्थ

वृद्धि होती है, और उत्तरायण में चार पांव में हानि होती है. ॥ ४ ॥ श्रावण मास की प्रथम प्रतिपदा अर्थात् युग की आदि व श्रावण मास के आग दिन युग के अंत अषाड शुदी १५ को दो पांव की पौरुषी होवे, तत्पश्चात् प्रतिम स क अंत में चार २ अंगुल की वृद्धि होवे. अर्थात् श्रावण शुदी १५ को दो पांव और चार अंगुल की पौरषी होवे ॥ ५ ॥ एक २ तिथि में एकतीसीये चार भाग की दक्षिणायन में वृद्धि करना, इस तरह वृद्धि करते चार पांव तक बढाना ॥ ६ ॥ उत्तरायन में चार पांव से दो पांव तक प्रत्येक तिथि को एकतीसीए चार भाग की हानि करना. इस विधि से पौरषी की हानि वृद्धि जानना ॥ ७ ॥ इस तरह पौरषी की हानि वृद्धि कही. अब अयन में शेष गये पीछे अर्थात् जो लब्धांक आवे वह युग में अयन गये हुवे जानना ॥ ८ ॥ एक अयन में चंद्र तिथि १८६ होवे और १८६ तिथि में हानि वृद्धि २४ अंगुल की होवे. इस तरह होने से एक तिथि में कितनी हानि वृद्धि होवे? इस में राशि की स्थापना करना. १८६-२४-१.. इस में अंत राशि को मध्य राशि से गुणाकार करके प्रथम राशि से भाग देना. अर्थात् २४×१=२४÷१८६ इस का भाग नहीं चले, इस से छेद भेद करना. अर्थात् २४को छसे भाग देना तो ४ आवे और १८६ को ६ का भाग देने से ३१ आवे. इससे एक

दोपयाते पोरिसि भवति ॥ इति दसम पाहुडस्स दसम पाहुडं ॥ १० ॥ १० ॥ *

तीसिए चार भाग की एक २ तीथि में हानिवृद्धि होवे. दृष्टांत-पंचामी वे पर्व की पाचवी तीथी में कितने पांवकी पौरुषी होवे ? ८४ का १५ गुना करने १२६० होवे, इस में पांच तीथी के पाच मिलाना जिस से १२६५ होवे, उसे १८३ का भाग देने से ६ का भाग हुवा, इस मे ६ अयन व्यतीत हुई, और सातवी अयन के १४९ दिन शेप रहे. सातवी अयन दक्षिणायन जानना. इस से १४९ तीथी को चार से गुणा करते ५९६ हुवे और उसे ३१ का भाग देने १९ आया शेष ७ रहा-इसे १९ अंगुल व एक तीसए ७ भाग की वृद्धि करना. इस में दो पॉव मीलाने से तीन पॉव सात अंगुल व एकतीसए सात भाग की पौरुपी होवे. यह दक्षिणायन जानना. यह दशवा पाहुडा का दशवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुआ ॥१०॥१०॥

अब दशवा पाहुडा का अग्यारहवा अंतर पाहुड कहते है. अहो भगवन् ! आप के मत में किस तरह चंद्र मार्ग कहा ? अर्थात् सूर्य नक्षत्र रहित दक्षिण उत्तर प्रमर्दकारी योग चंद्रमंडल गत परिभ्रमण रूप मंडल मार्ग कहा ? उत्तर-अहो शिष्य ! ऐसे नक्षत्रो हैं कि जो सदैव चंद्रमा की साथ दक्षिण दिशा में रहे हए योग करते हैं, ऐसे नक्षत्रो हैं कि जो सदैव चंद्रमा की साथ उत्तर दिशा में योग करते हैं, अथवा कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमा साथ क्वचित् दक्षिण में रहकर क्वचित् उत्तर में रहकर अथवा प्रमर्दकारी अर्थात् चंद्रमा नक्षत्र भेद कर योग करे, कितनेक नक्षत्र ऐसे हैं कि जो सदैव दक्षिण

ता कहंते चंदमग्ग आहितेति वदेज्जा ? ता एएसिणं अट्ठाविसाए णक्खत्ताणं अत्थि

अर्थ

दिशा में रहकर योग करते हैं अथवा प्रमर्द कारी-अर्थात् चंद्रमा उस नक्षत्र को भेद कर योग करे और कितनेक नक्षत्र ऐसे हैं कि जो चंद्र की साथ सदैव प्रमर्द कारी योग करे अर्थात् चंद्रमा उस नक्षत्र को भेद कर योग करे. अहो भगवन् ! इन अठ्ठावीस नक्षत्रोंमें से कौनसे नक्षत्र सदैव दक्षिण दिशामें रहकर योग करे यावत् कौन से नक्षत्र दक्षिण दिशा में अथवा प्रमर्द कारी योग करे कौन से नक्षत्र सदैव प्रमर्द कारी योग करे ? इन अठ्ठावीस नक्षत्रों में से जो नक्षत्रों सदैव दक्षिण दिशा में रहकर योग करते हैं वे छ नक्षत्रों हैं, जिनके नाम—१ मृगशर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ अश्लेषा ५ हस्त और ६ मूल. ये ६ नक्षत्रों चंद्रमा के पन्दरा मंडल व अपने आठवे मंडल पर चलते हुए चंद्रमा की साथ योग करे. अब जो नक्षत्र सदैव चंद्रमा की उत्तर दिशा में रहकर योग करते हैं ये बारह नक्षत्र हैं जिनके नाम १ अभिजित २ श्रवण ३ धनिष्टा ४ शतभिषा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ उत्तराभाद्रपद ७ रेवति ८ अश्विनी ९ भरणि १० पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तरा फाल्गुनी और १२ स्वाति. ये बारह नक्षत्रों चंद्र के प्रथम मांडले व सूरत के प्रथम मांडल पर चलते हुए चंद्रमा की साथ उत्तर दिशा में रहकर योग करते हैं, इन अठ्ठावीस नक्षत्रों में से ऐसे नक्षत्रों हैं कि जो दक्षिण दिशा में रहकर अथवा उत्तर दिशा में रहकर अथवा प्रमर्द कारी अर्थात् नक्षत्र भेद करे योग करते हैं, वे सात नक्षत्र हैं जिनके नाम—१ कृत्तिका, २ रोहिणी ३ पुनर्वसु, ४ मघा ५ चित्रा ६

णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएति ॥ १ ॥ अत्थि,

विशाखा और ७ अनुराधा. उक्त सात नक्षत्र अपने २. मांडले पर चलते हुए चंद्र की साथ उत्तर दिशा में रहकर अथवा दक्षिणदिशा में रहकर अथवा नक्षत्र भेद कर योग करते हैं. इन अठावीस नक्षत्रों में से ऐसे नक्षत्रों हैं कि जो दक्षिण दिशा में रहकर अथवा प्रमहर्षकारी नक्षत्र भेद कर योग करते हैं वे दो हैं जिनके नाम-पूर्वापाढा व उत्तरापाढा. सब से बाहिर के मांडले पर योग युक्त होकर जो योग करते हैं उन को चार २ तारे कहे हैं, जिन में से पूर्वापाढा के दो तारे सब से बाहिर के पन्नरवे मांडले पर, और दो तारे सब से आभ्यंतर मांडले पर. उत्तरापाढा नक्षत्र के दो तारे आभ्यंतर मांडले पर और दो तारे बाहिर के मांडले पर. उक्त दोनों नक्षत्र सदैव दक्षिण दिशा में रहे हुवे अथवा नक्षत्र भेद कर योग करते हैं. इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से ऐसे नक्षत्र हैं कि जो चंद्रमाकी साथ सदैव प्रमहर्ष कारी योग करते हैं, वह एक है. जिस का नाम ज्येष्ठा कोई ज्येष्ठा नक्षत्र को दक्षिण उत्तर प्रमहर्षकारी योग मानते हैं ॥ १ ॥. अहो भगवन् ! चंद्र के कितने मांडले कहे ? उत्तर—चंद्रमा के पन्नरह मांडले. कहे हैं, जिन में से पांच मांडले जम्बूद्वीप में हैं और दश मांडले लवण समुद्र में हैं. चंद्रमा के प्रथम मांडले को अंदर का चरिमांत एक सो अस्सी योजन जम्बूद्वीप में अवगाहे और चंद्रमा के पन्नरहवा मांडले का बाहिर का चरिमांत लवण समुद्र में तीन सो तीन योजन एकसठिए अडतालीस भाग अवगाहे. इन पन्नरह मांडले में से ऐसे मांडले हैं

ता कहंते चंदमग्ग आहितेति वदेज्जा ? ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि

दिशा में रहकर योग करते हैं अथवा प्रमर्द्द कारी-अर्थात् चंद्रमा उस नक्षत्र को भेद कर योग करे और कितनेक नक्षत्र ऐसे हैं कि जो चंद्र की साथ सदैव प्रमर्द कारी योग करे अर्थात् चंद्रमा उस नक्षत्र को भेद कर योग करे. अहो भगवन् ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से कौनसे नक्षत्र सदैव दक्षिण दिशामें रहकर योग करे यावत् कौन से नक्षत्र दक्षिण दिशा में अथवा प्रमर्द्द कारी योग करे कौन से नक्षत्र सदैव प्रमर्द्द कारी योग करे ? इन अट्ठावीस नक्षत्रों में से जो नक्षत्रों सदैव दक्षिण दिशा में रहकर योग करते हैं वे छ नक्षत्रों हैं, जिनके नाम—१ मृगशर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ अश्लेषा ५ हस्त और ६ मूल. ये ६ नक्षत्रों चंद्रमा के पन्नरे मंडल व अपने आठवे मंडल पर चलते हुए चंद्रमा की साथ योग करे. अब जो नक्षत्र सदैव चंद्रमा की उत्तर दिशा में रहकर योग करते हैं वे बारह नक्षत्र हैं जिनके नाम १ अभिजित २ श्रवण ३ धनिष्टा ४ शतभिषा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ उत्तराभाद्रपद ७ रेवति ८ अश्विनी ९ भरणि १० पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तरा फाल्गुनी और १२ स्वाति. ये बारह नक्षत्रों चंद्र के प्रथम मांडले व स्वत के प्रथम मांडले पर चलते हुए चंद्रमा की साथ उत्तर दिशा में रहकर योग करते हैं, इन अट्ठावीस नक्षत्रों में से एसे नक्षत्रों हैं कि जो दक्षिण दिशा में रहकर अथवा उत्तर दिशा में रहकर अथवा प्रमर्द्द कारी अर्थात् नक्षत्र भेद करे योग करते हैं, वे सात नक्षत्र हैं जिनके नाम—१ कृत्तिका, २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ मघा ५ चित्रा ६

	नक्षत्र	सूर्य मंडल	नक्षत्र मंडल		नक्षत्र	सूर्य मंडल	नक्षत्र मंडल		नक्षत्र	सूर्य मंडल	नक्षत्र मंडल
								१९	उत्तराफाल्गुनी	१	१
१	अभिजित	१	१	१०	कृत्तिका	६	३	२०	हस्त	१५	८
२	श्रवण	१	१	११	रोहिणी	७	४	२१	चित्रा	७	४
३	धनिष्ठा	१	१	१२	मृगशर	१५	८	२२	स्वाति	१	१
४	शतभिषा	१	१	१३	आर्द्रा	१५	८	२३	विशाखा	८	५
५	पूर्वाभाद्रपद	१	१	१४	पुनर्वसु	३	२	२४	अनुराधा	१४	६
६	उत्तराभाद्रपद	१	१	१५	पुष्य	१५	८	२५	ज्येष्ठा	११	७
७	रेवति	१	१	१६	अश्लेषा	१५	८	२६	मूल	१५	८
८	अश्विनी	१	१	१७	मघा	३	२	२७	पूर्वाषाढा	१५	८
९	भरणि	१	१	१८	पू. फाल्गुनी	१	१	२८	उत्तराषाढा	१५	८

णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएति ॥ २ ॥ अत्थि

नहीं ६-५ दशवे चंद्र मंडल नीचे सूर्य मंडल नहीं है, और पहिले के पांच व पीछे के पांच यों दश मांडले पीछे सूर्य के मांडले रहे हैं. ॥ २ ॥ अब चंद्रमा के कौन से मंडल में और कितने भाग में सूर्य

कि जो नक्षत्रों से अविराहते हैं अर्थात् उन पर सदैव नक्षत्र रहते हैं. ऐसे भी मांडले हैं कि जो सदैव नक्षत्रों से विरह वाले हैं अर्थात् नक्षत्र नहीं आते हैं, ऐसे भी चंद्र मंडल हैं कि जहां पर सूर्य व चंद्र के नक्षत्र सामान्य हैं. और ऐसे भी चंद्र के मंडल हैं कि जो सदैव सूर्य मंडल से विरह वाले हैं. अहो भगवन् ! इन पन्नरह चंद्र मंडल में से कौन से मंडल ऐसे हैं कि जो सदैव नक्षत्रों वाले हैं यावत् कौन से चंद्र मंडल ऐसे हैं कि जो सदैव सूर्य मांडले से विरहित है ? इन पन्नरह चंद्र मंडल में से ऐसे आठ मंडल हैं कि जो सदैव नक्षत्रों वाले हैं जिनके नाम-१ पहिले चंद्र मंडल पर बारह नक्षत्रों हैं, २ तीसरे चंद्र मंडल पर दो नक्षत्र हैं, ३ छठे चंद्र मंडल पर एक नक्षत्र है, ४ सातवे चंद्र मंडल पर दो नक्षत्रों हैं, ५ आठवे चंद्र मंडल पर एक नक्षत्र है, ६ दशवे चंद्र मांडले पर एक नक्षत्र है, ७ अग्यार वे चंद्र मांडले पर एक नक्षत्र है, और ८ पन्नरवे चंद्र मांडले पर आठ नक्षत्रों हैं. इन पन्नरह चंद्रमा के मांडले में से जो नक्षत्र से सदैव विरहवाले हैं वे सात हैं जिनके नाम-१ दुसरा, २ चौथा, ३ पांचवा, ४ नववा, ५ बारहवा, ६ तेरहवा, और ७ चौदहवा. इन पन्नरह चंद्र मांडल में से जो नक्षत्रों सूर्य चंद्र के नक्षत्रों सामान्य होवे वे चार हैं. जिन के नाम-१ प्रथम, २ दूसरा, ३ अग्यारहवा, और पन्नरहवा. इन चार मांडले पर सूर्य शशी नक्षत्र के शिर है अर्थात् छत्र पर छत्र है. जो चंद्र मंडल सदैव सूर्य के मंडल से विरहित हैं वे पांच हैं. जिनके नाम-१ छठे चंद्र मंडल नीचे सूर्य मंडल नहीं है, २ सातवे चंद्र मंडल नीचे सूर्य मंडल नहीं है, ३ आठवे चंद्र मंडल नीचे सूर्य मंडल नहीं है, ४ नववे चंद्र मंडल नीचे सूर्य मंडल

णक्खत्ताणं जेणं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएति तेणं छ णक्खत्ता तंजहा- मगसिर, अद्दा, पुस्सो, असेसा, हत्थो, मूलो ॥ तत्थणं जेते णक्खत्ता जेणं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएति, तेणं बरस तंजहा- अभिए, सवणे, धणिट्ठा सयभिसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरपोट्ठवया, रेवति अस्सिणी, भरणी पुव्वाफग्गुणि, उत्तराफग्गुणी, साति ॥ तत्थणं जेते णक्खत्ता जेणं चंदस्स दाहिणेणंवि उत्तरेणंवि पमद्दंवि जोगं जोएति तेणं सत्त तंजहा- कत्तिया, रोहिणी,. पुणव्वसु. महा,. चित्ता,

इस से १३ योजन ६१ये ४७ भाग रहे, यह ५१०-४८ में से घटाना करना जिससे ४९७ योजन व ६१ या एक भाग रहा. इस को एक २ आंतरे में पृथक् गिनने के लिये १४ का भाग देना इस से ३५ योजन ३० भाग ६१ ये और चार भाग सातीये हुवे. अर्थात् एकेक मंडल पर ३५-३०-४ योजन का आंतरा है. इस में चंद्रमा के विमान के ६१ये ५६ भाग मीलाने से ३६-२५-४ योजन का. एक २. मंडल पर विकंप है. चंद्र का सर्व विकंप जानने की विधि. इस में तीन राशि की स्थापना करना. ३६ को ६१ गुने करके १५ मीलाना. फीर उस राशि को सात गुना कर के चार मीलाना. ३६×६१२+२१९६+२५=२२२१+७=१५५४७+४=१५५५१. अब योजन करने को ६१ को सात से गुणना. ६४×७८४२७० इस तरह ४२७-१५५५१+४. अब इस में दूसरी राशि को तीसरी राशि से गुणा करने के पहिली राशि

णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएति॥ ३॥ अत्थि णक्खत्ता जेणं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोगं जोएति ॥ ४ ॥ अत्थिण णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता चंदस्स सया पमद्दं जोग जोएति ॥ ५ ॥ ता एएसिणं अट्ठाविसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेण सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएति तहेव जाव कयरे णक्खत्ता जेणं सया चदस्स पमद्दं जोगं जोएति ? एतेसिणं अट्ठाविसाए

मंडल उपर होवे उस की विधि बताते हैं. इस में प्रथम विकंप क्षेत्र की प्ररूपणा करते हैं. सूर्य का विकंप क्षेत्र ५१० योजन का हैं. अब सूर्य एक २ अहोरात्रि में दो योजन व एकसठिये ४८ भाग विकंप क्षेत्र प्राप्त करे. इस तरह १८३ वी अहोरात्रि में कितने योजन प्राप्त करे ? इस मे तीन राशि की स्थापना करना. एक अहोरात्रि के विकंप के ६१ ये भाग करने के लिये दो योजन को ६१ ये से गुणाकार करना. जिस से १२२ होवे. इसमें ४८ मिलानेसे १७० होवे. ६१ ।१७०।१८३ यों तीन ध्रुवराशि हुई. यहां दूसरी राशि को तीसरी राशी से गुणाकार करके प्रथम राशि से भाग देना, और जो आवे इतने योजन जानना. १७०×१८३=३१११०÷६१=५१० योजन होवे. यह सूर्य का विकंप क्षेत्र हुवा. अब, चंद्र का विकंप क्षेत्र कहते हैं चंद्रमा को तीच्छी क्षेत्र ५१० योजन ६१ ये ४८ भाग का है. इस में चंद्रमा के १५ मंडल व चउदह अंतर हैं. १५ मंडल को ५६ से गुनना ८४० होवे, इस के योजन के लिये ६१ का भाग देना

चंदमंडला जेणं रवि सासि णक्खत्तो सामणा भवंति, अत्थिणं चंदमंडला, जेणं सया आइच्चेहिं विरहिया, ता एतेसिणं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जेणं सया अंड्डाहिं ... वंदमंडलाणं, तत्थ जेते चंदमंडला सया णक्खते-हिं अविरहिया तेण अट्ठ तंजहा-पढमे चंदमंडले, ततिए चंदमंडले, छट्ठे चंदमंडले,

+४=१५५५१ भाग सातियं हुए. यह दूसरा सूत्र आंक हुवा. चंद्र सूर्य का प्रथम मंडल जम्बुद्वीप में १८० योजन है उत्तर तरफ सूर्य मंडल से० चंद्र मंडल समश्रेणि में ८० योजन ऊंचा है, परंतु दक्षिण तरफ चन्द्रमंडल आठ, भाग ६१ या सूर्य [illegible]िक ता हुवा है, क्यों की सूर्य मंडल ४८ भाग ६१ या का है और चंद्रमंडल ५६ भाग ६१ या का है. इस से ८ भाग ६१ या सूर्य मंडल से चंद्र मंडल बडा होवे. से बाहिर नाकलना हवा है. अब चंद्र मंडल जितने क्षेत्र में एक मार्ग चले उतने क्षेत्र में सूर्य मंडल कितना मार्ग चले [illegible] जाते हैं. १५५५१ के एक गुना करने से १५५५१ होवे उसे १२० का भाग देना वे १३ मार्ग ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातिये होवे. इस से जब चंद्रमा एक मंडल चलता उतने समय में सूर्य तेरह मंडल और एक योजन को ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातिये सूर्य चलता है. जब चंद्रमा दूसरे मंडल पर आता है तब सूर्य चउदहवे मंडल पर उत्तर के चरमांत से दक्षिण में चंद्रमा का दूसरा मंडल को

सूत्र

विसाहा, अणुराहा। तत्थणं जेते णक्खत्ता जेणं चंदस्स दाहिणावि पमद्द य जोगं जोएति. तेणं दुवे तंजहा-पुव्वासाढा, उत्तरासाढा॥ सव्वबाहिरं मंडलं जोयं जोतिसुवा जोएतिवा॥ तत्थणं जेसे णक्खत्ते जेणं सया पमद्द जोग जोएति साणं एगा जेट्ठा॥ १॥ ता कतियाणं चंदमंडला आहितंति वदेज्जा, ता पन्नरस, चंदमंडला आहितंति वदेज्जा. ता एतेसिणं पन्नरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जेणं सया णक्खत्ताणं अविरहिया अत्थि चंदमंडला, जेणं सयाणक्खत्तेण विरहिया. अत्थि-

अर्थ

से भाग देना. इस से २१७७१४ होवे, इस को योजन करके के लिये ४२७ का भाग देना इस से ५०९ योजन व ५३ भाग ६१ ये हुवे. यह चंद्रमा का विकंप क्षेत्र कहा. अब सूर्य के मंडल पर चंद्र का मंडल कितना रहकर मांश होवे सो नीकालने की विधि—इस की ध्रुव राशि नीकालने की रीति एक मंडल से दूसरे मंडल तक सूर्य का विकंप क्षेत्र दो योजन ४८ भाग ६१ या का है, इस के ६१ भाग करने के लिये दो योजन को ६१ से गुण कर ४८ मीलना. २×६१—१२२-४८ १७० इस के चूर्णाये सातिये भाग करने को सात से गुणा करना. १७०×७=११९० प्रथम ध्रुव संख्यात जानना. अब दूसरा ध्रुव आंक कहते हैं चंद्रमा एक मंडलसे दूसरे मंडल जाते विकंप क्षेत्र ३६ योजन २५ भाग ६१ ये ४ भाग सातिये का ६, इस के चूर्णिये सात भाग करने को. ३६×६१=२१९६+२५=२२२१×७=१५५४७

तत्थणं जेते चंद मंडला जेणं सया आदिच्च विरहिया, तेणं पंच तंजहा-छट्ठे चंद मंडले, सत्तमे चंद मंडले, अट्ठमे चंदमंडले, णवमे चंद मंडले दसम चंद मंडले इति दसमस्स पाहुडस्स एकादसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ११ ॥ * *

ता कहंते देवयाणं णामधेज्जा आहितेति वदेज्जा ? एतेसिणं अट्ठाविसाते णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते बम्हदेवयाते, १ण्णत्ते सवणे णक्खत्ते विण्हुदेवयाते पण्णत्ते,

क्यों कि सूर्य के मंडल २ पर दो २ योजन का अंतर है. और चंद्र का दूसरा मंडल १९ भाग ६१ या और ४ भाग सातिया निकलता है, इस से दो योजन में से यह बाद करते १ योजन ४१ भाग ६१ या और तीन भाग सातिया रहे. इसी तरह चंद्र का जितना मार्ग निकालना होवे उस मार्ग को १८५६१ से गुणाकार करके ११९० से भाग देना. जो आवे सो सूर्य भाग जानना. और शेष रहे सो चुरणीय भाग जानना. यों दशवा पाहुडे का इग्यारहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ११ ॥ ०

अहो भगवन् ! नक्षत्र के अधिष्ठायक देवों के नाम कैसे कहे ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से अभिजित नक्षत्रका ब्रह्म देवता अधिष्ठायक है, २श्रवण नक्षत्रका विष्णु देवता, यों जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में कहा वैसे ही कहना अर्थात् ३ धनिष्ठाको वसुदेव४शतभिषा का वरुणदेव ५ पूर्वाभाद्रपद का अजदेव६उत्तरा भाद्रपद का अभिवर्धनदेव७ रेवति का पुष्यदेव८ अश्विनी का अश्वदेव९भरणी का जयदेव १० कृत्तिका का

सूत्र सत्तमे चंदमंडले, अट्ठमे चंदमंडले, दसमे चंदमंडले, एगारसमे चंदमंडले, पण्णरसमे चंदमंडले ॥ तत्थ जेते चंदमंडले जेणं सया णक्खत्तेहिं विरहिया, तेणं सत्त तंजहा बीए चंदमंडले, चउत्थे चंदमंडले पचमें, नवमे, बारसमे, तेरसमे, चउदसमे चंदमंडले ॥ तत्थणं जेते चंदमंडला जेणं रात्रि ससी नणक्खत्ताणं सामणा भवति तेणं चत्तारि तंजहा-पढमे चदमंडले, बीए चंद मंडले, एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंद मंडले

अर्थ उत्तर चरमांत ० योजन ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातियों नीकलता है और चंद्रमा के दूसरे मंडल के उत्तर चरमांत से सूर्य के चउदहवे मंडल का उत्तर चरमांत उतना ही अंदर उत्तर तरफ है और ० योजन ३६ भाग ६१ या ३ भाग सातिया सूर्य के चउदहवे मंडल पर चंद्रमा का दूसरा मंडल मिश्रित हैं और दक्षिण तरफ चंद्रमा का दूसरा मंडल ० योजन १९ भाग ६१ ये ४ भाग सातिये का नीकलता है क्योंकि चंद्रमा सूर्य मंडल ४८ भाग ६१ यें का है उस में से ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातिय बाद करते ३६ भाग ६१ ये ३ भाग साति ये का मिश्रित होवे, और चंद्र मंडल ५६ भाग ६१ या का है इस में से ३६ भाग ६१ ये ३ भाग सातिये बाद करते १९ भाग ६१ ये व चार भाग सातिये का चंद्रमा का दूसरा मंडल दक्षिण तरफ बाहिर निकलता हुवा है और सूर्य का पन्नरहवे मंडल के उत्तर चरमांत में १ योजन ४१ भाग ६१ ये व ३ भाग ७ का अंतर है

तत्थणं जेते चंद मंडला जेणं सया आदिच्च विरहिया, तेणं पंच तंजहा-छट्ठे चंद मंडले, सत्तमे चंद मंडले, अट्ठमे चंदमंडले, णवमे चंद मंडले दसम चंद मंडले इति दसमरस पाहुडस्स एकादसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ११ ॥ * *

ता कहंते देवयाणं णामधेज्जा आहितेति वदेज्जा ? एतेसिणं अट्ठाविसाते णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते बम्हदेवयाते, पण्णत्ते सवणे णक्खत्ते विण्हुदेवयाते पण्णत्ते,

वैसे कि सूर्य के मंडल २ पर दो २ योजन का अंतर है. और चंद्र का दूसरा मंडल १९ भाग ६१ या और ४ भाग सातिया निकलता है, इस से दो योजन में से यह बाद करते १ योजन ४१ भाग ६१ या और तीन भाग सातिया रहे. इसी तरह चंद्र का जितना मार्ग निकालना होवे उस मार्ग को १५५८१ से गुणाकार करके ११९० से भाग देना. जो आवे सो सूर्य भाग जानना. और शेष रहे सो चुरणीय भाग जानना. यों दशवा पाहुडे का इग्यारहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ११ ॥ ०

अहो भगवन् ! नक्षत्र के अधिष्ठायक देवों के नाम कैसे कहे ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से अभिजित नक्षत्रका ब्रह्म देवता अधिष्ठायक है, २श्रवण नक्षत्रका विष्णु देवता, यों जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में कहा वैसे ही कहना अर्थात् ३ धनिष्ठा को वसुदेव४शतभिषा का वरुणदेव ५ पूर्वाभाद्रपद का अजदेव६ उत्तरा भाद्रपद का अभिवर्धनदेव७ रेवति का पुष्यदेव८ अश्विनी का अश्वदेव९भरणी का जमदेव १० कृत्तिका का

सूत्र

सत्तमे चंदमंडले, अट्ठमे चंदमंडले, दसमे चंदमंडले, एगारसमे चंदमंडले, पण्णरसमे चंदमंडले ॥ तत्थ जेते चंदमंडले जेणं सया णक्खत्तेहिं विरहिया, तेणं सत्त तंजहा बीए चंदमंडले, चउत्थे चंडमंडले पचमे, नवमे, बारसमे, तेरसमे, चउदसमे चंदमंडले ॥ तत्थणं जेते चंदमंडला जेणं रात्रि ससी णक्खत्ताणं सामणा भवति तेणं चत्तारि तंजहा-पढमे चदंमडले, बीए चंद मंडले, एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंद मंडले

अर्थ

उत्तर चरमांत ० योजन ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सा तियों नीकलता है और चंद्रमा के दूसरे मंडल के उत्तर चरमांत से सूर्य के चउदहवे मंडल का उत्तर चरमांत उतना ही अंदर उत्तर तरफ है और ० योजन ३६ भाग ६१ या ३ भाग सातिया सूर्य के चउदहवे मंडल पर चंद्रमा का दूसरा मंडल मिश्रित हैं और दक्षिण तरफ चंद्रमा का दूसरा मंडल ० योजन ११ भाग ६१ ये ४ भाग सातिये का नीकलता है क्योंकि चंद्रमा सूर्य मंडल ४८ भाग ६१ यें का है उस में से ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातिय बाद करते ३६ भाग ६१ ये ३ भाग साति ये का मिश्रित होवे, और चंद्र मंडल ५६ भाग ६१ या का है इस में से ३६ भाग ६१ ये ३ भाग सातिये बाद करते ११ भाग ६१ ये व चार भाग सातिये का चंद्रमा का दूसरा मंडल दक्षिण तरफ बाहिर निकलता हुवा है और सूर्य का पन्नरहवे मंडल के उत्तर चरमांत में १ योजन ४१ भाग ६१ ये व ३ भाग ७ का अंतर है

तत्थणं जेते चंद मंडला जेणं सया आदिच्च विरहिया, तेणं पंच तंजहा-छट्ठे चंद मंडले, सत्तमे चंद मंडले, अट्ठमे चंदमंडले, णवमे चंद मंडले दसम चंद मंडले इति दसमस्स पाहुडस्स एकादसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ११ ॥ * *

ता कहंते देवयाणं णामधेज्जा आहितेति वदेज्जा ? एतेसिणं अट्ठाविसाते णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते बम्हदेवयाते, पण्णत्ते सवणे णक्खत्ते विण्हुदेवयाते पण्णत्ते,

क्यों कि सूर्य के मंडल २ पर दो २ योजन का अंतर है. और चंद्र का दूसरा मंडल १९ भाग ६१ या और ४ भाग सातिया निकलता है, इस से दो योजन में से यह बाद करते १ योजन ४१ भाग ६१ या और तीन भाग सातिया रहे. इसी तरह चंद्र का जितना मार्ग निकालना होवे उस मार्ग को १५५५१ से गुणाकार करके ११९० से भाग देना. जो आवे सो सूर्य भाग जानना. और शेष रहे सो चुरणीय भाग जानना. यों दशवा पाहुडे का इग्यारहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ११ ॥ ०

अहो भगवन् ! नक्षत्र के अधिष्टायक देवों के नाम कैसे कहे ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से अभिजित नक्षत्रका ब्रह्म देवता अधिष्टायक है, २श्रवण नक्षत्रका विष्णु देवता, यों जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में कहा वैसे ही कहना अर्थात् ३ धनिष्टाको वसुदेव४शतभिषा का वरुणदेव ५ पूर्वाभाद्रपद का अजदेव६उत्तरा भाद्रपद का अभिवर्धनदेव७ रेवति का पुष्यदेव८ अश्विनी का अश्वदेव९भरणी का जयदेव १० कृत्तिका का

सूत्र

सत्तमे चंदमंडले, अट्ठमे चंदमंडले, दसमे चंदमंडले, एगारसमे चंदमंडले, पण्णरसमे चंदमंडले ॥ तत्थ जेते चंदमंडले जेणं सया णक्खत्तेहिं विरहिया, तेणं सत्त तंजहा बीए चंदमंडले, चउत्थे चंदमंडले पचमें, नवमे, बारसमे, तेरसमे, चउदसमे चंदमंडले ॥ तत्थणं जेते चंदमंडला जेणं रात्रि ससी णक्खत्ताणंसामणा भवति तेणं चत्तारि तंजहा-पढमे चंदमंडले, बीए चंद मंडले, एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंद मंडले

अर्थ

उत्तर चरमांत ० योजन ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सा तियों नीकलता है और चंद्रमा के दूसरे मंडल के उत्तर चरमांत से सूर्य के चउदहवे मंडल का उत्तर चरमांत उतना ही अंदर उत्तर तरफ है, और ० योजन ३६ भाग ६१ या ३ भाग सातिया सूर्य के चउदहवे मंडल पर चंद्रमा का दूसरा मंडल मिश्रित हैं और दक्षिण तरफ चंद्रमा का दूसरा मंडल ० योजन ११ भाग ६१ ये ४ भाग सातिये का नीकलता है क्योंकि चंद्रमा सूर्य मंडल ४८ भाग ६१ यें का है उस में से ११ भाग ६१ ये और ४ भाग सातिय बाद करते ३६ भाग ६१ ये ३ भाग साति ये का मिश्रित होवे, और चंद्र मंडल ५६ भाग ६१ या का है इस में से ३६ भाग ६१ ये ३ भाग सातिये बाद करते १९ भाग ६१ ये व चार भाग सातिये का चंद्रमा का दूसरा मंडल दक्षिण तरफ बाहिर निकलता हुवा है और सूर्य का पन्नरहवे मंडल के उत्तर चरमांत में १ योजन ४१ भाग ६१ ये व २ भाग ७ का अंतर है

तत्थणं जेते चंद मंडला जेणं सया आदिच्च विरहिया. तेणं पंच तंजहा-छट्ठे चंद मंडले, सत्तमे चंद मंडले, अट्ठमे चंदमंडले, णवमे चंद मंडले दसम चंद मंडले इति दसमस्स पाहुडस्स एकादसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ११ ॥ * *

ता कहंते देवयाणं णामधेज्जा आहितेति वदेज्जा ? एतेसिणं अट्ठाविसाते णक्खत्ताणं अभिए णक्खत्ते बम्हदेवयाते, पण्णत्ते सवणे णक्खत्ते विण्हुदेवयाते पण्णत्ते,

क्यों कि सूर्य के मंडल २ पर दो २ योजन का अंतर है. और चंद्र का दूसरा मंडल १९ भाग ६१ या और ४ भाग सातिया निकलता है, इस से दो योजन में से यह बाद करते १ योजन ४१ भाग ६१ या और तीन भाग सातिया रहे. इसी तरह चंद्र का जितना मार्ग निकालना होवे उस मार्ग को १५५५१ से गुणाकार करके ११९० से भाग देना. जो आवे सो सूर्य भाग जानना. और शेष रहे सो चुरणीय भाग जानना. यों दशवा पाहुडे का इग्यारहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ ११ ॥ ०

अहो भगवन् ! नक्षत्र के अधिष्ठायक देवों के नाम कैसे कहे ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से अभिजित नक्षत्रका ब्रह्म देवता अधिष्ठायक है, २श्रवण नक्षत्रका विष्णु देवता, यों जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में कहा वैसे ही कहना अर्थात् ३ धनिष्ठाको वसुदेव४शतभिषा का वरुणदेव ५ पूर्वाभाद्रपद का अजदेव६उत्तरा भाद्रपद का अभिवर्धनदेव७ रेवति का पुष्यदेव८ अश्विनी का अश्वदेव९भरणी का जयदेव १० कृत्तिका का

सूत्र

एवं जहा जंबूद्वीवपण्णत्तीए जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते विसदेवयाए पण्णत्ते. दसमस्स दुवालसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ १२ ॥ * * *

ता कहंते मुहुत्ताणं णामधिज्जा आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्सणं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पण्णत्ता तंजहा-रोद्दे, सिते, मिते, वाऊ, सुद्विए, तहेव अभिचंदे, माहिंदे, बलवं, पम्हं, बहुसच्चे, चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठेवं, भावियप्पा, वेसमणे, वारुणेय,

अर्थ

अग्निदेव, ११ रोहिणी का प्रजापति देव, १२ मृगशर का सोम देव, १२ आर्द्रा का रुद्र देव, १३ पुनर्वसु का आदित्यदेव १५ पुष्य का बृहस्पतिदेव १६ अश्लेषा का सूर्यदेव १७ मघा नक्षत्र का पितृदेव १८ पूर्वाफाल्गुनी का भग १९ उत्तराफाल्गुनी का अर्जमदेव २० हस्त नक्षत्र का सवितादेव २१ चित्रा नक्षत्र का त्वष्टादेव २२ स्वाति नक्षत्र का वायुदेव २३ विशाखा इन्द्राग्नि देव २४ अनुराधा का मित्रदेव २५ ज्येष्ठा का इन्द्रदेव २६ मूल का नैऋत २७ पूर्वाषाढा का जलदेव और २८ उत्तराषाढा का विश्व नामक देव है. उक्त अट्ठावीस नक्षत्र के अट्ठावीस अधिष्ठायक देव कहे. यह दशवा पाहुडे का बारहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ १२ ॥

अब तेरहवा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! मुहूर्त के नाम किस प्रकार कहे हैं ? अहो शिष्य ! एक २ अहोरात्र के तीस मुहूर्त कहे हैं. जिन के नाम—१ रुद्र, २ श्रेयान्, ३ मित्र, ४ वायु, ५ सुस्थित, ६ अभिचंद्र, ७ माहेन्द्र, ८ बलवान, ९ पुष्य अथवा पद्म, १० बहुसत्य, ११ ईशान, १२
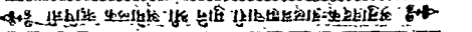
आनंदे, विजएय, विजयसेणं, पथासव्वे, उवसमेय, गंधवा, अग्गिवेसे, सयभिसते, आयवं च, आमेवंच, अणवंच, भोमं, रिसभे, सव्वट्ठे, रक्खसे चेव ॥ २ ॥
इति दसमस्स तेरसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ १३ ॥ * *

ता कहंते दिवसाणं णामधिज्जा आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्सण पक्खस्स पण्णरस दिवसा पण्णत्ता तंजहा-पाडिवा दिवसे, बितिया दिवसे, जाव पण्णरसी दिवसे ॥ ता एतेसिण पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधिज्जा पण्णत्ता तंजहा पुव्वंगे, सिद्धमणोरमेय, ततो मणोहरो चेव, जसभद्देय, जसोधरे, सव्वकाम

नद्दग, १३ भावितात्मा, १४ वैश्रमा, १५ वावेरय, १६ आनंद, १७ विजय, १८ विजयसेन, १९ प्रशासि, २० उवसम, २१ गंधर्व, २२ अग्निवैश्य, २३ शतवृषभ, २४ आय, २५ अय, २६ पारुणवाव, २७ भूय, २८ वृषभ २९ सर्वार्थ और ३० राक्षस. यह तीस मुहूर्त के नाम कहे. यह दशवा पाहुड का तेरहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ १३ ॥ ० ०

अब चउदहवा अंतर पाहुडा कहते हैं-अहो भगवन्! दिन के नाम कैसे कहे ? अहो शिष्य एक २ पक्ष के पन्नरह दिन कहे हैं जिन के नाम. १ प्रतिदा २ द्वितीया ३ तृतीया ४ चतुर्थी ५ पंचमी ६ षष्ठी ७ सप्तमी ८ अष्टमी ९ नवमी १० दशमी ११ एकादशी १२ द्वादशी १३ त्रयोदशी १४ चतुर्दशी और १५

सूत्र

समद्धेतिय ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभिसितेय, सोमणस धणंजएय बोधव्वा; अत्थिसिद्धे. अभिजाते, अच्चासणेय, सतंजए, अग्गिवेसे, उवसोमेय, दिवसेणं णामधिज्जाति ॥१॥ ता कहंते रातिओ आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्सणं पक्खस्स पण्णरस्स राई पण्णत्ता तंजहा पडिवएराई, जाव पण्णरसी राई ॥ ता एतेसिणं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस नामधिज्जा पण्णत्ता तंजहा—उत्तमाय, सुनक्खत्ताय, एलावच्ची, जसोधरा, सोमणसा चेव तहा; सिरिसंभूताय बोधव्वा ॥ १ ॥ विजयाय विजयंति, जयंति अपराजियाय, इत्थि समाहारा चेव, तेया तहा अतितेया, देवाणंदा, णिराति,

अर्थ

पंनदशी (पूर्णिमा) इन पन्नरह दिन के पन्नरह नाम कहे हैं. तद्यथा-१ पूर्वांग, २ सिद्ध मनोरम, ३ मनोहर ४ यशोभद्र, ५ यशोधर, ६ सर्वकामसमध ७ इंद्रमूर्धाभिषेक ८ सोमनस ९ धनंजय १० अर्थसिद्ध ११ अभिजित १२ अत्यसन १३ सतंजय १४ अग्निवेश और १५ उपशम नाम. ये पन्नरह दिन के नाम कहे. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! रात्रि के क्या नाम कहे ? अहो शिष्य ! एक २ पक्ष की पन्नरह रात्रि कही है तद्यथा पडवा यावत् पनरवी. इन पन्नरह रात्रि के पन्नरह नाम कहे हैं तद्यथा १ उत्तमा २ सुनक्षत्रा ३ एलावच्ची ४ यशोधरा ५ सोमनसी ६ श्रीभूता ७ विजया ८ विजयंती ९ जयति १० अपराजिता ११ इत्थी १२ समाहारा १३ तेजा १४ अति तेजा और १५ देवानंदा ये पन्नरह अनुक्रम से रात्रि के नाम कहे.
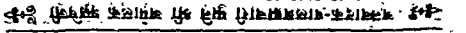
रयणिं णामधिज्जाति ॥२॥ इति दसमस्स चउद्दसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥१०॥१४॥*

ता कहंते तिही आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलुइमा दुविहा तिही पण्णत्ता तंजहा दिवसतिहिय, राईतीहया ॥१॥ ता कहंते दिवस तिही आहितेति वदेज्जा? ता एगमेगस्सणं पक्खस्स पण्णरस दिवस तिही पण्णत्ता तंजहा णंदे, भद्दे, जए, तुच्छे, पुण्णे,

यह दशवा पाहुडा का चउदहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण ॥ १० ॥ १४ ॥

अब पन्नरहवा अंतर पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! आप के मत में तीथि कैसे कही ? भगवान उत्तर देते हैं कि सूर्य अहो रात्रि बनाता है और चंद्र तीथी बनाता है. यह चंद्र मंडल के तेज की हानि वृद्धि कही. यह चंद्रमा कैसा है ? उक्तंच तिरियकुमुय सरिसापभस्स चंद्रस्स राति ॥ सुभगस्स लोए तिहिति नियम भणियंवुड्ढि हाणिए ॥ १ ॥ अर्थात् कुमुद समान जिस की प्रभा है ऐसे सोभाग्यवान चंद्र की लोक में हानि वृद्धि जानना. राहुका विमान के आवरण से चंद्र के विमान का तेज की हानि वृद्धि होवे यह राहु दो प्रकार का कहा है १ ध्रूवराहु और २ पर्वराहु. इस में पर्वराहु का कथन क्षेत्र समास में कहा है सो वहां से जानना. और ध्रूवराहुका विमान कृष्ण है. यह चंद्रमा के विमान नीचे चार अंगुल के अंतर से चलता है. और तेज की हानि वृद्धि करता हैं. शुद्ध १५ की तीथी में संपूर्ण राहु के विमान से आवरण रहित होवे और वदी १ से वदी ३० तक चंद्रमा के विमान की कलापर राहुका विमान आवरण

पक्खस पंचमी, पुणरवि णंदे, भद्दे, जए, तुच्छे, पुण्णे, पुणरवि, णंदे, भद्दे, जए तुच्छे, पुण्णे, पक्खस्स पण्णरसी ॥ एवं तेतीगुणा तिहितो, सव्वेसिं दिवसाणं ॥ २ ॥ ता कहंते राति तिही आहितेति वदेज्जा ? एग मेगस्सणं पक्खस्स पण्णरस राति तिहि पण्णत्ता तंजहा-उग्गावती, भोगावती, जसवती, सव्वट्ठसिद्धा, सुहाणामा ॥

अर्थ

करे. चंद्र के विमान का ६२ भाग करना: इस को १५ तीथी से भाग देते ४ भाग ६२ ये और शेष २ भाग रहे. इस तरह एक तीथी में चार भाग ६२ये से आवरण करता हुवा वदी ३० को ६० भाग ६२ये का आवरण करे और २ भाग ६२ का आवरण विना रहे. शुदी १ को चार भाग ६२ ये आवरण कमी होता जावे अर्थात् चंद्रमा के विमान की तेज कांति लोक में बढती जावे. परंतु लोक व्यवहार चंद्र विमान के १६ भाग करना इस में एक तीथी में एक २ भाग का आवरण करके तेज की हानि करे, और एक २ भाग विना आवरे तेज की वृद्धि करे. यह रीति लोक व्यवहार में प्रसिद्ध है. और एक अहोरात्रि के ६२ भाग करे जिन में से ६१ भाग की एक तीथी है. एक अहोरात्रि के ३० मुहूर्त है और एक तीथी २९ मुहूर्त ३२ भाग ६२ ये की है. जैसे तीस मुहूर्त की तीथी के ६१ भाग से गुना करके अहोरात्रि से भाग देना ३०×६१=१८३० इन को ६२ से भाग देने से २९ मुहूर्त व ३२ भाग आते हैं. ऐसी तीथी दो प्रकार की कही है. १ दिन की तीथी और १ रात्रि तिथी. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! दिन तीथी कैसे कही?

पुणरत्ति-उग्गावती, भोगवती, जसवती सव्वट्ठसिद्धा, सुहा णामा॥ पुणरवि,-उग्गावती भोगवती, जसवती, सव्वट्ठसिद्धा, सुहा णामा॥ पुणरवि-उग्गावती, भोगवती, जसवती, सव्वट्ठसिद्धा, सुहा णामा ॥ एते तिगुणा तिहिंतो सव्वसिं राईणं ॥ दसमस्स पण्णरसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ १५ ॥ * *

ता कहंते गोत्ता आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसिणं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं अभिते

अहो शिष्य ! एक २ दिन की पन्नरह तीथि कही. जिन के नाम—१ नन्दा २ भद्रा ३ जया ४ तूर्या (लौकिक में रिक्तातीथी कहाती है.) ५ पूर्णा. यह पक्ष की पहिली पांच तीथी, पुनरपि ६ नंदा ७ भद्रा ८ जया ९ तूर्या और १० पूर्णा. फीर भी पांच ११ नंदा १२ भद्रा १३ जया १४ तुर्या और १५ पूर्णा. यह पन्नरह तीथी हुइ. इस तरह पांच नाम की तिथी को तीन गुना करने से पन्नरह तीथी होती है. ॥ १ ॥ अब रात्रि तीथी किसको कहते हैं? एक २ पक्ष की पन्नरह रात्रि तीथी कही है. जिन के नाम—१ उगावती २ भोगावती ३ यशवती ४ सर्वार्थ सिद्धा और ५ शुभा. फीर भी ६ उगावती ७ भोगावती ८ यशवती ९ सर्वार्थसिद्धा और १० शुभा. फीर भी ११ उगावती १२ भोगावती १३ यशवती १४ सर्वार्थसिद्धा और १५ शुभा. यों सर्व रात्रि की १५ तीथी कही. यह दशवा का पन्नरवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥१०॥१५॥ अब दशवे का सोलहवा पाहुडा कहते हैं—अहो भगवन् नक्षत्र के गोत्र किस प्रकार कहे हैं ? भगवान

सूत्र

नक्खत्ते मोग्गलास गोत्ते पण्णत्ते ॥ १ ॥ सवणं नक्खत्ते संखायण गोत्ते पण्णत्ते ॥ २ ॥ धनिट्ठा अग्गिवेसायणगोत्ते पण्णत्ते ॥ ३ ॥ सयभिसया णक्खत्ते कंडिल्लायणगोत्ते पण्णत्ते ॥ ४ ॥ पुव्वभद्दवयाणं जाउ कण्णियसगोत्ते ॥ ५ ॥ उत्तर भद्दवयाणं धणंजयस गोत्ते पण्णत्ते ॥ ६ ॥ रेवति पुसायणस्स गोत्ते ॥ ७ ॥ अस्सिणी अस्सायणस गोत्ते ॥ ८॥ भरणि भगवेस गोत्ते॥ ९ ॥ कत्तिया अग्गिवेसाय-णगोत्ते ॥ १० ॥ रोहिणि गोयम गोत्ते ॥ ११ ॥ मगसिरं भारद्दगोत्ते ॥ १२ ॥ अद्दा लोहियच्चायणस्सगोत्ते॥ १३॥ पुणव्वसु वासिट्ठगोत्ते ॥१४॥ पुस्से उमजायणस्स

अर्थ

उत्तर देते है कि नक्षत्र का स्वरूप से गोत्र का असंभव है; और गोत्र का स्वरूप लोक में प्रसिद्ध है जैसे गर्गा का अपत्य गर्गा गोत्रीय, इस तरह नक्षत्र का गोत्र नहीं होता है. यहां पर जिस नक्षत्र में ग्रह योग शुभ अथवा अशुभ होवे उसे गोत्र कहते हैं. इन अठाइस नक्षत्रों में अभिजित नक्षत्र का मोग्गलायन गोत्र २ श्रवण नक्षत्र का संखायन गोत्र ३ धनिष्टा नक्षत्र का अग्निवेसायन गोत्र ४ शतभिषा नक्षत्र का कंडीलायन गोत्र ५ पूर्वाभाद्रपद का जात कनीयस गोत्र ६ उत्तराभाद्रपद का धनंजयस गोत्र ७ रेवती का पुष्पायन गोत्र ८ अश्विनी नक्षत्र अस्सायन गोत्र ९ भरणी नक्षत्र का भगवेस गोत्र १० कृत्तिका नक्षत्र का अग्निवैशायन गोत्र ११ रोहिणी नक्षत्र का गोतम गोत्र १२

गोत्ते ॥ १५ ॥ असिलेसा मंडव्वायणस्स गोत्ते ॥ १६ ॥ महा पिंगलायणसगोत्ते ॥ १७ ॥ पुव्वाफग्गुणी गोवलायणसगोत्ते ॥ १८ ॥ उत्तराफग्गुणी कासवगोत्ते ॥ १९ ॥ हत्थो कोसियगोत्ते ॥ २० ॥ चित्तो दभियणगेत्तो ॥ २१ ॥ साति चामरत्थत्तेणस्स गोत्ते ॥ २२ ॥ विसाहा अंगायणस्स गोत्ते ॥ २३ ॥ अणुराहा णक्खत्ते गोलव्वायणस्स गोत्तो॥२४॥ जेट्ठा तिगिच्छायणस्सगोत्ते ॥२५॥ मूले पव्वायणस्सगोत्ते॥२६॥पुव्वासाढाणक्खत्ते विसियायणस्स गोत्ते पण्णत्ते॥२७॥उत्तरासाढा वग्घावच्चस्सगोत्तं पण्णत्ते।८२।इति दसम पाहुडस्स सोलसम पाहुडं सम्मत्तं।१०।१६॥

मृगशर नक्षत्र का भारद गोत्र १३ आर्द्रा नक्षत्रका लोहियाणस गोत्र १४ पुनर्वसु नक्षत्र का वासिष्ठ गोत्र १५ पूष्य नक्षत्र का उपचायणस गोत्र १६ अश्लेषा नक्षत्र का मंडवायस गोत्र १७ मघा का पिंगलायण गोत्र, १८ पूर्वा फाल्गुनीका गोवलायणस गोत्र, १९ उत्तरा फाल्गुनी का काश्यप गोत्र, २० हस्तका कोशिय गोत्र, २१ चित्रका दभियायण गोत्र, २२ स्वाति नक्षत्रका चामरछत्र गोत्र, २३ विशाखाका अंगायणस गोत्र, २४ अनुराधा का गोवालयणस गोत्र २५ ज्येष्टा का तिगच्छायणस गोत्र २६ मूल का कात्यायणस गोत्र, २७ पूर्वापाढाका विपायणस गोत्र और २८ उत्तरापाढाका वाघ्रवचायणस गोत्र. यह दशवा पाहुडेका सोलहवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ १६ ॥

सूत्र

ता कहंते भोयण आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसिणं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं कत्तियाहिं दहिणा भोच्चा कज्जं साहेति ॥ १ ॥ रोहिणीहिं वसभमंसंभोच्चा कज्जं साहेति ॥२॥ मिगसिरेणं मिगमंसं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ ३ ॥ अद्दाहिं णवणीएहिं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ ४ ॥ पुणव्वसुणा घएणं भोच्चा ॥ ५ ॥ पुसेखीरेणं भोच्चा ॥ ६ ॥ असिलेसाहिं दीवग मंसेण भोच्चा ॥ ७ ॥ महाहिं कसारि भोच्चा ॥ ८ ॥ पुव्वा-

अर्थ

अब सतरहवा अंतर पाहुडा कहते हैं—अहो भगवन्! आपके मत में नक्षत्रो में किसप्रकार भोजन विचार कहा है ? अर्थात् क्या भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे ? अहो शिष्य ! इन अट्ठावीस नक्षत्रोंमें से १ कृत्तिका नक्षत्र के दिन दधि मिश्रित भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे, २ रोहिणी नक्षत्र होवे तब घृत का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे, ३ मृगशर नक्षत्र जिस दिन होवे, उस दिन कस्तूरी का भोजन करे तो कार्य सिद्धि होवे ४ आर्द्रा नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन नवनीत [मक्खण] का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे, ५ पुनर्वसु नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन घृत का भोजन करके जावे तो कार्य सिद्धि होवे, ६ पुष्य नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन खीर का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे ७ अश्लेषा नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन कवच सिंग अथवा कमल का भोजन कर जावे

फग्गुणिहिं मेढगमंमेणं भोच्चा ॥ ९ ॥ उत्तराफग्गुणीहिं णक्खिमंसेणं भोच्चा ॥ १० ॥ हत्थेण वत्थाणिएगं भोच्चा ॥ ११ ॥ चित्ताहिं मुगसूएणं भोच्चा ॥१२॥ साातिणा फलाहिं भोच्चा॥१३॥ विसाहाहिं ओ तिसिया भोच्चा(अहत्वा एगट्ठीया)॥१४॥ अणुराहाहिं मासाकुरेणं भोच्चा ॥ १५ ॥ जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा ॥ १६ ॥ मूलेण मूलग साएणं भोच्चा ॥ १७ ॥ पुव्वासाढाहिं आमलग सारिंणं भोच्चा

तो कार्य सिद्धि होवे ८ मघा नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन कंकर अथवा केसार का भोजन करे तो कार्य सिद्धि होवे ९ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन एलायची अथवा आलु का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे १० उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र जिस दिन होवे उस दिन लसूणकंद अथवा आलू का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे ११ हस्त-नक्षत्र में सींगाडे का भोजनकर जावे तो कार्य सिद्धि होवे १२ चित्रा नक्षत्रमें मुगकी दालका भोजनकर जावे तो कार्य सिद्धि होवे, १३ स्वाति में फलका भोजनकर जावे तो कार्य सिद्धि होवे १४ विशाखा नक्षत्रमें आंउली अथवा शाक का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे १५ अनुराधा नक्षत्र में मिश्र कुरेधान्य का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे १६ ज्येष्ठा नक्षत्र में कोला-सक्कर कदु का अथवा मिश्र कुरंधान्य का भोजन करने से कार्य

सूत्र

कज्जं साहेति ॥ १८ ॥ उत्तरा साढाहिं बिल्लेहिं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ १९ ॥ अभियेणं पुप्फेति भोच्चा कज्जं साहिति ॥ २० ॥ सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ २१ ॥ धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ २२ ॥ सयभिसया तुंबराती भोच्चा कज्जं साहेति ॥ २३ ॥ पुव्वाभद्दवयाहिं कारियएहिं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ २४ ॥ उत्तरा भद्दवयाहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साहेति ॥ २५ ॥

अर्थ

सिद्धि होवे १७ मूल नक्षत्र में मूली अथवा मोगरे के शाक का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे १८ पूर्वाषाढा नक्षत्र में आवला का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे १९ उत्तराषाढा नक्षत्र में बिली फल अथवा पक्के नींबू का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे. २० अभिजित नक्षत्र में पुष्प का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे २१ श्रवण नक्षत्र में खीर का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे २२ धनिष्ठा में करेला अथवा सक्करकोला का भोजन कर जावे तो कार्य सिद्धि होवे २३ शतभिषा में तूम्बडे का भोजन करे तो कार्य सिद्धि होवे २४ पूर्वाभाद्रपद में करेले का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे २५ उत्तराभाद्रपद में कर्पूर का भोजन करने से कार्यसिद्धि होवे २६ रेवति में जलचर फूलन अथवा पानी का भोजन करके जावे तो कार्यसिद्धि होवे २७ अश्विनी नक्षत्र में सीताफल का भोजन करने से कार्यसिद्धि होवे, २८ भरणी

रेवतिहि जलयर मंसं भोचा कज्ज साहेति ॥ २६ ॥ अस्सिणिहिं तित्तरमंसं भोचा कज्जं साहेति अहवा वट्टक मंसंभोचा ॥ २७ ॥ भरणीहिं तिलतंदुलयं भोचा कज्जसाहेति ॥ इति दसमस्स सत्तरमं पाहुडं सम्मत्त ॥ १० ॥ १७ ॥ ':, ':,

ता कहंते चारा आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे दुविहा चारा पण्णत्ता तंजहा आइचा चाराय, चंद चाराय ॥ ता कहंते चंद चारा आहितेति वदेज्जा ? ता पंच संवछरिएणं जुगे अभिए णक्खत्ते सतसट्ठीचार चंदेण सार्द्धं जोगं जोतेति, सव्वेणे

नक्षत्र में तीली का तेल अथवा चांवल का भोजन करने से कार्य सिद्धि होवे. इस तरह अठाइस नक्षत्रों के भोजन का विषय जैसा अन्य स्थान देखने में आया वैसा ही लीखा है. टीकाकार श्री मलयागिरी आचार्यने इस को टीका नहीं की है. तत्वकेवलिगम्य. परंतु जो मांसादिक का आहार करेगा वह अनंत संसार वढाने वाला होगा. इस मे इन अठाइसह नक्षत्रों कोई जानने योग्य है, कोई आदरने योग्य है और कोई त्याग करने योग्य भी हैं. विशेष केवलि गम्य. यह दशवा पाहुडे का सतरवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा१०॥१७॥

अब दशवे पाहुडे के अठारवे पाहुडे में चंद्र सूर्य के चार गतिका कथन कहते हैं: अहो भगवन् ! आप के मत में चंद्र सूर्य की साथ नक्षत्र का चार किस प्रकार कहा है ? अहो शिष्य ! दो प्रकार का चार कहा है. १ आदित्य की साथ नक्षत्र चार चले और चंद्र की साथ नक्षत्र चार चले. इस में अहो

णक्खत्ते सतसठीचारा चंदेणं सार्द्धं जोगं जोतेति ॥ एवं जाव उत्तरा साढा णक्खत्ते सतसट्ठिचारे चंदणसार्द्धं जोगं जोतेति ॥ ता कहंते आइच्च चारा आहितेति वदेज्जा? ता पंच संवच्छराणं जुगे अभिए णक्खत्ते पंच चारे सूरेणं सार्द्धं जोग जोएति ॥ एवं जाव उत्तरा साढा नक्खत्ते पंचचारे सूरणं सार्द्धं जोगं जोएति ॥ इति दसमस्स अट्ठारस पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ ॥ १८ ॥ * * * *

ता कहंते मासा आहितेहि वदेज्जा? ताएगमेगस्सणं संवच्छरस्स बारसमासा पण्णत्ता, तेसिणं दुविहा णाम धिज्जा पण्णत्ता तंजहा लोइयाय, लोउतरियाय ॥

भगवन्! चंद्र साथ नक्षत्र कैसे चार चलते हैं? अहो शिष्य! अभिजित नक्षत्र चंद्रमा की साथ एक युग में ६७ वार से चाल चले, श्रवण नक्षत्र ६७ वार चाल चले यावत् उत्तराषाढा नक्षत्र एक युग में ६७ वार चंद्र की साथ चाल चले. अब आदित्य चार किसे कहते हैं? अहो शिष्य! पांच संवत्सर का एक युग होवे. ऐसे एक युग में अभिजित नक्षत्र पांच वार सूर्य की साथ योग करे, ऐसे ही यावत् उत्तराषाढा नक्षत्र एक युग में पांच वार सूर्य की साथ योग करे. यह दशवा का अठारवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा॥१०॥१८॥ अब गुनीसवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन्! किस प्रकार मास (महिने) कहे हैं? अहो शिष्य! एक संवत्सर के बारह मास कहे हैं. इन बारह मास के दो प्रकार के नाम कहे हैं. तद्यथा-लौकिक नाम व लोकोत्तर

तत्थ लोइयाण मासा सावणे भद्दवे अस्सोए जाव आसाढे ॥ लोगुत्तरियाणं मासा अभिनंदे, सुपइट्ठेय, विजये, पीतिवद्धणे, सेज्जंसेय, सिवेय, सिसिरेय, हेमवंत, वसंतमासे,कुंसुमसंभवे निदाहे,वणविरोहिय॥इति दसमस्स एकोमविसति पाहुडं॥१९॥

ता! कहंते णं संवच्छर आहितेति वदेजा? ता पंचसंवच्छरा आहितेति वदेज्जा तंजहा णक्खत्त

नाम. लौकिक बारह मास के नाम श्रावण १ भाद्रपद ३ आश्विन ४ कार्तिक ५ मगशिर ६ पोष ७ महा ८ फाल्गुण ९ चैत्र १० वैशाख ११ जेठ और १२ अशाढ. यह बारह मास लोक प्रसिद्ध हैं. लोकोत्तर बारह मास के नाम-१ अभिनंदन, २ सुप्रतिष्ठित, ३ विजय ४ प्रीतिवर्धन, ५ सेजा श्रय, ६ सीव ७ शिसिरेय ८ हिमवंत ९ वसंत १० कुसुमसंभव ११ निदाघ और १२ वनविरोध. यह दशवा पाहुडा का उन्नीसवा पाहुडा संपूर्ण ॥ १० ॥ १९ ॥ ० ० ०

अब दशवे पाहुडे के इक्कीसवे पाहुडे में पांच संवत्सर की वक्तव्यता कहते हैं. अहो भगवन्! आपके मतमें संवत्सर किस प्रकार कहा ?अहो शिष्य! पांच संवत्सर कहे हैं.१ नक्षत्र संवत्सर सो जितने काल में अठाइस नक्षत्रों चंद्रमा की साथ २७ दिन और २१ भाग ६७ ये परिपूर्ण होवे उसे बारह गुणे करने से ३२७ दिन ५१ भाग ६७ का एक नक्षत्र संवत्सर होवे. २ युग संवत्सर १८३० दिन में पांच संवत्सर पूण

सूत्र

संवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खणसंवच्छरे, सनिच्छरसंवच्छरे ॥ १ ॥ णक्खत्तसंवच्छरे कतिविहे पण्णत्ते ? दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा-सावणे, भद्दवए जाव आसाढे॥जाव वहसति तमहग्गहे, दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमडलं समाणेति ॥ २ ॥ ता जुगसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-चंदे,चंदे, अभिवड्ढिए, चंदे, अभिवड्ढिए ॥ ता पढमस्सणं चंद संवच्छरस्स चउव्विसं पव्वा पण्णत्ता ॥ दुच्चस्सण चंद संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता ।तच्चस्सणं अभिवड्ढिय संवच्छरस्स

अर्थ

होवे सो. ३ युग का प्रमाण सो प्रमाण संवत्सर ४ लक्षण सहित सो लक्षण संवत्सर और ५ शनिश्चर से बना सो शनिश्चर संवत्सर॥ १ ॥ इस में से नक्षत्र संवत्सर के कितने भेद कहे?अहो शिष्य! नक्षत्र संवत्सर के वारह भेद कहे हैं. तद्यथा-१ श्रावण भाद्रपद यावत् अषाढ. एक नक्षत्र पर्याय को वारह गुणा करने से नक्षत्र संवत्सर पूर्ण होवे यावत् बृहस्पति नामक महागृह वारह संवत्सर में सब नक्षत्र मंडल का समास करे. यह नक्षत्र संवत्सर ३२७ दिन ५१ भाग ६७ या का है उसे वारह गुना करने से ३९३३ दिन ९ भाग ६७ ये इतने काल में बृहस्पति नामक महागृह योग अंगीकार कर अठाइस नक्षत्रों संपूर्ण करे॥२॥ युग संवत्सर के पाच भेद कहे हैं १ प्रथम चंद्र संवत्सर २ दूसरा चंद्र संवत्सर ३ तीसरा अभिवर्धन संवत्सर४ चौथा चंद्र संवत्सर और५पांचवा अभिवर्धन संवत्सर इन में से प्रथम चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्व

छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ॥ चउत्थस्सणं चंद संवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ॥ पंचमस्सणं अभिवड्ढिय सवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥एवामेव सपुव्वावरेणं पंच संवच्छरिए जुगे एग चउविस पव्वयसते भवति तिमक्खायं ॥ ३ ॥ ता पमाण

सो बारह अमावस्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र संवत्सर बारह मास का है. चंद्रमास २९ अहो रात्रि ३२ भाग ६२ या का है. इस का बारह गुना करने से ३५४ दिन १२ भाग ६२ ये का एक चंद्र संवत्सर होवे. दूसरे चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्व कहे हैं. बारह अमावास्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है, इस को बारह गुना करने से ३५४ दिन १२ भाग ६२ ये का एक संवत्सर होवे. तीसरा अभिवर्धन संवत्सर है इस में २६ पर्व हैं तेरह अमावास्या तेरह पूर्णिमा. अभिवर्धन संवत्सर में चंद्र मास तेरह हैं, चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है. इस को तेरह गुना करने से ३८३ दिन ४४ भाग ६२ ये का एक अभिवर्धन संवत्सर होवे. यहां एक अधिक मास क्यों बढा ? उत्तर—तीस सूर्य मास में एकतीस चंद्र मास होवे, सूर्य मास ३०॥ दिन का है और चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है. इस से ३०॥ में से २९$\frac{३२}{६२}$ बाद करने से ६१ भाग ६२ ये शेष रहे. उस को तीस से गुना करने से १८३० होवे. फीर इस को ६२ का भाग देने से २९$\frac{१२}{६२}$ दिन होवे. इस से एक अधिक मास हुवा. सूर्य के २९ मास और तीसवे मास के एक दिन के ६१ भाग ६२ ये गये पीछे चंद्र मास तीस संपूर्ण होवे और वहां से अधिक मास का प्रारंभ होवे. सूर्य मास तीस संपूर्ण होवे तब अधिक मास भी संपूर्ण होवे. चौथा चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्वों कहे हैं. बारह अमावास्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र संवत्सर बारह मास का है. और चंद्रमास २९ $\frac{३२}{६२}$ दिन का है

सूत्र

संवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खणसंवच्छरे, सनिच्छरसंवच्छरे ॥ १ ॥ णक्खत्तसंवच्छरे कतिविहे पण्णत्ते ? दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा-सावणे, भद्दवए जाव आसाढे॥जाव वहसति तमहग्गहे, दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमडलं समाणेति ॥ २ ॥ ता जुगसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-चंदे,चंदे, अभिवड्डिए, चंदे, अभिवड्डिए ॥ ता पढमस्सणं चंद संवच्छरस्स चउविसं पव्वा पण्णत्ता ॥ दुच्चस्सण चंद संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता ।तच्चस्सणं अभिवड्डिय संवच्छरस्स

अर्थ

होवे सो. ३ युग का प्रमाण सो प्रमाण संवत्सर ४ लक्षण सहित सो लक्षण संवत्सर और ५ शनिश्चर से बना सो शनिश्चर संवत्सर॥ १ ॥ इस में से नक्षत्र संवत्सर के कितने भेद कहे?अहो शिष्य! नक्षत्र संवत्सर के बारह भेद कहे हैं. तद्यथा-१ श्रावण भाद्रपद यावत् अषाढ. एक नक्षत्र पर्याय को बारह गुणा करने से नक्षत्र संवत्सर पूर्ण होवे यावत् बृहस्पति नामक महागृह बारह संवत्सर में सब नक्षत्र मंडल का समास कर. यह नक्षत्र संवत्सर ३२७ दिन ५१ भाग ६७ या का है उसे बारह गुना करने से ३९३३ दिन ९ भाग ६७ ये इतने काल में बृहस्पति नामक महागृह योग अंगीकार कर अठाइस नक्षत्रों संपूर्ण करे॥२॥ युग संवत्सर के पाच भेद कहे हैं १ प्रथम चंद्र संवत्सर २ दूसरा चंद्र संवत्सर ३ तीसरा अभिवर्धन संवत्सर४ चौथा चंद्र संवत्सर और५पांचवा अभिवर्धन संवत्सर इन में से प्रथम चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्व

छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ॥ चउत्थस्सणं चंद संवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ॥ पंचमस्सणं अभिवाड्ढिय संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥एवामेव सपुव्वावरेणं पंच संवच्छरिए जुगे एग चउविस पव्वयसते भवति तिमक्खायं ॥ ३ ॥ ता पमाण

सो बारह अमावस्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र संवत्सर बारह मास का है. चंद्रमास २९ अहो रात्रि ३२ भाग ६२ या का है. इस का बारह गुना करने से ३५४ दिन १२ भाग ६२ ये का एक चंद्र संवत्सर होवे. दूसरे चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्व कहे हैं. बारह अमावास्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है, इस को बारह गुना करने से ३५४ दिन १२ भाग ६२ ये का एक संवत्सर होवे. तीसरा अभिवर्धन संवत्सर है इस में २६ पर्व हैं तेरह अमावास्या तेरह पूर्णिमा. अभिवर्धन संवत्सर में चंद्र मास तेरह हैं, चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है. इस को तेरह गुना करने से ३८३ दिन ४४ भाग ६२ ये का एक अभिवर्धन संवत्सर होवे. यहां एक अधिक मास क्यों बढा ? उत्तर—तीस सूर्य मास में एकतीस चंद्र मास होवे, सूर्य मास ३०॥ दिन का है और चंद्र मास २९ दिन ३२ भाग ६२ ये का है. इस से ३०॥ में से २९$\frac{32}{62}$ बाद करने से ६१ भाग ६२ ये शेष रहे. उस को तीस से गुना करने से १८३० होवे. फीर इस को ६२ का भाग देने से २९$\frac{12}{62}$ दिन होवे. इस से एक अधिक मास हुवा. सूर्य के २९ मास और तीसवे मास के एक दिन के ६१ भाग ६२ ये गये पीछे चंद्र मास तीस संपूर्ण होवे और वहां से अधिक मास का प्रारंभ होवे. सूर्य मास तीस संपूर्ण होवे तब अधिक मास भी संपूर्ण होवे. चौथा चंद्र संवत्सर के चौवीस पर्वों कहे हैं. बारह अमावास्या और बारह पूर्णिमा. यह चंद्र संवत्सर बारह मास का है. और चंद्रमास २९$\frac{32}{62}$ दिन का है

सूत्र

संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-णक्खत्ते, चंदे, उऊ, आइच्चे, अभिवड्ढिए ॥ ४ ॥ ता लक्खण सवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-णक्खत्ते चंदे, उऊ, आइच्चे, अभिवड्ढिए ता लक्खणं सवच्छरे पंचविहे लक्खणे पण्णत्ते तंजहा-समगं णक्खत्ता जोगं जोएति समगं उऊ, परिणमंति, णच्चुन्हं नातिसीय बहुउदओ होति णक्खत्ते ॥ ५ ॥ सासि

अर्थ

युग संवत्सर का यंत्र.

	संवत्सर के नाम	मास	पर्व	दिन	भाग ६२
१	चंद्र	१२	२४	३५४	१२
२	चंद्र	१२	२४	३५४	१२
३	अभिवर्धन	१३	२६	३८३	४४
४	चंद्र	१२	२४	३५४	१२
५	अभिवर्धन	१३	२६	३८३	४४
	जोड	६२	१२४	१८३०	

इस को बारह गुने करने से ३५४ $\frac{12}{62}$ ये होवे. पांचवा अभिवर्धन संवत्सर के छब्बीस पर्व कहे हैं. इस में चंद्रमास तेरह हैं अधिक मास बढा. चंद्रमास के दिन २९ $\frac{32}{62}$ हैं. इस को तेरह से गुणाकार करने से ३८३ $\frac{44}{62}$ दिन का अभिवर्धन संवत्सर होवे. यहां अधिक मास क्यों बढा? उत्तर—प्रथम अधिक मास के अंत से तीस सूर्यमास में एकतीस चंद्रमास होवे. यों युग के पांच संवत्सर कहे हैं. और एक युग के १२४ पर्व होते. ॥ ३ ॥ प्रमाण संवत्सर पांच प्रकार का कहा है जिन के नाम—१ नक्षत्र संवत्सर २ चंद्र संवत्सर ३ ऋतु संवत्सर ४ सूर्य संवत्सर और ५ अभिवर्धन संवत्सर. अब पांचों नक्षत्र के दिन का स्वरूप कहते हैं. नक्षत्र संवत्सर के ३२७ $\frac{51}{67}$ दिन हैं, चंद्र संवत्सर के ३५४ $\frac{12}{62}$ दिन हैं, ऋतु संवत्सर व आदित्य संवत्सर का कथन कहते हैं. दो घडे का एक

समगं पुण्णिमासिं जोएति, विसमचारिणक्खत्ता ॥ कडुओ बहुउदओया, तमाहु सं-
वच्छरं चंदं ॥२॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुउसदंति पुप्फफलं॥ वासं न सम्मं

मुहूर्त और तीस मुहूर्त की एक अहोरात्रि, पन्नरह अहोरात्रि का एक पक्ष, दो पक्ष का एक मास, दो मास की एक ऋतु और छ ऋतु का एक संवत्सर अर्थात् बारह मास का एक संवत्सर होता है. यहां संवत्सर में ३६० अहोरात्रि पूर्ण होवे. ऋतु संवत्सर में वसंतादिक ऋतु लोक में प्रसिद्ध हैं. ऋतु संवत्सर के अन्य भी दो नाम कहे हैं-१ कर्म संवत्सर और २ सेवन संवत्सर. लौकिक व्यवहार के प्रधानपणा से कर्म संवत्सर और कर्म में प्रेरणा करने के प्रधानपना से सेवन संवत्सर. आदित्य संवत्सर सो जितने काल में छ ऋतु परिपूर्ण करे उतने काल को आदित्य संवत्सर कहते हैं. यह आदित्य संवत्सर ३६६ का दिन का होता है. लोक में ६० अहोरात्रि प्रमाण प्रावृडादि ऋतु प्रसिद्ध हैं. परंतु निश्चय में ६१ अहोरात्रि प्रमाण ऋतु जानना. कर्म संवत्सर ३६० दिन का है, आदित्य संवत्सर ३६६ का दिन का है और अभिवर्धन संवत्सर ३८३ $\frac{४४}{६२}$ दिन का है. इस के मास का गाथा द्वारा वर्णन करते हैं. आइच्चो खलु मासो । तीसं अद्धं च माइ दिवसा ॥ चंदो एगुणतीसं । वासट्ठिया भाग बत्तीसं ॥१॥ नक्खत्तो खलु मासो । सत्तावीसं भो अहोरत्तं ॥ अंसाय एक्कवीसा ॥ सत्तट्ठीकएणं छेएणं ॥ २॥ अभिवड्ढिउय मासो । एकतीसं भवे अहोरत्त ॥ भागा सयमेगवीसं । चउवीसं सयएणं ॥ ३ ॥ अर्थ—आदित्य मास ३०॥ दिन का है,

सूत्र सति, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविंदगाणंच रसं, पुप्फफलाणं च देति, आइच्चो

अर्थ चंद्र मास २९ $\frac{32}{62}$ दिन का है, नक्षत्र मास २७ $\frac{21}{67}$ दिन का है, ऋतु मास ३० दिन का है और अभिवर्धन मास ३१ $\frac{121}{124}$ दिन का है. यों पंच संवत्सर के मास कहे. अब एक युग के कितने नक्षत्र मास, यावत् कितने अभिवर्धन मास हैं सो कहते हैं—गाथा—तत्थ जुग पमाणे । पंचहिं मज्झेहिं पुव्व गुणिएहिं ॥ मासेहिं विभजंता । जइ मासा होइ ते वोच्छं ॥ १ ॥ आइच्चेण सट्ठिं मासा । इगुणाओ हुंति एगसट्ठा ॥ चंदेण बासट्ठी । सत्तट्ठी होईओ णक्खत्ते ॥२॥ अभिवड्ढे सत्तावन्नं मासा । सत्तयराइंदियावि ॥ एक्कारसया मुहुत्ता । बासट्ठी भागाय तेवीसं ॥ ३ ॥ अर्थात् यहां युग के नक्षत्र मास कितने हैं? एक नक्षत्र मास २७ दिन २१ भाग ६७ ये का होता है, इन सब के ६७ ये भाग करने को २७×६७=१८०९+२१=१८३० भाग ६७ ये हुवे. और एक युग के ६७ ये भाग करने को एक युग के १८३० दिन को ६७ से गुणा करना. १८३०×६७=१२२६१० भाग ६७ ये हुवे. इस को १८३० से भाग देने से ६७ हुवे. यह युग के नक्षत्र मास जानना. ऐसे ही दिन में जो अपूर्णांक होवे उन सब का पूर्णांक में लाकर युग को भी उतना ही पूर्णांक बनाना. फीर युग के दिन को मास के दिन से भाग देना. ऐसे भाग देने से युग के मास होते हैं. इस तरह युग के चंद्र मास ६२ हैं, ऋतु मास ६१ हैं, सूर्य मास ६० हैं, और अभिवर्धनमास ५७ दिन ७ मुहूर्त ११ और २३ भाग ६२ या है. यह प्रमाण संवत्सर हुआ ॥४॥

अप्पेणवि वासेण, सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥ ४ ॥ आइच्च तेयं तविया खणलवदिवस ऊऊ, परिणमंति पुरेइय थलाति, त माहु अभिवड्डियं जाण ॥ ५ ॥ ता सणि-

प्रमाण संवत्सर का यंत्र

	संवत्सर के नाम	संवत्सरका मान दिन	भाग	छेद	मास का मान दिन	भाग	छेद	युग का मान मा.	दि.	मु	भा. ६२
१	नक्षत्र	३२७	५१	६७	२७	२१	६७	६७	०	०	०
२	चंद्र	३५४	६२	१२	२९	३२	६२	६२	०	०	०
३	ऋतु	३६०	०	०	३०	०	•	६१	०	०	०
४	आदित्य	३६६	०	०	३०	३१	६२	६०	०	०	०
५	अभिवर्धन	३८४	४४	६२	३१	१२	११२४	५७	७	११	२३

अब लक्षण संवत्सर का कथन करते हैं. लक्षण संवत्सर के पांच भेद कहे हैं जिन के नाम—१ नक्षत्र २ चंद्र ३ ऋतु ४ आदित्य और ५ अभिवर्धन. इन में नक्षत्र संवत्सर के पांच प्रकार के लक्षण कहे. १ सम्यक् प्रकार से नक्षत्र योग करे और सम्यक् प्रकार में ऋतु परिणमें अर्थात् इस संवत्सर में नक्षत्र के सरिखे नाम से ऋतु के पर्यंत वर्तते मास संपूर्ण करे. जैसे १ उत्तराषाढा नक्षत्र अषाढी पूर्ण मासी समाप्ति करे २ अषाढी पूर्णिमा की साथ ऋतु भी संपूर्ण होवे ३ बहुत ताप नहोवे ४ अति शीत भी न होवे और ५ वर्षा बहुत होवे. इन पांच लक्षणों से नक्षत्र संवत्सर जानना. अब चंद्र संवत्सर का लक्षण कहते हैं. चंद्रमा की साथ सम्यग् प्रकार से पूर्णिमा में नक्षत्र योग करे. विषमचारी नक्षत्र होवे, जिस नाम का मास होवे उस से दूसरे नाम वाले नक्षत्र एक साथ पूर्णिमा का योग संपूर्ण करे, पानी बहुत बरसे

सूत्र

च्छरसंवच्छरं अट्ठाविसतिविहे पण्णत्ते तंजहा-अभिये सवणे जाव उत्तरासाढा ॥ जाव सणिच्छरे महाग्गाहे तीसेहेसंवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमंडलं समाणेति ॥ इति दसमस्स वीसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ २० ॥

अर्थ

परंतु कटुक होवे. शीत तापादिक बहुत होवे और रोगादिक परिणमे. ऐसा जिस संवत्सर में होवे वह चंद्र संवत्सर होवे. ०व तीसरा ऋतु अथवा कर्म संवत्सर के लक्षण कहते हैं-जिस संवत्सर में वनस्पति विषम काल में अंकूर वाली होवे, ऋतु विना पुष्प फलादि होवे. सम्यक् प्रकार से वर्षा नहोवे उसे कर्म संवत्सर कहते हैं. आदित्य संवत्सर का लक्षण कहते हैं-पृथ्वी, पानी, पुष्प फलादि को रस देवे, अल्प वर्षा से बहुत धान्यादिक सम्यक् प्रकार से उत्पन्न होवे, इस को आदित्य संवत्सर कहते हैं. अब अभिवर्धन संवत्सर कहते हैं. जिस में सूर्य के तेज से तप्त क्षण, लव, दिन व ऋतु परिणमते होवे, सब ऊंचा नीचा स्थान जल से परिपूर्ण होवे वह अभिवर्धन संवत्सर है. अब शनिश्चर संवत्सर का कथन करते हैं. शनिश्चर संवत्सर अठाइस प्रकार का कहा है तद्यथा अभिजित श्रवण यावत् उत्तराषाढा. अठाइस नक्षत्र शनिश्चर महाग्रह तीस संवत्सर में सब अठाइस नक्षत्र संपूर्ण करे. यह नक्षत्र संवत्सर ३२७ $\frac{५१}{६७}$ दिन का है. इसे तीसगुणा करने से ९८१२ $\frac{२४}{६७}$ दिन में शनिश्चर महाग्रह योग अंगीकार कर अठाइस नक्षत्र संपूर्ण करे. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का दशवा पाहुडा का वीसवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ २० ॥

ता कहंते जोतिसिदारा आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो पंचपडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थ एगे एव माहंसु ता कत्तियादियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवं माहंसु॥ १ ॥एगे पुण एव माहंसु ता महादियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवं माहंसु ॥ २ ॥ एगे पुण एव माहंसु ता धणिट्ठादियाणं सत्तणक्खत्ता पण्णत्ता एगे एवं माहंसु ॥ ३ ॥ एगे पुण एवं माहंसु अस्सिणियादिया पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एव माहंसु ॥ ४ ॥ एगे पुण एव माहंसु भरणिया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एव माहंसु॥ ५ ॥ एगे पुण एव माहंसु भरणिया दियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एव माहंसु ॥ ५ ॥ १ ॥ तत्थ जे एव माहंसु ता कत्तियादियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता तेणं एव माहंसु

अब इक्कीसवा अंतर पाहुडा कहते हैं—अहो भगवन् ! ज्योतिष द्वार कैसे कहे ? अहो शिष्य ! इस में पांच प्रतिपत्तियों कही है. १ कोई ऐसा कहते हैं कि कृत्तिकादि सात नक्षत्र-पूर्व द्वार वाले हैं, २ कोई ऐसा कहते हैं कि मघादि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं ३ कोई ऐसा कहते है कि धनिष्टादि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं ४ कोई ऐसा कहते हैं कि अश्विनी आदि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं और ५ कोई ऐसा कहते हैं कि भरणी आदि सात नक्षत्र पूर्व द्वार वाले हैं ॥ १ ॥ कृत्तिकादि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं ऐसा जो कहते हैं उनका कथन इस तरह है कि १ कृत्तिका २ रोहिणी ३ मृगशर ४

सूत्र

तंजहा कृत्तिया, रोहिणी, जाव असिलेसा, ॥ ता महादियाणं सत्तणक्खत्ता दाहिण दारिया पण्णत्ता तंजहा महा जाव विसाहा ॥ ता अणुराहादियाणं सत्तणक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता तंजहा अणुराहा जाव सवणे॥ ३॥ ता धणिट्ठादियाणं सत्तणक्खत्ता उत्तर दारिया पण्णत्ता धणिट्ठा जाव भरणि एगे एव माहंसु॥ ४ ॥ २ ॥ तत्थ जेते एव माहंसु महादियाणं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया तेणं एव माहंसु तंजहा महा जाव विसाहा पुव्वदारिया॥ ता अणुराहादियाणं सत्तनक्खत्ता दाहिण दारिया प० तंजहा अणुराहा जाव सवणे ॥ ता धणिट्ठादियाणं सत्तनक्खत्ता अवदारिया पण्णत्ता. तंजहा-

अर्थ

आर्द्रा ५ पुनर्वसु ६ पुष्य और ७ अश्लेषा. ये सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं. मघादि सात नक्षत्र दक्षिण द्वार वाले हैं जिन के नाम-१ मघा २ पूर्वाफाल्गुनी ३ उत्तराफाल्गुनी ४ हस्त ५ चित्रा ६ स्वाति और ७ विशाखा. अनुराधादि सात नक्षत्र पश्चिम द्वार वाले हैं जिन के नाम—१ अनुराधा २ ज्येष्ठा ३ मूल ४ पूर्वाषाढा ५ उत्तराषाढा ६ अभिजित और ७ श्रवण. धनिष्ठादि सात नक्षत्र उत्तर द्वार वाले हैं जिन के नाम—१ धनिष्ठा २ शतभिषा ३ पूर्वाभाद्रपद ४ उत्तराभाद्रपद ५ रेवती ६ अश्विनी और ७ भरणी. ॥ २ ॥ जो ऐसा कहते हैं कि मघादि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं उन का कथन इस तरह है-१ मघा २ पूर्वाफाल्गुनी ३ उत्तराफाल्गुनी ४ हस्त ५ चित्रा ६ स्वाति और ७ विशाखा. अनुराधादि सात नक्षत्र

धणिट्ठा जाव भराणि॥ ता कत्तियादियाणं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा-कत्तिया जाव असिलेस॥३॥ तत्थ जेते एव माहंसु ता धणिट्ठादियाणं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता तेणं एव माहंसु, ता धणिट्ठा जाव भराणि॥ ता कत्तियादियाणं सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता तंजहा कत्तिया जाव असिलेसा॥ महादि[illegible]णं सत्तणक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता तंजहा-महा जाव विसाहा॥ ता अणु[illegible]णं सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता तंजहा-अणुराहा जाव सवणे॥ ४ ॥ तत्थ जेते एव माहंसु ता असिणियादियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया

दक्षिण द्वार वाले होते हैं जिन के नाम—अनुराधा यावत् श्रवण. धनिष्ठादि सात नक्षत्र 'पश्चिमद्वार' वाले कहे हैं जिन के नाम—धनिष्ठा यावत् भरणी और कृत्तिकादि सात नक्षत्र उत्तरद्वार वाले कहे हैं जिन के नाम कृत्तिका यावत् अश्लेषा ॥ ३ ॥ जो धनिष्ठादि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले कहते हैं जिन के नाम—धनिष्ठा यावत् भरणी. यह सात पूर्वद्वार वाले हैं कृत्तिकादि सात नक्षत्र दक्षिण द्वार वाले हैं जिन के नाम—कृत्तिका यावत् अश्लेषा. मघादि सात नक्षत्र पश्चिम द्वार वाले हैं जिन के नाम. मघा यावत् विशाखा, और अनुराधादि सात नक्षत्र उत्तर द्वार वाले कहे हैं जिन के नाम. अनुराधा यावत् श्रवण. ॥ ४ ॥ अब जो ऐसा कहते हैं कि अश्विनी आदि

पण्णत्ता तेणं एव माहंसु तंजहा- अस्सिणि जाव पुण्णवसु ॥ ता पुसादियाणं सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता तंजहा-पुस्सो जाव चित्ता ॥ ता सातिदियाणं सत्तणक्खत्ताणं अवरदारिया पण्णत्ता तंजहा- साति जाव उत्तरासाढा ॥ अभितिदियाणं सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता तंजहा-अभिजिते जाव रेवति ॥ ५ ॥ तत्थ जेते एव माहंसु ता भरणिआदियाणं सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता तेण एव माहंसु तंजहा-भरणि जाव पुस्सो ॥ ता असिलेसादियाणं सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता तंजहा-असिलेसा जाव साति ॥ ता विसाहादियाणं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता तंजहा-विसाहा जाव अभिए ॥ ता सवणादियाणं सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता तंजहा सवणे जाव असिणी एग एव माहंसु ॥ ६ ॥ वयंपुण

सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले कहे हैं उन का कथन इस तरह है कि अश्विनी से पुनर्वसु पर्यंत सात नक्षत्र पूर्व द्वार वाले हैं, पुष्य से चित्रा पर्यंत सात नक्षत्र दक्षिण द्वार वाले हैं, स्वाति से उत्तराषाढा पर्यंत सात नक्षत्र पश्चिमद्वार वाले हैं, और अभिजित से रेवती पर्यंत सात नक्षत्र उत्तर द्वार वाले हैं ॥ ५ ॥ जो ऐसा कहते हैं कि भरणी आदि सात नक्षत्र पूर्वद्वारवाले हैं जिनके नाम-भरणी यावत् पुष्य, अश्लेषादि सात नक्षत्र दक्षिणद्वारवाले हैं जिनके नाम. अश्लेषा यावत् स्वाति. विशाखादि सात नक्षत्र पश्चिमद्वारवाले हैं. जिनके नाम विशाखा यावत् अभिजित और श्रवणादि सात नक्षत्र उत्तरद्वारवाले हैं जिनके नाम श्रवण यावत् अश्विनी ॥६॥ हम

एवं वयामो—अभिणिआदिय सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता तंजहा-अभिए जाव रेवति॥ता असिणीआदिया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता तंजहा-असिणि जाव पुण्णवसु ॥ ता पुस्सादियाणं सत्ताणक्खत्ता अवरारिया पण्णत्ता तंजहा- पुस्सो जाव चित्ता ॥ ता साति याणं सत्ताणक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता तंजहा-साति जाव उत्तरासाढा ॥ इति दसम पाहुडस्स एकवीसमं पाहुड सम्मत्तं ॥ १० ॥ २१ ॥
ता कहंते णक्खत्त विजये आहितेति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवेदीवे जाव परिक्खेवेणं ता जंबूदीवेण दीवे दोचंदा पभासेसुवा पभासतिवा भासिस्सतिवा ॥

इस कथनको ऐसा कहते हैं कि अभिजितसे रेवती पर्यंत सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं, अश्विनीसे पुनर्वसु पर्यंत सात नक्षत्र दक्षिण द्वार वाले हैं, पुष्य से चित्रा पर्यंत सात नक्षत्र पश्चिमद्वार वाले हैं और स्वाति से उत्तराषाढा पर्यंत सात नक्षत्र उत्तर द्वार वाले हैं. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र [illegible] उड का इक्कीसवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १० ॥ २१ ॥

अब बावीसवे अंतर पाहुडे में नक्षत्रादिकके निर्णय की [illegible] हैं. अहो भगवन् ! आपके मत में नक्षत्र का विजय सो निर्णय स्वरूप किस प्रकार [illegible] अहो शिष्य ! यह जम्बूद्वीप नामक

[illegible] दो धनिष्ठा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो रेवती, [illegible]

सूत्र

दोसूरिया तविंसुवा तवंतिवा तविस्सतिवा ॥ छप्पण्णं णक्खत्ता जोगं जोएसुवा जोएतिवा जोइस्सतिवा तंजहा दोअभिया दोसवणा, दोधणिट्ठा दोसतभिया, दो पुव्वापुट्ठवया, दो उत्तरापोट्ठवया दो अस्सिणी, दो भरणि, दो कत्तिया, दो रोहिणी दो मगसिरा, दो अद्दा, दो पुणवसु दो पुस्सा, दो असिलेसा दो मघा, दो पुव्वाफग्गुणी, दो उत्तराफग्गुणी, दो हत्था, दोचित्ता, दोसाति, दोविसाहा दो अणुराहा, दो जिट्ठा, दोमूला, दो पुव्वासाढा, दो उत्तरासाढा ॥ ता एतेसिणं

अर्थ

द्वीप एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है. इस की परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, एक सो अट्ठावीस धनुष्य, साढे तेरह अंगुल से कुछ अधिक है. इस जम्बूद्वीप में दो चंद्रमाने गत काल में प्रकाश कीया, दो चंद्रमा वर्तमान काल में प्रकाश करते हैं, और दो चंद्रमा अनागत काल में प्रकाश करेंगे. दो सूर्य तपे, दो सूर्य तपते हैं और दो सूर्य तपेंगे. छप्पन नक्षत्रों ने योग किया, छप्पन नक्षत्र योग करते हैं और छप्पन नक्षत्र योग करेंगे. इसका विशेष विवरण दशवे पाहुडे के दूसरे अंतर पाहुडसे जानना. यहां छप्पन नक्षत्रों के नाम कहते हैं. दो अभिजित, दो श्रवण, दो धनिष्टा, दो शतभिषा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो उत्तराभाद्रपद, दो रेवति, दो अश्विनी, दो भरणी, दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशर, दो आर्द्रा, दो पुनर्वसु, दो पुष्य

छप्पणं णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जण णवमुहुत्ते सत्तावीसं सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ १ ॥ अत्थि णक्खत्ता जेणं पण्णरस मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ २ ॥ अत्थि नक्खत्ता जेणं तीसं मुहुत्तं चंदेणसद्धिं जोगं जोएति ॥ ३ ॥ अत्थिणं णक्खत्ता जेणं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेणसद्धिं जोगं जोएति ॥ ४ ॥ ता एतेसिणं छप्पणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेणं णवमुहुत्ते सत्तावीसंच सतसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्धिं जोग जोतेति जाव कयरे णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ता चंदेणसद्धिं जोगं जोएति ? ता एतेसिणं छप्पण्ण णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता नव मुहुत्ता सत्तावीसंच सत्तसट्ठिभागा मुहुत्तस्स चंदेणसद्धिं जोगं जोएति तेणं दो णक्खत्ता अभिया पण्णत्ता ॥ तत्थ जे ते योग

दो अश्लेषा, दो मघा, दो पूर्वाफाल्गुनी, दो उत्तराफल्गुनी, दो हस्त, दो चित्रा योग करते दो विशाखा, दो अनुराधा, दो ज्येष्ठा, दो मूल, दो पूर्वाषाढा, और दो उत्तराषाढा योग करते हैं. इन नक्षत्रों में से ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो नव मुहूर्त व सडसठिये सत्तावीस भाग हैं. जिन के नाम-दो करते हैं, कितनेक ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो पन्नरह मुहूर्त चंद्र की साथ योग करते हैं. जिन के नाम. नक्षत्रों हैं किजो चंद्रमा साथ तीस मुहूर्त योग करते हैं दो, तीस नक्षत्र तेरह अहोरात्रि व बारह दो धनिष्ठा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो रेवती,

सूत्र

दोसूरिया तविंसुवा तवंतिवा तविस्संतिवा ॥ छप्पण्णं णक्खत्ता जोगं जोएसुवा जोएतिवा जोइस्सतिवा तंजहा दोअभिया दोसवणा, दोधणिट्ठा दोसतभिया, दो पुव्वापुट्ठवया, दो उत्तरापोट्ठवया दो अस्सिणी, दो भरणि, दो कत्तिआ दो रोहिणी दो मगसिरा, दो अद्दा, दो पुणवसु दो पुस्सा, दो असिलेसा दो मह, दो पुव्वाफग्गुणी, दो उत्तराफग्गुणी, दो हत्था, दोचित्ता, दोसाति, दोविसाहा दो अणुराहा, दो जिट्ठा, दोमूला, दो पुव्वासाढा, दो उत्तरासाढा ॥ ता एतेसिणं

अर्थ

द्वीप एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है. इस की परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, एक सो अट्ठावीस धनुष्य, साढे तेरह अंगुल से कुछ अधिक है. इस जम्बुद्वीप में दो चंद्रमाने गत काल में प्रकाश कीया, दो चंद्रमा वर्तमान काल में प्रकाश करते हैं, और दो चंद्रमा अनागत काल में प्रकाश करेंगे. दो सूर्य तपे, दो सूर्य तपते हैं और दो सूर्य तपेंगे. छप्पन नक्षत्रोंने योग किया, छप्पन नक्षत्र योग करते हैं और छप्पन नक्षत्र योग करेंगे. इसका विशेष विवरण दशवे पाहुडे के दूसरे अंतर पाहुडसे जानना. यहां छप्पन नक्षत्रों के नाम कहते हैं. दो अभिजित, दो श्रवण, दो धनिष्टा, दो शतभिषा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो उत्तराभाद्रपद, दो रेवति, दो अश्विनी, दो भरणी, दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशर, दो आर्द्रा, दो पुनर्वसु, दो पूष्य

छप्पणं णक्खत्ताणं अत्थि, णक्खत्ता जेण णवमुहुत्ते सत्तावीसं सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ १ ॥ अत्थि णक्खत्ता जेणं पण्णरस मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥ २ ॥ अत्थि नक्खत्ता जेणं तीसं मुहुत्ते चंदेणंसद्धिं जोगं जोएति ॥ ३ ॥ अत्थिणं णक्खत्ता जेणं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेणसद्धिं जोगं जोएति ॥ ४ ॥ ता एतेसिणं छप्पणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेणं णवमुहुत्ते सत्तावीसंच सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोगं जोएति जाव कयरे णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ता चंदेणसद्धिं जोगं जोएति ? ता एतेसिणं छप्पण्ण णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता नव मुहुत्ता सत्तावीसंच सत्तसट्ठिभागा मुहुत्तस्स चंदेणसद्धिं जोगं जोएति तेणं दो णक्खत्ता अभिया पण्णत्ता ॥ तत्थ जे के योग

दो अश्लेषा, दो मघा, दो पूर्वाफाल्गुनी, दो उत्तराफाल्गुनी, दो हस्त, दो चित्रा योग करते

दो विशाखा, दो अनुराधा, दो ज्येष्ठा, दो मूल, दो पूर्वाषाढा, और दो उत्तराषाढा योग करते हैं. इन

नक्षत्रों में से ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो नव मुहूर्त व सडसठिये सत्तावीस भाग हैं. जिन के नाम-दो

करते हैं, कितनेक ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो पन्नरह मुहूर्त चंद्र की साथ योग करते हैं. जिन के नाम.

नक्षत्रों हैं किजो चंद्रमा साथ तीस मुहूर्त योग करते हैं दो. तीस नक्षत्र तेरह अहोरात्रि व बारह

दो धनिष्ठा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो रेवती,

सूत्र

णक्खत्ता पण्णरस मुहुत्ता जाव जोगं जोतेति तेणं ... णक्खत्ता : जोगं जोएसुवा दो सतभिया, दो पुव्वापुट्ठ दो भरणि, जाव दो जेट्ठा ॥ २ ॥ तत्थ जेते णक्खत्ता जेण ... गं, दो रोहिणी जोगं जोएति तेणं तिसं तंजहा-दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा ... पुव्वाफ- णक्खत्ता जेणं पणयालीस मुहुत्ता जाव जोगं जोएति तेणं दुवालसं ते ... दो उत्तरामद्दवया जाव दो उत्तरासाढा ॥ ३ ॥ ता एतेसिणं छप्पणाए णक्खत्ताणं

अर्थ

कि जो चंद्रमा की साथ ४५ मुहूर्त योग करते हैं ॥ २ ॥ इन छप्पन नक्षत्रों में कौन से २ नक्षत्र चंद्रमा की साथ ९२७/६७ मुहूर्त योग करते हैं यावत् कौन से नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त चंद्र की साथ योग करते हैं. ? इन छप्पन नक्षत्रों में से दो नक्षत्र चंद्रमा की साथ ९२७/६७ मुहूर्त योग करते हैं. जिन के नाम-दो अभिजित. बारह नक्षत्र पन्नरह मुहूर्त तक चंद्रमाकी साथ योग करते हैं जिन के नाम दो शताभिषा, दो भरणि, दो आर्द्रा, दो अश्लेषा, दो स्वाति, और दो ज्येष्ठा. तीस नक्षत्रों तीस २ मुहूर्त पर्यंत चंद्रमा की साथ योग करते हैं जिन के नाम-दो श्रवण, दो धनिष्ठा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो रेवति, दो अश्विनी, दो कृत्तिका, दो मृगशर दो पुष्य, दो मघा, दो पूर्वाफाल्गुनी, दो हस्त, दो चित्रा, दो अनुराधा, दो मूल, और दो पूर्वाषाढा. और बारह नक्षत्र ४५ मुहूर्त पर्यंत चंद्रमा की साथ योग करते हैं जिन के नाम-दो उत्तराभाद्रपद दो रोहिणी, दो पुनर्वसु, दो उत्तरा फाल्गुनी, दो विशाखा और दो

अत्थि णक्खत्ता जेणं चत्तारि अहोरत्ते छच्चमुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥
अत्थि णक्खत्ता जेणं छ अहोरत्ते एगवीसंच मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएति ॥
अत्थि णक्खत्ता जेणं तेरस अहोरत्ते दुवालसमुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएति
अत्थि णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता वीसं अहोरत्ते तिन्नियमुहुत्ते जाव जोगं जोएति
ता एतेसिणं छप्पन्नाए णक्खत्ताणं जेते णक्खत्ता जेणं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते

उत्तराषाढा. ॥ ३ ॥ इन छप्पन नक्षत्रों में से ऐसे नक्षत्रों हैं जो सूर्य की साथ चार अहोरात्रि व छ मुहूर्त तक योग करते हैं, ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो सूर्य की साथ छ अहोरात्रि २१ मुहूर्त तक योग करते हैं, ऐसे भी नक्षत्रों हैं कि जो तेरह अहोरात्रि व बारह मुहूर्त तक सूर्य की साथ योग करते हैं, और ऐसे भी नक्षत्रो हैं कि जो वीस अहोरात्रि व तीन मुहूर्त तक सूर्य की साथ योग करते हैं. इन छप्पन नक्षत्रों में दो नक्षत्र चार दिन व छ मुहूर्त पर्यंत सूर्य की साथ योग करते हैं. जिन के नाम-दो अभिजित. बारह नक्षत्र छ अहोरात्रि व एकवीस मुहूर्त पर्यंत सूर्य की साथ योग करते हैं. जिन के नाम. दो शतभिषा, दो भरणि, दो आर्द्रा, दो अश्लेषा, दो स्वाति व दो ज्येष्ठा. तीस नक्षत्र तेरह अहोरात्रि व बारह मुहूर्त तक सूर्य की साथ योग करते हैं. जिन के नाम-दो श्रवण दो धनिष्टा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो रेवती,

सूत्र

जाव जोगं जोएंति तेणं दुवे अभिया तहेव जाव तत्थ जेते णक्खत्ता जेणं वीसं अहोरत्ते तिन्निय मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जाएंति तेणं दुवालस तंजहा दो उत्तरा पोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा ॥ ४ ॥ ता कहंते सीमा आहितेति वदेज्जा ॥ ता एतेसिणं छप्पणाए णक्खत्ताणं अत्थिणं णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता छसया तिससत्तसट्ठि-भागा तिसइ भागाणं सीमा विक्खंभो ॥ १ ॥ अत्थि नक्खत्ता जेणं णक्खत्ता, एगेय सहस्सं पच्चुत्तरं सत्तसट्ठि भागा तिसति भागाणं सीमा विक्खंभो ॥२॥ अत्थि

अर्थ

दो आश्विनी, दो कृत्तिका, दो मृगशर, दो पूष्य, दो पूर्वाफाल्गुनी, दो हस्त, दो चित्रा, दो अनुराधा, दो मूल, और दो पूर्वाषाढ. और बारह नक्षत्रों वीस अहोरात्रि व तीन मुहूर्त पर्यंत सूर्य की साथ योग करते हैं जिन के नाम. १ दो उत्तराभाद्रपद दो रोहिणी, दो पुनर्वसु, दो उत्तरा फाल्गुनी, दो विशाखा और दो उत्तराषाढा. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! मंडल की सीमा के विष्कंभपना में किस प्रकार नक्षत्र की संख्या कही ? उत्तर-इन छप्पन नक्षत्रों में ऐसे नक्षत्रों हैं कि जीस के मंडल की सीम का विष्कंभपना छसो तीस भाग सडसठीये तीसीय भाग का है, कितनेक ऐसे नक्षत्र हैं जिस के मंडल की सीमका विष्कंभपना १००५ सडसठिये तीसीय भाग की है, ऐसे नक्षत्र हैं कि जिस की सीमा का विष्कंभपना दो हजार दशसडसठीये तीसंये भाग का है, और कितनेक नक्षत्र ऐसे भी हैं कि जिसका सीमका विष्कंभपना तीनहजार

णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता दो सहस्सा दसुत्तरा सत्त सट्ठीभागा तिसति भागाणं सीमाविक्खंभो ॥३॥ अत्थि णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता तिन्निसहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्त-सट्ठीभागा तिसति भागाणं सीमाविक्खंभो॥४॥ ता एतेसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे नक्खत्ता जेणं णक्खत्ता छसयातीसा सत्तसट्ठीभागा तिसतिभागाणं सीमाविक्खंभो जाव कयरे णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता तिण्णिसहस्सा पण्णरसुत्तरा सतसट्ठीभागा तिसतिजाव सीमाविक्खंभो ता एतेसिणं छप्पणाए णक्खत्ताणं, तत्थ जेते णक्खत्ता

पन्नर सडसठीये तीसीये भाग का है. इन छप्पन्न नक्षत्रों में से कौन २ नक्षत्र छसोतीस सडसठीये तीसीये भाग के सीमा वाले है यावत् कौन २ नक्षत्र तीनहजार पन्नर सडसठिये तीसीये भाग की सीमा वाले हैं ? इन छप्पन्न नक्षत्रों में दो नक्षत्रों का सीमा विष्कंभ ६३० भाग सडसठिये तीसीये का है. क्यों कि अभिजित नक्षत्र सडसठिये २१ भाग का है, इस से २१ को ३० से गुणा करने से ६३० भाग होवे. एक अभिजित नक्षत्र एक मंडल में इतना क्षेत्र सीम में योग करता हुवा परते. एक मंडल के १०९८०० भाग करना. उस में के ६३० भाग जानना. दो अभिजित नक्षत्र के १२६० भाग जानना. बारह नक्षत्र का सीमा विष्कंभ एक हजार पांच (१००५)

जेसिणं णक्खत्ताणं छसया तिसंति सत्तसट्ठीभागातिमति भागाणं सीमाविक्खंभो तेणं दो अभिया तत्थणं जेते णक्खत्ता एगेय सहस्सं पंचुत्तरसत्तसट्ठीभागा जाव सीमाविक्खंभो तेणं दुवालस तजहा-दो सतभिसयाओ जाव दो जेट्ठाओ ॥ तत्थणं जेते णक्खत्ता जेणं णक्खत्ता दोन्नि सहस्सा दसुत्तरा सतसट्ठीभागा जाव सीमाविक्खंभो तेणं तीस तंजहा-दो सवणा जाव दोपुव्वासाढातो ॥ तत्थणं जेते णक्खत्ता जेसिणं णक्खत्ता तिन्निसहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तसट्ठीभागा जाव दुवालस तंजहा दो उत्तराभद्दवयाओ जाव दो उत्तरासाढाओ ॥५॥ ता एतेसिणं छप्पणाए

सडसठिये तीसिये भाग का है जिन के नाम. दो शतभिषा यावत् दो ज्येष्ठा. उक्त बारह नक्षत्र सडसठिये साढ़ तेतीसिए भाग के हैं. इस को तीस से गुणा करने से १००५ भाग होवे. और उसे बारह गुणा करने से १२०६० भाग जानना. तीस नक्षत्र का सीमा विष्कंभ २०१० सडसठीय तीसिये भाग का है जिन के नाम. दो श्रवण यावत् दो पूर्वाषाढा. उक्त तीस नक्षत्र ६७ ये भाग के हैं उन को तीस से गुणने से २०१० होते हैं. पुनः इसे ३० गुणने से ६०३०० भाग होवे. फीर बारह नक्षत्र का सीमा विष्कंभ तीन हजार पन्नरह सडसठिये तीसीये भाग का है. जिन के नाम-दो उत्तराभाद्रपद यावत् दो उत्तराषाढा. यह बारह नक्षत्र ६७ ये १०० ॥ भाग के हैं इस को ३० सो गुणा करने से ३०१५ होवे. इसे बारह गुने करने से ३६१८० भाग होवे. ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! इन छप्पन नक्षत्रों में से कितने नक्षत्र सदैव प्रातःकाल

नक्खत्ताणं कि सया पातो चंदेणं सद्धिं जोगं जोतेति. ५ सया सायं चंदेणं सद्धिं जोगं जोतेति! किसया दुहतो पविट्ठित्ता चंदेणं सद्धिं जोगं ज तोति? ता एए छप्पण्ण नक्खत्ता नो सया पातो चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति णो सया सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति नो सया दुहतो पविट्ठित्ता चंदेणं सद्धिं जोगं जोतेति! णत्थि रातिंदियाणं वुड्ढीवुड्ढीए मुहुत्ताणंच चयोवचयेण णण्णत्थव्व दोहिं आमया, ता एतेणं दो अभिया

में चंद्र की साथ योग करते हैं, कितने नक्षत्र सदैव संध्या काल में चंद्र की साथ योग करते हैं, और कितने नक्षत्र सदैव प्रातःकाल व संध्या काल इन दोनों समय में प्रवेश कर चंद्रमा की साथ योग करते हैं? अहो शिष्य! उक्त छप्पन नक्षत्रों सदैव प्रातःकाल में योग नहीं करते हैं, वैसे ही सदैव संध्या काल में योग नहीं करते हैं. वैसे ही सदैव प्रातःकाल व संध्या काल इन दोनों काल में प्रवेश कर चंद्रकी साथ योग नहीं करते हैं. रात्रि दिन की हानि वृद्धि नहीं होती है, क्यों की जब दिन में तीन मुहूर्त की वृद्धि होवे तब इतना ही मुहूर्त की रात्रि में हानि होवे. और रात्रि में तीन मुहूर्त की वृद्धि होवे तब दिन में हानि होवे. इस से सदैव प्रातः काल में और सदैव संध्या काल में नक्षत्र योग नहीं करते हैं. इन में अभिजित नक्षत्र का प्रतिषेध है अर्थात् दो अभिजित नक्षत्र युग में चुम्मालीसवी अमावास्या संपूर्ण करे. अभिजित नक्षत्र के ९ मुहूर्त, ३७ भाग ६२ये और ४७ भाग

सूत्र

तायंचियं चोयालीसं अमावासं जोतेति नो चेवणं पुण्णमासिणं ॥ ६ ॥ तत्थ खलु इमाओ पुण्णमासिणीओ बावट्ठी, अमावासाओ बावट्ठी पण्णत्ताओ ॥ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणं चंदे कंसिंदेसि जोगं जोएति,तासिणं जंसिणं देससि चंदे चरम बावट्ठी पुण्णमासिणी जोगं जोतेति ताओपुण्णमासिणिओ ठाणाओमंडलंएगचउविस सतेणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवव्वाणिवेत्ता एत्थणंसे चंदे पढम पुणमासिणि जोगं जोतेति॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिणं चंदे कंसि देसंसिजोगं जोतेति.ता जंसिणं

अर्थ

६१ थे गये पीछे चुम्मालीसवी अमावास्या संपूर्ण करे. परंतु पूर्णिमा संपूर्ण नहीं करे ॥ ६ ॥ एक युग में बासठ पूर्णिमा व बासठ अमावास्याओं कही हैं. वहां गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि इन पांच संवत्सर में प्रथम पूर्णिमा को चंद्र मंडल के कितने देश भाग में योग करके संपूर्ण करे? उत्तर—अहो शिष्य! जिस मंडल के देश भाग में चंद्रमा युग की बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस पूर्णिमा के स्थानक से एक मंडल को १२४ भाग से छेद कर बत्तीस भाग में चलता हुवा चंद्रमा युग की प्रथम पूर्णिमा संपूर्ण करे. इन पांच संवत्सर में दूसरी पूर्णिमा को चंद्रमा मंडल को कितने विभाग में योग कर के संपूर्ण करे? उत्तर—जिस विभाग में चंद्रमा पहिली पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस पूर्णिमा के स्थानक से एक मंडल के १२४ भाग करके उस में से बत्तीस भाग अनुक्रम

देसंसि चंदे पढमं पुण्णमासिणं जोतेति ता एतेसिणं पुण्णमासिणि ठाणाओ मंडलं एग चउव्विसेणं सएणछेत्ता बत्तीसं भागं उवव्वाणिवेत्ता तत्थणं से चंदे दुच्चं पुण्णमासिणिणं जोगं जोतेति ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णमासिणं चंदे कंसि देससि जोगं जोतेति ? ता जंसिणं देसंसि चंदे दोच्चं पुणमासिणं जोगं जोतेति ता तेसिणं पुण्णमासिणीओ ठाणाए मंडलं एगचउव्विसेणं सतेणच्छेत्ता बत्तीसं भागे उवव्वाणिवेत्ता तत्थणं से चंदे तच्चं पुण्णमासिणी जोगं जोतेति ॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराण दुवालसमं पुण्णमासिणं चंदे कंसि देसंसि जोगं जोएति ता जंसिणं देसंसि चंदे तच्चं पुण्ण मासिणं जोगं जोएति ता एएसिणं पुण्णमासिणी ठाणाओ

... लेना. वहां ही दूसरी पूर्णिमा मंडल के ६४ वे भाग में योग करके संपूर्ण करे. तीसरी पूर्णिमा ... पृच्छा ? उत्तर-जिस विभाग में दूसरी पूर्णिमा को चंद्रमा योग करके संपूर्ण करे उस स्थान. से ... के १२४ भाग करके बत्तीस भाग अनुक्रम से लेना. वहां ही चंद्रमा योग करके तीसरी पूर्णिमा संपूर्ण करे. प्रश्न-अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सरों की बारहवी पूर्णिमा किस विभाग में योग करके चंद्रमा पूर्ण करे ? उत्तर-जिस देश में तीसरा मास की पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस पूर्णिमा के स्थान से एक मंडल के १२४ भाग करे वैसे २८८ भाग अनुक्रम से लेना. वहां बारहवी पूर्णिमा संपूर्ण होवे. तीसरी पूर्णिमा से बारहवी पूर्णिमा नववी होती है. इस से ३२×९=२८८ भाग

सूत्र

मंडलं एगचउवीस सएणं छेत्ता दोण्णिअट्ठासिते भागते उवाइणिवित्ता एत्थणं से चंदे दुवालसमं पुणमासिणी जोगंजोतेति॥एवं खलु एतेणउवातेणं ता पुण्णमासिणीओ ठाणातो मंडल एगचउविसेण सतेणं छेत्ता, बत्तीसं भागे उवाइणवेत्ता, तसि २ देसंसि ततं पुण्णमासिणं चंदे जोगं जोतेति॥ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरमबाट्ठि पुण्णमासिणं चंदे कांसि देसंसि जोगंजोतेति ? ता जंबुद्दिवस्स पाइणपाडिणाय तं उदीण-दाहिण मायाते जीवाते मंडलं एगं चउविसेणं सतेणछेत्ता दाहिणंसि चउभाग मंडलंसि सत्ताविसं भागं उवाइणिवेत्ता, अट्ठाविसतिमं भागं विसहा छेत्ता,अट्ठारसभागे उवावि-

अर्थ

होवे. उन में तीन पूर्णिमा के ९६ भाग मीलाने से ३२८ होवे. उन १२४ भाग से भागदेने से तीन मंडल व १२ भाग शेष रहे. वहांपर चंद्रमा बारहवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. इसी तरह से एक पूर्णिमा के स्थान से एक मंडल के १२४ भाग के ३२ भाग में उस २ देश में उस पूर्णिमा को चंद्रमा योग कर के संपूर्ण करे. प्रश्न-इन पांच संवत्सर में से बासठवी पूर्णिमा को चंद्र कितने विभाग में योग करके संपूर्ण करे ? इस जम्बूद्वीप को पूर्व पश्चिम की लम्बाइ व उत्तर दक्षिण की जिवा से एक मंडल के १२४ भाग कर के दक्षिण के चौथे भाग के मंडल में सत्ताबीस भाग संपूर्ण कर अठावीसवे भाग के ३२ भाग से छेद देकर इन के अठारह भाग लेकर गुनीसवे भाग के तीन भाग में से दो भाग पश्चिम दिशा के १२४ में तीन भाग गये पीछे और २० या

णिव्वेत्तातिंहि भागेहिं दोहिय कलाहिं पच्चत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलमसंपत्ते एत्थणंसे चंदे, चरमबावट्ठी पुण्णमासिणंजोगं जोतेति॥७॥ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं, पढमापुण्णमासिणं सूरे कांसि देसांसि जोगं जोतेति? ता जंसिणं देसांसि सूरे चरमबावट्ठी पुण्णमासीणं जोगं जोतेति॥तेति पुण्णमासिणीओ ठाणाओ मंडलं चउविसेणं सतेणं छेत्ता चउणउतिभागे उवाइणिवेत्ता, एत्थणं से सूरे पढम पुण्णमासिण जोगं जोतेति ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिण पुच्छा? ता जंसिणं देसांसि सूरिए पढम पुण्णमासिणं जोगं जोतेति,ताते पुण्णमासिणीओ ठाणाओ मंडलं एगचउविसे णंसतेणं च्छेत्ता चउणउतिं भागे

एक भाग व एक भाग के तीन भाग की एक कला शेष रहे इन की बीच के स्थान में चंद्रमा बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. एक युग में चंद्रमा अर्ध मंडल १७६८ करता है, और दो चंद्रमा मिलकर संपूर्ण चंद्र मंडल ८८४ करते हैं ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम पूर्णिमा को सूर्य कौन से विभाग में योग करके संपूर्ण करे ? उत्तर—अहो शिष्य ! जिस विभाग में सूर्य युग की चरम बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस स्थान से एक मंडल के १२४ भाग में के ९४ भाग अनुक्रम से लेकर सूर्य प्रथम पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. इन पांच संवत्सर में से दूसरी पूर्णिमा की पृच्छा. उत्तर—जिस देश में सूर्य प्रथम पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस स्थान से एक मंडल के १२४ भाग करके उस में अनुक्रम से ९४ भाग लेना. यहां पर सूर्य दूसरा पूर्णिमा योग करके संपूर्ण

सूत्र

उवावणिवित्ता एत्थणं से सूरे दोच्चं पुण्णमासिणं जोगं जोतेति, एवं तच्चंपिणवरं दोच्चातो ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं, दुवालसमं पुण्णमासिणं पुच्छा ता जंसिणं देसंसि सूरेतच्चं पुण्णमासिणं जोगंजोतेति ताते पुण्णमासिणीओ ठाणाए मडलं एगंचउविसेणं सतेणच्छेत्ता अट्ठछत्ताले भागे उवावणिवित्ता एत्थणं से सूरे दुवालसमं पुण्णमासिणंजोगं जोतेति ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं ताते २ पुण्णमासिणीणं ठाणाओ मंडलं एग चउवीसेणं सतेणं छेत्ता चउणवति भागे उवावणिवित्ता तंसि २ देसंसि तंतं पुण्णमासिणं सूरे जोगं जोतेति ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरमबावट्ठी पुच्छा ? ता जंबूद्दीवस्स २ पाईण पडिणयाए उदिणदाहिण मायाते जीवाते

अर्थ

करे. ऐसे ही तीसरी पूर्णिमा का जानना. यहां दूसरी पूर्णिमा से ९४ भाग लेना. अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर की बारहवी पूर्णिमा किस देश में सूर्य योग करके संपूर्ण करे ? अहो शिष्य ! जिस देश में तीसरी पूर्णिमा सूर्य योग करके संपूर्ण करे उस देश से एक मंडल के १२४ भाग करके आठ सो छेयालीस (८४६) अनुक्रम से लेना, यहां सूर्य बारहवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे, ९४ को ९ से गुणा करने से ८४६ होते हैं, इसी तरह से उस पूर्णिमा के स्थान से एक २ मंडल के १२४ भाग के ९४ भाग लेकर उस२ देश में पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. अब इन पांच संवत्सर में चरम बासठवी पूर्णिमा की पृच्छा, इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाइ व उत्तर दक्षिण की जिवा से एक मंडल के १२४

मंडलं एगं चउवीसेणं सएणंछेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि सत्तावीसंभागे उवा-वणिवेत्ता अट्ठावीसतिमं भागं विसह छेत्ता अट्ठारस भागे उवावणित्रेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिय कलाहिं दाहिण चउभाग मंडलं मसंपत्ते, एत्थणं से सूरे चरम बावट्ठी पुण्ण मासिणं जोगं जोतेति॥८॥एवं जगेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिया भाणियाओ तेणं चेव अभिलावेणं अमावसातोवि भाणियव्वाओ तंजहा-पढमा बितिया दुवालसा, एवं खलु एतेणउवाएणं ताते २ अमावासठाणाओ मंडलं एग चउवीसेणं सतेणं छेत्ता

भाग करना, पूर्वादिक वृत्ति में मंडल के चौथे भाग में से एकतीस भाग होवे, उस में से २७ भाग और अट्ठावीसवे भाग के २० भाग में के १८ भाग व दो कला लेकर शेष ३ भाग १२४ वे और १ भाग बीसवा और एक कला,इतना शेष रहे उस स्थान सूर्य चरम बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. सूर्य अर्ध मंडल १८३० करता है, दोनों सूर्य मिलकर संपूर्ण मंडल ९१५ करते हैं ॥ ८ ॥ ऐसे ही जिस अभिलाप से चंद्र पूर्णिमा संपूर्ण करे सो कहा, वैसे ही अमावास्या का भी कहना. जैसे-प्रथम अमावास्या युग की चरम बासठवी अमावास्या से जानना, दूसरी अमावास्या युग की पहिली अमावास्या से कहना. बारहवी अमावास्या इग्यारवी अमावास्या से कहना, इसी तरह उस २ अमावास्या के स्थानक से मंडल

सूत्र

उत्तरावणिवेत्ता एत्थणं से सूरे दोच्चं पुण्णमासिणं जोगं जोतेति, एवं तच्चंपिणवरं दोच्चातो ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं,दुवालसमं पुण्णमासिणं पुच्छा ता जंसिणं देसंसि सूरेतच्चं पुण्णमासिणं जोगंजोतेति ताते पुण्णमासिणीओ ठाणाए मंडलं एगंचउवीसेणं सतेणच्छेत्ता अट्ठछत्तालं भागे उत्तरावणिवित्ता एत्थणं से सूरे दुवालसमं पुण्णमासिणंजोगं जोतेति ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं ताते२पुण्णमासिणीणं ठाणाओ मंडलं एगं चउवीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउति भागे उत्तरावणिवेत्ता तंसि २ देसंसि तंतं पुण्णमासिणं सूरे जोगं जोतेति ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरमवावट्ठी पुच्छा ? ता जंबूद्दीवस्स २ पाईण पडिणयाए उदिणदाहिण मायाते जीवाते

अर्थ

करे. ऐसे ही तीसरी पूर्णिमा का जानना. यहां दूसरी पूर्णिमा से ९४ भाग लेना. अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर की बारहवी पूर्णिमा किस देश में सूर्य योग करके संपूर्ण करे ? अहो शिष्य ! जिस देश में तीसरी पूर्णिमा सूर्य योग करके संपूर्ण करे उस देश से एक मंडल के १२४ भाग करके आठ सो छयालीस (८४६) अनुक्रम से लेना, यहां सूर्य बारहवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे, ९४ को ९ से गुणा करने से ८४६ होते हैं, इसी तरह से उस पूर्णिमा के स्थान से एक २ मंडल के १२४ भाग के ९४ भाग लेकर उस२ देश में पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. अब इन पांच संवत्सर में चरम बासठवी पूर्णिमा की पृच्छा, इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाइ व उत्तर दक्षिण की जिवा से एक मंडल के १२४

मंडलं एगं चउवीसेणं सएणंछेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि सत्तावीसंभागे उवा-
वणित्ता अट्ठावीसतिमं भागं विसह छेत्ता अट्ठारस भागे उवावणित्ता तिहिं भागेहिं
दोहिय कलाहिं दाहिण चउभाग मंडलं मसंपत्त, एत्थणं से सूरे चरम बावट्ठी पुण्ण
मासिणं जोगं जोतेति॥८॥एवं जगेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिया भाणियाओ
तेणं चेव अभिलावेणं अमावसातोवि भाणियव्वाओ तंजहा-पढमा बितिया दुवालसा,
एवं खलु एतेणउवाएणं ताते २ अमावासंठाणाओ मंडलं एग चउवीसेणं सतेणं छेत्ता

भाग करना, पूर्वादिक वृत्ति में मंडल के चौथे भाग में से एकतीस भाग होवे, उस में से २७ भाग और अट्ठाईसवे भाग के २० भाग में के १८ भाग व दो कला लेकर शेष ३ भाग १२४ वे और १ भाग बीसवा और एक कला,इतना शेष रहे उस स्थान सूर्य चरम बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. सूर्य अर्ध मंडल १८३० करता है, दोनों सूर्य मिलकर संपूर्ण मंडल ९१५ करते हैं ॥ ८ ॥ ऐसे ही जिस अभिलाप से चंद्र पूर्णिमा संपूर्ण करे सो कहा, वैसे ही अमावास्या का भी कहना. जैसे-प्रथम अमावास्या युग की चरम बासठवी अमावास्या से जानना, दूसरी अमावास्या युग की पहिली अमावास्या से कहना. बारहवी अमावास्या इग्यारवी अमावास्या से कहना, इसी तरह उस २ अमावास्या के स्थानक से मंडल

सूत्र

उव्वावणित्ता एत्थणं से सूरे दोच्चं पुण्णमासिणं जोगं जोतेति, एवं तच्चंपिणवरं दोच्चातो ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं,दुवालसमं पुण्णमासिणं पुच्छा ता जंसिणं देसंसि सूरेतच्चं पुण्णमासिणं जोगंजोतेति ताते पुण्णमासिणीओ ठाणाए मडलं एगंचउव्विसेणं सतेणच्छेत्ता अट्ठछत्ताले भागे उव्वावणित्ता एत्थणं से सूरे दुवालसमं पुण्णमासिणंजोगं जोतेति ॥ एवं खलु एएणं उवाएणं ताते२पुण्णमासिणीणं ठाणाओ मंडलं एग चउवीसेणं सतेणं छेत्ता चउणवति भागे उव्वावणित्ता तंसि २ देसंसि तंतं पुण्णमासिणं सूरे जोगं जोतेति ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरमबावट्ठी पुच्छा ? ता जंबूद्दीवस्स २ पाइीण पडिणयाए उदिणदाहिण मायाते जीवाते

अर्थ

करे. ऐसे ही तीसरी पूर्णिमा का जानना. यहां दूसरी पूर्णिमा से ९४ भाग लेना. अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर की बारहवी पूर्णिमा किस देश में सूर्य योग करके संपूर्ण करे ? अहो शिष्य ! जिस देश में तीसरी पूर्णिमा सूर्य योग करके संपूर्ण करे उस देश से एक मंडल के १२४ भाग करके आठ सो छियालीस (८४६) अनुक्रम से लेना, यहां सूर्य बारहवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे, ९४ को ९ से गुना करने से ८४६ होते हैं, इसी तरह से उस पूर्णिमा के स्थान से एक २ मंडल के १२४ भाग के ९४ भाग लेकर उस२ देश में पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे. अब इन पांच संवत्सर में चरम बासठवी पूर्णिमा की पृच्छा, इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाइ व उत्तर दक्षिण की जिवा से एक मंडल के १२४

ठाणाते मंडलं एगं चउवीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउति भागे उवावणिवेत्ता ॥ एत्थणं से सूरे पढमं अमावासं जोगं जोतेति॥ एवं जेणेव अभिलावेणं सूरस्स पुण्णमासिणिओ भणिताओ तेणेव अमावासाओवि तंजहा-बितिया ततिया जाव दुवालसमा एवं खलु एतेणं उवातेणं ताते २ अमावास ट्ठाणाते मंडलं एगं चउवीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउतिं भागे उवावणिवेत्ता तंसि २ देसांसि अमावासं सूरे जोगं जोतेति, ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराण चरम बावट्ठी अमावासं पुच्छा, ता जंसिणं देसांसि सूरे चरम बावट्ठी पुण्णमासिणं जोगं जोतेति।।ताते पुण्णमासिणिट्ठाणएतं, मंडलं एगं चउवीसेणं सतेणं छेत्ता सुयालिसं भागे उसक्कावातित्ता, एत्थणं से सूरे चरम बावट्ठी अमावासं जोगं जोतेति

कही वैसे ही अमावास्याओं कहना. जैसे प्रथम अमावास्या के स्थान से ९४ भाग में दूसरी अमावास्या, दूसरी अमावास्या के स्थान से ९४ भाग में अनुक्रम से तीसरी अमावास्या यावत् अग्यारवी अमावास्या के स्थान से ९४ भाग में बारहवी अमावास्या. इसी तरह उस २ अमावास्या के स्थान से एक मंडल के १२४ भाग के ९४ भाग अनुक्रम से लेकर उस देश में अमावास्या सूर्य की साथ योग करे. अब इन पांच संवत्सर में चरम बासठवी अमावास्या की पृच्छा, जिस देश में सूर्य चरम बासठवी पूर्णिमा पूर्ण करे उस देश से एक मंडल के १२४ भाग के ४७ भाग पीछे लेकर सूर्य चरम बासठ॥

घत्तीसं २ भागे उवावणिवेता, तंसि २ देसंसि तंतं अमावासं चंदे जोगं जोतेति. ता ऐसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरम वावट्ठि अमावासं पुच्छा ता जंसिणं देसंसि चंदे चरम वावट्ठि पुण्णमासिणं जोतेति ताते पुण्णमासिणिठाणाते मंडलं एतचउविसेणं संतेणं छेत्ता सोलसम भागे, उसक्कावइत्ता, एत्थणं से चरम वावट्ठिं अमावासं जोतति ॥ ९ ॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासंसूरे कांसिदेसंसि जामेजोतेति ता जंसिणं सूरे चरमवावट्ठिअमावासं जोगंजोतेति॥ता-एतंसिणं अमावासं जोगंजोतेति ता तेअमावासं

के १२४ भाग छेद कर अनुक्रम से बत्तीस भाग लेना, उस २ देश के स्थानक से उस २ मास की अमावास्या को चंद्र योग करके संपूर्ण करे. इन पांच संवत्सर में बासठवी अमावास्या की पुच्छा, जिस देश में चंद्रमा चरम बासठवी पूर्णिमा योग करके संपूर्ण करे उस पूर्णिमा को स्थान में एक मंडल के १२४ भाग करे वैसे सोलह भाग पीछे लेना. यहां युग की चरम बासठवी अमावास्या योग करके संपूर्ण करे ॥ ९ ॥ इन पांच संवत्सर में प्रथम अमावास्या को सूर्य कौनसे विभाग में संपूर्ण करे ? जिस विभाग में सूर्य चरम बासठवी अमावास्या योग करे उस स्थान से एक मंडल के १२४ भाग करके ९४ भाग अनुक्रम से ग्रहण करना. यहां सूर्य प्रथम अमावास्या को योग करके संपूर्ण करे, ऐसे ही ऐसे सूर्य की पूर्णिमाओं

जोतेति? ता धणिट्ठाहिं धणिट्ठा तिण्णि मुहुत्त एकूणवीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठी.

३४०३८००, यह एक नक्षत्र मास की धूवराशि हुई. अब चंद्रमास की धूवराशि बताते हैं. पांच संवत्सर के १८३० दिन, इस को ६२ मे भाग देने से २९ दिन १५ मुहुर्त और एक मुहुर्त के बासठीये ३० भाग होवे. इस के चूरणिये भाग करने के लिये दिन को ३० से गुना करना और उस में १५ मीलाना २९×३०+१५=८८५. उन को ६२ से गुना करके ३० मीलाना ८८५×६२+३०=५४९००. उसे ६७ से गुना करने से ३६७८३०० चूरणिये भाग चंद्रमास के हुवे. यह दूसरी धूवराशि हुई. चंद्रमा कौनसे नक्षत्र की साथ योग करके प्रथम-मास संपूर्ण करे, यह जानने के लिये दूसरी धूवराशि को एक से गुना करके प्रथम धूवराशि से भाग देना. ३६७८३००×१-३६७८३००÷३४०३८०० इसी से एक पूर्ण आवे और २७४५०० शेष रहे. इस को ६२ ये भाग करने के लिये ६७ से भाग देना, जिस से ४०९७ पूर्ण भाग हुवे, और शेष एक रहा. इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना जिस मे ६६ मुहूर्त और ५ भाग शेष रहे. अर्थात् एक माप पूर्ण होने में एक नक्षत्र मास, ६६ मुहूर्त, ५ भाग ६२ ये, और एक भाग ६७ ये होवे. युग के प्रारंभ मे ही चंद्रमा की साथ अभिजित नक्षत्र का योग होता है, वह नक्षत्र ९ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये व ६६ भाग ६७ ये तक रहता है. इस से आगे श्रवण नक्षत्र तीस मुहूर्त तक रहता है, इस से ६६ मुहूर्त-५ भाग ६२ये १ भाग ६७ये में से ३९ मुहूर्त २४ भाग ६२ये ६६

सूत्र

॥१०॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमा पुण्णमासिणं चंदे, केणं नक्खत्तेणं जोगं

अर्थ

अमावास्या योग करके संपूर्ण करे ॥ १० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम पूर्णिमा को चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करके संपूर्ण करे ? उत्तर—धनिष्ठा नक्षत्र की साथ योग करके चंद्र प्रथम पूर्णिमा संपूर्ण करे. यह धनिष्ठा नक्षत्र तीन मुहूर्त बासठीये उन्नीस भाग व एक बासठीये भाग के ६७ भाग में के ६५ भाग. इतना काल पर्यंत चंद्र धनिष्ठा नक्षत्र की साथ योग करके प्रथम पूर्णिमा संपूर्ण करे. इस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है ? उस समय पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की साथ सूर्य योग करता है. इस नक्षत्र के २८ मुहूर्त ३८ भाग बासठीये और ३२ भाग ६७ ये शेष रहे तब प्रथम पूर्णिमा संपूर्ण होवे. इस का गणित करने की विधि-चंद्रमा की साथ नक्षत्र योग करके पूर्णिमा संपूर्ण करे उस नक्षत्र को नीकालने के लिये ध्रुवराशि बनाना. पांच संवत्सर के चंद्रमास ६२ हैं, और पांच संवत्सर में नक्षत्र ६७ बार चंद्र की साथ योग करते हैं. पांच संवत्सर की १८३० अहोरात्रि होती है. उसे ६७ का भाग देने से २७ दिन ९ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये और ६६ चूरणिये भाग ६७ ये होवे है. इन के चूरणीये भाग करने को २७ दिन को तीस से गुणा करके ९ बढाना. २७×३०+९=८१९. उसके बासठीये भाग करने को ६२ से गुना करके २४ भाग मीलाना. ८१९×६२+ २४=५०८०२ इस के चूरणिये ६७ ये भाग करने को ६७ से गुना करके ६६ चूरणिये भाग मीलाना. ५०८०२×६७+६६=

तेणं जोगं जोतेति ? पुव्वाहिं फग्गुणिहिं । पुव्वाफग्गुणीए अट्ठावीसं च मुहुत्ता अट्ठतीसं

भाग देने से कोई भी पुर्णांक नहीं आता है, इसलिये इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना जिससे ८८५ मुहूर्त व ३० भाग ६२ ये होवे. अब प्रथम युग बैठने के प्रथम समय में सूर्य की साथ पुष्य नक्षत्र १.३८ मुहूर्त में पूर्ण होकर १.३९ व मुहूर्त से २६४ मुहूर्त पर्यंत योग कर के नक्षत्र की समाप्ति होवे, इस से पुष्य नक्षत्र से गिनती करना. प्रथम पूर्णमास संपूर्ण होते सूर्य ८८५ मुहूर्त ३० भाग ६२ ये तक नक्षत्र की साथ योग करे, और मघा

पुष्य	२६४	स्वाति	२८७७	अभिजित	५६१६	अश्विनी	८४३०
अश्लेषा	४६५	विशाखा	३४८०	श्रवण	६०१८	भरणी	८६३१
मघा	८६७	अनुराधा	३८८२	धनिष्ठा	६४२०	कृत्तिका	९०३३
पूर्वा फल्गुनी	१२६९	ज्येष्ठा	४०८३	शतभिषा	६६२१	रोहिणी	९६३६
उत्तरा फाल्गुनी	१८७२	मूल	४४८५	पूर्वाभाद्रपद	७०२३	मृगशर	१००३८
हस्त	२२७४	पूर्वाषाढा	४८८७	उत्तराभाद्रपद	७६२६	आर्द्रा	१०२३९
चित्रा	२६७६	उत्तराषाढा	५४२०	रेवति	८०२८	पुनर्वसु	१०८४२
						पुष्य	१०९८०

सूत्र

भागेच सत्तसट्ठियं छेत्ता पंचसट्ठिचुण्णया भागा सेसा तं समयं च णं सूरे केण णक्खत्त-

अर्थ

भाग ६७ये बाद करना इससे २६मुहूर्त ४२भाग ६२ये दो भाग ६७ये धनिष्ठा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह धनिष्ठा नक्षत्र तीस मुहूर्त का है, इस से धनिष्ठा के मुहूर्त में से पूर्वोक्त मुहूर्त बाद करने से तीन मुहूर्त १९भाग ६२ये ६५ भाग ६७ये इतना काल धनिष्ठा नक्षत्र पूर्णिमा संपूर्ण होने पर शेष रहते है. अब सूर्य की साथ नक्षत्र के योग पूर्णिमा संपूर्ण होवे यह नीकालने का यंत्र-पांच संवत्सर में चंद्र मास बासठ है और सूर्य की साथ एक २ नक्षत्र पांच बार परिभ्रमण करते हैं पांच संवत्सर की १८३० अहोरात्रि है इस से १८३० को पांच का भाग देने से ३६६ पूर्ण आवे. इन ३६६ दिन में सूर्य संपूर्ण अट्ठाईस नक्षत्रों की साथ योग करता है. इस के मुहूर्त के बासठ ये भाग करने को ३६६ दिन को ३० से गुना करना, इस से १०९८० मुहूर्त होवे, इस को ६२ से गुना करना जिस से ६८०७६० भाग ६२ ये होवे. यह एक नक्षत्र वर्ष होवे, यह प्रथम ध्रुवराशि हुइ. चंद्र मासकी ध्रुवराशि पांच संवत्सर के १८३० दिन होवे, इस को बासठ से भाग देने से २९ दिन १५ मुहूर्त व ३० भाग ६२ ये होवे, इस के मुहूर्त करने को २९ को ३० गुणा कर के १५ मीलाना-२९×३०+१५=८८५ मुहूर्त होवे इस के बासठ ये भाग करने के लिये ६२ से गुणा कर के ३० मीलाना ८८५×६२+३०=५४९००. यह चंद्र मास के भाग हुवे. यह दूसरी ध्रुवराशि हुइ. सूर्य कोन से नक्षत्र की साथ योग करता हुवा प्रथम चंद्र मास समाप्त करे यह नीकालने को दूसरी ध्रुवराशि को एक से गुणाकर के प्रथम ध्रुवराशि से भाग देना. इस तरह

तेणं जोगं जोतेति ? पुव्वाहिं फग्गुणिहिं । पुव्वाफग्गुणीए अट्ठावीसं च मुहुत्ता अट्ठतीसं

भाग देने मे कोई भी पुर्णांक नहीं आता है, इसलिये इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना जिससे ८८५ मुहूर्त व ३० भाग ६२ ये होवे. अब प्रथम युग बैठने के प्रथम समय में सूर्य की साथ पुष्य नक्षत्र १३८ मुहूर्त में पूर्ण होकर १३९ व मुहूर्त मे २६४ मुहूर्त पर्यंत योग कर के नक्षत्र की समाप्ति होवे, इस से पुष्य नक्षत्र से गिनती करना. प्रथम पूर्णमास संपूर्ण होते सूर्य ८८५ मुहूर्त ३० भाग ६२ ये तक नक्षत्र की साथ योग करे, और मघा

पुष्य	२६४	स्वाति	२८७७	अभिजित	५६१६	अश्विनी	८४३०
अश्लेषा	४६५	विशाखा	३४८०	श्रवण	६०१८	भरणी	८६३१
मघा	८६७	अनुराधा	३८८२	धनिष्ठा	६४२०	कृत्तिका	९०३३
पू. फल्गुनी	१२६९	ज्येष्ठा	४०८३	शतभिषा	६६२१	रोहिणी	९६३६
उत्त. फल्गुनी	१८७२	मूल	४४५	पूर्वाभाद्रपद	७०२३	मृगशर	१००३८
हस्त	२२७४	पूर्वाषाढा	४८८७	उत्तरा भाद्रपद	७६२६	आर्द्रा	१०२३९
चित्रा	२६७६	उत्तराषाढा	५४९०	रेवति	८०२८	पुनर्वसु	१०८४२
						पुष्य	१०९८०

सूत्र

भागेच सत्तासट्ठियं छेत्ता पंचसट्ठिचुण्णिया भागा सेसा तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्त-

अर्थ

भाग ६७ये बाद करना इससे २६ मुहूर्त ४२ भाग ६२ये दो भाग ६७ये धनिष्टा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह धनिष्टा नक्षत्र तीस मुहूर्त का है, इस से धनिष्टा के मुहूर्त में से पूर्वोक्त मुहूर्त बाद करने से तीन मुहूर्त १९ भाग ६२ ये ६५ भाग ६७ ये इतना काल धनिष्टा नक्षत्र पूर्णिमा संपूर्ण होने पर शेष रहता है. अब सूर्य की साथ नक्षत्र के योग पूर्णिमा संपूर्ण होवे यह नीकालने का यंत्र-पांच संवत्सर में चंद्र मास बासठ है और सूर्य की साथ एक २ नक्षत्र पांच वार परिभ्रमण करते हैं पांच संवत्सर की १८३० अहोरात्रि है इस से १८३० को पांच का भाग देने से ३६६ पूर्ण आवे. इन ३६६ दिन में सूर्य संपूर्ण अट्ठाइस नक्षत्रों की साथ योग करता है. इस के मुहूर्त के बासठिये भाग करने को ३६६ दिन को ३० से गुना करना, इस से १०९८० मुहूर्त होवे, इस को ६२ से गुना करना जिस से ६८०७६० भाग ६२ ये होवे. यह एक नक्षत्र वर्ष होवे, यह प्रथम ध्रुवराशि हुइ. चंद्र मासकी ध्रुवराशि पांच संवत्सर के १८३ दिन होवे, इस को बासठ से भाग देने से २९ दिन १५ मुहूर्त व ३० भाग ६२ ये होवे, इस के मुहूर्त करने को २९ को ३० गुणा कर के १५ मीलाना-२९×३०+१५=८८५ मुहूर्त होवे इस के बासठ ये भाग करने के लिये ६२ से गुणा कर के ३० मिलाना ८८५×६२+३०=५४९००. यह चंद्र मास के भाग हुवे. यह दूसरी ध्रुवराशि हुइ. सूर्य कोन से नक्षत्र की साथ योग करता हुवा प्रथम चंद्र मास समाप्त करे यह नीकालने को दूसरी ध्रुवराशि को एक से गुणाकर के प्रथम ध्रुवराशि से भाग देना. इस तरह
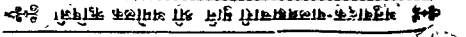
नक्खत्तेणं जोगंजोतेति ? ता उत्तराहिं पोट्ठवलाहिं उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता, चउद्दसय बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागंच सत्त सट्ठिया छेत्ता, चउसट्ठि चुण्णिया भागा सेसा तंसमयं चणं सूरे केण णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ताउत्तराहिं फग्गुणिहिं उत्तराणं फग्गुणीणं सत्तमुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागंच सत्त-सिट्ठया एक्कत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा, ॥१२॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुणमासिणं चंदण केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता अस्सिणिहिं अस्सिणीणं एक्कवीसंच

संवत्सर में दूसरी पूर्णिमा पूर्ण होते चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता हैं ? उत्तराभाद्रपद नक्षत्र की साथ योग कर के दूसरी पूर्णिमा संपूर्ण करे. यह नक्षत्र २७ मुहूर्त १४ भाग ६२ ये और ६४ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब दूसरा मास संपूर्ण होता है. इस समय सूर्य कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है ? इस समय सूर्य उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र सात मुहूर्त ३३ भाग ६२ ये और ३१ भाग ६७ ये शेष रहे तब दूसरा मास संपूर्ण होवे. ॥ १२ ॥ इन पांच संवत्सर में तीसरी पूर्णिमा को कौनसा नक्षत्र की साथ चंद्र योग करता है? इन पांच संवत्सर में तीसरी पूर्णिमा को चंद्रमा अश्विनी नक्षत्र की साथ योग करता है, यह अश्विनी नक्षत्र

सूत्र

बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्त सट्ठिया छेत्ता दुवातीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ ११ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिणं चंदे केणं

अर्थ

नक्षत्र ८६७ मुहूर्त में संपूर्ण होवे. इस से ८८५ मुहूर्त ३० भाग ६२ ये में से ८६७ मुहूर्त बाद करने से १८ मुहूर्त ३० भाग बासठीये पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र की साथ योग करे. यह पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र ४०२ मुहूर्त का है, जिस में से १८ $\frac{३०}{६२}$ मुहूर्त बाद करने से ३८३ $\frac{३२}{६२}$ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के शेष रहे हैं, तब सूर्य प्रथम पूर्णमास संपूर्ण करे. सूर्य नक्षत्र ३८३ $\frac{३२}{६२}$ मुहूर्त शेष रहे तब चंद्र नक्षत्र कितना शेष रहे ३८३ को ६२ से गुणा करके ३२ भाग मीलाना ३८३×६२+३२=२३७७८ भाग हुवे. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र ३० मुहूर्त तक चंद्र की साथ योग करता है, इस से इसे ३० से गुना. २३७७८×३०=७१३३४०. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र ४०२ मुहूर्त तक सूर्य की साथ योग करता है. इस से पूर्वोक्त संख्या को ४०२ से भाग देना, जिस से १७७४ भाग पूर्ण और १९२ शेष रहे. इस के ६७ ये भाग करने को ६७ से गुणा करना जिस से १२८६४ होवे, इस को ४०२ से भाग देने से ३२ भाग ६७ पूर्ण आवे. १७७४ बासठीये भाग के मुहूर्त करने से २८ मुहूर्त व ३८ शेष रहे. इस से चंद्र नक्षत्र सूर्य की साथ २८ मुहूर्त ३८ भाग ६२ या ३२ भाग ६७ या शेष रहे तब प्रथम पूर्णिमा संपूर्ण होवे. ॥ ११ ॥ प्रश्न—इन पांच
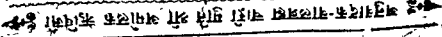
छव्वीसंच बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागासेसा तं समयं चणं सूरे केण णक्खत्तेणं जोगं जोएति ता पुण्णवसुहिं पुणव्वसुण सोलस मुहुत्ता अट्ठयाबावट्ठी मुहुत्तस्स भागा बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठीया छेत्ता वीस चुण्णिया भागा सेसा ॥ १४ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरम बावट्ठी

पुनर्वसू २१६ मुहूर्त १२ भाग ६२ या शेष रहे तब बासठवी पूर्णिमा संपूर्ण होवे. यहां ध्रुवराशि को बारह गुना करना ॥ १४ ॥ इन पांच संवत्सर मे चरम बासठवी पूर्णिमा को चंद्र कौन सा नक्षत्र की साथ योग करता है ? बासठवी पूर्णिमा को चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. उत्तराषाढा नक्षत्र के चरिम समय में योग कर के बासठवा मास पूर्ण करे. उस समय सूर्य कौन से नक्षत्र की साथ योग करे? उस समय सूर्य पुष्य नक्षत्र की साथ योग करे. यह पुष्य नक्षत्र १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये तेवीस भाग ६७ ये शेष रहे और सूर्य नक्षत्र २६४ मुहूर्त शेष रहे तब बासठवा पूर्णिमा संपुर्ण होवे. इस में प्रथम ध्रुव राशिको ६२ से गुना करना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम अमावास्या चंद्र कौन से नक्षत्र की साथ योग कर के पूर्ण करे ? इन पांच संवत्सर में प्रथम अमावास्या अश्लेषा नक्षत्र की साथ योग कर के पूर्ण करे. यह अश्लेषा नक्षत्र एक मुहूर्त ४० भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ या शेष रहे तब प्रथम अमावास्या संपूर्ण होवे, इस की विधि बताते है, प्रथम अमावास्या में अर्ध मास होवे, इस से दूसरी

महुत्ता, णत्रय नावट्ठी भागा महुत्तस्स बावट्ठीभागं च सत्तासट्ठियो छेत्ता, तेवट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तं समयं चणं सूरे कणं नक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता चित्ताहिं चित्ताणं एक मुहुत्त अट्ठावीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्त सट्ठीया छेत्ता तीसंचुण्णिया भागा सेसा ॥ १२ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं सवच्छराणं दुवालसमं पुण्णमासिणं पुच्छा ? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तरासढाहिं छव्वीसं मुहुत्ता

२१ मुहूर्त २ भाग बासठीये तेसठ चुणिया भाग ६७ये शेष रहे तब तीसरा मास पूर्ण होता है. उस समय सूर्य कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है? उस समय सूर्य चित्रा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह चित्रा नक्षत्र एक मुहूर्त २८ भाग ६२ या ३० चुणिया भाग ६७ या शेष रहे और सूर्य नक्षत्र १९ मुहूर्त ३४ भाग ६२ या शेष रहे तब तीसरा मास संपूर्ण होवे ॥ १३ ॥ इन पांच संवत्सर में बारहवी पूर्णिमा को चंद्रमा कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है ? बारहवी पूर्णिमा को चंद्रमा उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है यह उत्तराषाढा नक्षत्र २६ मुहूर्त २६ भाग ६२ ये ५४ भाग ६७ ये शेष रहे तब बारहवी पूर्णिमा संपूर्ण होवे. उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है ? उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है यह नक्षत्र १६ मुहूर्त ८ भाग ६२ या, २० भाग ६७ या शेष रहे तब और सूर्य नक्षत्र

अमावासे चंदे केणं नक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता असलेसाहिं असलेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता छावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति, ता असलेसाहि चेव, असलेसा

अमावास्या में आधा मास होवे इस से दूसरी ध्रुवराशि ५४९०० का आधा करने से २७४५० होवे इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देने से ४४२ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये रहे. इस में से पुष्य नक्षत्र के २६४ मुहूर्त जाते अश्लेषा नक्षत्र १७८ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये का रहा. अश्लेषा नक्षत्र २०१ मुहूर्त का है जिस में से १७८ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये जाने से २२ मुहूर्त १६ भाग ६२ ये का सूर्य नक्षत्र रहे, तब मघा अमावास्या पूर्ण होवे. अब सूर्य नक्षत्र इतना रहा तब चंद्र नक्षत्र कितना रहे? बाइस मुहूर्त के ६२ये भाग करने को ६२ से गुणा करना, और १६ मीलाना २२×६२+१६=१३८० भाग ६२ये होवे, और अश्लेषा नक्षत्र चंद्र की साथ १५ मुहूर्त पर्यंत योग करता है, इस से १३८० को १५ से गुना करना, जिन से २०७०० होवे और यह नक्षत्र सूर्य की साथ २०१ मुहूर्त पर्यंत योग करता है इस से २०७०० को २०१ का भाग देना, इस से १०२ भाग ६२ ये आये और शेष १९८ रहे इस के ६७ ये भाग करने को ६७ गुणा करना, जिन से १३२६६ होवे उसे २०१ से भाग देने से ६६ आये. १०२ बासठीये

सूत्र

पुण्णमासिणं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरम समय तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता पुरसेणं पुरसस्सणं एकोण विसंमुहुत्ता तेत्तालिसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तास्स बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठीया छेत्ता, तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा, ॥१५॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं

अर्थ

धृवराशि ३६७८३०० का अर्ध करने से १८३९१५० होवे, इस के ६२ ये भाग करने को ६७ से भाग देना इस से २७४५० आवे, और शेष कुच्छ नहीं रहे. मुहूर्त करने को २७४५० को ६२ से भाग देने से ४४२ मुहूर्त और शेष ४६ भाग रहे. पुष्य नक्षत्र पर्यंत ४२९ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ ये होते हैं इन में से ४४२$\frac{46}{62}$ मुहूर्त बाद करना शेष १३ मुहूर्त २१ भाग ६२ या व एक भाग ६७ या रहा. अश्लेषा नक्षत्र सब मीलकर १५ मुहूर्त का है, उस में से पूर्वोक्त मुहूर्त बाद करने से शेष एक मुहूर्त ४० भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ ये रहे; उस समय प्रथम अमावस्या संपूर्ण होवे. अहो भगवन्! उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करके संपूर्ण करे? उस समय सूर्य अश्लेषा नक्षत्र की साथ योग करके संपूर्ण करे. यह नक्षत्र एक मुहूर्त ४० भाग ६२ ये और ६६ भाग ६७ ये शेष चंद्र नक्षत्र रहने पर ये नक्षत्र२९ मुहूर्त६ भाग ६२ये शेष रहने पर प्रथम अमावास्या पूर्ण होवे. इस की विधि बताते हैं. प्रथम

अमावासे चंदे केणं नक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता, असलेसाहिं असलेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं चं बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता छावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति, ता असलेसाहिं चेव, असलेसा

अमावास्या में आधा मास होवे इस से दूसरी ध्रुवराशि ५४९०० का आधा करने से २७४५० होवे इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देने से ४४२ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये रहे. इस में से पुष्य नक्षत्र के २६४ मुहूर्त जाते अश्लेषा नक्षत्र १७८ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये का रहा. अश्लेषा नक्षत्र २०१ मुहूर्त का है जिस में से १७८ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये जाने से २२ मुहूर्त १६ भाग ६२ ये का सूर्य नक्षत्र रहे तब प्रथम अमावास्या पूर्ण होवे. जब सूर्य नक्षत्र इतना रहा तब चंद्र नक्षत्र कितना रहे? बाइस मुहूर्त के ६२ये भाग करने को ६२ से गुणा करना, और १६ मीलाना २२×६२+१६=१३८० भाग ६२ये होवे, और अश्लेषा नक्षत्र चंद्र की साथ १५ मुहूर्त पर्यंत योग करता है, इस से १३८० को १५ से गुना करना, जिस से २०७०० होवे और यह नक्षत्र सूर्य की साथ २०१ मुहूर्त पर्यंत योग करता है इस से २०७०० को २०१ का भाग देना, इस से १०२ भाग ६२ ये आये और शेष १९८ रहे इस के ६७ ये भाग करने को ६२ गुणा करना, जिस से १३२६६ होवे उसे २०१ से भाग देने से ६६ आये. १०२ बासठीये

सूत्र

णं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागं च सत्त सट्ठिया छेत्ता छावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ॥ १६ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे पुच्छा? ता उत्तरा फग्गुणिहिं उत्तराफग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता, पणतीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता पण्णट्ठी चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं पुच्छा ? ता उत्तराहिं फग्गुणिहिं उत्तराणं फग्गुणीण चत्तालीसं मुहुत्ता तंचेव जाव पण्णट्ठी चुण्णिया भागासेसा ॥ १७ ॥

अर्थ

भाग के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना इस से १ मुहूर्त ४० भाग ६२ ये हुवे इस से चंद्र नक्षत्र अश्लेषा मुहूर्त ४० भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ ये सूर्य की साथ शेष रहने पर प्रथम अमावास्या पूर्ण करे. ॥ १६ ॥ इन पांच संवत्सर में दूसरी अमावास्या को चंद्रमा कौन नक्षत्र की साथ योग करके संपूर्ण करे? दूसरी अमावास्या को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र योग करे. इस नक्षत्र का ४० मुहूर्त ३५ भाग ६२ ये और ६५ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब दूसरी अमावास्या संपूर्ण होवे. इस का गणित प्रथम अमावास्या जैसे जानना; इस से दूसरी ध्रुवराशिका देढा करना क्यों कि यह अमावास्या देढ मास में पूर्ण होती है. इस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है? इस समय सूर्य उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र की साथ योग करे यह उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र ४० मुहूर्त ३५ भाग ६२ ये और ६५ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब और सूर्य नक्षत्र ५४१ मुहूर्त ४८ भाग ६२ये शेष रहे तब दूसरी अमावास्या संपूर्ण होवे ॥ १७ ॥

तुम्हा एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे पुच्छा, ता हत्थेणं हत्थणं चत्तारिमुहुत्ता तीसं च बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता चउसट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयं चणं सूरे केणं पुच्छा ? ता हत्थेणं चेव हत्थगं जंचेव चंदस्स ॥ १८ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं पुच्छा ? ता अद्दाहिं अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता दसयबावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी

इन पांच संवत्सरों में तिसरी अमावास्या को चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? तीसरी अमावास्या को हस्त नक्षत्र योग करता है. इस नक्षत्र का चार मुहूर्त १० भाग ६२ ये ६४ भाग ६७ ये शेष रहे तब तीसरी अमावास्या संपूर्ण होवे. इस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है ? इस समय सूर्य हस्त नक्षत्र की साथ योग करके अमावास्या संपूर्ण करे. यह हस्त नक्षत्र चार मुहूर्त १० भाग ६२ या और ६४ भाग ६७ ये शेष रहे और सूर्य नक्षत्र ६० मुहूर्त १८ भाग ६२ या शेष रहे तब तीसरी अमावास्या संपूर्ण होवे. इस की गिनती प्रथम अमावास्या जैसे ही लेना परंतु इस में २॥ से गुणा करना कों की यह २॥ मास में पूर्ण होवे. ॥ १८ ॥ इन पांच संवत्सर में बारहवी अमावास्या कौन से नक्षत्र में संपूर्ण होवे ? बारहवी अमावास्या को चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह आर्द्रा नक्षत्र चार मुहूर्त १० भाग ६२ ये ५४ भाग ६७ ये शेष रहे तब बारहवी अमावास्या संपूर्ण होवे है

मूल

भागं च सत्त सट्ठिया छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा॥ तं समयं चणं सूरे केणं पुच्छा? ता अद्दाहिं चेव अद्दाणं चत्तारि जंचेव चंदस्स तंचेव ॥ १९ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरम बावाठि अमावासं चंदे केणं पुच्छा ? ता पुणव्वसुणा-पुणव्वसुणं बावीसं मुहुत्ता छयालीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स तं समयं चणं सूरे केणं पुच्छा? ता पुणव्वसुहिं पुणव्वसुणं बावीसं जंचेव चंदस्स तंचेव ॥ २० ॥ ता जेणं २ नक्खत्तेणं चंदे जोगं जोतेति जंसिदेसंसि तेणं इमाति अट्ठएकूणवीसाइं मुहुत्तसयाइं

अर्थ

इस समय सूर्य कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है ? इस समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह आर्द्रा नक्षत्र चार मुहूर्त १० भाग ६२ ये ५४ भाग ६७ ये शेष रहे और सूर्य नक्षत्र ५९ मुहूर्त ५८ भाग ६२ ये शेष रहे तब बारहवी अमावास्या संपूर्ण होती है. यहां ध्रुवराशि को ११॥ से गुणना. ॥ १९ ॥ इन पांच संवत्सर में चरम बासठवी अमावास्या को चंद्र कौन से नक्षत्र साथ योग करता है ? बासठवी अमावास्या को चंद्र पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है, यह पुनर्वसु नक्षत्र २२ मुहूर्त ४६ भाग ६२ ये शेष रहे तब बासठवी अमावास्या संपूर्ण होती है. उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह पुनर्वसु नक्षत्र २२ मुहूर्त ४६ भाग ६२ या शेष रहे और सूर्य नक्षत्र १०४ मुहूर्त ४६ भाग ६२ या शेष रहे तब चरम बासठवी अमावास्या संपूर्ण होवे॥२०॥ जिस नक्षत्र की साथ चंद्र का जिस देश में योग होता है

चउव्वीसं बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तं सट्ठिया छेत्ता छावट्ठी चुण्णिया भागा उवावाणेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेण तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोएति अन्नंसि देसंसि ॥ ता जेणं णक्खत्तेण चंदे जोगं जोएति जंसिदेसंसि सेणं इमाइं सोलस अट्ठतीसं मुहुत्तसयाति, एगउणपन्नासं बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता पण्णट्ठी चुण्णियाभागा उवावणिवित्ता ॥ पुणरवि से चंद

वही चंद्रमा ८१९ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये व ६६ भाग ६७ ये इतना काल गये पीछे अन्य वैसे ही नक्षत्र की साथ योग क्या करता है ? उत्तर—चंद्र, सूर्य व नक्षत्र इन तीन के चक्रवाल क्षेत्र के १०९८०० भाग करे. उस में नक्षत्र की गति शीघ्र है, इस से मंद गति सूर्य की है और इस से मंदगति चंद्र की है. अब युग के प्रथम समय में अभिजित नक्षत्र चंद्रमा की साथ योग करता हुवा ९ मुहूर्त २४ भाग ६२ या ६६ भाग ६७ या रहकर आगे चला जावे. पीछे श्रवण नक्षत्र का योग होवे. वह तीस मुहूर्त साथ रहकर आगे चलाजावे पीछे धनिष्ठा नक्षत्र का योग होवे इसी तरह जो २ नक्षत्र जितना २ मुहूर्त का है उतने मुहूर्त चंद्र की साथ रहकर आगे जावे. इसी तरह यावत् उत्तराषाढा नक्षत्र आगे जावे. और दूसरे मास के प्रथम समय में पुनः अभिजित नक्षत्र का चंद्र की साथ योग होवे. इतने में ८१९ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ ये इतना काल होवे. जिस नक्षत्र की साथ जिस देश में चंद्रमा का योग हुवा है

सूत्र

अण्णेणं तारिसएणं णक्खत्तेणं जोगं जोएति अण्णांसि देसंसि ॥ ता जेणं २ णक्खत्तेणं चंदे जोगं जोतेति तांसि देसंसि तेणं इमाति चउप्पन्न मुहुत्तसहस्साति णवयमुहुत्त सयाई उवआणिवेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोतेति, तांसि देसंसि ता जेणं णक्खत्तेणं चंदे जोगं जोतेति जांसि देसांसि सेणं इमाई एगमुहुत्त सयसहस्स अट्ठणवतिंच मुहुत्तसयाति उवावणावित्ता ॥ पुणरवि से चंदे तेणं

अर्थ

वही चंद्रमा काल से १६३८ मुहूर्त ४२ भाग ६२ ये ६० चुर्णिये भाग ६७ ये इतना काल गये पीछे पुनः अन्य वैसे नक्षत्र की साथ योग करता है. अर्थात् प्रथम नक्षत्र मास के प्रथम समय में जो नक्षत्र होवे वह नक्षत्र तीसरे नक्षत्र मास के प्रथम समय में योग करे तब १६३८ मुहूर्त ४२ भाग ६२ ये ६० भाग ६७ ये इतना काल व्यतीत हो जावे. जिस नक्षत्र की साथ जिस दिशा में चंद्रमा की साथ योग करे उस काल से ५४९०० मुहूर्त गये पीछे पुनः चंद्र अन्य वैसा ही नक्षत्र की साथ उस ही दिशा में योग करे अर्थात् युग की आदि में प्रथम नक्षत्र में जो नक्षत्र का योग होवे वही नक्षत्र अनुक्रम से योग त्यजता हुवा ६७ नक्षत्र मास पूर्ण होकर ६८ वे नक्षत्र मास में चंद्र की साथ योग करे तब ५४९०० मुहूर्त होवे. जिस नक्षत्र की साथ जिस देश में चंद्र योग करे वहां से एक लाख अट्ठाणे हजार मुहूर्त गये पीछे चंद्र अन्य वैसा ही नक्षत्र की साथ योग करता है, अर्थात् संपूर्ण चक्र में ६७ नक्षत्रों हैं. यह नक्षत्र के

णक्खत्तेणं सूरं जोगं जोतेति जंसि देसंसि, सेणं इमाई अट्ठारसतीसाई रातिदिय सयाति उवाविणिवित्ता पुणरवि से सूरे अण्णेणं तारिसएणं चेव नक्खत्तेणं जोगं जोतेति तंसि देसंसि, ता जणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोगं जोतेति जंसि देसंसि तेणं इमाति छत्तीस सट्ठाइनि रातिदियसयाइं उवाणित्तिसा पुणरावसे सूरे तेणं चेव णक्खत्तेण जोगं जोतेति तंसि २ देसंसि ॥ २२ ॥ ता जयाणं च इमे चंदे गति समावण्णे भवति तताणं इतरेवि चंदे गति समावण्णे भवति, जयाणं इतरेवि चंदेगति

जो नक्षत्र जिस देश में सूर्य की साथ योग करे उस देश से ७३२ अहोरात्रि अनुक्रम से गये पीछे पुनः सूर्य उस ही नक्षत्र की साथ अन्य सादृशपने योग करता है. अर्थात् अठारह नक्षत्र का दो चक्र होवे. जिस नक्षत्र की साथ जिस देश में सूर्य योग करता है उस ही नक्षत्र की साथ पुनः सूर्य १८३० रात्रि दिन गये पीछे योग करता है. जिस नक्षत्र की साथ जिस देश में सूर्य योग करता है उस देश से ३६६० रात्रि दिन गये पिछे उसही नक्षत्र की साथ सूर्य योग करता है. ॥ २२ ॥ जंबूद्वीप में दो चंद्र व दो सूर्य हैं. प्रत्येक को भिन्न २ ग्रहादिक का परिवार है इस से इस का विवरण के लिये कहते हैं. जब भरत क्षेत्र में चंद्र प्रकाश करता हुवा गति समापन्न होवे तब अन्य एरवत क्षेत्र में भी चंद्रमा प्रकाश करता हुवा गति समापन्न होवे. जब एरवतक्षेत्र में चंद्रमा प्रकाश करता

समावण्णे भवति, तयाणं इमेवि चंदेगति समावण्णे भवति, ता जयाणं इमे सूरिए गति समावण्णे भवति, तयाणं इयरेवि सूरिए गति समावण्णे भवइ, जयाणं इयरे सूरिए गति समावण्णे भवति,तयाणं इमेवि सूरिए- गति समावण्णे भवति ता, जयाणं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवति तयाणं इयरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवति,जयाणं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवति तयाणं इयरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवति, एवं सूरिए गहे णक्खत्ते ॥ सदावि णं चंदे जुत्ता जोगेहिं सदावि णं सूरे जुत्ता जोगेहिं सदावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं दुहतोवि णं चंदा जुत्ता जोगेणं

हुआ गति समापन्न होवे तब भरतक्षेत्र में भी चंद्रमा गति समापन्न होवे. जब भरत क्षेत्र में सूर्य तपता हुआ गति समापन्न होवे तब इरवतक्षेत्र में भी तपता हुआ सूर्य गति समापन्न होवे, जब इरवतक्षेत्र में तपता हुआ सूर्य गति समापन्न होवे तब भरतक्षेत्रमें तपता हुआ सूर्य गति समापन्न होवे. इस से जब भरतक्षेत्र में चंद्र योग युक्त होवे तब इरवतक्षेत्र में भी चंद्रमा योग युक्त होवे और जब इरवत क्षेत्र में चंद्र योग युक्त होवे तब यहां भरतक्षेत्र में भी चंद्र योग युक्त होवे. ऐसे ही सूर्य का आलापक कहना. गृह का व नक्षत्र का आलापक भी वैसे ही जानना. सदैव चंद्रमा योग युक्त होवे सदैव सूर्य योग युक्त होवे, सदैव गृह योग युक्त होवे, और सदैव नक्षत्र योग युक्त होवे, गृह व नक्षत्र दोनों चंद्र की साथ योग युक्त होवे,

दुहतोत्रिणं सूरा जुत्ता जोगेहिं दुहतोवियणं चंदसूर जुत्ता जोगेहिं मंडलं एगेयसहस्सेणं अट्ठाणउति सएहिं छत्ता इच्चे से णक्खत्तं खेत्त परिभागं णक्खत्ते विजयखेत्ते पाहूडंति आहितेति तिबेमि ॥ इति दसम पाहुडस्स बावीसं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥ २२ ॥ इति दसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १० ॥

दोनों ग्रह नक्षत्र सूर्य की साथ योग युक्त होवे. ग्रह नक्षत्र दोनों चंद्र सूर्य की साथ योग युक्त होवे, एक मंडल के एक लाख अट्ठाणु सो भाग ५६ नक्षत्र के जानना, नक्षत्र के विजय क्षेत्र का पाहुडा भगवान्ने कहा है यह सत्य है. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र में दशवा पाहुडा का बावीसवा अंतर पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १० ॥ २२ ॥ यह दशवा पाहुडा समाप्त हुवा ॥ १० ॥

॥ एकादश प्राभृतम् ॥

ता कहं ते संवच्छराणं आदि आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता चंदे, चंदे, अभिवड्डिए, चंदे, अभिवड्डिए ॥१॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंद संवच्छरस्स के आदि आहिताति वदेज्जा ? ता जेणं पंचमस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स पज्जवासणे सेणं पढमस्स चंदं संवच्छरस्स आदि अणंतर

अब अग्यारवे पाहुडे में संवत्सर की आदि अंत की वक्तव्यता कहते हैं. अहो भगवन् ! संवत्सरकी आदि किस प्रकार कही ? अहो गौतम ! संवत्सर पांच कहे हैं जिन के नाम—१ चंद्र २ चंद्र ३ अभिवर्धन ४ चंद्र और ५ अभिवर्धन ॥१॥ इन पांच संवत्सर में से प्रथम चंद्र संवत्सर की कहां आदि कही है ? अहो गौतम ! जो पांचवा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान है उस से अंतर रहित पूर्व कथ समय जो है वही प्रथम चंद्र संवत्सर की आदि है. अहो भगवन् ! प्रथम चंद्र संवत्सर का पर्यवसान कैसे कहा ? अहो गौतम ! दूसरा चंद्र संवत्सर की आदि है वही प्रथम चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है, दूसरे चंद्र संवत्सर में अंतर रहित जो पीछला समय है वहां प्रथम चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है, उस समय प्रथम चंद्र संवत्सर के अंत में चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? उस समय चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है, यह नक्षत्र २६ मुहूर्त २६ भाग ६२ ये और ५४ चूर्णिये भाग ६७ के इतना

सूत्र

पुरेकडे समए तीसेणं किं पज्जवासिते आहितेति वदेज्जा? जेणं दोच्चस्स चंद संवच्छरस्स आदि सेणं पढमस्स चंद संवच्छरस्स पज्जवासणे अणंतर पच्छाकडे समए तं समयं चणं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता उत्तराहिं असाढाहिं, उत्तराणं असाढाणं

अर्थ

शेष रहने पर चंद्र उस की साथ योग करता है, प्रथम चंद्र संवत्सर के बारह मास हैं इस से दूसरी ध्रुव-राशि ३६७८३०० को १२ से गुना करने ४४१३९६०० होवे. इस को प्रथम ध्रुवराशि १४०१८०० से भाग देने से १२ नक्षत्र मास पूर्ण आये और ३२९४०१० भाग ६७ ये रहे. इस के ६२ ये भाग करनेको ६७से भाग देना जिससे ४९१६४ भाग ६२ये और १२भाग ६७ये हुवे. इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना जिस से ७९२ मुहूर्त और ६० भाग ६२ ये आया. इस में पुर्वाषाढा नक्षत्र तक के ७७४ मुहूर्त २४ भाग ६२ ये ६६ भाग ६७ ये बाद करते १८ मुहूर्त ३५ भाग ६२ ये १३ भाग ६७ ये रहे. और उत्तराषाढा नक्षत्र ४५ मुहूर्त का है इस में से उक्त मुहूर्त बाद करते २६ मुहूर्त २६ भाग ६२ ये और ५४ भाग ६७ ये रहे. इतना उत्तराषाढा नक्षत्र प्रथम चंद्र संवत्सर पूर्ण हुवे पीछे चंद्र की साथ योग करते शेष रहा. उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है? उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह चंद्र नक्षत्र सोलह मुहूर्त ८ भाग ६२ ये और २० चूर्णिये भाग ६० ये सूर्य साथ शेष रहता है और सूर्य नक्षत्र के २१६ मुहूर्त २२ भाग ६२ ये शेष रहते हैं. इस साथ प्रथम चंद्र संवत्सर पूर्ण हुवे प्रथम चंद्र संवत्सर के १२ मास हैं इस से दूसरी ध्रुव राशि ५४९०० को १२ से गुना करने से ६५८८००

छव्वीसंच मुहुत्ता छव्वीसंच वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स वावट्ठी भागं सत्तसट्ठिया छेत्ता चउपन्न चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता पुण्णवसुहिं, पुण्णवसुणं सोलस मुहुत्ता अट्ठय वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स

बासठिये होवे इसे प्रथम ध्रुवराशि ६८०७६० का भाग देना. इस से भाग नहीं होता है इस से इस के मुहूर्त करने को ६२ से भाग देना, जिस से १०६२८ मुहूर्त और शेष ६० भाग रहे. इस में आर्द्रा नक्षत्र तक १०२३९ मुहूर्त होते हैं इस में इतना मुहूर्त उक्त संख्या में से बाद करते पुनर्वसु नक्षत्र १८६ मुहूर्त ६१ भाग ६२ ये का सूर्य की साथ योग करे. यह पुनर्वसु नक्षत्र ६०३ मुहूर्त का है जिस में से १८६ मुहूर्त ६० भाग ६२ ये बाद करते २१६ मुहूर्त १२ भाग ६२ ये का सूर्य नक्षत्र शेष रहा. अब सूर्य नक्षत्र का चंद्र नक्षत्र करने को २१६ के ६२ ये भाग करना, और १२ इस में मिलाना. २१६×६२+१२=१३४०४ होवे. और पुनर्वसु नक्षत्र चंद्रमा की साथ ४५ मुहूर्त योग करे इस से ४५ से गुना करना जिस से १३४०४×४५=६०३१८० की राशि हुई. पुनर्वसु नक्षत्र सूर्य की साथ ६०३ मुहूर्त योग करता है इस से उक्त राशि को ६०३ से भाग देने से १००० भाग ६२ ये आये शेष १८० रहे. इस के ६७ ये भाग करने को ६७ से गुणा करना और ६०३ से भाग देना. १८०+६७+६०३=२० भाग ६७ ये होवे अब १००० भाग ६२ ये का मुहूर्त १६ और शेष आठ भाग

सूत्र

बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ २ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंद संवच्छरस्स के आदि आहितेति वदेजा, ता जेणं पढमस्स चंद संवच्छरस्स पज्जवासणे सेणं दुच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदिं अणंतरं पुराकडे समए तीसेणं किं पज्जवासिया आहितेति वदेजा ? ता जेणं तच्चस्स अभिवड्ढियस्स आदि सेणं दुच्चस्स चंद संवच्छरस्स पज्जवासणे, अणंतरं पच्छाकडे समए ॥ तं समयं चणं चंदे के पुच्छा ? ता पुव्वाहिं असाढाहिं पुव्वाणं आसाढाणं

अर्थ

अंगे. इस से प्रथम चंद्र संवत्सर पूर्ण होते समय पुनर्वसु नक्षत्र के १६ मुहूर्त ८ भाग ६२ ये और २० भाग ६७ ये शेष रहे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! दूसरा चंद्र संवत्सर की आदि कहां कही है ? अहो गौतम ! जो प्रथम चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है वह दूसरा चंद्र संवत्सर की आदि है. यहां अंतर रहित पूर्वकृत समय लेना. अहो भगवन् ! इस का पर्यवसान कैसे कहा ? अहो गौतम ! जो तीसरा अभिवर्धन संवत्सर की आदि है उस से अनंतर पश्चातकृत समय में दूसरा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है. अहो भगवन् ! दूसरे चंद्र संवत्सर के चरिम समय में चंद्र कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! इस समय चंद्र पूर्वाषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह मात्र मुहूर्त ५२ भाग ६२ ये

सत्तमुहुत्ता तेवण्णं वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स वावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता एगयालीतीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयं चणं सूरे के पुच्छा ? ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुणं छीतालसिं मुहुत्ता पण्णतीसंच वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स वावट्ठि भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता सत्ताचुण्णिया भागा सेसा ॥ २ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्डियस्स के आदि आहितेति वदेज्जा? ता जेणं दोच्चस्स चंद संवच्छरस्स पज्जवासणे सेणं तच्चस्स अभिवड्ढियस्स आदि अणंतरपुरेकडे समए। तीसेणं किं पज्जवासिते

४१ भाग ६७ ये इतना शेष रहे तब दूसरा चंद्र संवत्सर पूर्ण होवे. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय पुनर्वसु नक्षत्र की साथ सूर्य योग करता है. यह नक्षत्र ४२ मुहूर्त ३५ भाग ६२ ये और ७ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब सूर्य की साथ चंद्र नक्षत्र योग करता है और सूर्य नक्षत्र ५७० मुहूर्त २४ भाग ६२ या शेष रहे तब दूसरा चंद्र संवत्सर संपूर्ण होवे. इस की विधि पूर्वोक्त जैसे जानना. यहां २४ से गुना करना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! तीसरा अभिवर्धन संवत्सर की कहां आदि कही है ? अहो गौतम ! जो दूसरा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है उस से अनंतर पूर्व कृत समय में तीसरा अभिवर्धन संवत्सर की आदि है. अहो भगवन् ! तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान कहां कहा है ? अहो गौतम ! जो चौथा चंद्र संवत्सर की

आहितेति वदेज्जा जेणं चउत्थस्स चंद संवच्छरस्स आदि सेणं तच्चस्स अभिवड्डियस्स पज्जवासणे अणंतरपच्छाकडे समए॥ तं समयं चणं चंदेकेणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता उत्तराहि आसाढाहिं उत्तरा साढाणं तेरसमुहुत्ता तेरस बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भाग च सत्तसट्ठिया छेत्ता सत्तावीस चुण्णिया भागा सेसा तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोएति? ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुणं दोण्णि मुहुत्ता छप्पणं बावट्ठी भागा बावट्ठी भागं च सत्तासट्ठिया छेत्ता सट्ठिया चुण्णिया भागा सेसा ॥ ४ ॥

अर्थ आदि है उस से अनंतर पश्चात् कृत समय में तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान है. अहो भगवन् ! तीसरे अभिवर्धन संवत्सर के चरम समय में चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है; यह नक्षत्र १३ मुहूर्त १३ भाग ६२ ये २७ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र दो मुहूर्त ५६ भाग ६२ ये ६० चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे. तब चंद्र नक्षत्र सूर्य की साथ और सूर्य नक्षत्र ३९ मुहूर्त ६ भाग ६२ ये शेष रहे तब तीसरा अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. इस की विधि पहिले जैसे जानना. परंतु यहां सैंतीस से ध्रुवराशि को गुणना. क्यों कि तीसरा अभिवर्धन संवत्सर

ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थरस चंद संवच्छरस्स के आदि? ता जेणं तच्चस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स पज्जवासणे से चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदि. अणंतर पुरेकडे समये ॥ तीसेणं किं पज्जवासिते आहितेति वदेज्जा ? ता जेणं पंचमस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स आदि सेणं चउत्थ संवच्छरस्स पज्जवासणे अणंतरपच्छाकडे समये ॥ तं समयं चणं चंदे केणं? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं उणयालीसं मुहुत्ता चत्तालीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठी भागं सत्तसट्ठिया छेत्ता

३७ मास में पूर्ण होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में चौथा चंद्र संवत्सर की कहां आदि कही ? अहो गौतम ! तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान जहां कहा है उस से अनंतर पूर्वकृत समय में चौथा चंद्र संवत्सर की आदि कही है. अहो भगवन् ! चौथा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान कहां कहा है ? अहो गौतम ! जो पांचवा अभिवर्धन संवत्सर की आदि है उस से अनंतर पश्चात्कृत समय में चौथा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान कहा है. अहो भगवन् ! चौथा चंद्र संवत्सर के अंत में चंद्र कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उत्तरापाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह उत्तरापाढा नक्षत्र ३९ मुहूर्त ४० भाग ६२ ये १४ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब चौथा चंद्र संवत्सर संपूर्ण होवे. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता

सूत्र

...आहितेति वदेज्ज। जेणं चउत्थस्स चंद संवच्छरस्स आदि सेणं तच्चस्स अभिवड्डियस्स पज्जवासणे अणंतरपच्छाकडे समए॥ तं समयं चणं चंदेकेणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता उत्तराहि आसाढाहिं उत्तरा साढाणं तेरसमुहुत्ता तेरस वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स वावट्ठी भाग च सत्तसट्ठिया छेत्ता सत्तावीस चुण्णिया भागा सेसा तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोएति? ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुणं दोण्णि मुहुत्ता छप्पणं वावट्ठी भागा वावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता सट्ठिया चुण्णिया भागा सेसा॥ ४ ॥

अर्थ

आदि है उस से अनंतर पश्चात् कृत समय में तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान है. अहो भगवन् ! तीसरे अभिवर्धन संवत्सर के चरम समय में चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र १३ मुहूर्त १३ भाग ६२ ये २७ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र दो मुहूर्त ५६ भाग ६२ ये ६० चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब चंद्र नक्षत्र सूर्य की साथ और सूर्य नक्षत्र ३९ मुहूर्त ६ भाग ६२ ये शेष रहे तब तीसरा अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. इस की विधि पहिले जैसे जानना. परंतु यहां सैंतीस से ध्रुवराशि को गुणना, क्यों कि तीसरा अभिवर्धन संवत्सर

ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंद संवच्छरस्स के आदि? ता जेणं तचस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स पज्जवासणे से चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदि,अणंतर पुरेकडे समये ॥ तीसेणं किं पज्जवासिते आहितेति वदेज्जा ? ता जेणं पंचमस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स आदि सेणं चउत्थ संवच्छरस्स पज्जवासणे अणंतरपच्छाकडे समये ॥ तं समयं चणं चंदे केणं? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं उणयालीसं मुहुत्ता चत्तालीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठी भागं सत्तसट्ठिया छेत्ता

३७ मास में पूर्ण होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में चौथा चंद्र संवत्सर की कहां आदि कही ? अहो गौतम ! तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान जहां कहा है उस से अनंतर पूर्वकृत समय में चौथा चंद्र संवत्सर की आदि कही है. अहो भगवन् ! चौथा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान कहां कहा है ? अहो गौतम ! जो पांचवा अभिवर्धन संवत्सर की आदि है उस से अनंतर पश्चात्कृत समय में चौथा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान कहा है. अहो भगवन् ! चौथा चंद्र संवत्सर के अंत में चंद्र कौनसे नक्षत्र का साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह उत्तराषाढा नक्षत्र ३९ मुहूर्त ४० भाग ६२ ये १४ चूरणिये भाग ६७ पे शेष रहे तब चौथा चंद्र संवत्सर संपूर्ण होवे. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता

सूत्र

आहितेति वदेज्जा. जेणं चउत्थस्स चंद संवच्छरस्स आदिं सेणं तच्चस्स अभिवड्ढियस्स पज्जवासणे अणंतरपच्छाकडे समए॥ तं समयं चणं चंदेकेणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता उत्तराहि आसाढाहिं उत्तरा साढाणं तेरसमुहुत्ता तेरस वावट्ठी भागा मुहुत्तस्स वावट्ठी भाग च सत्तसट्ठिया छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोएति? ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुणं दोण्णि मुहुत्ता छप्पणं वावट्ठी भागा वावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता सट्ठिया चुण्णिया भागा सेसा ॥ ४ ॥

अर्थ

आदि है उस से अनंतर पश्चात् कृत समय में तीसरा अभिवर्धन संवत्सर का पर्यवसान है. अहो भगवन् ! तीसरे अभिवर्धन संवत्सर के चरम समय में चंद्र कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ योग करता है; यह नक्षत्र १३ मुहूर्त १३ भाग ६२ ये २७ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. उस समय सूर्य कौनसा नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र दो मुहूर्त ५६ भाग ६२ ये ६० चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे. तब चंद्र नक्षत्र सूर्य की साथ और सूर्य नक्षत्र ३९ मुहूर्त ६ भाग ६२ ये शेष रहे तब तीसरा अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. इस की विधि पहिले जैसे जानना. परंतु यहां सैंतीस से ध्रुवराशि को गुणना क्यों कि तीसरा अभिवर्धन संवत्सर

ता जेणं पढमस्स चैव संवच्छरस्स आदि सेणं पंचमस्स अभिवड्डियस्स संवच्छ-रस्स पज्जवसाणे अणंतर पच्छाकडे समये तं समयं चणं चंदेकेणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ॥ ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरम समये तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ता पुसेणं एगुणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं च सत्तसट्ठिया छेत्ता, तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ इति एक्कारसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ ११ ॥ × ×

का पर्यवसान है. अहो भगवन्! पांचवा अभिवर्धन संवत्सर के चरिम समय में चंद्रमा कौनसे नक्षत्र की साथ योग करता है? अहो गौतम! उत्तरापाढा नक्षत्र की साथ योग करता है. यह चरम समय में योग पूर्ण करके पांचवा संवत्सर पूर्ण करे, शेष नक्षत्र रहे नहीं. उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र की साथ योग करे? अहो गौतम! उस समय सूर्य पुष्य नक्षत्र की साथ योग करे. यह चंद्र नक्षत्र १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ भाग ६७ ये सूर्य की साथ शेष रहे तब और सूर्य नक्षत्र २६४ मुहूर्त शेष रहे तब पांचवा अभिवर्धन संवत्सर संपूर्ण होवे. इस की विधि पूर्वोक्त जैसे जानना. परंतु यहां दूसरी ध्रुवराशि को ६२ से गुना करना क्यों कि पांचवा अभिवर्धन संवत्सर ६२ मास में पूर्ण होता है. यों चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र का इग्यारहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ० ०

चउद्दस चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयंचं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुणं उणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागं सत्तसट्ठिया छेत्ता, सुडयालीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ ५ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स के आदि आहितेति वदेज्जा ? ता जेणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवासणे सेणं पंचमस्स अभिवड्डिय संवच्छरस्स आदि अणंतरपुरेकडे समए ॥ तीसेणं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?

है ? अहो गौतम ! उस समय में सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र की साथ योग करता है. यह नक्षत्र २९ मुहूर्त २१ भाग बासठिये एक मुहूर्त के ४७ चूर्णिये भाग ६७ ये सूर्य साथ शेष रहे और सूर्य नक्षत्र ३२३ मुहूर्त १८ भाग ६२ या सूर्य साथ शेष रहे तब चौथा चंद्र संवत्सर संपूर्ण होवे, इस की विधि पूर्वोक्त जैसे जानना. परंतु यहां दूसरी ध्रुवराशि को ४९ से गुणना क्यों कि चौथा चंद्र संवत्सर ४९ मास में पूर्ण होता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में पांचवा अभिवर्धन संवत्सर की आदि कहां कही है ? अहो गौतम ! जो चौथा चंद्र संवत्सर का पर्यवसान है उस से अनंतर पूर्वकृत समय में पांचवा अभिवर्धन संवत्सर की आदि कही है. अहो भगवन् ! इस का पर्यवसान कहां कहा है ? अहो गौतम ! पहिला चंद्र संवत्सर की आदि है उस से अनंतर पश्च रकृत समयमें पांचवा अभिवर्धन संवत्सर

सत्तसट्ठी भागे मुहुत्तस्स मुहुत्तगोणं आहितेति वदेज्जा। ता एतेसिणं अद्धादुवालस क्खुत्तकडाणं णक्खत्त संवच्छरे, तीसिणं केवतिए रातिंदियगोणं आहितेति वदेज्जा; ता तिण्णि सत्तावीसे रातिंदिय सते एकावणं सत्तसट्ठी भागा रातिंदियस्स रइंदियगोणं आहितेति वदेज्जा। तीसेणं केवतिए मुहुत्तगोण आहितेति वदेज्जा? ता नवमुहुत्ता सहस्साति अट्ठयवत्तीसे मुहुत्तसते छप्पणं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तगोणं आहितेति वदेज्जा॥ २॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराण दुच्चस्स चंद संवच्छरस्स चंदे मासेतीसतिमुहुत्तेणं गणिज्जमाणं केवतिए रातिंदिएणं आहितेति वदेज्जा? ता एकूण-

६२ ये होवे. २७$\frac{21}{67}$ दिन को ३० मुहूर्त से गुनने से इतने होते हैं. एक नक्षत्र मास को बारह गुना करने से एक नक्षत्र संवत्सर होवे. अहो भगवन्! नक्षत्र संवत्सर के कितने रात्रि दिन होवे? अहो गौतम! एक नक्षत्र संवत्सर के ३२७ अहोरात्रि और ५१ भाग ६७ ये [३२७ $\frac{51}{67}$] होवे. एक नक्षत्र मास की अहोरात्रि २७ $\frac{21}{67}$ है उसे बारह गुना करने से इतनी होती हैं. अहो भगवन्! एक नक्षत्र संवत्सर के कितने मुहूर्त कहे हैं? अहो गौतम! ९८३२ $\frac{56}{67}$ मुहूर्त एक नक्षत्र संवत्सर के होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन्! इन पांच संवत्सर में से दूसरा चंद्र संवत्सर का चंद्र मास तीस मुहूर्त की अहो रात्रि के प्रमान से गिनते कितनी अहो रात्रि का होवे? अहो गौतम! दूसरा चंद्र

॥ द्वादश प्राभृतम् ॥

ता कतिणं संवच्छराणं आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता तंजहा-णक्खत्ते चंद ऊऊ आदिच्चं अभिवड्डिए ॥ १ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसाति मुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणा केवतिए रातिंदिएणं आहितेति वदेज्जा ॥ ता सत्तावीसं रातिंदियां एक्कवीसं सत्तसट्ठी भागा रातिंदियस्स रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता सेणं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठसए एकूणवीसे सत्तावीसंच

अहो भगवन् ! कितने संवत्सर कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच संवत्सर कहे हैं. जिन के नाम—१ नक्षत्र संवत्सर २ चंद्र संवत्सर ३ ऋतु संवत्सर ४ आदित्य संवत्सर और ५ अभिवर्धन संवत्सर ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम नक्षत्र संवत्सर का नक्षत्र मास तीस मुहूर्त की अहोरात्रि के प्रमान से कितनी अहोरात्रि में पूर्ण होवे ? अहो गौतम ! तीस मुहूर्त की अहोरात्रि के प्रमान से एक नक्षत्र मास की २७ अहो रात्रि २१ भाग ६७ का होवे, एक युग की १८३० अहोरात्रि है और एक युग के नक्षत्र मास ६७ हैं इस से १८३० को ६७ का भाग देने से २७ अहो रात्रि और शेष २१ रहा. अहो भगवन् ! उस नक्षत्र मास के कितने मुहूर्त होवे ? अहो गौतम ! एक नक्षत्र मास के ८१९ मुहूर्त २७ भाग

संहस्साति छच्चपण्णवीसे मुहुत्तासए अट्ठसय बावट्ठीभाग। मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥ ३ ॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उउसंवच्छरस्स उउमासे तीसति मुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणेणं केवतिय रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तीस रातिंदिए रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥तीसेणं केवतिए मुहुत्ते सए पुच्छा ? ता नव मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥ ता एसणं अद्धा दुवालस क्खुत्त कडा उउसंवच्छरे, तीसेणं केवातिए रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा,

अहो भगवन्! एक चंद्र संवत्सर के कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! एक चंद्र संवत्सर के १०६२४ ५५/६२ मुहूर्त होते हैं. एक चंद्र मास के ८८५ ३०/६२ मुहूर्त हैं उसे बारह गुना करने से इतने होते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में तीसरा ऋतु संवत्सर का ऋतु मास तीस मुहूर्त की अहोरात्रि के प्रमान से गिनते कितने रात्रिदिन में पूर्ण होवे ? अहो गौतम ! ऋतु संवत्सर के ऋतु मास की तीस अहोरात्रि है. एक युग के १८३० रात्रि दिन है, और ऋतु मास ६१ है, इस से ३० अहोरात्रि होवे. अहो भगवन् ! एक ऋतु मास के कितने मुहूर्त होते हैं ? अहो गौतम ! एक ऋतु मास के ९०० मुहूर्त होते हैं. ३०×३०=९०० एक ऋतु मास को बारह गुना करने से एक ऋतु संवत्सर होवे. अहो भगवन् एक ऋतु

तीसं रातिंदियाति बत्तीसंच बावट्ठी भागा रातिंदियस्स, रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा । तीसेणं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठपंचासिमुहुत्तस्स तेत्तीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स,मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एतेसिणं अद्धदुवालस क्खुत्ताकडा चंदे संवच्छरे तीसेणं केवतिए रातिंदिये आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि चउप्पणे रातिंदिय सते दुवालस य बावट्ठी भागे रातिंदियस्स रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥ तीसणं केवतिय मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दसमुहुत्ता

संवत्सर का चंद्रमास तीस मुहूर्त के प्रमान में गिनते २९$\frac{३२}{६२}$ अहोरात्रि का होता है. युग के दिन १८३० है और मास ६२ है इस से १८३० को ६२ मे भाग देते प्रत्येक मास के २९$\frac{३२}{६२}$ दिन होते हैं. अहो भगवन् ! चंद्रमास के कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! एक चंद्रमास के ८८५ मुहूर्त और ३० भाग ६२ ये (८८५$\frac{३०}{६२}$) होते हैं. २९$\frac{३२}{६२}$ को ३० से गुना करने से इतने होते हैं. इस चंद्र मास को बारह गुना करने से एक चंद्र संवत्सर होवे. अहो भगवन् ! एक चंद्र संवत्सर की कितनी अहोरात्रि कही ? अहो गौतम ! ३५४$\frac{१२}{६२}$ अहोरात्रि एक चंद्र संवत्सर की होती है क्यों का एक चंद्र मास के २९$\frac{३२}{६२}$ अहोरात्रि होती है उस को १२ से गुना करने से इतने होते हैं.

राइंदियग्गेणं पुच्छा ? ता तिण्णि छावट्ठी रातिदियसते रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा तीसेणं केवातिय मुहुत्ते आहितेति वदेज्जा ? दसमुहुत्तसहस्साति णवय असीते मुहुत्तसते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥ ५ ॥ एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्डिए संवच्छरस्स अभिवड्डिय मासेतीसति मुहुत्तेणं अहोरत्तं गणिज्जमाणे केवतिते

इस आदित्य मास को बारह गुना करने से, एक आदित्य संवत्सर होवे, अहो भगवन् ! एक आदित्य संवत्सर की कितनी अहोरात्रि कही ? अहो गौतम ! एक आदित्य संवत्सर की ३६६ अहोरात्रि होती है, क्यों कि आदित्य मास की ३०॥ अहोरात्रि है, ३०॥×१२=३६६ होवे. अहो भगवन् ! एक आदित्य संवत्सर के कितने मुहूर्त होते हैं ? अहो गौतम ! एक आदित्य संवत्सर के १०९८० मुहूर्त होते है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में से अभिवर्धन संवत्सर का अभिवर्धन मास के तीस मुहूर्त की अहोरात्रि के प्रमाण से कितनी अहोरात्रि में होवे ? अहो गौतम ! एक अभिवर्धन मास की ३१ अहोरात्रि २९ और १७ भाग ६२ या होवे. युग के दिन १८३० हैं. एक युग के चंद्रमास ६२ हैं, इस से १८३० को ६२ का भाग देने से २९ ३२/६२ अहोरात्रि का एक चंद्र मास होवे. तेरह चंद्रमास का एक अभिवर्धन संवत्सर होवे. और अभिवर्धन संवत्सर के अभिवर्धन मास १२ हैं. इस से २९ ३२/६२ दिन को १३ से

सूत्र

ता तिण्णि सट्ठे रातिंदियसते, रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा॥तीसेणं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ता दसमुहुत्ता सहस्साइं अट्ठसयातिं मुहुत्तग्गेणं आहितेतिवदेज्जा,॥४॥ ता एतेसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आदिच्चेमासेतिसती मुहुत्ते पुच्छा? तीसं राइंदिया अवड्ढ भागं रातिंदियस्स रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा॥तीसेणं केवतिया मुहुत्ते पुच्छा ? ता णवपण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ताएतेसिणं अद्धादुवालस खुत्तकडा आदिच्च संवच्छरे तीसेणं केवतिए राइंदियसए

अर्थ

संवत्सर की कितनी अहो रात्रि होवे ? अहो गौतम ! ३६० अहोरात्रि एक ऋतु संवत्सर की होवे. अहो भगवन् ! एक ऋतु संवत्सर के कितने मुहूर्त होते है ? अहो गौतम ! एक ऋतु संवत्सर के १०८०० मुहूर्त होवे. एक ऋतु मास के ९०० मुहूर्त है उसे १२ गुना करने से इतने होते हैं.॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में चौथा आदित्य संवत्सर का आदित्य मास की तीस मुहूर्त की अहोरात्रि के प्रमान से कितनी अहोरात्रि होवे ? अहो गौतम ! एक आदित्य मास के ३०॥ अहो रात्रि होवे क्यों कि युग के १८३० दिन हैं और आदित्य मास ६० हैं. अहो भगवन् ! एक आदित्य मास के कितने मुहूर्त होते हैं ? अहो गौतम ! एक आदित्य मास के ९१५ मुहूर्त होते हैं, ३०॥×३०=९१५.

आहितेति वदेज्जा ॥ ७ ॥ ता केवतियं जुगत्ते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाणं दसयमुहुत्ते चत्तारिय वावट्ठी भागे मुहुत्तस्स वावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति

	संवत्सर के नाम	दिन	मुहूर्त	भाग ६२	भाग ६७	मुहूर्त	भाग ६२	भाग ६७
१	नक्षत्र	३२७	२२	५१	५५	९८३२	५१	५५
२	चंद्र	३५४	५	५०	०	१०६२५	५०	०
३	ऋतु	३६०	०	०	०	१०८००	०	०
४	आदित्य	३६६	०	०	०	१०९८०	०	०
५	अभिवर्धन	३८३	२१	१८	०	११५११	१८	०
	जोड	१७९१	१९	६७	५५	५३७४९	५७	५५

वदेज्जा । तीसेणं केवतिते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए चत्तारिय वावट्ठीभागे मुहुत्तस्स वावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता दुवालसं चुण्णियाभागा

बने हुवे एक युग के ५३७४९ मुहूर्त ५७ भाग ६२ ये और ५५ चुरणिये भाग ६७ ये होवे ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पांच संवत्सर से बने हुवे एक युग में रात्रि दिन के प्रमाण से कितने रात्रि दिन कमी हुए ? अहो गौतम ! ३८ रात्रि दिन १० मुहूर्त ४ भाग ६२ ये और १२ चुरणिये भाग ६७ ये इतने कमी हुए. अहो भगवन् ! एक युग के मुहूर्त के प्रमाण से एक युग में कितने मुहूर्त कमी हुए ? अहो

पांच संवत्सरे के मास और मास व संवत्सर के यंत्र दिन व मुहूर्त का

संवत्सर के नाम	एक युग के मास	एक मास के					एक संवत्सर के				
		दिन	मुहूर्त	भाग	मुहूर्त	भाग	दिन	मुहूर्त	भाग	मुहूर्त	भाग
१ नक्षत्र	६७	२७		२१/६७	८१९	१७/६७	३२७	०	५१/६७	९८३२	५६/६७
२ चंद्र	६२	२९		३२/६२	८८५	३०/६२	३५४	०	१२/६२	१०६२५	५०/६२
३ ऋतु	६१	३०		०	९००	०	३६०	०	०	१०८००	०
४ आदित्य	६०	३०॥		०	९१५	०	३६६	०	०	१०९८०	०
५ अभिवर्धन	५७ ३/१३	३१	२९	१७/६२	९५९	१७/६२	३८३	२१	१८/६२	११५११	१८/६२

चुण्णिया भागा रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जाती सेणं कवतिय मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तेपन्न मुहुत्तसहस्साइं सतियएगुणपण्णा मुहुत्तसते सत्तावण्ण बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं कितने होवे ? अहो गौतम ! १७९१ रात्रि दिन १९ मुहूर्त ५७ भाग ६२ ये और ५५ चुरणिये भाग ६७ ये इतना होवे. अहो भगवन् ! इन के कितने मुहूर्त होवे ? अहो गौतम ! उक्त पांच संवत्सर से

आहितेति वदेज्जा ॥ ७ ॥ ता केवतियं जुगउते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाणं दसयमुहुत्ते चत्तारिय बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छत्ता दुवालस चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति

	संवत्सर के नाम	दिन	मुहूर्त	भाग ६२	भाग ६७	मुहूर्त	भाग ६२	भाग ६७
१	नक्षत्र	३२७	२२	५१	५५	९८३२	५१	५५
२	चंद्र	३५४	५	५०	०	१०६२५	५०	०
३	ऋतु	३६०	०	०	०	१०८००	०	०
४	आदित्य	३६६	०	०	०	१०९८०	०	०
५	अभिवर्धन	३८३	२१	१८	०	११५११	१८	०
	जोड	१७९१	१९	६७	५५	५३७४९	५७	५५

वदेज्जा। तीसेणं केवतिते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए चत्तारिय बावट्ठीभागे मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता दुवालसं चुण्णियाभागा

बने हुवे एक युग के ५३७४९ मुहूर्त ५७ भाग ६२ ये और ५५ चुर्णिये भाग ६७ ये होवे ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पांच संवत्सर से बने हुवे एक युग में रात्रि दिन के प्रमाण से कितने रात्रि दिन कमी हुए ? अहो गौतम ! ३८ रात्रि दिन १० मुहूर्त ४ भाग ६२ ये और १२ चुर्णिये भाग ६७ ये इतने कमी हुए. अहो भगवन् ! एक युग के मुहूर्त के प्रमाण से एक युग में कितने मुहूर्त कमी हुए ? अहो

मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥८॥ ता केवतिया जुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा, ता अट्ठारस तीसे राइंदिय सते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा, तीसणं केवतियं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्ज ? ता चउप्पन्न मुहुत्त सहस्साइं णवय मुहुत्तसते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । तिणं केवतिय वावट्ठीभागे मुहुत्तग्गेण आहितेति वदेज्जा ? ता चउत्तीसं सतसहस्स अट्ठतीसंच वावट्ठीभागे मुहुत्तसते वावट्ठीभागा मुहुत्तणं आहितेति वदेज्जा ॥ ९ ॥ ता कयाणं ते आदिच्चचंद संवच्छरा समादिता सपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ? ता सट्ठीएए आदिच्च

गौतम ! एक युग में १९५० मुहूर्त ४ भाग ६२ ये और १२ भाग ६५ ये इतना मुहूर्त कम हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! एक युग के रात्रि दिन कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! एक युग के १८३० रात्रि दिन कहे हैं. अहो भगवन् ! एक युग के कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! ५४९०० मुहूर्त एक युग के कहे हैं. अहो भगवन् ! एक मुहूर्त के ६२ भाग कर वैसे एक युग के कितने बासठिये भाग होवे ? अहो गौतम ! एक युग के ३४ ३८०० बासठिये भाग होवे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! आदित्य व चंद्र संवत्सर एक साथ समान आदि व अंतवाले कब होवे ? अर्थात् कितने संवत्सरमें आदित्य व चंद्र संवत्सर समान होवे ? अहो गौतम ! ६० सूर्य मास का एक युग होता है, वैसे ही ६२ चंद्र मास का भी एक युग

मासा बावट्ठि एए चंदमासा एसणं अद्धाछखुत्तकडा दुवालस भत्तिया, तिसा एए आदिच्च संवच्छरा एक्कतीसं एए चंदसंवच्छरा तयाणं एए आदिच्चचंद संवच्छरा समादिता सपज्ज वसिया आहितेति वदेज्ज ॥१०॥ ता कयाणं एए आदिच्च उउचंद नक्खत्ता संवच्छरा समादिता समपज्जवसिया अहिंताते वदेज्ज, ता सट्ठीएए आदिच्चमासा एगट्ठिएए उउमासा

होता है. इन को काल मे ६ गुने करके बारह मे भाग देना. इन से ३० आदित्य संवत्सर व ३१ चंद्र संवत्सर में दोनों संवत्सर का पर्यवसान समान होवे. एक युग में आदित्य मास ६० हैं उसे ६ गुना करने से ३६० मास होवे, इन को बारह मास का एक संवत्सर होने से बारह मे भाग देना. इस से ३० आदित्य संवत्सर हुआ. एक आदित्य संवत्सर के ३६६ दिन हैं इसे ३० से गुणने से १०९८० दिन होवे. अब एक युग में चंद्र मास ६२ हैं, उसे छ गुना करने से ३७२ मास हुए. इस के संवत्सर करने को १२ से भाग देना, इस से ३१ संवत्सर होवे. एक चंद्र संवत्सर के ३५४ दिन १२ भाग ६२ या हैं, इस को ३१ से गुणने से १०९८० दिन होवे. इन से दोनों संवत्सर के अंत में समानता हुई ॥ १० ॥ अहो भगवन्! आदित्य, ऋतु, चंद्र व नक्षत्र संवत्सर ये सब आदि व सब पर्यवसानवाले होते हैं? अहो गौतम! एक युग के ६० आदित्य मास हैं, ६१ ऋतु मास हैं, ६२ चंद्र मास हैं और ६७ नक्षत्र मास हैं. इन चारों प्रकार के मास को बारह गुने करके बारह से भाग देना इन से ६० आदित्य संवत्सर, ६१

सूत्र

बावट्ठीएए चंदमासा सत्तट्ठी एए नक्खत्तमासा, एसणं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा दुवालस भत्तिता सट्ठिएए आदिच्च संवच्छरा एगट्ठिएए उउ संवच्छरा बावट्ठीएए चंद संवच्छरा सत्तसट्ठीएए नक्खत्त संवच्छरा तयाणं एए आदिच्च ऊऊ चंद णक्खत्ते संवच्छरा समादिता समपज्जवासिया आहितेति वदेज्जा ॥ ११ ॥ ता कयाणं एए अभिवड्डिय

अर्थ

ऋतु संवत्सर, ६२ चंद्र संवत्सर और ६७ नक्षत्र संवत्सर में आदित्य, ऋतु, चंद्र व नक्षत्र संवत्सर का समान पर्यवसान होवे. आदित्य संवत्सर के मास ६० हैं, उन को बारह गुना करने से ७२० होवे और बारह से भाग देने से ६० होवे. आदित्य संवत्सर के ३६६ दिन हैं. इसे ६० से गुना करते २१९६० दिन होवे. ऋतु मास ६१ हैं उन को बारह गुना करने से ७३२ मास होवे. उसे बारह का भाग देने से ६१ संवत्सर होवे. एक ऋतु संवत्सर के ३६० दिन हैं उसे ६१ गुना करने से २१९६० दिन होवे. चंद्र मास ६२ हैं उसे बारह गुना करने से ७४४ होवे और बारह का भाग देने से ६२ होवे, एक चंद्र संवत्सर के ३५४ दिन १२ भाग ६२ या है, उसे ६२ गुना करने से २१९६० दिन होवे. नक्षत्र मास ६७ हैं उसे १२ गुना करने से ८०४ मास होवे, इन को संवत्सर करने को १२ का भाग देने से ६७ होवे. एक नक्षत्र संवत्सर के ३२७ दिन ५१ भाग ६७ये का है, इसे ६७ से गुना करते २१९६० दिन होवे. इस से उक्त चारों संवत्सर का समानपना बतलाया ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अभिवर्धन संवत्स

आदिच्च उऊ चंद नक्खत्तेणं संवच्छरा समादिया समपज्जवसिया ? ता सत्तावण्ण मासा सत्तय अहोरत्ता एकारसय मुहुत्ता तेवीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स एएणं अभिवड्ढिय मासा सट्ठी एए आदिच्च मासा एगट्ठी एए उउमासा, बावट्ठीए चंद मासा, सत्तसट्ठी एए नक्खत्त मासा एसणं अद्ध छप्पन्नसय खुत्त कडा, दुवालस भत्तिया सत्तसया चोयाला एसणं अभिवड्ढिया संवच्छरा सत्तसयाएसिया एएणं आदिच्च संवच्छरा, सत्तसयानि

आदित्य संवत्सर, ऋतु संवत्सर, चंद्र संवत्सर व नक्षत्र संवत्सर इन पांचों संवत्सर का पर्यवसान कब समान होवे ? अहो गौतम ! एक युग के अभिवर्धन मास, ५७ सात अहोरात्रि, इग्यारह मुहूर्त २३ भाग ६२ ये हैं, एक युग में साठ आदित्य मास हैं, ६१ ऋतु मास हैं, ६२ चंद्र मास है और ६७ नक्षत्र मास हैं. इन पांचों संवत्सर के मास को काल से १५६ गुना करना और बारह से भाग देना, जिस से ७४४ अभिवर्धन संवत्सर, ७८० आदित्य संवत्सर, ७९३ ऋतु संवत्सर, ८०६ चंद्र संवत्सर और ८७१ नक्षत्र संवत्सर. इतने काल में अभिवर्धन, आदित्य, ऋतु, चंद्र व नक्षत्र संवत्सर का समान पर्यवसान होवे. एक युग में अभिवर्धन के मास ५७ $\frac{3}{13}$ हैं इसे पूर्णांक में लाने से ७४४ भाग १३ के हुवे. इस को १५६ से गुण कर १२ का भाग देना. ७४४×१५६=११६०६४÷१२=९६७२ भाग १३ के हुवे. इसे पूर्णांकमें लाने को १३का भागदेना ७४४संवत्सर होवे. एक अभिवर्धनसंवत्सरके ३८३दिन २१$\frac{18}{62}$

णउत्ता एएणं उउसंवच्छरा, अट्ठसया छय एएणं चंद संवच्छरा, अट्ठसय एगुत्तरा एएणं णक्खत्त संवच्छरा, तयाणं एए अभिवड्डुए आदिच्च उउ चंदे णक्खत्ते संवच्छरा समादिता समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा,॥ १२ ॥ ताणय उत्ताणं एएचंद संवच्छरा तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालसय बावट्ठी भागे राइंदियस्स आहितेति

पूर्ण हैं. इस से ६५४ संवत्सर को मास गुणने से २८५४८० दिन होवे. एक युग में आदित्य मास ६० हैं उसे १५६ से गुणने से ९३६० मास होवे उस को १२ का भाग देने से ७८० संवत्सर होवे. एक आदित्य संवत्सर के ३६६ दिन होवे इस ७८० संवत्सर के २८५४८० दिन होवे. एक युग में ऋतु मास ६१ हैं इसे १५६ से गुणने से ९५१६ मास होवे इस को बारह से भाग देने से ७९३ संवत्सर होवे, एक संवत्सर के ३६० दिन हैं इसे ७९३ से गुणने से २८५४८० दिन होवे. एक युग के चंद्र मास ६२ हैं उसे १५६ से गुणने से ९६७२ मास होवे, उसे बारह का भाग देने से ८०६ संवत्सर होवे. एक चंद्र संवत्सर के ३५४ $\frac{12}{62}$ दिन हैं इस से ८०६ संवत्सर के २८५४८० दिन होवे, एक युग में नक्षत्र मास ६७ हैं उसे १५६ से गुणने से १०४५२ होवे, इस को १२ का भाग देने से ८७१ संवत्सर होवे, एक संवत्सर ३२७ $\frac{51}{67}$ दिन का है, इस से ८७१ संवत्सर के २८५४८० दिन होवे. यहां पर नय से कितनेक अन्य तीर्थिओं को समझाने के लिये कहते हैं, उक्त चंद्र संवत्सर को ३५४ अहोरात्रि व १२ भाग ६२ ये हैं.

पांच संवत्सर के संयोगी २६ भांगे.

	नक्षत्र संवत्सर	चंद्र संवत्सर	ऋतु संवत्सर	सूर्य संवत्सर	अभिवर्धन संवत्सर	दिन
१	६७	६२	०	०	०	२१९६०
२	६७	०	६१	०	०	२१९६०
३	६७	०	०	६०	०	२१९६०
४	८७१	०	०	०	७४४	२८५४८०
५	०	६२	६१	०	०	२१९६०
६	०	६२	०	६०	०	१०९८०
७	०	८०६	०	०	७४४	२८५४८०
८	०	०	६१	६०	०	२१९६०
९	०	०	७९३	०	७४४	२८५४८०
१०	०	०	०	७८०	७४४	२८५४८०
११	६७	६२	६१	०	०	२१९६०
१२	६७	६२	०	६०	०	२१९६०
१३	८७१	८०६	०	०	७४४	२८५४८०
१४	६७	०	६१	६०	०	२१९६०
१५	८७१	०	७९३	०	७४४	२८५४८०
१६	८७१	०	०	७८०	७४४	२८५४८०
१७	०	६२	६१	६०	०	२१९६०
१८	०	८०६	७९३	०	७४४	२८५४८०
१९	०	८०६	०	७८०	७४४	२८५४८०
२०	०	०	७९३	७८०	७४४	२८५४८०
२१	६७	६२	६१	६०	०	२१९६०
२२	८७१	८०६	७९३	०	७४४	२८५४८०
२३	८७१	८०६	०	७८०	७४४	२८५४८०
२४	८७१	०	७९३	७८०	७४४	२८५४८०
२५	०	८०६	७९३	७८०	७४४	२८५४८०
२६	८७१	८०६	७९३	७८०	७४४	२८५४८०

सूत्र

वदेज्जा,॥अहा ते दुच्चेणं चंदसंवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते पंचमुहुत्ते पण्णासंच वावट्ठीभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा॥ १३॥तत्थ खलु इमे छउऊ पण्णत्ता तंजहा पाउसे, वरिसा, सरदे; हेमंते, वसंते, गिम्हे, ता सव्वेविणं एए चंदे दुवे २ मासा

अर्थ

अथवा अन्य प्रकारसे ३५४ अहोरात्रि, पांच मुहूर्त, और ५० भाग ६२ये मुहूर्त का चंद्र संवत्सर कहा है. इस में बासठीये बारह भाग के पांच मुहूर्त व शेष ५० होते हैं, यह चंद्र संवत्सर की वक्तव्यता हुई ॥ १३ ॥ अब यहां सूर्य आयतन के लिये ऋतु की वक्तव्यता कहते हैं. सूर्य की दो आयतन में छ ऋतु कही है. जिन के नाम-१ प्रावृट ऋतु २ वर्षा ऋतु ३ शरद ऋतु ४ हेमंत ऋतु ५ वसंत ऋतु ६ ग्रीष्म ऋतु. जैन मत में इन छ ऋतु को १ उपपोन २ वासेतो ३ सरतो ४ हेमंतो ५ वरसाउरत्तुमंतो और ६ ग्रीष्म. युग की आदि से चंद्रमा के दो २ मास गिनते साधिक ५९ अहोरात्रि में एक ऋतु पूर्ण होवे. एक युग में तीस सूर्य ऋतु हैं और पांच आदित्य संवत्सर हैं: इस से एक संवत्सर में छ ऋतु हुई. सूर्य मास ३० अहोरात्रि का है. और चंद्र मास २९$\frac{32}{62}$ दिन का है. एक ऋतु ६१ दिन पर्यंत सूर्य की सोथ रहती है. इस से वह ऋतु चंद्रमास के कौनसे पर्व में कौनसी तीथी में पूर्ण होवे, उन में प्रथम अर्ध ऋतु गत युग भोगवे और अर्ध ऋतु युग के प्रारंभ में भोगवे. जैसे प्रथम प्रावृट् ऋतु युग के प्रथम संवत्सर के तीसरे पर्व में पूर्ण होवे. यह भद्रवद वदी १ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगव कर संपूर्ण

आदिणेणं गणिज्जमाणे सातिरेगं एगूणसट्ठि रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं आहितेति

होवे. दूसरी वर्षा ऋतु युग के प्रथम संवत्सर के सातवे पर्व में पूर्ण होवे. यह कार्तिक वदी ३ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगव कर पूर्ण होवे. तीसरी शरद ऋतु प्रथम संवत्सर के अग्यारवे पर्व में पूर्ण होवे. यह पोष वदी ५ के चरम समय ऋतु को चरम समय भोगव कर संपूर्ण होवे. चतुर्थ हेमंत ऋतु युग के प्रथम संवत्सर के पन्नरवे पर्व में पूर्ण होवे. यह फाल्गुन वदी ७ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगवकर पूर्ण होवे. पांचवी वसंत ऋतु प्रथम संवत्सर के १० वे पर्व में पूर्ण होवे. वह वैशाख वदी ९ के चरम समय ऋतु का चरम समय भोगवकर पूर्ण होवे. छठी ग्रीष्म ऋतु युग के प्रथम संवत्सर के तेवीसवे पर्व में पूर्ण होवे. अशाड वदी ११ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगवकर संपूर्ण होवे. अब चरम पांचवा संवत्सर में छ ऋतु प्ररूपी है. प्रथम प्रावृट् ऋतु युग के पांचवे संवत्सर में चौथे पर्व में पूर्ण होवे. यह भाद्रपद शुदी ४ के चरम समय में ऋतु का समय भोगवकर संपूर्ण होवे. दूसरी वर्षा ऋतु आठवे पर्व में पूर्ण होवे. यह कार्तिक शुदी ८ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगवकर संपूर्ण होवे. तीसरी शरद ऋतु युग के पांचवे संवत्सर के बारहवे पर्व में पूर्ण होवे. यह पौष शुदी ८ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगव कर संपूर्ण होवे, चौथी हेमंत ऋतु युग के पांचवे संवत्सर के सोलहवे पर्व में पूर्ण होवे, यह

सूत्र

वदेज्जा,॥अहा ते दुच्चेणं चंदसंवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते पंचमुहुत्ते पण्णासंच बावट्ठीभागे महुत्तस्स आहितेति वदेज्जा॥१३॥तत्थ खलु इमे छउऊ पण्णत्ता तंजहा पाउसे, वरिसा, सरदे; हेमंते, वसंते, गिम्हे, ता सव्वेविणं एए चंदं दुवे २ मासा

अर्थ

अथवा अन्य प्रकारसे ३५४ अहोरात्रि, पांच मुहूर्त, और ५० भाग ६२ये मुहूर्त का चंद्र संवत्सर कहा है. इस में बासठीये बारह भाग के पांच महूर्त व शेष ५० होते हैं, यह चंद्र संवत्सर-की वक्तव्यता हुई ॥ १३ ॥ अब यहां सूर्य आयतन के लिये ऋतु की वक्तव्यता कहते हैं. सूर्य की दो आयतन में छ ऋतु कही है. जिन के नाम-१ प्रावृट ऋतु २ वर्षा ऋतु ३ शरद ऋतु ४ हेमंत ऋतु ५ वसंत ऋतु ६ ग्रीष्म ऋतु. जैन मत में इन छ ऋतु को १ उपपौन २ वासेतो ३ सरतो ४ हेमंतो ५ वरसाउरत्तमंतो और ६ ग्रीष्म. युग की आदि से चंद्रमा के दो २ मास गिनते साधिक ५९ अहोरात्रि में एक ऋतु पूर्ण होवे. एक युग में तीस सूर्य ऋतु हैं और पांच आदित्य संवत्सर हैं. इस से एक संवत्सर में छ ऋतु हुई. सूर्य मास ३० अहो रात्रि का है. और चंद्र मास $29\frac{32}{62}$ दिन का है. एक ऋतु ६१ दिन पर्यंत सूर्य की साथ रहती है. इस से वह ऋतु चंद्रमास के कौनसे पर्व में कौनसी तीथी में पूर्ण होवे, उन में प्रथम अर्ध ऋतु गत युग भोगवे और अर्ध ऋतु युग के प्रारंभ में भोगवे. जैसे प्रथम प्रावृट् ऋतु युग के प्रथम संवत्सर के तीसरे पर्व में पूर्ण होवे. यह भाद्रपद वदी १ के चरम समय में ऋतु का चरम समय भोगव कर संपूर्ण

एकारसमेपव्वे पण्णरसमेपव्वे, एगुणवीसमेपव्वे, तेवीसमेपव्वे ॥ तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता

विचार कहा. ऋतु अशाड मास में प्रवर्ते और युग श्रावण मास के कृष्ण पक्ष मे प्रवर्ते. अमुक पर्व में कितनी ऋतु पूर्ण हुई, कौनसी ऋतु वर्त रही है. और इस के कितने दिन हुवे हैं. इस जानने की विधि. इस में ध्रुव आंक स्थापन करना. पहिला आंक ९१५, दूसरा १८९१, तीसरा ३७८२ और चौथा ६२ यों चार ध्रुव आंक की स्थापना करना. एक पर्व की तीथी १५. यह तीथी ६१ भाग ६२ ये की है. इस से १५×६१=९१५ भाग ६२ ये हुवे. यह प्रथम ध्रुव राशि हुई. दूसरा आंक ऋतु का एक युग की १८३० अहोरात्रि है, और सूर्य ३० ऋतु भोगता है. इस से १८३० को ३० का भाग देने से ६१ अहो रात्रि की एक ऋतु हुई. इस को ६२ ये भाग करने को ६२ से गुना करना ६१×६२=३७८२ भाग ६२ ये हुवे. इस में अर्ध ऋतु सत युग में भोगता है इन के अर्ध १८९१ भाग ६२ ये होवे. यह दूसरा ध्रुव राशि हुई तीसरी ३७८२ की पूर्ण ऋतु की और चौथी ६२ ये भाग का ६२ का राशि हुई. अमुक पर्व में कौनसी ऋतु गई यह जानने को पर्व को प्रथम ध्रुव आंक से गुना करना, उस में दूसरा ध्रुवांक मीलाना, इस संख्या को तीसरे ध्रुव आंक से भाग देना. जो भाग आवे उतनी ऋतु व्यतीत हुई जानना. और शेष रहे उसे चौथा ध्रुव आंक से भाग देना. जो भाग आवे सो दिन और शेष रहा सो ६२ ये भाग जानना. दृष्टांत-प्रथम संवत्सर के फाल्गुन सुदी १५ को कौनसी ऋतु

पडवीसतिमेपव्वं, ॥ छ चेव अतिरत्ता आइचाउं भवंति जाणाहि ॥ छ चेव

दो को दो का भाग देने से एक तीथी आई इस तरह तीसरे पर्व की प्रथम तीथी के चरम समय में प्रथम ऋतु पूर्ण हुई. ऐसे ही तीसरी ऋतु जानो. को तीन को दो से गुनने ६ हुवे इस में एक बाद करने से ५ रहे, इस को दो से गुनते १० हुवे, यह दश पर्व व्यतीत हुवे इस दश पर्व को दो से भाग देते पांच रहे. इस तरह अग्यारवे पर्व की पांचवी तीथी के चरम समय में तीसरी ऋतु संपूर्ण होवे. ऐसे ही आगे जो ऋतु जिस तीथी पर पूर्ण होवे सो जानना. यह सूर्य ऋतु का कथन किया. अब चंद्र ऋतु का कथन करते हैं. एक युग में चंद्र ऋतु ४०२ होती है. एक नक्षत्र पर्याय में चंद्रमा की छ ऋतु होवे. क्यों कि नक्षत्र पर्याय युग में ६७ है, और ऋतु ४०२ है, इस में ४०२ को ६७ का भाग देने से ६ होवे. प्रश्न—एक ऋतु कितनी अहोरात्रि की होती है ? उत्तर—एक नक्षत्र पर्याय चंद्र माष २७ अहोरात्रि ११ भाग ६२ या और २१ भाग ६७ या की है. इस को छका भाग देने से चार अहोरात्रि ३४ भाग ६२ या १६ भाग ६७ या एक ऋतु भोगवे. अर्थात् इतने दिन में एक चंद्र ऋतु पूर्ण होवे. इस में प्रथम अर्ध ऋतु गत युग में प्रवर्ते और दूसरी अर्ध ऋतु युग के प्रारंभ में प्रवर्ते. अमुक पर्व में कितनी ऋतु अतीक्रमी, कौनसी ऋतु है, और उस के कितने दिन हुए ये जानने को ध्रुव आंककी स्थापना करनी. प्रथम ध्रुवआंक ६१३०५ दूसरा २४५५ और तीसरा १८११०

सूत्र

पण्णत्ते तंजहा- चउत्थेपव्वे, अट्ठमेपव्वे, दुवालसमेपव्वे, सोलसमेपव्वे, विसतिमपव्वे,

अर्थ

प्रवर्ते ? फाल्गुन शुदी १५ सोलवा पर्व है. इसे ११५ से गुना करके १८२१ मिलाना. १६×११५= १८४०+१८०१=१६५३१ होवे. इस को तीसरी ध्रुवराशि ३७८३ से भाग देना, इस में चार ऋतु व्यतीत हुई. शेष १४०३ रहे, इस का ६२ का भाग देने से २२ दिन आये और शेष ३१ भाग ६२ पे रहा. ये दिन पांचवी ऋतु का जानना. प्रथम पर्व में कौनसी ऋतु प्रवर्ते ? एक को ११५ से गुनने से ११५ होवे उस में १८२१ मिलाने से २८०६ होवे इस को ३७८२ का भाग देने से भाग नहीं आता है, इस से कोई ऋतु पूर्ण नहीं हुई है. अब शेष २८०६ को ६२ का भाग देने से ४५ दिन आये और शेष १६ रहे. इतने प्रथम ऋतु के दिन जानना. अब जिस तीथी में ऋतु पूर्ण होवे यह जानने की विधि कहते हैं. ऋतु के अंक को दो गुना करके एक घटा करना. शेष रहे उसे दुगुनी करना और जो अंक आवे उतने पर्व जानना. उस पर्व को दो से भाग देते जो आवे उतनी तीथी. उस पर्व को पहिले के पर्व में आंक मिलना. जो पर्व हुवे उतने पर्व युग से संपूर्ण हुवे जानना. और जो तीथी रही उस तीथी के चरम समय में ऋतु का चरम समय होवे. दृष्टांत—प्रथम ऋतु कौनसे पर्व में कौन सी ऋतु में पूर्ण होवे ? यहां एक ऋतु को दो से गुना करने से दो होवे, इस में से एक बाद करते शेष एक रहा, इस एक को पुनः दो से गुनने से दो रहे, ये दो पर्व अतिक्रांत

चउवीसतिमेपव्वं, ॥ छ चेव अतिरत्ता आइचाउ भवंति जाणाहि ॥ छ चेव

छो को दो का भाग देने से एक तीथी आई इस तरह तीसरे पर्व की प्रथम तीथी के चरम समय में प्रथम ऋतु पूर्ण हुई. ऐसे ही तीसरी ऋतु जानने को तीन को दो से गुनने ६ हुवे इस में एक बाद करने से ५ रहे, इन को दो से गुनने से १० हुवे, यह दश पर्व व्यतीत हुवे इन दश पर्व को दो से भाग देते पांच रहे. इस तरह अग्यारवे पर्व की पांचवी तीथी के चरम समय में तीसरी ऋतु संपूर्ण होवे. ऐसे ही आगे जो ऋतु जिस तीथी पर पूर्ण होवे सो जानना. यह सूर्य ऋतु का कथन किया. अब चंद्र ऋतु का कथन करते हैं. एक युग में चंद्र ऋतु ४०२ होती है. एक नक्षत्र पर्याय में चंद्रमा की छ ऋतु होवे. क्यों कि नक्षत्र पर्याय युग में ६७ है, और ऋतु ४०२ है, इस में ४०२ को ६७ का भाग देने से ६ होवे प्रश्न—एक ऋतु कितनी अहोरात्रि की होती है? उत्तर—एक नक्षत्र पर्याय चंद्र साथ २७ अहोरात्रि १९ भाग ६२ या और २९ भाग ६७ या की है. इस को छका भाग देने से चार अहोरात्रि ३४ भाग ६२ या १६ भाग ६७ या एक ऋतु भोगवे अर्थात् इतने दिन में एक चंद्र ऋतु पूर्ण होवे. इस में प्रथम अर्ध ऋतु गत युग में प्रवर्ते और दूसरी अर्ध ऋतु युग के प्रारंभ में प्रवर्ते. अमुक पर्व में कितनी ऋतु अतीक्रमी, कौनसी ऋतु है, और उस के कितने दिन हुए ये जानने को ध्रुव अंक की स्थापना करनी. प्रथम ध्रुवआंक ६१३०५ दूसरा २४५५ और तीसरा १८२१०

सूत्र

उमरत्ता चंदाहि भवति माणोहि ॥ तत्थ खलु इमातो पंचवासिकिओ पंचहेमंताओ

अर्थ

का० एक पर्व १५ तीथी का है और एक तीथी ६२ या ६१ भाग की है. इस से ६१ को १५ गुना करते ९१५ भाग ६२ ये हुवे, इन के ६२ ये भाग करने को ६७ से गुना करना जिस से ६१३०५ भाग ६७ ये होवे इसमें यह प्रथम ध्रुवराशि हुई. एक ऋतु की अहोरात्रि ३४ भाग ६२ ये १६ भाग ६७ या की है. चार अहोरात्रि के ६२ भाग २४८ होवे, उन में ३४ मीलाने से २८२ होवे, इन के ६७ ये भाग १८८२४ होवे उन में १६ मीलाने से १८२१० होवे. प्रथम अर्ध ऋतु गत युग में भागवे. इस से इस के आधे भाग करने से ९४५५ भाग ६७ ये हुए. इस से दूसरी ध्रुवराशि ९४५५ की हुई. अब तीसरी ध्रुव राशि-एक ऋतु १८२१० भाग ६१ ये की हैं. इस से यह तीसरी ध्रुवराशि हुई अमुक पर्व में कौनसी ऋतु पर्वते यह जानने के लिये पर्व को प्रथम ध्रुवराशि के आंक से गुना करना जो आंक आवे उस में दूसरी ध्रुवराशि का आंक मीलाना और तीसरी ध्रुवराशि से भाग देना. जो आवे उतने पर्व व्यतीत हुवे जानना. और जो शेष रहे उतने ६७ ये भाग जानना. उन को ६२ ये भाग करने को ६७ से भाग देना जो आवे उतने ६२ ये भाग और शेष रहे सो ६७ ये भाग उन ६२ ये भाग के दिन करने को ६१ भाग देना जो भाग आवे वे दिन जानना. दृष्टांत प्रथम पर्व में कितनी ऋतु व्यतीत हुई ? और कौनसी ऋतु प्रवर्ती है ? एक को ६१३०५ से गुनने
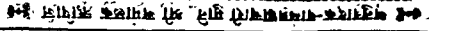
६१३०५ होवे. इस में दूसरी ध्रुवराशि ९४५५ मिलाने से ७०७६० होवे. इस को तीसरी ध्रुवराशि १८३१० से भाग देने से तीन ऋतु व्यतीत हुई, शेप १४०३० रहे. उस ६७ का भाग देने से २०९ भाग ६२ ये हुवे, शेप २७ रहे. २०९ को ६२ का भाग देने से तीन दिन आये, शेप २३ भाग ६२ ये रहे. इस तरह प्रथम पर्व के चरम समय में चौथी ऋतु के तीन दिन २३ भाग ६२ ये २७ भाग ६७ ये का चरम समय मानें. वैसे ही तीसरे पर्व का २०×६१३०५=१२२६१००+९४५५=१२३५५५५÷१८३१०=६५ ऋतु व्यतीत हुई, शेप ६४० भाग ६७ ये रहे, इस को ६७ का भाग देने से ९५ भाग ६२ ये आये, शेप ४० भाग ६७ ये रहे, इस ९५ को ६२ का भाग देने से एक दिन व शेप ३३ भाग ६२ या रहा. इस से तीसरे पर्व के चरम समय में ६६ वी ऋतु का एक दिन ३३ भाग ६२ या, ४० भाग ६७ ये का चरम समय मानें. ऐसे ही सब जानना. इस तरह ऋतु का अंक पूर्ण करके ६ से भाग देना शेप जो रहे वही ऋतु जानना. जिनके नाम—१ हेमंत ऋतु २ वसंत ऋतु ३ ग्रीष्म ऋतु ४ प्रावृट् ऋतु ५ वर्षा ऋतु और ६ शरद ऋतु. ये छ ऋतु चंद्र साथ मानें, प्रश्न—सूर्य साथ प्रथम प्रावृट् ऋतु ग्रहण की और चंद्र साथ प्रथम हेमंत ऋतु ग्रहण की उस में क्या कारन है? उत्तर—एक नक्षत्र पर्याय में चंद्र छ ऋतु भोगता है. हेमंत ऋतु के दो भाग करना, जिस में दूसरे भाग के प्रथम समय से अभिजित नक्षत्र का प्रारंभ होता है, यों अनुक्रम से भोगता हुवा हेमंत ऋतु के चरम समय में उत्तराषाढा नक्षत्र का चरम समय होकर नक्षत्र पर्याय पूर्ण होवे, नक्षत्र पर्याय का दो भाग करना, इस में दूसरे भाग के प्रथम समय से

अर्थ

युग की आदि के प्रथम समय में सूर्य योग करता है. छ ऋतु में प्रावृट् ऋतु के दो भाग करना, इस में दूसरे भाग का प्रथम समय युग की आदि में होवे, और प्रावृट् ऋतु के चरम समय का सूर्य युग के अंत में होवे. इस से सूर्य की साथ युग की आदि में प्रावृट् ऋतु कही. सूर्य एक युग में पांच नक्षत्र पर्याय भोगता है इस से पांच को छ गुना करने से तीस ऋतु एक युग में होवे. चंद्र युग की आदि में अभिजित नक्षत्र से योग करता है इस से चंद्रमा की साथ युग की आदि में हेमंत ऋतु कही. एक युग में चंद्र ६७ नक्षत्र पर्याय भोगता है, इस से एक युग में ४०२ ऋतु हुई. अब चंद्र ऋतु संपूर्ण होवे तब कितने पर्व व कितने दिन होवे, यह नीकालने की विधि. यहां प्रथम ध्रुवराशि के आंक लेना. ६१३०८, २४५५, १८३१०, ये तीन ध्रुव आंक जानना. जिस ऋतु की समाप्ति नीकालने की होवे उस ऋतु के आंक को तीसरी ध्रुव राशि के आंक से गुनना. दूसरी ध्रुवराशि के आंक बाद करना, शेष जो आंक रहे उसे प्रथम ध्रुवराशि के आंक से भाग देना. जो भाग आवे उतने पर्व शेष रहे उतने ६७ ये भाग जानना, फीर उसे ६७ का भाग देते जो रहा सो ६१ या भाग. जो शेष रहा सो ६७ या भाग, फीर उन को ६१ से भाग देवे जो भाग आवे सो तिथि और शेष रहे सो ६१ या भाग. दृष्टांत प्रथम ऋतु कौनसे पर्व में कौनसी तीथि में संपूर्ण होवे? १+१८३१०=१८३११−२४५५=२४५५÷६१३०८ भाग नहीं चलता है. शेष २४५५÷६७=१४१ $\frac{?}{६७}$ १४१ को तीथी करने को ६१ से भाग देना १४१÷६१=२ $\frac{?}{६१}$ इस तरह प्रथम ऋतु का चरम समय प्रथम पक्ष की तीसरी तीथी का १९ भाग ६१ ये ८

भाग ६१ ये के चरम समय में भोगव कर संपूर्ण होवे. इसी तरह सबका जानना. छ ऋतु कौनसे नक्षत्र में संपूर्ण होवे और कौनसे नक्षत्र में शेष रहे इसका यंत्र देते हैं. इस तरह नक्षत्र के भाग शेष रहे तब ऋतु परिपूर्ण होवे.

	ऋतु	नक्षत्र	दिन के भाग ६७		ऋतु	नक्षत्र	दिन के भाग ६७
१	हिमंत	धनिष्ठा	२॥	४	प्रावृट्	पूर्वाफाल्गुनी	५२
२	वसंत	आश्विनी	३२॥	५	वर्षा	स्वाति	२९
३	ग्रीष्म	आर्द्रा	२९	६	शरद्	पूर्वाषाढा	५२

यों सब नक्षत्रों की वक्तव्यता जानना. प्रत्येक ऋतु ३०५ भाग ६७ ये अहोरात्रि की हैं. प्रथम प्रावृट् ऋतु के १८२॥ भाग ६७ये अहोरात्रि के गये पीछे एक नक्षत्र मास की पर्याय पूर्ण होवे. दूसरा नक्षत्र मास के १८२॥ भाग ६७ ये अहोरात्रि के गये पीछे प्रावृट् ऋतु की पर्याय पूर्ण होवे. इस नक्षत्र के योग से चंद्र ऋतु एक युग में ४०२ कही. अब सूर्य ऋतु के परिमाण काल में चंद्र ऋतु का परिमाण काल होवे. लोक रूढी से जितना एक चंद्र ऋतु का परिमाण होवे वह कहते हैं. प्रत्येक चंद्र ऋतु दो मास की जानना. यह कितने प्रमाण में है सो कहते हैं. चंद्र संवत्सर ३५४ $\frac{१२}{६२}$ अहोरात्रि का है, इस को छ का भाग देने से ५९ $\frac{२}{६२}$ अहोरात्रि होवे. ऐसी चंद्र ऋतु ३१ होवे, और एक युग में ऋतु तीस व ऋतु मास [कर्म मास] ६१ होवे, इस अपेक्षा से एक चंद्र ऋतु

युग की आदि के प्रथम समय में सूर्य योग करता है. छ ऋतु में प्रावृट् ऋतु के दो भाग करना, इस में दूसरे भाग का प्रथम समय युग की आदि में होवे, और प्रावृट् ऋतु के चरम समय का सूर्य युग के अंत में होवे. इस से सूर्य की साथ युग की आदि में प्रावृट् ऋतु कही. सूर्य एक युग में पांच नक्षत्र पर्याय भोगता है इस से पांच को छ गुना करने से तीस ऋतु एक युग में होवे. चंद्र युग की आदि में अभिजित नक्षत्र से योग करता है इस से चंद्रमा की साथ युग की आदि में हेमंत ऋतु कही. एक युग में चंद्र ६७ नक्षत्र पर्याय भोगता है, इस से एक युग में ४०२ ऋतु हुई. अब चंद्र ऋतु संपूर्ण होवे तब कितने पर्व व कितने दिन होवे, यह नीकालने की विधि. यहां प्रथम ध्रुवराशि के आंक लेना. ६१३०५, १४५५, १८३१०, ये तीन ध्रुव आंक जानना. जिस ऋतु की समाप्ति नीकालने की होवे उस ऋतु के आंक को तीसरी ध्रुव राशि के आंक से गुनना. दूसरी ध्रुवराशि के आंक बाद करना, शेष जो आंक रहे उसे प्रथम ध्रुवराशि के आंक से भाग देना. जो भाग आवे उतने पर्व शेष रहे, उतने ६७ ये भाग जानना. फीर उसे ६१ का भाग देते जो रहा सो ६१ या भाग. जो शेष रहा सो ६१ या भाग, फीर उन को ६१ से भाग देने जो भाग आवे सो तिथि और शेष रहे सो ६१ या भाग. दृष्टांत प्रथम ऋतु कौनसे पर्व में कौनसी तीथि में संपूर्ण होवे? १+१८३१०=१८३१०-१४५५=१४५५÷६१३०५ भाग नहीं चलता है. शेष १४५५÷६७=१४१$\frac{..}{६७}$. १४१ को तीथी करने को ६१ से भाग देना १४१÷ ६१=२$\frac{..}{६१}$ इस तरह प्रथम ऋतु का चरम समय प्रथम पक्ष की तीसरी तीथी को १९ भाग ६१ ये ८

अवम रात्रि, ग्रीष्म काल के पहिले पर्व में पांचवी और ग्रीष्म काल के सातवे पर्व (मूला पेक्षा २३ वे) पर्व में छठी अवम रात्रि. अब सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में अवम रात्रि कहते हैं. एक युग में अवम रात्रि कल्पनारूप तीन होवे. परमार्थ से श्रावण वदी प्रतिपदा से चार पर्व पूर्ण हुवे पीछे पांचवे पर्व की प्रतिपदा के प्रथम दिन अवम रात्रि हुई. यह द्वितीया के दिन संपूर्ण हुई. अब अवम रात्रि कौन से पक्ष में और कौनसी तिथि में संपूर्ण होवे यह नीकालने की विधि. जो अवम रात्रि नीकालना होवे उस संख्या को चार से गुनना. जो आवे सो पर्व, उस पर्व को दो से भाग देना जो आवे सो तिथि. ये तिथियों पन्द्रह से अधिक होवे तो पन्द्रह से भाग देना जो आवे सो पर्व, यह पूर्व पूर्वोक्त आये हुवे पर्व में मिलाना. और शेष रहे सो तिथि जानना. दृष्टांत—प्रथम अवमरात्रि में कौन से पर्व की तिथि संपूर्ण होवे? १+४=४÷२ = २. इन में चौथा पर्व पीछे पांचवे पर्व की दूसरी तिथि जानना. इस से प्रतिपदा को द्वितीय संपूर्ण होवे. वैसे ही १३ वी अवमरात्रि की पृच्छा, १३+४=५२=२=२६=१५=१-११ ५२+१=५३ पर्व संपूर्ण हुवे और चौपनवे पर्व में एकादशी को तिथि व अहोरात्रि संपूर्ण हुई. अर्थात् एकमी को एकादशी संपूर्ण होगई, अब कर्म मास की अपेक्षा से सूर्य मास में अधिक रात्रि का कहते हैं. कर्म मास ३० अहोरात्रि का है और सूर्य मास ३०॥ अहोरात्रि का है. दो सूर्य मास की एक ऋतु, इस से एक सूर्य ऋतु की समाप्ति में दो कर्म मास की अपेक्षा से एक अधिक रात्रि हुई. सूर्य ऋतु अषाढ से चार पर्व गये पीछे एक अधिक रात्रि होवे, आठ

ऋतु आश्री लौकिक व्यवहार से एक २ अवमरात्रि होवे. संपूर्ण कर्म संवत्सर में छ अवम रात्रि होवे. यह व्यवहार नय से चंद्र संवत्सर की अपेक्षा से कर्म संवत्सर में होवे, लौकिक ग्रीष्म ऋतु का तीसरा पर्व सो अषाढ का कृष्ण पक्ष, सातवा पर्व सो भद्रपद का कृष्णपक्ष यों एक २ मास छोडकर आगे का मास का कृष्ण पक्ष लेना. * अब अवम रात्रि का कथन करते हैं. कर्म मास संपूर्ण तीस अहोरात्रि का है और चंद्र मास २९$\frac{32}{62}$ अहोरात्रि का है. कर्म मास की अहोरात्रि में से चंद्रमास की अहो रात्रि बाद करने से ३० भाग ६२ ये रहे, इतनी एक मास में अवम रात्रि जानना. जब तीस अहो रात्रि में ३० भाग ६२ ये अवम रात्रि है तब एक अहोरात्रि में एक भाग ६२ ये अवम रात्रि होवे. इस में ६२ वी तीथी में एक अवम रात्रि होवे. इस तरह बासठवी तीथी एकसठ में दिनमें पूर्ण हुई, और बासठवे दिन तेसठवी तीथी की प्रवृत्ति हुई. यह तीथी बासठिये ६१ भाग अहो रात्रि की है. इस तरह एक युग में तीस अवम रात्रि होवे. चंद्र ऋतु संबंधि अवम रात्रि कहते हैं. वर्षा काल में श्रावणादिक चतुर्मास प्रमाण होवे. इन में वर्षाकाल के तीसरे पर्व में प्रथम अवम रात्रि होवे. वहां ही वर्षा काल के सातवे पर्व में दूसरी अवम रात्रि शीत काल के तीसरे (मूलापेक्ष ११ वे पर्व) में तीसरी अवम रात्रि, शीत काल के सातवे पर्व में चौथी

* सूर्यादि क्रिया उपलक्षित, अनादि प्रवाह पतित व अतिनियत स्वभाव रूप काल की हानि वृद्धि नहीं होती है. परंतु जो अवमरात्रि अति रात्रि कही है वह परस्पर मास की अपेक्षा से है. कर्म मास की अपेक्षा से चंद्र मास में अवमरात्रि होवे और कर्म मास की अपेक्षा से सूर्य मास में अतिरात्रि होवे.

कुछ नहीं रहता है, इस से गत युग के १७ अयन किया. अयन को १८६० से गुना करना, जिस से ··८२०० होवे. इसे दश का भाग देना जिसे १८६० होवे, इस में एक मीलाने से १८६१ होवे. इस को १८ का भाग देने से १२४ पर्व आवे, इतने पर्व गत युग में गये जानना. और एक बढ़ा सो यग की प्रथम तिथि में प्रथम अयन होवे. ऐसे ही तीसरी अयन की तिथि जानने को एक चार करने से दो रहे. २×१८३०=३७२०÷१०=३७२+१=३७३÷१५=२४ पर्व पूर्ण आये. और १३ रहे. इस से पच्चीसवे पर्व की १३ वी तिथि को तीसरी अयन होवे. अब चंद्र अयन कौनसी तिथि में पूर्ण होवे सो कहते हैं,

अयन	पर्व	तिथि	अयन	पर्व	तिथि	अयन	पर्व	तिथि
१	०	१	४	३७	४	७	७१	७
२	१२	७	५	४९	१०	८	७६	७३
३	२४	११	६	६२	१	९	९८	४३
						१०	१११	१०

एक युग में चंद्र अयन १२६ है और ४ भाग १४ का है. इस के १४ भाग करने को १२६ को १४ से गुना कर ४ मीलाना. १२६×१४=१७६४+४=१७६८. इस को ८ से भाग देने से २२१ होवे, यह प्रथम ध्रुव राशि. एक युग में तिथि १८६० है. इस के १४ भाग करके १८६० को १४ से गुनना. इस से २६०४० भाग हुवे. इस को ८ का भाग देना इस से ३२५५ हुवे यह दूसरी ध्रुव राशि का आंक जानना. दृष्टांत प्रथम अयन कौनसी तिथि में पूर्ण होवे? दूसरी ध्रुवराशि ३२५५ को एक से गुना करने से ३२५५ होवे इस के प्रथम ध्रुवराशि २२१ से भाग देते

पर्व गये पीछे दो अधिक रात्रि यों सब जानना. अब जो अधिक रात्रि नीकालना होवे तो उस अधिक रात्रि को चार गुना करना जो संख्या आवे उतने पर्व गये हुवे जानना. एक अधिक रात्रि में चार पर्व गये हुवे जानना. और १६ वी अधिक रात्रि में ६४ पर्व गये पीछे १६ वी अधिक रात्रि होवे इस से १६ में से एक पर्व निकलता है यों ६२ पर्व पूर्ण हुए, इस तरह सब अधिक रात्रि जानना. कर्म संवत्सर की अपेक्षा चंद्र संवत्सर की तीन अवमरात्रि और सूर्य संवत्सर की तीन अधिक रात्रि होवे इस से एक युग में तीन ऋतु मानें. दक्षिण उत्तर में वारम्वार गमन रूप होवे उसे आवर्त कहना. अब सूर्य चंद्र का आवर्त कहते हैं. एक युग में सूर्य के कितने आवर्त होवे ? सूर्य १८३ दिन में एक आवर्त पूर्ण करे और युग के दिन १८३० हैं इस से १० आवर्त में १८३० दिन पूर्ण होवे, उस तरह सूर्य एक युग में दश आवर्त-अयन करे. चंद्र एक युग में १७६८ अर्ध मंडल करता है. इस के १४ अर्ध मंडल में एक अयन होता है इस से १७६८ को १४ का भाग देने से १२६ चंद्र की अयन होवे और शेष ४ रहे इस से चौथे अर्ध मंडल में युग पूर्ण होवे. अब सूर्य की अयन कौनसे पर्व में कौनसी तिथि पर आवे सो कहते हैं. एक युग में तिथि १८६० हैं और अयन १० हैं. जो अयन का निकालने का होवे उस में से एक बाद करके युग की तिथियों की साथ गुनना. और १० से भाग देना. जो आवे उस में एक मिलाना. और १५ से भाग देना, जो आवे उतने पर्व अतिक्रमे और शेष रहे सो तीथी. दृष्टांत प्रथम अयन कौनसी तिथि पर होवे ? एक में से एक बाद करने से

चगं नूरे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति ? ता पुस्तेणं, पुसस्सणं एगूणवीस मुहुत्ता तेत्ताली-

प्रथम धृवराशि से भाग देने से ६७ नक्षत्र पर्याय हुई, शेष कुच्छ भी नहीं रहा. इस से उत्तराषाढा नक्षत्र संपूर्ण हुवा, और अभिजित नक्षत्र ९ मुहूर्त २४ भाग ६२ या ६६ भाग ६७ या का है; इस नक्षत्र के प्रथम समय में आउटीका प्रथम समय हुवा. और श्रावण वदी १ के प्रथम समय में चंद्र अभिजित नक्षत्र साथ योग करता है. अहो भगवन् ! इस समय सूर्य कौन से नक्षत्र की साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पुष्य नक्षत्र के तीन तारे हैं. इस समय चंद्र न में पुष्य नक्षत्र साथ योग करता है. इस नक्षत्र का १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये और ३३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब प्रथम समय में वर्षाकाल की प्रथम आउटी बैठे. एक युग में सूर्य साथ नक्षत्र पांच पर्याय भोगता है, सूर्य की आउटी १० है और नक्षत्र पर्याय के मुहूर्त १०९८० की प्रथम धृवराशि है. एक आउटी के मुहूर्त ४४२० की दूसरी धृवराशि है. प्रथम आउटी का प्रथम समय निकालना होवे तो एक बाद करना. तो शेष कुच्छ भी रहे नहीं. इस से गत युग की १० आउटी साथ दूसरी धृवराशि से गुनने ५४२०० होवे. उस प्रथम धृवराशि से भाग देने से पांच नक्षत्र पर्याय पूर्ण हो गई. उक्त पांच नक्षत्र पर्याय गत युग की हुई. और शेष कुच्छ नहीं रहा, उस से पुष्य नक्षत्र के १३८ मुहूर्त पूर्ण होगये, शेष २६४ मुहूर्त सूर्य नक्षत्र रहा इसके प्रथम समय में प्रथम आउटी बैठे. इस समय सूर्य साथ चंद्र नक्षत्र कितना रहा ? पुष्य नक्षत्र चंद्र साथ तीस मुहूर्त का है. इसको २६४

आउट्टीओ पण्णत्ताओ ॥ १४ ॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमंवासिकियं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोगं जोतेति? ता अभिया अभिस्सणं पढमसमए तंसमयं

१४ तिथि आवे आगे शेष १६१ भाग रहे इस के ६२ ये भाग करने को १६१ को ६२ से गुना करना जिस से ९९८२ हुवे, इस से २२१ का भाग देने से ४५ भाग ६२ ये होवे, शेष ३७ भाग रहे इतने २२१ ये भाग जानना. इस तरह प्रथम अयन युग की आदि से १४ तिथि व्यतीत हुए पीछे पन्नरवी तिथि के ४५ भाग ६२ ये ३७ भाग २२१ ये के चरम समय में पूर्ण होवे, इस तरह सब अयन का जानना ॥१४॥ अब गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन्! इन पांच संवत्सर में प्रथम वर्षा काल संबंधी आउट्टि कब बैठे और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करे? अहो गौतम! अभिच नक्षत्र के तीन तारे कहे हैं, इस से बहुवचन में अभिजित नक्षत्र श्रावण वदी १ के प्रथम समय में वर्षा काल की प्रथम आउट्टी बैठे, एक युग में चंद्र साथ नक्षत्र ६७ पर्याय करते हैं और सूर्य १० आउट्टी करते हैं. एक नक्षत्र पर्याय के मुहूर्त के ६२ ये भाग के ६७ ये भाग १४०१८७० की धूवराशि हुई, एक आउट्टी के मुहूर्त के ६२ ये भाग के ६७ ये भाग २२८०५४६० की दूसरी धूवराशि हुई, इस में से प्रथम आउट्टी का प्रथम समय निकालना होवे तो प्रथम में से एक बाद करना, जिस से शेष कुच्छ रहे नहीं इस से गत युग की दश आउट्टी लेना, इस को दूसरी धूवराशि से गुनने २२८०५४६००, इस को

छेत्ता तेयण्णं चुण्णिया भागा सेसा ॥ ते समयं चणं सूरे पुच्छा ? ता पुसेणं पुस्सणं तंचेव पढमाए ॥ १६ ॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वास कि अउट्टि चंदे केणं णक्खत्तेणं पुच्छा? ता विहा विहाहिं, विसाहाणं तेरस

भाग देना. शेष रहे उन में से अभिजित नक्षत्र से नक्षत्र निकालना. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य कौनसे नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पुष्य नक्षत्र साथ सूर्य योग करता है. इस नक्षत्र के तीन तारे हैं. जैसे प्रथम आउटी में कहा वैसे ही पुष्य चंद्र नक्षत्र सूर्य साथ १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ या ३३ भाग ६७ या शेष रहे और सूर्य नक्षत्र २६४ शेष रहे उस के प्रथम समय में सूर्य योग करता है और तीसरी आउटी का प्रथम समय भोगता है. इस का गणित प्रथम जैसे जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में तीसरी वर्षाऋतु संबंधी युग से पांचवी आउटी कब बैठे और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करे ? अहो गौतम ! श्रावण शुदी १० को बैठे. विशाखा नक्षत्र के पांच तारे हैं इस से बहुवचन में विशाखा नक्षत्र १३ मुहूर्त ५४ भाग ६२ ये ४० चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे उस के प्रथम समय में युग की आदि से पांचवी आउटी का प्रथम समय में चंद्र योग करता है. इस का गणित प्रथम आउटी जैसे जानना. यहां पांच में से एक बाद करने शेष ४ रहे, इस से दूसरी ध्रुवराशिको चार से गुना करके प्रथम ध्रुवराशि से भाग देना. अहो भगवन् ! उस समय

सूत्र

संच बावट्ठी भागा बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठि छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥ १५ ॥ ता एएसिणं पंचण्ह संवच्छराणं दोच्चं वासि कि आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेण जोगं जोएति? ता मगसरे मगसरेणं एक्कारस मुहुत्ता एगूण चालीस बावट्ठी भागा बावट्ठी भाग च सत्तसट्ठिया

अर्थ

से गुनते ७३२० होवे और सूर्य साथ ४०२ मुहूर्त का यह नक्षत्र है, इस ७३२० को ४०२ से भाग देने से १९ मुहूर्त आये, शेष २८२ रहे, इस के ६२ ये भाग करने के ६२ से गुना करना, इस से १७४८४ हुवे. इस को ४०२ से भाग देने से ४३ भाग ६२ ये आये शेष १९८५ रहे. इस को ६७ से गुना करके ४०२ से भाग देना इस से ३३ भाग ६७ ये आये. इस से सूर्य साथ पूष्य चंद्र नक्षत्र १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ या ३३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे उस के प्रथम समय में प्रथम आउट्टी बैठे. इस से सूर्य पूष्य का योग करे ॥१५॥ अहो भगवन्! इन पांच संवत्सर में दूसरी वर्षा काल संबंधी आउट्टी कब बैठे? अर्थात् युग की आदि से तीसरी आउट्टी कब बैठे? और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करे? अहो गौतम! श्रावण वदी १३ को तीसरी आउट्टी बैठे. मृगशर नक्षत्र के तीन तारे हैं इस से बहु वचन में मृगशर नक्षत्र अग्यारह मुहूर्त ४२ भाग ६२ ये और ५३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे उस के प्रथम समय में युग की आदि से तीसरी आउट्टी का प्रथम समय बैठे. इस का गणित पहिले जैसे अर्थात् तीन में से एक बाद करके शेष दो रहे. इस से दूसरी ध्रुवराशि को गुना कर प्रथम ध्रुवराशि से

सूरे केणं णक्खत्तेणं पूसेणं पुसस्सणं. तंचेव ॥१८॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासि किं आउट्टि चंदे केणं णक्खत्तेणं, ता पुव्वाहिं फग्गुणिहिं पुव्वाणं फग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तचालीस बावट्ठी भाग मुहुत्तस्स तेरसय चुण्णिया भागा सेसा तंसमयं चणं सूरे केण? ता पुसेणं, पुसस्सणं एकूणवीसा मुहुत्तस्स तेत्तालसिंच बावट्ठी भागा बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छत्ता तेत्तीसं चेव चुण्णिया ॥ १९ ॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं हेमंते आउट्टि चंदे केणं णक्खत्तेणं ? ता हत्थेणं, हत्थस्सणं

१९ मुहुर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ भाग ६७ ये शेष रहे तब प्रथम समय में युग की आदि से सातवी आउट्टी का प्रथम समय बैठे. ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में पांचवा वर्षाकाल संबंधी नवमी आउट्टी किस तिथि पर बैठती है और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे कहे हैं. इन से अनेक वचन से पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र १२ मुहुर्त ४७ भाग ६२ ये १३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब युग से नवमी आउट्टी का प्रथम समय में बैठे. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय पुष्य नक्षत्र साथ सूर्य योग करता है. इस के तीन तारे कहे हैं. यह १९ मुहुर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे और सूर्य नक्षत्र २३४ मुहुर्त रहे उस के प्रथम समय में नवमी आउट्टी का प्रथम समय बैठे. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम हेमंत काल संबंधी आउट्टी कब बैठती है और चंद्र

सूत्र

मुहुत्ताचोरण बावट्ठी भागा चालीसं चुण्णिया भागा सेसा पढम समए तं समयं चणं सूरे के णक्खत्ते ? ता पुसेणं पुसस्स णं तंचेव ॥ १७॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केण नक्खत्तेणं? ता रेवतीहिं रेवतीणं पण्णवीसं मुहुत्ता दुवत्तीसंच बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छत्ता छव्वीसं चूण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयंचणं

अर्थ

सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय सूर्य पुष्य नक्षत्र से योग करता है. पुष्य नक्षत्र के तीन तारे कहे हैं. इस के २६४ मुहूर्त शेष रहे और पुष्य चंद्र नक्षत्र सूर्य साथ १२ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ भाग ६७ ये शेष रहने पर प्रथम समय में युग की आदि से पांचवी आउट्टी के प्रथम समय में सूर्य योग करे. इस का गणित पूर्वोक्त जैसे जानना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में चतुर्थ वर्षाकाल संबंधी युग से सातवी आउटी कब बैठे ? और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करे ? अहो गौतम ! श्रावण वदी ७ के प्रथम समय में रेवति नक्षत्र के बत्तीस तारे कहे हैं इन से रेवति नक्षत्र के २५ मुहूर्त ३२ भाग ६२ ये २६ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब उस के प्रथम समय में चंद्र योग करता है. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पुष्य नक्षत्र के तीन तारे हैं इस में बहुवचन में पुष्य नक्षत्र पूर्वोक्त जैसे १३८ मुहूर्त गये पीछे २६४ मुहूर्त शेष रहने पर वगैरह शेष सब कथन प्रथम आउटी जैसे जानना. यावत् पुष्य चंद्र नक्षत्र

सूरे कणं णक्खत्तेणं पूसेणं पुसस्सणं तंचेव ॥१८॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासि किं आउट्टि चंदे कणं णक्खत्तेणं, ता पुव्वाहिं फग्गुणिहिं पुव्वाणं फग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तचालीस बावट्ठी भाग। मुहुत्तस्स तेरसय चुण्णिया भागा सेसा तंसमयं चणं सूरे कण? ता पुसेणं, पुसस्सणं एकूणवीसा मुहुत्तस्स तेत्तालसिंच बावट्ठी भागा बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छत्ता तत्तीसं चेव चुण्णिया ॥ १९ ॥ तएएसिणं पंचण्हं संवच्छाराणं पढमं हेमंते आउट्टि चंदे कणं णक्खत्तेणं ? ता हत्थेणं, हत्थस्सणं

१९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ भाग ६७ ये शेष रहे तब प्रथम समय में युग की आदि से सातवी आउटी का प्रथम समय बैठे. ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में पांचवा वर्षाकाल संबंधी नववी आउटी किस तिथि पर बैठती है और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे कहे हैं. इन में अनेक वचा से पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र १२ मुहूर्त ४७ भाग ६२ ये १३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब युग से नववी आउटी का प्रथम समय में बैठे. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय पुष्य नक्षत्र साथ सूर्य योग करता है. इस के तीन तारे कहे हैं. यह १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे और सूर्य नक्षत्र २३४ मुहूर्त रहे उस के प्रथम समय में नववी आउटी का प्रथम समय बैठे. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में प्रथम हेमंत काल संबंधी आउटी कब बैठती है ? और चंद्र

सूत्र

पंच महुत्ता पण्णासेंच बावट्ठी भागा, बावट्ठी भागंच सत्तसट्ठिया छेत्ता छट्ठि चुण्णिया भागा सेसा तंसमयं चणं सूरे केणं? ता उत्तराहिं असाढाहिं. उत्ताराणं असाढाणं चरम समये ॥ २० ॥ ताएएसिण पंचण्हं संवच्छराणं दोच्च हेमंताकियं आउट्टिं चंदे केणं? ता सतभिसयाहिं सतभिसयाणं दो मुहुत्ता अट्ठावीस, बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स सेतालिसं चुण्णिया भागा सेसा

अर्थ

किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! माघ वदी ७ के प्रथम समय में हस्त नक्षत्र के पांच तारे कहे हैं इस से हस्त नक्षत्र का योग होता है. यह नक्षत्र बहुवचन से पांच मुहूर्त ५० भाग ६२ ये ६० भाग ६७ ये शेष रहे तब उस के प्रथम समय में युग की आदि से दूसरी आउटी का प्रथम समय होवे. उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करे ? अहो गौतम ! उस समय उत्तराषाढा नक्षत्र की साथ सूर्य योग करे. उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे कहे हैं. यह नक्षत्र चरम समय भोगव कर अभिजित नक्षत्र के प्रथम समय में युग की आदि से दूसरी आउटी का प्रथम समय प्रवर्ते. इस का गणित प्रथम आउटी जैसे जानना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में दूसरी हेमंत काल संबंधी चौथी आउटी कब बैठती है. ? और कौनसा नक्षत्र चंद्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! शतभिषा नक्षत्र के १०० तारे कहे हैं, इस से अनेकवचनमें शतभिषा नक्षत्र २ मुहूर्त २८ भाग ६२ ये ४६ चूरणिये भाग ६७ ये शेष रहे तब इस के प्रथम समय में युग की आदि से चौथी आउटी का प्रथम समय होवे.

तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्ते ? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरम समए॥२१॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंते किय आउट्टिं चंदे केणं ? ता पुसेणं पुसस्सणं एकूणवीसं मुहुत्ता तयालीसंच बावट्ठी भागा बावट्ठी भागं सत्तसट्ठिया छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा तं समयं चणं सूरे केणं ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरम समए ॥२२॥ ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थे हेमंते

अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय उत्तराषाढा नक्षत्र साथ सूर्य योग करता है. यह चरम समय में योग करके अभिजित नक्षत्र के प्रथम समय में युगकी आदिसे चौथी आउट्टी का प्रथम समय प्रवर्ते इसका गणित प्रथम आउट्टी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में तीसरा हेमंत काल संबंधी युग से छठी आउट्टी कब बैठती है ? और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! पुष्य नक्षत्र के तीन तारे कहे हैं, मध्यकी १ को पुष्य नक्षत्र का योग होता है यह नक्षत्र १९ मुहूर्त ४३ भाग ६२ ये ३३ भाग ६७ ये शेप रहे तब इस के प्रथम समय में छठी आउट्टी का योग होता हैं. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उत्तराषाढा नक्षत्र साथ योग करता हैं. यह चरम समय भोगव कर अभिजित नक्षत्र के प्रथम समय में छठी आउट्टी का प्रथम समय प्रवर्तता है ॥ २२ ॥

किये आउट्टि चंदे केणं णक्खत्तेणं ? ता मूलेणं मूलस्ससणं छ मुहुत्ता अट्ठावीस बावट्ठी भागा बावट्ठी भागं च सत्त सट्ठिया छेत्ता वीस चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयं चणं सूरे केणं ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरिम समए ॥२३॥ ता एएसिणं पचण्ह संवच्छराणं पंचमं हेमंत किय आउट्टि चंदे केणं ? ता कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठी भागा मुहुत्तस्स

अहो भगवन् ? इन पांच संवत्सर में चौथा हेमंत काल संबंधी आउटा कब बैठती है और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! माघवदी १३ को मूल नक्षत्र के ११ तारे कहे हैं, इस में इस के अनेक वचन में मूल नक्षत्र के ६ मुहूर्त ५२ भाग ६२ ये २० भाग ६७ ये शेष रहे, तब उस के प्रथम समयमें आठवी आउटी का प्रथम समय बैठे. अहो भगवन् ! उससमय सूर्य किस नक्षत्र साथ योग करता है? अहो गौतम ! उत्तराषाढा नक्षत्र साथ योग करता है, यह चरम समय में योग कर के अभिजित नक्षत्र के प्रथम समय में युग की आदि से आठवी आउटी का प्रथम समय होवे, इस का गणित प्रथम आउटा अनुसार जानना. ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सरमें से पांचवा हेमंत काल संबंधी दशवी आउटी कब बैठती है और चंद्र किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय कृत्तिका नक्षत्र पह-वदी १० को बैठता है, इस के १८ मुहूर्त ३६ भाग ६२ ये ६ चूर्णिये भाग ६७ ये शेष रहे तब इस के प्रथम समय में दशवी आउटी बैठती है. अहो भगवन् ! उस समय सूर्य किस नक्षत्र साथ

योग करता है ? अहो गौतम ? उत्तराषाढा नक्षत्र साथ योग करता है, उसके चार तारे कहे हैं. इस के चरम समय में योग कर के अभिजित नक्षत्र के प्रथम समय में दशवी आउटी बैठे. इस का गणित पहिले जैसे जानना. यह दश आउटी किस तिथी में बैठती है. चंद्र का कोनसा नक्षत्र शेष रहे. सूर्य साथ कोनसा सूर्य नक्षत्र व चंद्र नक्षत्र कितना शेष रहे अथवा इस के प्रथम समय में आउटी बैठे उसका यंत्र

आउटी	तीथी	चंद्र नक्षत्र	शेष रहे मु०	भा. ६२	भा. ६७	सूर्य नक्षत्र	चंद्र साथ शे. मु०	भा. ६२	भा. ६७	सूर्य साथ शेष रहे : मुहूर्त
१	श्रावण वदी १	अभिजित	९	२४	६६	पुष्य	१९	४३	३३	२६४
२	महा वदी ७	हस्त	५	५०	६०	अभिजित	९	२४	६६	१२६
३	श्रावण वदी १३	मृगशर	११	३९	५३	पुष्य	१९	४३	३३	२६४
४	महा शुदी ४	शतभिषा	२	१८	४६	अभिजित	९	२४	६६	१२६
५	श्रावण शु. १०	विशाखा	१३	५०	४०	पुष्य	१९	४३	३३	२६४
६	महा वदी १	पुष्य	१९	४३	३३	अभिजित	९	२४	६६	१२६
७	श्रावण वदी ७	रेवती	२५	३२	२६	पुष्य	१९	४३	३३	२६४
८	महा वदी १३	मूल	६	५८	२०	अभिजित	९	२४	६६	१२६
९	श्रावण शुदी ४	पूर्वाफाल्गुनी	१२	४७	१३	पुष्य	१९	४३	३३	२६४
१०	महा शुदी १०	कृत्तिका	१८	३६	६	अभिजित	९	२४	६६	१२६

बत्तीसं भागं च सत्तसट्ठिभाग छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा ॥ तं समयं चणं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं असाढाहिं उत्तराणं असाढाणं चरिम समए ॥ २४ ॥ तत्थ खलु इमे दसविहे जोए पण्णत्ते तंजहा- वसहाणुजोए, वेणुयाणुजोए मंचजोए मंचातिमंच जोए छत्तजोए छत्तातिछत्तजोए जुगणद्धजोए घणजोए पिणितजोए मंडुक्कप्पुजोए नामदसमे ॥ २५ ॥ ता एएसिणं पचण्हं संवच्छराणं छत्तातिछत्त जोगे चंदे कंसि देसंसि

अर्थ

इस तरह यह मंत्र संयुक्त हुआ. इस में पांच आउट्टी सूर्य दक्षिणार्ध के पुष्य नक्षत्र साथ योग करे और पांच आउट्टी उत्तरार्ध के अभिजित नक्षत्र साथ योग करे ॥ २४ ॥ यहां दश प्रकार के योग कहे हैं १ वृषभानु योग, वृषभ के आकार में चंद्र सूर्य नक्षत्र जिस योग में मिलें सो वृषभानु योग है, २ वेणुानु योग सो वास की लता के आकार से ३ मांचानुयोग-सो मांचा के आकार में ४ मंचानु मंच योग सो मांचा पर मांचा का आकार वाला ५ छत्रानु योग सो छत्राकार वाला ६ छत्रछत्रानुयोग सो छत्र उन पर छत्र का आकार ७ यूका सो वृषभ के स्कंध में जूका होवे उस आकार से ८ घन समुद्र चंद्र सूर्य नक्षत्र के बीच में आवे सो ९ मणात योग सो चंद्र नक्षत्र के करण जाते सूर्य उपनय सो १० मंडुक प्लुत योग गति के संभव से होवे ॥ २६ ॥ इन दश में से छत्रानुछत्र योग वर्जकर शेष नव योग प्रायः अनेकधा अनेक स्थान मीलते हैं इस से छत्रानुछत्र का यहां प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! इन पांच संवत्सर में छत्र पर छत्र योग चंद्र किस देश में करे ? अहो

जोतेति ? ता जंबूद्दिवस्स २ पाईण पडीणाययाए उदिण दाहिण जीवाए मंडलं चउव्विसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणं पुरत्थिमिल्लंसि चउभाग मंडलंसि, सत्तावीसं भागे उवाविणिवेत्ता अट्ठावीसति भागे विंसतिहा छेत्ता, अट्ठारस भागे उवविणा विचा तिहिं भागहिं दोहिया कलाहिं दाहिण पच्चत्थिमे चउभाग मंडलं असंपत्ते तत्थणं से चंदे छत्तातिछत्त जोगं जोतेति, उप्पं चंदे मज्झेणक्खत्ते हेट्ठा आइचे तंसमयं चणंचदे केणं णक्खचे ? ताहिं चित्ताहिं चित्ताणं चरमे समए. इति बारसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १२ ॥

गौतम ! इस जम्बूद्वीप में पूर्व पश्चिम की लम्बाई में व उत्तर दक्षिण की जिव्हा में एक मंडल के १२४ के भाग चार करना. इस में ३१ भाग उत्तर पूर्व के ईशान कून में, ३१ पूर्व दक्षिण अग्निकून में, ३१ भाग दक्षिण पश्चिम नैऋत्यकून में और चौथा ३१ भाग पश्चिम उत्तर वायव्यकूनमें. इन चार भागों से दक्षिण पूर्व को चौथा ३१ भाग में से २७ भाग लेकर अट्ठावीसवे भाग के बीस भाग करना. जिस में से १८ भाग लेकर १९वे भाग के तीन भाग करना इसके दो भाग लेकर दक्षिण पश्चिमके चौथे भागको नहीं पहूंचता हुवा चंद्र छत्र पर छत्र का योग करे. इस समय उपर चंद्र मध्य में नक्षत्र और निचे सूर्य रहे. अहो भगवन् ! इस समय चंद्र, किस नक्षत्र साथ योग करता है ? अहो गौतम ! उस समय चंद्र चित्रा नक्षत्र के चरम समय में होवे. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का बारहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १२ ॥ (:) (:)

॥ त्रयोदश प्राभृतम् ॥

मूल — ता कहंते चंदमास वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं आहितेति वदेज्जा? ता अट्ठ पंचासिते मुहुत्तसते तीसंच बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता दोसिणा पक्खउण अंधकार पक्खस्स आयमाणा चंदे, चत्तारि बेयाले स मुहुत्तसए छेत्तालीसंच बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स जावति चंदे रज्जति तं पढमाए पढम भाग बितियाए बितियं भागं जाव पन्नरसमे.

अर्थ — अब तेरहवे पाहुडे में चंद्र की वृद्धि अपवृद्धि का कथन करते हैं. अहो भगवन्! चंद्र मासकी वृद्धि अपवृद्धि कैसे कही? अहो गौतम! चंद्र मास की ८८५ $\frac{३०}{६२}$ मुहूर्त की वृद्धि अपवृद्धि कही. चंद्र तीथी २९ $\frac{३२}{६२}$ मुहूर्त की है इस को ३० तीथी से गुनने ८८५ $\frac{३०}{६२}$ मुहूर्त की है. इस के दो पक्ष कहे हैं—अंधकार पक्ष जिस में अंधकार की वृद्धि और शुक्ल पक्ष जिस में अंधकार की अपवृद्धि (हानि) अंधकार पक्ष आश्रित ४४२ $\frac{४६}{६२}$ मुहूर्त पर्यंत चंद्र राहु से रक्त होवे क्यों कि पन्नरह तीथी का पक्ष होता है, एक तिथी २९ $\frac{३२}{६२}$ इस को मुहूर्त की है इस से १५ में गुनना, जिस से ४४२ $\frac{४६}{६२}$ मुहूर्त होवे; इस को ३० मे भाग देने से १५ $\frac{?}{६२}$ दिन होवे. इत ने दिन में चंद्र का विमान राहु के विमान से रक्त होवे. प्रथम तीथी में चंद्र के विमान का प्रथम भाग राहु के विमान से रक्त होता है, दूसरी तीथी में दो भाग, तीसरी में तीन यावत् पन्नरहवी तीथी में पन्नरह भाग चंद्र का विमान राहु के विमान से रक्त होवे, और एक भाग विरक्त होवे.

पण्णरस भागे चरिम समए चंदे रत्ते भवति; अवसेस समए चंदे रत्तेय विरत्ते भवति अयणं अमावासं, एत्थणं पढमे पक्खे अमावासातो अंधकारे पक्खस्स ॥ १ ॥ ता दोसिणा पक्खं अयमाणे चंदा चत्तारि बयालीस मुहुत्तसए छयालीसंच बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स जावति चंदे विरज्जति तंजहा-पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमे पण्णरसमं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवति, अवसेस समए रत्तेय विरत्तेय भवति ॥ अयणं पुण्णमासिणी एत्थणं दोच्चे पुण्णमासिणं ॥२॥ तत्थखलु इमाओ बावट्ठी पुण्णमातो

चंद्र का विमान ६२ ये भाग है, इस में प्रत्येक तिथी में चार २ भाग का आवरण होवे, इस तरह पन्नरवी तिथि में ६० भाग का आवरण होवे और दो भाग अनावृत रहे. चंद्र विमान सूर्य विमान साथ चलता है इस से अमावास्या को चंद्र का विमान मनुष्य की दृष्टिगोचर में नहीं आता है; इस के चरम समय से चंद्र विरक्त होवे. यह कृष्ण पक्ष में वदी प्रतिपदा से अमावास्या पर्यंत होता है. इस तरह अमावास्या पर्यंत अंधकार पक्ष जानना ॥ १ ॥ अब दूसरा शुक्ल पक्ष आने से चंद्र ४४२$\frac{४६}{६२}$ मुहूर्त तक विरक्त होवे; प्रथम तिथि का प्रथम भाग, दूसरी तिथि का दो भाग यावत् पन्नरवी तिथि को पन्नरहवा भाग राहु के विमान से विरक्त होवे, चरम समय में चंद्र संपूर्ण विरक्त होवे, फीर चंद्र विरक्त से रक्त होवे. यह शुदी १ से शुदी १५ तक होवे. इस तरह युग में दो पर्व- एक कृष्ण पक्ष की अमावास्या २ एक शुक्ल पक्ष की

सूत्र

वावट्ठी अमावासातो पुण्णमासिओ, वावट्ठी एए कसिणा रागा वावट्ठी एए कसिणा विरागा, एए चउव्वीसेपव्वसते कसिणे रागाविराग जाव तिताणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एएणं चउव्वीसेणं सएणं ऊणगाते कत्तियाणं परित्ता असंखेज्जा सया भवइ देस रागविराग तिमक्खायं. ता अमावासातो पुण्णमासिणि चत्तालीसं बयालीस मुहुत्तसए छयालिस च वावट्ठी भाग मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ॥ ता अमावासातोण अमावासा अट्ठ पंचासिते मुहुत्तसए तीसचं वावट्ठी भागं मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ॥ ता पुण•

अर्थ

पूर्णिमा का होवे ॥ २ ॥ इस तरह एक युग में ६२ अमावास्या ६२ पूर्णिमा कही हैं. ६२ अमावास्याओं में एक २ के अंतर से राहु के विमान से चंद्र विरक्त होवे. और बासठ पूर्णिमा में एक २ के अंतर से. राहु के विमान से चंद्र विरक्त होवे. यों १२४ पर्व एक युग में होवे. इन १२४ पर्व में किसी स्थान रक्त व किसी स्थान विरक्त होवे यावत् इन पांच संवत्सर के जितने समय हैं उन में एक पक्ष के एक २ समय के हिसाब से १२४ समय होवे, आंख मींच कर खोलने में जो समय लगता है वह लीया है. और जिस समय का दो विभाग होवे ऐसे असंख्यात समय होवे. इन में से अर्ध चंद्र का विमान राहु विमान की साथ रक्त होवे और अर्ध राहु विमान से विरक्त होवे. ऐसा अनंत ज्ञानीने कहा है. सो अंगीकार करना. इस में संशय करना

मासिणितेणं अमावासं चत्तारि बयालीस मुहुत्तसते तंचेव, ता पुण्णमासितेणं पुण्णमासिणि अट्ठ पंचासिते मुहुत्तसते तीसंच बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स आहितेति एमणं पवति; चंदमासे, एसेण पव्वते सगले जुगे ॥ ३ ॥ ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चउदस चउभागा मंडलतिं चरति एग चउवीसं सत भागं मंडलस्स ॥ ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कतिमंडलाइं चरइ ? ता सोलस मंडलाइं

नहीं. एक अमावास्या से पूर्णिमा तक ४४२ $\frac{46}{62}$ मुहूर्त होते हैं, और अमावास्या से अमावास्या पर्यंत ८८५ $\frac{30}{62}$ मुहूर्त होते हैं. पूर्णिमा से अमावास्या पर्यंत ४४२ $\frac{46}{62}$ मुहूर्त कहे हैं और पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ८८५ $\frac{30}{62}$ मुहूर्त कहे हैं. यही पर्व में चंद्र मास कहा. और यही एक युग में १२४ पर्व कहे हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अर्ध चंद्र मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! अर्ध चंद्र मास में १४ मंडल और पन्नरहवा मंडल का चतुर्थ भाग पर एक मंडल के १२४ भाग करे वैसा एक भाग इतना चलता है, क्यों कि एक युग में चंद्र १७६८ मंडल चलता है. एक युग के अर्ध चंद्र मास १२४ हैं. इस से १७६८ को १२४ का भाग देने से १५ मंडल आये शेष ३२ भाग १२४ के रहे. इस में ३१ भाग के पाव मंडल और शेष १ रहा. अर्थात् १४ $\frac{22}{24}$ मंडल चलता है. अहो भगवन् ! अर्ध सूर्य मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! अर्ध सूर्य मास में चंद्र १६ मंडल

सूत्र

बावट्ठी अमावासातो पण्णत्ताओ, बावट्ठी एए कसिणा रागा बावट्ठी एए कसिणा विरागा, एए चउव्वीसेपव्वसते कसिणं रागविराग जाव तिताणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एएणं चउव्वीसेणं सएणं ऊणगाते कत्तियाणं परित्ता असंखेज्जा सया भवइ देस रागविराग तिमक्खायं. ता अमावासातो पुण्णमासिणि चत्तालीसं बयालीस मुहुत्तसए छयालिस च बावट्ठी भाग मुहुत्तस्सस आहितेति वदेज्जा ॥ ता अमावासातोण अमावासा अट्ठ पंचासिते मुहुत्तसए तीसचं बावट्ठी भागं मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ॥ ता पुण॰

अर्थ

पूर्णिमा का होवे ॥ २ ॥ इस तरह एक युग में ६२ अमावास्या ६२ पूर्णिमा कही हैं. ६२ अमावास्याओं में एक २ के अंतर से राहु के विमान से चंद्र विरक्त होवे. और बासठ पूर्णिमा में एक २ के अंतर से राहु के विमान से चंद्र विरक्त होवे. यों १२४ पर्व एक युग में होवे. इन १२४ पर्व में किसी स्थान रक्त व किसी स्थान विरक्त होवे यावत् इन पांच संवत्सर के जितने समय हैं उन में एक पक्ष के एक २ समय के हिसाब से १२४ समय होवे, आंख मींच कर खोलने में जो समय लगता है वह लीया है. और जिस समय का दो विभाग होवे एसे असंख्यात समय होवे. इन में से अर्ध चंद्र का विमान राहु विमान की साथ रक्त होवे और अर्ध राहु विमान से विरक्त होवे. ऐसा अनंत ज्ञानीने कहा है. सो अंगीकार करना. इस में संशय करना

तं निक्खममाणे चेव अमावासाणं तेणं पविसमाणे चेव पुण्णमासिएणं, एताति खलु जाव तं चार चरति ॥ ५ ॥ ता पक्खत्ते अद्धमासेणं केवइ २ डलस्स चारं चरति ता पढमाय णागते चंदे दाहिणाते सतद्धमंडलाति जाति चंद दाहिणाए भागाते पविसमाणे चारं चरति॥ कतरानि खलु ताइं सतद्ध मंडलाइं जाइ चंद दाहिणाए भागाते पविसमाणे चारं चरति तजहा बितिए अद्ध मंडले चउत्थे. छट्ठ अट्ठमं दस बारसमे चोदसमे अद्ध मंडले॥ एताणि खलु ताणि सत्तद्धमंडलाणि जाति चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरति॥ ६॥

सोलह भाग ३१ वे हैं कि जो अमावास्या में चंद्र पूर्ण मास में मंडल के सोलह भाग में जाकर चाल चलता है. जिन के नाम आभ्यन्तर मंडल पर से निकलता हुआ (अमावास्या में) और बाह्य मंडल में प्रवेश करता हुआ पूर्णमास में इस तरह दो आठ भाग यावत् चाल चलता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! नक्षत्र अर्ध मास में चंद्र कितने मंडल चाल चलता है? अहो गौतम! चंद्र की प्रथम अयन जाते दक्षिण से सात अर्ध मंडल जाकर दक्षिण मार्ग में प्रवेश करता हुआ चाल चलता है अर्थात् नैऋत्य कून में से नीकलकर ईशान कून में जाकर सात अर्ध मंडल स्पर्शता हुआ चाल चलता है. अहो भगवन्! वे सात अर्ध मंडल कौनसे २ हैं कि जो ईशान कून में जाकर स्पर्शता हुआ चाल चलता है? अहो गौतम! दूसरा अर्ध मंडल, चौथा, छठा, आठवा, दशवा, बारहवा और चौदहवा ये सात अर्ध मंडल ईशान कून में

सूत्र

चरंति ता णक्खत्तेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरंति ता तेरस मंडलाइं चरंति तेरस सत्तसट्ठी भाग मंडलस्स ॥ ४ ॥ तदा अवराति खलु दुवे अट्ठ भागाति जाति चंदे केणइ असामण्णगाति सयमेव पइट्ठिया चारं चरति ॥ कयरा खलु ताइं दुवे अट्ठभागाइं जाति चंदे केणाति जाव पविसित्ता चारं चरति ता इमाति दुवे अट्ठभागाउ जाति चंदे केणइ असामण्णगाइं चारं चरति.

अर्थ

चलता है. × अहो भगवन् ! नक्षत्र के अर्ध मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! $१३\frac{१३}{६७}$ मंडल चंद्र चलता है क्यों कि एक युग में चंद्र १७६८ मंडल चलता है और नक्षत्र के अर्ध-मास १३४ हैं इस में १७६८ को १३४ का भाग देने से इतने होते हैं ॥ ४ ॥ उस समय अन्य दो ८ भाग ३१ ये हैं कि जिस को असामान्यपना से स्वयंप्रवेश कर चंद्र चाल चलता है. अहो भगवन् ! वे दो ८ भाग ३१ ये कौनसे हैं जिस को प्रवेश कर चंद्र चाल चलता है ? अहो गौतम ! यहां दो आठ भाग अर्थात्

× यहां सोलह मंडल का पाठ प्रायः दृष्टिगोचर होता है, परंतु यह अशुद्ध मालुम होता है. क्यों कि एक युग में चंद्र १७६८ मंडल चलता है और एक युग में सूर्य अर्ध मास १२० हैं, इस से १७६८ को १२० का भाग देने से $१४\frac{८८}{१२०}$ मंडल होते हैं. और यह पाठ सूर्य मंडल पर भी नहीं होसकता है क्यों कि एक युग में सूर्य मंडल १८३० हैं और सूर्य अर्ध मास १२० हैं इस से १५ मंडल पूर्ण करके सोलहवे मंडल पर चाल चलता है. तत्व केवली गम्य.

एयावत पढमेचंदा अद्धमंडलस्स जातिचंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरति ॥ एयावत पढमेचंदा अद्धमासे णो चंदे अद्धमासे ता चंदेअद्धमासे णो यणे समत्तो भवति, ॥७॥ ता णक्खत्ते अद्धमासे णो चंदे अद्धमासे ता चंदेअद्धमासे णो णक्खत्ते अद्धमासे॥ताओ णक्खत्ताओ अद्धमासाओ चंदेणं अद्धमासेणं किमहियं चराति? एगं अद्धमंडलं चरति चत्तारि सत्तसट्ठी भागाइं अद्धमंडलस्स सत्तसट्ठी भागंच एगतीसाए छत्ताणंव भागातिं॥८॥ ता दोच्चायणगते चंदे पुरात्थिमाए भागाए निक्खममाणे चउप्पणे

ईशान कून के एकी के मंडल १५ मंडल है. इस में नैऋत्य कुन के एकी के मंडल से चंद्र निकले सो ईशान कून के एकी के मंडल स्पर्शे, और ईशान कून के बेकी के मंडल मे निकले सो नैऋत्य कून के बेकी के मंडल स्पर्शे ॥ ७ ॥ नक्षत्र अर्ध मास में चंद्र अर्ध मास होवे नहीं और चंद्र अर्ध मास में नक्षत्र अर्ध मास होवे नहीं क्यों कि अर्ध चंद्र मास में नक्षत्र अर्ध मास का समावेश होता है. इस मे नक्षत्र अर्ध मास से चंद्र अर्ध मास बडा है. नक्षत्र अर्ध मास से चंद्र अर्ध मास कितना अधिक है ? नक्षत्र अर्ध मास से चंद्र अर्ध मास एक अर्ध मंडल और दूसरे अर्ध मंडल के चार भाग ६७ ये, और ९ भाग चूर्णिये ३१ ये अधिक चले ॥ ८ ॥ यह प्रथम नक्षत्र अर्ध मास में पन्नरहवे मंडल से जानना. इस तरह दूसरी अयन में गया हुवा चंद्र पूर्व के भाग से निकलकर प्रथम अयन में चंद्र १३ भाग ६७ या चला, इस से ५४ भाग ६७ या शेष रहा. अर्थात् ईशान कून से चंद्र निकलकर ५४ भाग ६७ या जावे तब चंद्र अन्य चंद्र मंडल के क्षेत्र में चले.

तं पढमायण गतं चंदे उतरद्धे भागाए तेपविसमाणे छ अद्धमंडलातिं तेरससत्तसट्ठि भागाइ अद्ध मंडल जातिं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चाति, कतिराति खलु ताइं छ अद्ध मंडलातिं तेरस सत्तसट्ठी जाव पाविसमाणे चारं चरति? इमाणि खलु ताइं छ अद्धमंडलाइ जाव चारं चरति तंजहा ततिए अद्ध मंडले पंचमे अद्ध मंडले, सत्तमे अद्धमंडले, एक्कारसमे अद्धमंडले, तेरसम, अद्धमंडले पण्णरसमस्स अद्धमंड-लस्स तेरससत्तसट्ठी भागाति एताणि खलु ताइं छ अद्ध मंडलातिं तेरस सत्तसट्ठी भागाति

जाते स्पर्शकर चाल चलते हैं ॥ ६ ॥ प्रथम अयन में जाते उत्तरार्ध भाग से प्रवेश करता हुवा अर्थात् ईशान कून से नैऋत्य कून में जाता हुवा चंद्र ६ अर्ध मंडल १३ भाग ६७ ये इतना मंडल चलता है. अहो भगवन्! वे छ अर्ध मंडल व १३ भाग ६७ ये कौनसे २ हैं? अहो गौतम! तीसरा, पांचवा, सातवा, नवमा, इग्यारहवा, तेरहवा ये छ और पन्नरहवे मंडल का ६७ या १३ भाग स्पर्शे. इस तरह उक्त छ अर्ध मंडल व ६७ ये भाग में प्रथम अयन चलता हुवा ईशान कून से नैऋत्य कून में प्रवेश करता हुवा चाल चलता है. यों यावत् प्रथम १३ नक्षत्र अर्ध मास में चंद्र अयन संपूर्ण होवे. जम्बूद्वीप में दो चंद्र के मंडल हैं जिन में से एक के दक्षिण में नैऋत्य कून में १५ मंडल हैं और दूसरे के ईशान कून में

अपणोचेवविणं चिण्हपाडे चरति ॥ १ ॥ अतराणि खलु ताई दुवे तेरस भागाति जाति चंदे केणति असामण्णाति सयमेव पविठ्ठिता चारं चरति कतराणि खलु, ताइं दुवे तेरस भागाति जाव च रं चरति? इमाणि खलु दुवे तेरस भागातिं जाव पविठ्ठिता चारं चरति तंजहा सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्व बाहिरे चेव मंडले एताणि खलु ताणि दुवे तेरस भागातिं जानिं चंदे केणइ असामण्णाति सयमेव पविठ्ठिता चारं चरति, एतावता दोच्चे. ॥ २ ॥ दूसरे नक्षत्र अर्ध मास के नैऋत्य कून में चक्र मंडल और ईशान कून में एकी मंडल जानना. अहो भगवन्! यह किम प्रकार दो तेरह अर्थात् २६ भाग ६७ ये चंद्र असामान्यपना से प्रवेश कर चलता है. अहो गौतम ! सब से आभ्यंतर मंडल व सब से बाह्य मंडल इस तरह दो तेरह भाग ६७ या स्वयमेव चंद्र प्रवेश कर असामान्य पना मे चलता है. क्योंकि एक युग में ६७ नक्षत्र मास है, और चंद्र मंडल १७६८ है इन को ६७ का भाग देने से २६ मंडल होवे शेष २६ भाग ६७ ये रहे इस से एक चंद्र की अपेक्षा से चउदहवे मंडल पर चंद्र अयन होवे शेष १२ मंडल अनंतर मंडल के २६ भाग ६७ वे जाकर नक्षत्र मास पूर्ण होवे नक्षत्र मास की आदि में चंद्र बाहिर के मंडल से प्रवेश करता हुवा तेरहवे मंडल मे नीकल कर चउदहवे मंडल के २६ भाग ६७ ये में नक्षत्र मास संपूर्ण होवे इस प्रकार दूसरा चंद्र अयन नक्षत्र मासकी अपेक्षासे

सत्तसट्ठी भागाति जाति चंदे पररसचिण्हंपडिचराति, तेरस सत्तसट्ठी भागाइं जातिचंदे अप्पणो चेवाचिण पडिचराति ता दोच्चायणगते चंदे पच्चात्थिमाते भागाते निक्खममाणे चउप्पणे जातिचंदे, पररसचिण्हंपडिचराति, तेरस भागाति जातिचंदे.

अर्थ—१३ भाग ६७ या प्रथम अयन में जाता हुवा और दूसरी अयन में ५४ भाग ६७ या चलता हुवा नैऋत्य कून के पन्नरहवे मंडल पर जावे सो पन्नरहवा मंडल अन्य चंद्र का जानना. १३ भाग ६७ या जाते चंद्र अपना मंडल क्षेत्र में चले अर्थात् नैऋत्य कून के पन्नरवे मंडल से नीकलता हुवा ईशान कून के चउदहवे मंडल पर जाते १३ भाग ६७ या स्वतः के मंडल को क्षेत्र पर चले इस से ईशान कून के चंद्र के ईशान कून से एकी मंडल और नैऋत्य कून में एक मंडल जानना. दूसरी अयन में गया हुवा चंद्र ५४ भाग ६७ या शेष रहने पर प्रथम अयन संपूर्ण हुए पीछे दूसरी अयन में रहा हुवा पश्चिम के भाग से (नैऋत्य कून से चंद्र नीकलता हुवा ५४ भाग ६७ या अन्य चंद्र मंडल के क्षेत्र में चलता है अर्थात् नैऋत्य कून में से चंद्र नीकल कर १३ भाग ६७ या प्रथम अयन में चला. और ५४ भाग ६७ या दूसरी अयन में चलता ईशान कून में पन्नरह वे मंडल पर पहूंचा. यह पन्नरहवा मंडल अन्य चंद्र का जानना. यहां १३ भाग ६७ या चंद्र अपना क्षेत्र में चले, अर्थात् ईशान कून में से नीकलता हुवा नैऋत्य कून के चउदहवे मंडल पर जाते १३ भाग ६७ या स्वतः के क्षेत्र में चले, इस से नैऋत्य कून के चंद्र

अप्पणोचेवचिणं चिण्हपाडि चरति ॥ ९ ॥ अवराणि खलुताई दुवे तेरस भागातिं जाति चंदे केणति असामण्णाति सयमेव पविट्ठिता चारं चरति कतराणि खलु, ताइंदुवे तेरस भागति जाव चारं चरति? इमाणि खलु दुवे तेरस भागातिं जाव पविट्ठिता चारं चरति तंजहा सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्व बाहिरे चेव मंडले एताणि खलु ताणि दुवे तेरस भागातिं जातिं चंदे केणइ असामण्णाति सयमेव पविट्ठिता चारं चरति, एतावता दोच्चे

॥ १ ॥ दूसरे नक्षत्र अर्ध मास के नैऋत्य कून में चक्र मंडल और ईशान कून में एक मंडल जानना. ॥ ९ ॥ दूसरे नक्षत्र अर्ध मास में दो तेरह अर्थात् २६ भाग ६७ ये चंद्र असामान्यपना से प्रवेश कर चलता है. अहो भगवन्! यह किस प्रकार दो तेरह भाग स्वयमेव प्रवेश कर चंद्र असामान्यपना से चलता है? अहो गौतम! सब से आभ्यंतर मंडल व सब से बाह्य मंडल इस तरह दो तेरह भाग ६७ या स्वयमेव चंद्र प्रवेश कर असामान्य पना से चलता है. क्योंकि एक युग में ६७ नक्षत्र मास है, और चंद्र मंडल १७६८ है इन के ६७ का भाग देने से २६ मंडल होवे शेष २६ भाग ६७ ये रहे इस से एक चंद्र की अपेक्षासे चउदहवे मंडल पर चंद्र अयन होवे शेष १२ मंडल अनंतर मंडल के २६ भाग ६७ वे जाकर नक्षत्र मास पूर्ण होवे नक्षत्र मास की आदि में चंद्र बाहिर के मंडल में प्रवेश करता हुवा तेरहवे मंडल में नीकल कर चउदहवे मंडल के २६ भाग ६७ वे में नक्षत्र मास संपूर्ण होवे इस प्रकार दूसरा चंद्र अयन नक्षत्र मासकी अपेक्षासे

चंद्रायणे समत्ते भवति ॥ १० ॥ ता णक्खत्तमासे णो चंदमासे, चंदमासे, णो णक्खत्तमासे ता णक्खत्तमासे चंदेणं मासेणं किं महियं चरति ? ता दो अद्धमंडलाइं चरति अट्ठय सत्तसट्ठिभागंच अद्ध मंडलस्स सत्तसट्ठि भागं च एकतीसहाछेत्ता अट्ठारस भागाइं॥ ११ ॥ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्ध मंडलस्स एकत्तलीसंच सत्तसट्ठीभागाति

संपूर्ण होवे ॥ १० ॥ यहां नक्षत्र मास मे चंद्र मास होवे नहीं और चंद्र मास में नक्षत्र मास नहीं होवे, क्यों कि चंद्र मास मे नक्षत्र मास छोटा है. यहां गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! नक्षत्र मास से चंद्र मास कितना अधिक चलता है? अहो गौतम! नक्षत्र मास से चंद्र मास दो अर्ध मंडल ८ भाग ६७ या १८ चूर्णिये भाग २१ वे अधिक चलता है॥ ११ ॥नक्षत्र की तीसरी अयन में गया हुवा पश्चिम भाग अर्थात् नैऋत्यकून से नीकलकर ईशानकून में प्रवेश करता हुवा बाहिर के अनंतर पश्चिम के अर्ध मंडल का ४१ भाग ६७ या अपने व अन्य के क्षेत्र पर चलता है, १३ भाग ६७ या यह क्षेत्र चलता है. तेरह भाग ६७ ये जाते आप ना व अन्य का क्षेत्र चलता है. इस तरह बाहिर के पश्चिम भाग से प्रवेश करता हुवा अर्ध मंडल ४१ भाग ६७ ये में अर्ध मंडल संपूर्ण होवे. यहां जो क्षेत्र कहा उस का यह कारन है कि एक मंडल से दो की मंडल तक ४१ भाग ६७ या चलता है. जो मंडल का अपने नववे आंक में कहा हुवा है. इस से

जातिचंदे अप्पणोय परस्स चिण्णं पडिचरति तेरस सतसट्ठी भागाति परस्स चिण्णं पडिचरइ. जातिं चंदे अप्पणोय परस्साचिण्णं पाडिचरइ, एतावताबाहिरांणतरे तेरस सतसट्ठि भागातिं जातिं चंदे अप्पणोय परस्साचिण्णं पाडिचरइ, एतावताबाहिरांणतरे पचात्थिमिल्ले अद्धमंडले एकतालीस सत्तसट्ठी समत्ते भवति, ॥ १२ ॥ ता तचायणगते चंदे पुरत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरतस्स पुरात्थिमिल्लस्स अद्ध

अपने मंडलपर चलता है. परंतु यहां अपना व अन्य का दोनों का कहा इस का कारण यह है कि एक मंडल १,३४ भाग का है. इस में ६७ भाग में दो सूर्य व ६७ भाग में दो चंद्र इस तरह संपूर्ण मंडल के क्षेत्र का विभाग करना. इस से एक २ विभाग ३३॥ का आता है. परंतु ४१ भाग ६७ या चलकर ईशान कूनमें आवे इसमें से २४। भाग वायव्यकूनमें सूर्यका क्षेत्र स्पर्शे यह पर क्षेत्र और १६॥। क्षेत्र ईशान कून में चंद्र का स्पर्शे यह अपना क्षेत्र जानना. क्यों कि बेकी मंडल स्वतः का है. इस से १३ भाग परक्षेत्र और १६॥। भाग अपना क्षेत्र है. परंतु पाठ तेरह कहा है यह क्यों कहा होगा. सो कारी गम्य और जो १३ भाग अपना व पर का क्षेत्र कहा है उस में ३॥। भाग अपना क्षेत्र और ९। भाग अग्निकूनमें सूर्यका परक्षेत्र है वे ऐसा संभव है तत्त्व केवली गम्य ॥१२॥ उस नक्षत्रकी तीसरी अयण में गया हुवा पूर्व के अर्थात् ईशान कून में से नीकलकर नैऋत्य कून में प्रवेश करता हुवा बाहिर के अंतर में प्रवेश करता हुवा अर्ध मंडल के ४१ भाग ६७ ये जाते अपना व अन्य का क्षेत्र पर चलता है. १३

चरंति, एतावता बाहिर-चउद्दसे, पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति ॥ १४॥ एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे परस्स चउप्पण्णाइं दुवे सत्तसट्ठी भागाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तसट्ठी भागाइं जाति चंदे, अप्पणो चेव परस्सचिण्णं पडिचरइ बेतालीसं

से प्रवेश करते चउदहवे मंडलपर ३४ भाग ६७ या १८ चुर्णिये भाग ३१ या चले जवने में चंद्र मास संपूर्ण होवे. ॥ १४ ॥ यों एक चंद्र मास में चंद्रमा एक नक्षत्र व दो अर्ध मंडल और तीसरे अर्ध मंडल के ८ भाग ६७ ये १८ भाग ३१ ये इतना चलता है. यह कौन से २ क्षेत्र में संपूर्ण करे? यह नक्षत्र मास संपूर्ण होवे व चंद्र नीकलते चउदहवे अर्ध मंडल के २६ भाग ६७ या आकर नक्षत्र संपूर्ण करे. क्यों कि एक युग में नक्षत्र मास ६७ हैं और १७६८ अर्धमंडल चंद्र के हैं. १७६८ को ६७ से भाग देते २६ अर्ध मंडल आवे शेष २६ भाग ६७ ये है. एक नक्षत्र मास में २६ अर्धमंडल है, और २७ वे अर्ध मंडल में २६ भाग ६७ या चंद्र चलकर नक्षत्र मास संपूर्ण करे. इस से एक अयन के १४ अर्ध मंडल निकालो दूसरी अयन के १२ अर्ध मंडल २६ भाग ६७ या चले. परंतु पहिले १४ वे अर्ध मंडल पर २६ भाग ६७ या कहा है उस का क्या कारन? दूसरी अयन का दूसरे अर्ध मंडल से प्रारंभ होता है. इस से तेरवे अर्ध मंडल में एक मिलाने से १४ वा अर्ध मंडल के २६ भाग ६७ ये मे एक नक्षत्र मास संपूर्ण हुवा, तत्पश्चात् १४२ भाग ६७ ये १८ भाग ६१ या चलकर चंद्र मास पूर्ण होवे. १०८ भाग ६७ या परक्षत्र से व अपना क्षेत्र में चंद्र चाल चलता है क्योंकि ईशान-कून मे से नीकलता हुआ चंद्र १५ वे अर्ध मंडल पर २४१ भाग ६७ या अग्निकून में

भाग।तिं,अड्ढासत्तसट्ठिभागाइ सत्तसट्ठिभ गंच एकतीसह।छत्ता अट्ठारस भागाति जाति चंद अप्पणोय पररसचिण्णं पडिचरति,अवरातिं खलु दुवे तेरस भागातिं जाइ चंदे,केणातिं असामाणातिं सयमेव पविट्ठित्ता चारं चरति॥इच्चेसा चंदमासोयगमणनिवुट्ठि अणुव ट्ठिय

सूर्य का क्षेत्र चले और १६॥। भाग ६७ या अपना क्षेत्र चलकर चउदहवा अर्ध मंडल संपूर्ण करे तत्पश्चात्-पन्नरहवे अर्धमंडल पर चलते १६॥। भाग अपना क्षेत्र और ३३॥ भाग ६७ या वायव्य कून में सूर्य के क्षेत्र में चले, १६॥। भाग ६७ या ईशान कून में चंद्र के क्षेत्र प्रति चले और पन्नरहवा अर्ध मंडल ईशान कून मे संपूर्ण करे. वैसेही नैऋत्य कून मे नीकलता हुवा चंद्र चउदहवे अर्ध मंडल पर २४। भाग ६७ या वायव्य कून में सूर्य क्षेत्र चलकर व १६॥। भाग ६७ या ईशान कून में अपना क्षेत्र चलकर ईशान कूनमें चउदहवा अर्ध मंडल संपूर्ण करे, तत्पश्चात् पन्नरहवे अर्ध मंडल पर चलते १६॥। भाग ६७ या ईशान कून में अपना क्षेत्र चले और ३३॥ भाग ६७ या अग्निकून में पर क्षेत्र चले और १६॥। भाग पर क्षेत्र चलकर पन्नरहवा अर्ध मंडल संपूर्ण करे. १३ भाग ६७ या चंद्र अपना १४ वा अर्ध मंडल में प्रवेश कर पर क्षेत्र में चले. यों नैऋत्य कून से निकल कर चंद्र नैऋत्य कून में १३ भाग ६७ या पर क्षेत्र चले और ईशान कून में निकलकर ईशान कून में १३ भाग ६७ या पर क्षेत्र चले. बियालीस भाग का अर्ध एकवीस भाग ६७ या और १८ भाग ३१ या चलते चंद्र अपने १४ वे अर्ध मंडल पर जाते पर शेष पर चलकर चंद्र मास पूर्ण करे. ईशान कून से निकलता चंद्र ३॥। भाग ६७ या ईशान कून के

सूत्र

संठाणं साठिति ।विउव्वणगिड्डिपत्तेसुवि चंदेदेवे २ आहितेति वदेज्जा ॥ इति तेरसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १३ ॥ * * * * * *

अर्थ

चंद्र का पर क्षेत्र चलकर १७। भाग ६७ या १८ भाग ३१ वे अग्नि कून में सूर्य का पर क्षेत्र चलकर चंद्र मास पूर्ण करे. और नैऋत्य कून से निकलता चंद्र ३।। भाग ६७ या नैऋत्य कून में चंद्र का पर क्षेत्र व १७। भाग ६७ या १८ भाग ६१ या वायव्य कून के सूर्य का पर क्षेत्र चलकर चंद्र मास पूर्ण करे. दूसरी वक्त २६ भाग ६७ ये आता हुवा चंद्र १४ वे मंडल इस प्रकार स्वयमेव प्रवेश कर चाल चलकर नक्षत्र मास संपूर्ण करे. इस प्रकार चंद्र मास में गमन की वृद्धि अनवस्थितपना से जानना. चंद्र के विमान व मंडल के संस्थान कैसे व चंद्र के देवता की स्थिति कैसी है ? चंद्र का देव विकुर्वणा ग्रहण करता हुवा प्रवर्तता है. यों तेरहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥

॥ चतुर्दश प्राभृतम् ॥

ता कहंते दोसिणा पक्खाओ बाहु आहितेति वदेज्जा? ता दोसिणा पक्खेणं दोसिणा बहु आहितेति वदेज्जा ? ता कहंते दोसिणा पक्खे दोसिणा बहु आहितेति वदेज्जा ता अधकार पक्खाओ दोसिणा पक्खं दोसिणा बहु आहितेति वदेज्जा ॥ १ ॥ ता कहंते ता अंधकार पक्खाओ दोसिणा पक्खे दोसिणा बहु आहितेति वदेज्जा ॥ ता अंधकार पक्खाओण दोसिणा पक्खं अयमाणे चंदे चत्तारिबयाले मुहुत्त सएछेताल संच बावट्ठी भागे मुहुत्तस्स जाय चंदे विरज्जति तंपढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमं पण्णरसमं भागं॥

चउदहवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! दूसरा शुक्ल पक्ष कैसे कहा है ? अहो गौतम ! शुक्ल पक्ष त बहुत कहा है. अहो भगवन् ! दूसरे शुक्ल पक्ष में उद्योत बहुत किसे प्रकारकहा ? अहो गौतम . कृष्ण पक्ष पीछे शुक्ल पक्ष आनेसे अर्थात् कृष्ण पक्ष की अपेक्षा से उद्योत विशेष कहा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अंधकार पक्ष से उद्योत पक्ष के मुहूर्त कैसे कहे ? अर्थात् प्रतिदिन उद्योत की वृद्धि कैसे कही ? अहो गौतम ! अंधकार पक्ष से जब उद्योतपक्ष आता है तब चंद्र ४४२$\frac{46}{62}$ मुहूर्त पर्यंत राहु के विमान से विरक्त होवे. इस में पहिले दिन एक भाग यावत् पन्नरहवे दिन पन्नरह भाग राहु के विमान से विरक्त होकर वृद्धि होवे, इस तरह कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष के मुहूर्त कहे और इसी से प्रति

एवं खलु अधकार पक्खाओ दोसिणा पक्खे मुहुत्तेणं दोसिणा बहु आहितेति वदेज्जा ॥ २ ॥ ता केवतियाणं दोसिणा पक्खस्सपारित्ता दोसिणा आहितेति वदेज्जा? ता परित्ता असंखज्ज भागा ॥ ३ ॥ ता कहंते अंधकाराबहु आहितेति वदेज्जा? ता अंधकार पक्खे अंधकार बहु आहितेति वदेज्जा ? ता कह अंधकार पक्खे अंधकार बहु आहितेति वदेज्जा ? ता दोसिणा पक्खातोणं अंधकार पक्खं अंधकार बहु आहितेति वदेज्जा; ॥ ४ ॥ ता कहंते दोसिणा पक्खाओणं मुहुत्तेणं अंधकार अंधकारबहु आहितेति वदेज्जा? ता दोसिणा पक्खातोणं अंधकार पक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बयालीस मुहुत्त सए छयालीसंच बावट्ठी

दिन-उद्योत की वृद्धि कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शुक्ल पक्ष के कितने समय कहे हैं ? अहो गौतम ! शुक्ल पक्ष के असंख्यात समय कहे हैं. तथापि शुक्ल पक्ष के असंख्यात भाग कहे हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अंधकार बहुत कैसे कहा ? अहो गौतम ! अंधकार पक्ष में अंधकार बहुत कहा. अहो भगवन् ! अंधकार पक्ष में अंधकार बहुत कैसे कहा ? अहो गौतम ! उद्योत पक्ष के अंतर मे अंधकार पक्ष आता है. इस से अंधकार पक्ष में अंधकार बहुत कहा है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! उद्योत पक्ष से अंधकार पक्ष का अंधकार कितने मुहूर्त का कहा ? अहो गौतम ! उद्योत पक्ष से अंधकार पक्ष ४४२ $\frac{४६}{६२}$ मुहूर्त का अंध-

भागा मुहुत्तस्स जाति चंदे रज्जति तं पढमाते पढम भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं॥ एवं खलु दोसिणा पक्खातो अंधकार पक्खे अंधकार बहु आहितेति वदेज्जा ॥ ५ ॥ ता केवतियाणं अंधकार पक्खे परित्ता अंधकारे आहितेति वदेज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा ॥ इति चोद्दसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १४ ॥ * * *

कार कहा है. अर्थात् इतने मुहूर्त पर्यंत चंद्र राहु के विमान से आवरण वाला होवे. प्रथम तिथि में प्रथम भाग यावत् पन्नरहवी तिथि में पन्नरहवा भाग ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अंधकार पक्ष के कितने समय कहे हैं ? अहो गौतम ! अंधकार पक्ष के असंख्यात समय कहे हैं अर्थात् अंधकार पक्ष के असंख्यात भाग होते हैं. यह चउदहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ० ०

॥ पञ्चदश प्राभृतम् ॥

ता कहंते सिग्घगइ वत्थु आहितेति वदेज्जा ? ता एएसिणं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ता ताराख्वाणं चंदाहिंतो सूरा सिग्घगाति सूरेहिंतो गहा सिग्घगाति, गाहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगाति, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती ॥ सव्व-अप्पगतीणं चंदो, सव्व सिग्घगतीण तारा ॥ १ ॥ ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं, चंदे केवइयाइं भाग सयाइं गच्छति ? ता जं

चउदहवे पाहुडे में अंधकार व उद्योत का कथन किया. अब पन्नरहवे पाहुडे में चंद्र आदि नक्षत्र की शीघ्रता व मंदता कहते हैं. अहो भगवन् ! जो पांच प्रकार के ज्योतिषी हैं, उन में से शीघ्रगति किस की है ? अहो गौतम ! चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे इन पांच प्रकार के ज्योतिषियों में चंद्र से सूर्य की शीघ्रगति है, सूर्य से ग्रह की शीघ्रगति है, ग्रह से नक्षत्र की शीघ्रगति है, और नक्षत्र से ताराओं की शीघ्रगति है. सब से मंद गति चंद्र की व सब से शीघ्रगति ताराओं की है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एक २ मुहूर्त में चंद्र कितना भाग चलता है ? अहो गौतम ! चंद्र जिस २ मंडल पर चलता है उस २ मंडल का १०९८०० भाग करना जिस में के १७६८ भाग एक मुहूर्त में चलता है. एक युग में चंद्र कितना मंडल करे ? युग की १८३० अहोरात्रि हैं इस के मुहूर्त करने को ३० से गुना करने से

मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता तस्स मंडलस्स परिक्खेवस्स सत्तरस्स अट्ठसट्ठी भागसयाति गच्छाति मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतिएय सए हि छेत्ता ॥२॥ ता एग-भागसयाति गच्छाति मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतिएय सए हि छेत्ता ॥२॥ ता एग- मेगेणं मुहुत्तेणं सूरे केवतियाति भागसयाइं गच्छति? ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं

५४९०० होवे. यह ५४९०० को १७६८ से गुनते ९७०६१२०० भाग होवे. इस भाग को १०९८०० से भाग देने से ८८४ मंडल होवे. इस से दो चंद्र मिलकर एक युग में ८८४ मंडल चले. इस के अर्ध मंडल १७६८ होते हैं. १८३० दिन में १७६८ अर्ध मंडल होवे तो दो अर्ध मंडल में कितने दिन होवे? १८३० को दुगना करने से ३६६० होवे इस को १७६८ का भाग देने दो आये शेष १२४ रहे इस के मुहूर्त करने को ३० से गुणना जिस से ३७२० होवे. इस को १७६८ का भाग देने से दो मुहूर्त आये शेष १८४ रहे इस के २२१ के भाग करने को २२१ से गुणना जिस से ४०६६४ हुए इस के १७६८ का भाग देने से २३ भाग २२१ ये हुवे. इस से दो अर्ध मंडल चलने में चंद्र को दो दिन दो मुहूर्त व २३ भाग २२१ ये लगे. ॥ २ ॥ अहो भगवन्! एक २ भाग में सूर्य कितने सो भाग चलता है? अहो गौतम! जिस २ मंडल पर सूर्य चलता है उस २ मंडल की परिधि को १०९८०० भाग कर उस में से १८३० भाग एक मुहूर्त में चलता है. इस तरह सूर्य एक युग में कितने मंडल करता है? एक युग में १८३० अहो रात्रि है इस के मुहूर्त करने को १८३० को ३० गुना करने से ५४९०० होवे इस के १८३० भाग से गुनने से १००४६७०००० भाग होवे. इस को मंडल के १०९८०० से भाग

सूत्र चरति ता तस्स मंडलस्स परिक्खेवस्स अट्ठारसतीसे भागे सते गच्छति मंडले सयसहस्सेणं अट्ठाणउति एयसएहिं छेत्ता ॥ ३ ॥ ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्तेणं केवतियाति भागा सयाति गच्छंति. ता जंजंमंडलं उवसंकमित्ता चारं

अर्थ देने से ९१५ मंडल दो सूर्य एक युग में करते है. इस तरह अर्ध मंडल १८३० होवे, एक युग में १८३० अर्ध मंडल होवे, तो दो अर्ध मंडल कितने दिन में होवे? १८३० को दुगुन करने से ३६६० होवे इस को १८३० का भाग देने से दो दिन होवे शेष कुच्छ रहे नहीं, इस से दो दिन में दो अर्ध मंडल सूर्य चलता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! एक २ मुहूर्त में नक्षत्र कितने सो भाग चलता है? अहो गौतम! नक्षत्र जिन २ मंडल पर चलते है उन २ मंडल के १०९८०० भाग में से १८३५ भाग एक मुहूर्त में चलते हैं. इस तरह चलने से एक युग में कितने मंडल चले? एक युग में १८३० अहोरात्रि है इस के मुहूर्त करने को ३० से गुनना जिस से ५४९०० होवे. इस मुहूर्त को १८३५ के भाग से गुनते १००७४१५०० भाग होवे. इस के मंडल करने के लिये १०९८०० से भाग देना जिस से ९१७॥ मंडल होवे शेष कुच्छ रहे नहीं. इतना हो नक्षत्र चले. इस के अर्ध मंडल करने को उक्त संख्या को दुगुना करना जिस में १८३५ अर्ध मंडल होवे. उक्त १८३५ अर्ध मंडल १८३० दिन में होवे अब दो अर्ध मंडल कितने दिन में चले सो कहते हैं. १८३० को दुगुने करने से ३६६० हुवे, इस को १८३५ का भाग देने से एक दिन व शेष

चरति तस्स मंड-लस्स परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसं भागसते गच्छति मंडलं सतसह-स्सेणं अट्ठा जाव छेत्ता ॥ ४ ॥ ता जयाणं चंदे गति समावण्णगं, सूरे गति समावण्णगं भवइ सेणं गइ विसेसेति मायाए केवइया विसेसेति ? ता बावट्ठी भागे विसेसेइ । ता जयाणं चंदे गइ समावण्णा णक्खत्ते गइ

	एक मुहूर्त में कितने भाग चला	एक युग में कितने मंडल संपूर्ण करे	एक युग में अर्ध मंडल	एक संपूर्ण मंडल अथवा दो अर्ध मंडल में कितना समय होवे. दिन	मु०	मु. के भाग		
	१०२८००			दिन	मु०	मु. के भाग
चंद्र	१७६८	८८४	१७६८	२	२	$\frac{२३}{२२१}$
सूर्य	१८३०	९१५	१८३०	२	०	०
नक्षत्र	१८३५	९१७॥	१८३५	१	२९	$\frac{३०७}{३६७}$

१८३०. रहा इस के मुहूर्त करने को ३० से गुनने से ५४७५० होवे इस को १८३५ का भाग देने से २९ मुहूर्त व शेष १५३५ रहे, इन के ३६७ वे भाग करने को ३६७ से गुनने से ५६३३४५ होवे, इस को १८३५ का भाग देने से ३०७ भाग हुवे, शेष कुच्छ नहीं रहा. इस तरह दो अर्ध मंडल नक्षत्र एक दिन २९ मुहूर्त व ३०७ भाग ३६७या में पूर्ण करे. इसका उक्त यंत्र है.॥४॥ अहो भगवन्! अब चंद्र मुहूर्त के चरिमांत में

समावण्णे भवइ सेणं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ता सत्तसट्ठी भागे विसेसेइ ता जयाणं सूरे गइ समावण्णे भवइ णक्खत्ते गइ समावण्णे भवइ सेणं गति समायाए केवइय विसेसेइ ? ता पंच भागा विसेसेइ ॥ ५ ॥ ता जयाणं चंदे गति समावण्णग अभिइ णक्खत्ते गइ समवाभग पुरत्थिमताए भागाए समासेति ता णव मुहुत्ते

गति संपूर्ण करे तब सूर्य भी मुहूर्त के परमांत में गति संपूर्ण करे. इन दोनों में सूर्य की गति में मर्यादा से क्या विशेषपना है. अर्थात् चंद्र से सूर्य एक मुहूर्त में कितना अधिक चलता है ? अहो गौतम ! मुहूर्त के चरम समय में चंद्र से सूर्य एक मंडल के १०९८०० भाग में से ६२ भाग भाग चले. इतना सूर्य का विषय अधिक कहा. अहो भगवन् ! चंद्र एक मुहूर्त में गति संपूर्ण करे, वैसे ही नक्षत्र एक मुहूर्त में गति संपूर्ण करे तो इस में चंद्र से नक्षत्र कितना भाग, भाग चले ? अहो गौतम ! [illegible]क मुहूर्त के चरम समय में चंद्र से नक्षत्र एक मंडल के १०९८०० भाग में के ६७ भाग अधिक [illegible]ग चले. इतना विषय नक्षत्र का जानना. अहो भगवन् ! जैसे सूर्य एक मुहूर्त में गति संपूर्ण करता है [वै]से ही नक्षत्र एक मुहूर्त में गति संपूर्ण करता है. इस तरह गति संपूर्ण करने में क्या विशेषता है ? अर्थात् कितना अधिक नक्षत्र चलता है. अहो गौतम ! एक मंडल के १०९८०० भाग में के पांच भाग सूर्य से नक्षत्र अधिक चले ॥ ५ ॥ चंद्र गति समापन्न होवे और अभिजित नक्षत्र भी गति समापन्न होवे तो पूर्व दिशा के भाग से योग ग्रहण कर, नव मुहूर्त २७ भाग.

सत्तावीसं च सत्तसट्ठी भागे मुहुत्तस्स, चंदेण सद्धिं, जोगं जोएति जेणं अणुपरि हति २ त्ता विप्पजहाति २ त्ता विगतजोगियावि भवइ जयाणं चंदे गति समावण्णे भवइ सवणे णक्खत्ते गइ समावण्णे भवइ पुरत्थिमाते तहेव जहा अभिइस्स णवरं तीस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएति जाव विगतजोगियावि भवति एवं एतेणं अभिलावेणं णेयव्वं पण्णरस मुहुत्ताइं तीसाति मुहुत्ताइं पणयालीसाति मुहुत्ताइं भाणियव्वाति जाव उत्तरासाढा विगतजोगियावि भवति ॥ ६ ॥ ता

६७ ये पर्यंत चंद्र साथ रहता है. इतना काल पर्यंत उस की साथ विचरे, तत्पश्चात् योग छोडकर विगत योगी होवे. जब चंद्र गति समापन्न होवे और श्रवण नक्षत्र गति समापन्न होवे तब अभिजित नक्षत्र जैसे पूर्व दिशा में मे चंद्र साथ तीस मुहूर्त पर्यंत योग करता है. इतना काल पर्यंत उस की साथ विचरे. तत्पश्चात् विगत योगी होवे. इस अभिलाप से सब जानना. इन में कितनेक पन्नरह मुहूर्त पर्यंत योग करते हैं, जिन के नाम—शतभिषा, भरणि, आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठा. तीस मुहूर्त पर्यंत योग करनेवाले नक्षत्रों के नाम-श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवति, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशर, पुष्य, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल और पूर्वाषाढा. पैंतालीस मुहूर्त पर्यंत योग करनेवाले नक्षत्र के नाम—१ उत्तराभाद्रपद २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ उत्तराफाल्गुनी ५ विशाखा और ६ उत्तराषाढा. यों प्रथम अभिजित से उत्तराषाढा पर्यंत कहना यावत् विगत योगी हैं ॥ ६ ॥ जब सूर्य गति समापन्न होवे और जब

सूत्र

जयाणं सूरे गइ समावण्णे अभिइणक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासेति पुरे ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोतेति जाव विगत जोगियावि भवति ॥ ७ ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कतिमंडलाति चरंति, ता तेरस

अर्थ

अभिजित नक्षत्र गति समापन्न होवे तव पूर्व दिशा के भाग मे सूर्य साथ योग करे इस तरह ४ अहोरात्रि और ६ मुहूर्त पर्यंत सूर्य साथ योग करे. इसी तरह छ नक्षत्र छ अहोरात्रि २१ मुहूर्त सूर्य साथ योग करते हैं, जिन के नाम—शतभिषा, भरणी, आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठा. पन्नरह नक्षत्र तेरह अहोरात्रि बारह मुहूर्त सूर्य साथ योग करते हैं, जिन के नाम—श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवति, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशर, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल और पूर्वाषाढा. और छ नक्षत्र २० अहोरात्रि तीन मुहूर्त तक योग करते हैं, जिन के नाम—उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा और उत्तराषाढा. उक्त सब नक्षत्र अपने २ समय योग्य सूर्य साथ विचर कर विगत योगी होते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! एक नक्षत्र मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! तेरह मंडल व एक मंडल के ६७ भाग में से १३ भाग एक नक्षत्र मास में चंद्र चलता है. एक युग में नक्षत्र मास ६७ हैं और चंद्र-मंडल ८८४ हैं. जितने मास निकालना होवे उतने मास से ८८४ को गुना करना और ६७ से भाग देना. जो आवे सो उतने मंडल जानना. यहां प्रथम मास का मंडल

मंडलाइ तेरस सत्तसट्ठी भागाति मंडलस्स चरंति॥८॥ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कइ मंड लाइं चरति?ता तेरस मंडलाइं चउचत्तारि सत्तसट्ठि भागे मंडलस्स चरति ॥९॥ता णक्ख- त्तेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरंति? ता तेरस मंडलाति अद्धसुडतालीसंच सत्तसट्ठी

निकालने का है इस से ८८४ को एक से गुनने से ८८४ होवे इसे ६७ से भाग देने से १३ मंडल व १३ भाग आये. इस से एक नक्षत्र मास में चंद्र १३ मंडल व १३ भाग ६७ ये चलता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! एक नक्षत्र मास में सूर्य कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! एक नक्षत्र मास में सूर्य १३ मंडल व ४४ भाग ६७ ये चलता है, क्यों कि एक युग में नक्षत्र मास ६७ है और सूर्य ९१५ मंडल चलता है, इस से जितने मास का मंडल निकालना होवे उतने मास से ९१५ को गुना करके ६७ से भाग देना. जो आवे उतने मंडल सूर्य चलता है सो जानना. यहां प्रथम मास के मंडल निकालने के हैं इस से ९१५ को एक से गुनते ९१५ हुवे उसे ६७ से भाग देने से १३ मंडल और शेष ४४ रहे इस से एक नक्षत्र मास में सूर्य १३ मंडल व ४४ भाग ६७ या चलता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ? एक नक्षत्र मास में नक्षत्र कितने मंडल चलते हैं ? अहो गौतम ! एक नक्षत्र मास में नक्षत्र १३ मंडल व ४६॥ भाग ६७ या चले. क्यों कि एक युग में नक्षत्र मास ६७ हैं और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलते हैं. इस से जितने मास का निकालना होवे उतने मास से ९१७॥ को गुना करके ६७ से भाग देना जो आवे उतने मंडल जानना. यहां प्रथम मास का निकालना है इस से ९१७॥ को एक से गुना करने से ९१७॥ होवे

सूत्र

भागे मंडलस्स चरांति ॥ १० ॥ ता चंदेणं मासेणं चंदे कति मंडलाति चरांति ? ता चउद्दस चउभागाति मंडलाति, एकं चउवीसते भागे मंडलस्स चरांति ॥ ता चंदेणं मासेणं सूरे कति पुच्छा ? ता पण्णरस चउभागूणाति मंडलाति एगं चउवीसं सते

अर्थ

इसे ६७ से भाग देने से १३ मंडल व ४६॥ भाग शेष रहा. इस से एक नक्षत्र मास में नक्षत्र १३ मंडल व ४६॥ भाग चलते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! एक चंद्र मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! १४ मंडल, पन्दरहवा मंडल का चौथा भाग और एक मंडल के १२४ भाग करे वैसे एक भाग. अर्थात् एक मंडल के ६२ भाग करे उन का चौथा भाग १५॥ होवे और एक भाग १२४ का है उस को ६२ या भाग करे तो आधा भाग ६२ या होवे यह पूर्वोक्त १५॥ भाग में मिलाने से १६ भाग ६२ ये होवे अर्थात् एक चंद्र मास में चंद्र १४ मंडल व १६ भाग ६२ या चलता है. क्यों की एक युग में चंद्र मास ६२ हैं और चंद्र मंडल ८८४ है इस से ८८४ को ६२ से भाग देने से इतने आते हैं. अहो भगवन् ! चंद्र मास में सूर्य कितने मंडल चलते है ? अहो गौतम ! पन्नरवे मंडल में चौथा भाग कमती एक भाग १२४ का अर्थात् १४ मंडल संपूर्ण और ४६॥ भाग ६२ या पन्नरवे मंडल का और एक भाग १२४ का जिस का आधा भाग ६२ या हुवा. यह पूर्वोक्त भाग में मिलाने से ४७ भाग ६२ या हुवा. इस से एक चंद्र मास में सूर्य १४ मंडल व ४७ भाग ६२ य चलता है. क्यों कि एक युग में चंद्र मास ६२ हैं और सूर्य ९१५ मंडल चलता है इस से ९१५ को ६२ से भाग देने से पूर्वोक्त संख्या आती है. अहो

नक्षत्र मास में चलने की मंडलसंख्या.

नक्षत्र	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल		नक्षत्र	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल	
मास	मंडल	भा ६७	मंडल	भा ६७	मंडल	भा ६७	मास	मंडल	भा. ६७	मंडल	भा. ६७	मंडल	भा. ६७
१	१३	१३	१३	४४	१३	४६॥	१४	१८४	४८	१९१	१३	१९१	४८
२	२६	२६	२७	२१	२७	२६	१५	१९७	६१	२०४	५७	२०५	२७॥
३	३९	३९	४०	६५	४१	५॥	१६	२११	७	२१८	३४	२१९	७
४	५२	५२	५४	४२	५४	५२	१७	२२४	२०	२३२	११	२३२	५३॥
५	६५	६५	६८	१९	६८	३१॥	१८	२३७	३३	२४५	५५	२४६	३३
६	७२	११	८१	६३	८२	११	१९	२५०	४६	२५९	३२	२६०	१२॥
७	९२	२४	९५	४०	९५	५७॥	२०	२६३	५९	२७३	९	२७३	५९
८	१०५	३७	१०९	१७	१०९	३७	२१	२७७	५	२८६	५३	२८७	३८॥
९	११८	५०	१२२	६१	१२३	१६॥	२२	२९०	१८	३००	३०	३०१	१८
१०	१३१	६३	१३६	३८	१३६	६३	२३	३०३	३१	३१४	७	३१४	६४॥
११	१४५	९	१५०	१५	१५०	४२॥	२४	३१६	४४	३२७	५१	३२८	४४
१२	१५८	२१	१६३	५९	१६४	२२	२५	३२९	५७	३४१	२८	३४२	२३॥
१३	१७१	३५	१७७	३६	१७८	१॥	२६	३४३	३	३५५	५	३५६	३

२७	३५६	१६	३६८	४२	३६२	४२॥	४५	५९३	४२	६१४	३७	६१६	१५॥
२८	३६२	२०	३८२	२६	३८३	२२	४६	६०६	६२	६२८	१४	६२२	६२
२९	३८२	४२	३९६	३	३९७	८॥	४७	६२०	८	६४१	५८	६४३	४१॥
३०	३९५	५०	४०२	४७	४१०	५५	४८	६३३	२१	६५८	३५	६५७	२१
३१	४०९	१	४२३	२४	४२४	३४॥	४९	६४६	३४	६६९	१२	६७१	०॥
३२	४२२	१४	४३७	१	४३८	१४	५०	६५९	४७	६८२	५६	६८४	४७
३३	४३५	२७	४५०	४५	४५१	६०॥	५१	६७२	६०	६९६	३३	९८	२६॥
३४	४४८	४०	४६४	२२	४६५	४०	५२	६८६	६	७१०	१०	१२	६
३५	४६१	५३	४७७	६६	४७२	१२॥	५३	६९९	१९	७२३	५४	७२५	५२॥
३६	४७८	६८	४९१	४३	४९२	६६	५४	७१२	३२	७३७	३१	७३९	३२
३७	४८८	१२	५०५	२०	५०६	४५॥	५५	७२५	४५	७५१	८	७५३	११॥
३८	५०१	२५	५१८	६४	५२०	२५	५६	७३८	५८	७६४	५२	७६६	५८
३९	५१४	३८	५३२	४१	५३४	४॥	५७	७५२	४	७७८	२९	७८०	३७॥
४०	५२७	५१	५४६	१८	५४७	५१	५८	७६५	१७	७९२	६	७९४	१७
४१	५४०	६४	५५९	६२	५६१	३०॥	५९	७७८	३०	८०५	५०	८०७	६३॥
४२	५५४	१०	५७३	३९	५७५	१०	६०	७९१	४३	८१९	२७	८२१	४३
४३	५६७	२३	५८७	१६	५८८	५६॥	६१	८०४	५६	८३३	४	८३५	२२॥
४४	५८०	३६	६००	६०	६०२	३६	६२	८१८	५	८४	४८	८४२	२

६३	८६१	१५	८६०	२५	८६२	४८॥	६६	८७१	५४	९०१	२३	९०३	५४
६४	८६५	२८	८७४	२	८७६	२८	६७	८८४	०	९१५	०	९१७	३३॥
६५	८६७	४१	८८७	४६	८९०	७॥							

भागे मंडलस्स चरंति ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कइमंडलाइ चरंति ? ता पण्णरस चउभागूणाइ मंडलाइ छ चउवीसं सते भागे मंडलस्स चरंति ॥ ११ ॥ ता उउणा मासेणं चंदे कति मंडलाति चरंति ? ता चउदस मंडलाति तीसंच एग

भगवन् ! चंद्र मास में नक्षत्र कितने मंडल चलते हैं ? अहो गौतम ! पन्नरहवे मंडल में चतुर्थ भाग कम अर्थात् १४ मंडल व ४६॥ भाग ६२ या और ६ भाग १२४ ये जिस के तीन भाग ६२ ये होवे इस से एक चंद्र मास में नक्षत्र १४ मंडल ४९॥ भाग ६२ ये चलते है. एक युग में चंद्र मास ६२ हैं और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलते है. इस से इस को ६२ का भाग देने से पूर्वोक्त संख्या आती है ॥११॥ अब ऋतु मास का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! ऋतु मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! १४ मंडल व ३० भाग ६१ या चलते हैं. क्यों कि एक युग में ऋतु मास ६१ हैं और चंद्र मंडल ८८४ हैं इस से ८८४ को ६१ से भाग देने से १४ मंडल व ३० भाग ६१ ये होवे. अहो

चंद्र मास में चलने की मंडले संख्या.

चंद्र मास	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल		चंद्र मास	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल	
	मंडल	भा.६२	मंडल	भा.६२	मंडल	भा.६२		मंडल	भाग६२	मंडल	भा.६२	मंडल	भा.६२
१	१४	१६	१४	४७	१४	४२॥	१४	२२१	३८	२०६	३८	२०७	११
२	२८	३२	२९	३२	२९	३७	१५	२१३	५४	२२१	२३	२२१	६०॥
३	४२	४८	४४	१७	४४	२४॥	१६	२२८	८	२३६	८	२३६	४८
४	५७	२	५९	२	५९	१२	१७	२४२	२४	२५०	५५	२५१	३५॥
५	७१	१८	७३	४१	७३	६१॥	१८	२५६	४०	२६५	४०	२६६	२३
६	८५	३४	८८	३४	८८	४९	१९	२७०	५६	२८०	२५	२८१	१०॥
७	९९	५०	१०३	१९	१०३	३६॥	२०	२८५	१०	२९५	१०	२९५	६०
८	११४	४	११८	४	११८	२४	२१	२९९	२६	३०९	५१	३१०	४७॥
९	१२८	२०	१३२	५१	१३३	११॥	२२	३१३	४२	३२४	४२	३२५	३५
१०	१४२	३६	१४७	३६	१४७	६१	२३	३२७	५८	३३९	२७	३४०	२२॥
११	१५६	५२	१६२	२१	१६२	४८॥	२४	३४२	१२	३५४	१२	३५५	१०
१२	१७१	६	१७७	६	१७७	३६	२५	३५६	२८	३६८	५९	३६९	५९॥
१३	१८५	२२	१९१	५३	१९२	२३॥	२६	३७०	४४	३८३	४४	३८४	४७

२७	३८४	६१	३९८	२२	३९९	३४॥	४५	६४१	३८	६६४	८	६६५	५७॥
२८	३९९	१४	४१३	१४	४१४	२२	४६	६५५	५४	६७८	५४	६८०	४५
२९	४१३	३०	४२७	६१	४२९	९॥	४७	६७०	८	६९३	३९	६९५	३२॥
३०	४२७	४६	४४२	४६	४४३	५९	४८	६८४	२४	७०८	२४	७१०	२०
३१	४४२	०	४५७	३१	४५८	४६॥	४९	६९८	४०	७२३	९	७२५	७॥
३२	४५६	१६	४७२	१६	४७३	३४	५०	७१२	५६	७३७	५६	७३९	५७
३३	४७०	३२	४८७	१	४८८	२१॥	५१	७२७	१०	७५२	४१	७५४	४४॥
३४	४८४	४८	५०१	४८	५०३	९	५२	७४१	२६	७६७	२६	७६९	३२
३५	४९९	२	५१६	३३	५१७	५८॥	५३	७५५	४२	७८२	११	७८४	१९॥
३६	५१३	१८	५३१	१८	५३२	४६	५४	७६९	५८	७९६	५८	७९९	७
३७	५२७	३४	५४६	३	५४७	३३॥	५५	७८४	१२	८११	४३	८१३	५६॥
३८	५४१	५०	५६०	५०	५६२	२१	५६	७९८	२८	८२६	२८	८२८	४४
३९	५५६	४	५७५	३५	५७७	८॥	५७	८१२	४४	८४१	१३	८४३	३२॥
४०	५७०	२०	५९०	२०	५९१	५८	५८	८२६	६०	७५५	६०	८५८	१९
४१	५८४	३६	६०५	५	६०६	४५॥	५९	८४१	१४	८७०	४५	८७३	६॥
४२	५९८	५२	६१९	५२	६२१	३३	६०	८५५	३०	८८५	३०	८८७	५६
४३	६१३	६	६३४	३७	६३६	२०॥	६१	८६९	४६	९००	१५	९०२	४३॥
४४	६२७	२२	६४९	२२	६५१	८	६२	८८४	०	९१५	०	९१७	३१

सूत्र

दुभागे मंडलस्स. चरंति उउणा मासेणं सूरे कति पुच्छा ता पण्णरस मंडलाति चरंति ॥ ता उउणा मासेणं णक्खत्ते पुच्छा ? ता पण्णरस मंडलाति चरति पंचम बावीसे सत भागे मंडलस्स ॥ १२ ॥ ता आइच्चेणं मासेणं चंदे कति मंडलाति चरंति, ता चउद्दस मंडलाति चरंति एक्कारसयं पण्णरस भागे मंडलस्स आइच्चेणं मासेणं सूरे कति

अर्थ

भगवन् ! ऋतु मास में सूर्य कितने मंडल चलता है ! अहो गौतम ! एक ऋतु मास में सूर्य १५ मंडल चलता है एक युग में ऋतु मास ६१ है और सूर्य ९१५ मंडल चलता है. इस से ९१५ को ६१ से भाग देने से १५ मंडल आते हैं. अहो भगवन् ! एक ऋतु मास में नक्षत्र कितने मंडल चलते हैं ? अहो गौतम ! एक ऋतु मास में नक्षत्र १५ मंडल व पांच भाग १२२ या चलते हैं. क्यों कि एक युग में ऋतु मास ६१ हैं और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलते हैं. इस ९१७॥ के ६१ से भाग देने से पूर्वोक्त संख्या होवे ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! आदित्य मास में चंद्र कितने मंडल चलता हैं ? अहो गौतम ! एक आदित्य मास में चंद्र १४ मंडल व ११ भाग १५ के चलता है, क्यों कि एक युग में आदित्य मास ६० हैं और चंद्र मंडल ८८४ हैं. इस से ८८४ को ६० का भाग देने से १४ होवे शेष ४४ रहे. इस का छेद करने को चार से भाग देने से ११ रहा और ६० का छेद १५ हुवा, इस से एक आदित्य मास में चंद्र १४ $\frac{11}{15}$ मंडल चलता है. अहो भगवन् ! एक आदित्य मास में सूर्य कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! एक आदित्य मास में सूर्य पन्नरह मंडल व एक मंडल का चौथा भाग अर्थात् १५॥ मंडल चलता है. एक युग

ऋतु मास में चलने के मंडल.

ऋतु मास	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल	नक्षत्र मंडल		ऋतु मास	चंद्र मंडल		सूर्य मंड	नक्षत्र मंडल	
	मंडल	भा.६१	मंडल	मंडल	भाग १२२		मंडल	भा.६१	मंडल	मंडल	भाग १२२
१	१४	३०	१५	१५	५	१४	२०२	५४	२१०	२१०	७०
२	२८	६०	३०	३०	१०	१५	२१७	२३	२२५	२२५	७५
३	४३	२९	४५	४५	१५	१६	२३३	५३	२४०	२४०	८०
४	५७	५९	६०	६०	२०	१७	२४६	२२	२५५	२५५	८५
५	७२	२८	७५	७५	२५	१८	२६०	५२	२७०	२७०	९०
६	८६	५८	९०	९०	३०	१९	२७५	२१	२८५	२८५	९५
७	१०१	२७	१०५	१०५	३५	२०	२८९	५१	३००	३००	१००
८	११५	५७	१२०	१२०	४०	२१	३०४	२०	३१५	३१५	१०५
९	१३०	२६	१३५	१३५	४५	२२	३१८	५०	३३०	३३०	११०
१०	१४४	५६	१५०	१५०	५०	२३	३३३	१९	३४५	३४५	११५
११	१५९	२५	१६५	१६५	५५	२४	३४७	४९	३६०	३६०	१२०
१२	१७३	५५	१८०	१८०	६०	२५	३६२	१८	३७५	३७५	३
१३	१८८	२४	१९५	१९५	६५	२६	३७६	४८	३९०	३९०	८

पुच्छा ? ता पण्णरस चउभागाति मंडलाति चरति ॥ ता आइच्चेणं मासेणं णक्खत्तेण पुच्छा ? ता पण्णरस चउभागाति मंडलाति पंचायत्तीस सतेभागे मंडलस्स चरंति ॥ १३ ॥ ता अभिवड्डिएणं मासेणं चंदे कति मंडलाति चरंति ? ता पण्णरस मंडलातिं

में आदित्य मास ६० हैं और सूर्य मंडल ९१५ हैं इस से ९१५ को ६० का भाग देने से १५। रहे. अहो भगवन् ! एक आदित्य मास में नक्षत्र कितने मंडल चलते हैं ? अहो गौतम ! एक आदित्य मास में नक्षत्र १५। मंडल पांच भाग १२० या चले अर्थात् १५। मंडल १ भाग २४ या चले. क्योंकि एक युग में आदित्य मास ६० है और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलता है. इस को ६० से भाग देने से १५ मंडल संपूर्ण आये ऊपर १७॥ रहा उस के २४ या भाग करने को २४ से गुनने से ४२० हुवे. उसे ६० का भाग देने से ७ आये. इस से एक आदित्य मास में नक्षत्र १५ मंडल और ७ भाग २४ या चलता हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! अभिवर्धन मास में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! पन्नरह मंडल व एक मंडल के १८६ भाग करे वैसे ८३ भाग चंद्र एक अभिवर्धन मास में चलता है. एक युग में अभिवर्धन मास ५७$\frac{3}{13}$ हैं और चंद्र एक युग में ८८४ मंडल चलता है. यहां मास के तेरीये भाग करने को ५७ को १३ से गुना करके तीन मिलाना. ५७×१३=७४१+३=७४४ होवे. यह एक अभिवर्धन युग के जानना. इस को जितने मास के मंडल निकालना होवे उतने को १३ से गुनना और जो आवे उने ८८४ से गुनकर ७४४ से भाग देना, जो आवे सो मंडल जानना. यहां प्रथम मास [illegible]

आदित्य मास में चलने की मंडल संख्या

आ०	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल		आ०	चंद्र मंडल		सूर्य मंडल		नक्षत्र मंडल	
मास	मंडल	भा १५	मंडल	भा ४	मंडल	भा. २४	मास	मंडल	भा. १५	मंडल	भा. ४	मंडल	भा. २४
१	१४	११	१५	१	१५	७	१४	२०६	४	२१३	२	२१४	२
२	२९	७	३०	२	३०	१४	१५	२२१	०	२२८	३	२२९	९
३	४४	३	४५	३	४५	२१	१६	२३५	११	२४४	०	२४४	१६
४	५८	१४	६१	०	६१	४	१७	२५०	७	२५९	१	२५९	२३
५	७३	१०	७६	१	७६	११	१८	२६५	३	२७४	२	२७५	६
६	८८	६	९१	२	९१	१८	१९	२७९	१४	२८९	३	२९०	१३
७	१०३	२	१०६	३	१०७	१	२०	२९४	१०	३०५	०	३०५	२०
८	११७	१३	१२२	०	१२२	८	२१	३०९	६	३२०	१	३२१	३
९	१३२	९	१३७	१	१३७	१५	२२	३२४	२	३३५	२	३३६	१०
१०	१४७	५	१५२	२	१५२	२२	२३	३३८	१३	३५०	३	३५१	१७
११	१६२	१	१६७	३	१६८	५	२४	३५३	९	३६६	०	३६७	०
१२	१७६	१२	१८३	०	१८३	१२	२५	३६८	५	३८१	१	३८२	७
१३	१९१	८	१९८	१	१९८	१९	२६	३८३	१	३९६	२	३९७	१४

२७	३९७	१२	४११	३	४१२	२१	४५	६६३	०	६८६	१	६८८	३
२८	४१२	८	४२७	०	४२८	४	४६	६७८	११	७०१	[illegible]	७०३	१०
२९	४२७	४	४४२	१	४४३	११	४७	६९[illegible]	७	७१६	३	७१८	१७
३०	४४२	०	४५७	[illegible]	४५८	१८	४८	७०९	३	७३२	[illegible]	७३४	०
३१	४५६	११	४७२	३	४७४	१	४९	७२१	१४	७४७	१	७४९	७
३२	४७१	७	४८८	०	४८९	८	५०	७३६	१०	७६२	२	७६४	१४
३३	४८६	३	५०३	१	५०४	१५	५१	७५१	६	७७७	३	७७९	२१
३४	५००	१४	५१८	२	५१९	२२	५२	७६६	२	७९३	०	७९५	४
३५	५१५	१०	५३३	३	५३५	५	५३	७८०	१३	८०८	१	८१०	११
३६	५३०	६	५४९	०	५५०	१२	५४	७९५	९	८२३	२	८२५	१८
३७	५४५	२	५६४	१	५६५	१९	५५	८१०	५	८३८	३	८४१	१
३८	५६०	१३	५७९	२	५८१	२	५६	८२५	१	८५४	०	८५६	८
३९	५७४	९	५९४	३	५९६	९	५७	८३९	१२	८६९	१	८७१	१५
४०	५८९	५	६१०	०	६११	१६	५८	८५४	८	८८४	२	८८६	२२
४१	६०४	१	६२५	१	६२६	२३	५९	८६९	४	८९९	३	९०२	५
४२	६१८	१२	६४०	२	६४२	६	६०	८८४	०	९१५	०	९१७	१२
४३	६३३	८	६५५	३	६५७	१३							
४४	६४८	४	६७१	०	६७२	२०							

चरंति तालियेव छासीयं सतेभगे मंडलस्स चरंति,॥ता अभिवड्डिएणं मासेणं सुरे पुच्छा? ता सोळस मंडलातिं तिहिं भागेहिं ऊणातिं, दो अडयालीसएहिं भागे मंडलं छेत्ता चरंति॥ ता अभिवड्डिएणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाति चरंति? ता सोलसमंडलाइं

है इस से इन को १३ से गुना करने से १३ होवे. फीर ८८४ से गुनने से ११४९२ होवे. इस को ८४४ से भाग देने, से १५ मंडल रहे, शेप ३३२ रहे. इस को १८६ का भाग करने को १८६ से गुनना, जिस से ६१७५२ होवे, इन को ८४४ से भाग देने से ८३ भाग आये. अहो भगवन् ! एक अभिवर्धन मास में सूर्य कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! एक अभिवर्धन मास में सूर्य २४८ ये तीन भाग कम सोलह [१५ २४५/२४८] मंडल चलता है. एक युग में अभिवर्धन मास के ७४४ भाग १३ के होते हैं और सूर्य २१५ मंडल चलता है. जो मास के मंडल निकालना होवे उसे तेरह गुना करके २१५ से गुना कर ७४४ भाग देना. यहां प्रथम मास का निकालना है. इस को तेरह गुना करने से १३ होवे. इस फीर २१५ से गुना करने से ११८९५ होवे. इस के ७४४ से भाग देने से १५ मंडल व शेप ७३५ रहे. इन को २४८ से भाग करने को २४८ से गुना करना. जिस से १८२२८० होवे. उस को ७४४ का भाग देने से २४५ भाग होवे. अहो भगवन् ! एक अभिवर्धन मास में नक्षत्र कितने मंडल चलते हैं ? अहो गौतम ! एक अभिवर्धन मास में नक्षत्र १६ मंडल व एक मंडल १४८८ भाग को सैंतालीस ४७ भाग अर्थात् १६ ४७/१४८८ मंडल चलते हैं. एक युग में अभिवर्धन मास के ७४४ भाग १३ के

सीतालीसय भागेहिं अहिय.ति चउद्दसहिं अट्ठासितेहिं सतेहिं मंडलं छेत्ता ॥१४॥ ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कति मंडलाति चरति ? ताएगे अद्ध मंडलं चरति, एकातिसाते भागेहि ऊणं नवहिय पण्णरसहिं सतेहिं अद्ध मंडलं छेत्ता चरति ॥ ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरे कति मंडलातिं चरति ? ता एग अद्ध मडलं

है और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलते हैं. इस को १३ से गुना करने से ११९२७॥ होवे, इस को ७४४ से भाग देने से १६ मंडल शेष २३॥ भाग रहे. इस को १४८८ से गुना करने से ३४९६८ हुवे. इसे ७४४ का भाग देने से ४७ आये. इस से एक अभिवर्धन मास में नक्षत्र $१६\frac{४७}{१४८८}$ मंडल चलते हैं. एक भाग के १३ भाग यहां ग्रहण किये हैं. इस में से जितने भाग का निकालना होवे उतने भाग से चंद्र, सूर्य व नक्षत्र के मंडल से गुना करके ७४४ से भाग देना और जो आवे सो मंडल जानना. इस तरह करने से अभिवर्धन मास के प्रथम भाग में चंद्र $१\frac{३५}{७४४}$ मंडल, सूर्य $१\frac{५७}{७४४}$ और नक्षत्र $१\frac{३४७}{१४८८}$ मंडल चलते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! एक अहोरात्रि में चंद्र कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! एक अर्ध मंडल के ९१५ भाग वैसे ४४२ भाग एक अहोरात्रि में चंद्र चलता है. क्यों कि एक युग में अहोरात्रि १८३० हैं और चंद्र ८८४ मंडल चलता है. इस से ८८४ को १८३० से भाग देने से इतने आते हैं. अहो भगवन् ! एक अहोरात्रि में सूर्य कितने मंडल चलता है ? अहो गौतम ! एक अहोरात्रि में सूर्य एक अर्ध मंडल चलता है. क्यों कि एक युग में अहोरात्रि १८३० हैं और सूर्य मंडल

सूत्र

चरंति, ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरइ ॥ ता एगं अद्ध मंडलं दोहिं भागेहिं अहिय संतहिं दुत्तिसेहिं सएहिं अद्ध मंडलं छेत्ता चरंति॥ १५ ॥ ता एगमेगेणं मंडले चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति? ता दोहिं अहोरत्तेहिं एकतीसाए भागेहिं आहितेहि चउहिं बेतालेहिं सतेहिं रातिंदियंच्छेत्ता, चरंति ताएगमेगेणं मंडलेसूरे कतिहिं

अर्थ

९१५ हैं. इस से ९१५ को १८३० से भाग देने से एक आधा मंडल पूरा आता है. अहो भगवन्! एक अहोरात्रि में नक्षत्र कितने मंडल चलता है? अहो गौतम! एक अहोरात्रि में नक्षत्र एक मंडल के ७३२ भाग करे वैसे ३६७ भाग चलता है. क्यों कि एक युगमें १८३० अहोरात्रि हैं और ९१७॥ नक्षत्र मंडल हैं. ९१७॥ को १८३० से भाग देने से इतने होते हैं ॥ १५ ॥ अहो भगवन्! एक २ मंडल चंद्र कितनी अहोरात्रि में चलता है? अहो गौतम! एक २ मंडल पर चंद्र दो अहोरात्रि व एक अहोरात्रि के ४४२ भाग करे वैसे ३१ भाग. ($२\frac{३१}{४४२}$) अहोरात्रि में चलता है. एक युग में १८३० अहोरात्रि हैं और चंद्र ८८४ मंडल चलता है इस से १८३० को ८८४ से भाग देने से $२\frac{३१}{४४२}$ अहोरात्रि होवे. अहो भगवन्! एक २ मंडल पर सूर्य कितनी अहोरात्रि में चलता है? अहो गौतम! सूर्य एक२ मंडल पर दो अहो रात्रि में चलता है. क्यों की एक युग की १८३० अहोरात्रि हैं और मंडल ९१५ हैं, १८३० को ९१५ से गुना करने से दो अहोरात्रि होती है. अहो भगवन्! एक २ मंडल पर नक्ष-

अहोरत्तेहिं चरति? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति॥ ता एगमेगेणं मंडले पुच्छा? दोहिं अहोरत्तेहिं दोहिं भागेहिं ऊणा तिहिं सत्तसट्ठे सतेहिं रातिंदियं छेत्ता ॥ १६ ॥ ता जुगेणं चंदे कति मंडलातिं चरति? ता अट्ठचुलसी सतेमंडलं चरति। ता जुगेणं सूरे कति मंडलाति

कितने अहोरात्रि में चलता है? अहो गौतम! एक मंडल पर एक मंडल के ३६७ भाग करे वैसे दो भाग दो अहोरात्रि में कम (१ ३६५/३६७ अहोरात्रि) में चलता है. एक युग में १८३० अहोरात्रि है और नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलता है. ९१७॥ के आधे करते दो गुणा करना, जिससे १८३५ अर्ध मंडल हुवे १८३० को दुगुने करने से ३६६० हुवे. इस से ३६६० अहोरात्रि को १८३५ से भाग देने से इतने होते है. ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! एक युग में चंद्र कितने मंडल चलता है? अहो गौतम! एक युग में चंद्र ८८४ मंडल चलता है क्यों की एक युग में १८३० अहोरात्रि है, इस के मुहूर्त ५४९०० होते हैं. एक मुहूर्त मे चंद्र एक मंडल के १०९८०० भाग करे वैसे १७६८ भाग चलता है, इस से युग के मुहूर्त ५४९०० को साथ १७६८ से गुणा करने से ९७०६३२०० होवे इतना भाग एक युग में चले. इसका मंडल करने से १०९८०० मे भाग देने से ८८४ मंडल होवे. अहो भगवन्! एक युग में सूर्य कितने मंडल चलता है? अहो गौतम! एक युग में सूर्य ९१५ मंडल चलता है क्यों की एक युग के मुहूर्त ५४९०० है और सूर्य एक मंडल के १०९८०० भाग करे वैसे १८३० भाग चलता है, इस से ५४९०० को १८३० से गुना करने से १००४६७०००

सूत्र

चरति ता णत्रवण्णरस मंडलं सते चरति, ता जुगेणं णक्खत्ते कति मंडलाति चरति ता अट्ठारस पण्णतीसं दुभाग मंडलं सते चरति ॥ १७ ॥ इच्चेसा मुहुत्तगति भागेणमास रातिंदिय मंडलं जुगपविभत्ति सिग्घगति आहितेति वदेज्जा ॥ इति पण्णरसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १५ ॥ (:) (:) (:) (:)

अर्थ

भाग एक युग में सूर्य चलता है. इस के मंडल करने को १०९८०० से भाग देना जिस से ९१५ आवे. इस से एक युग में सूर्य ९१५ मंडल चलता है. अहो भगवन्! एक युग में नक्षत्र कितना मंडल चलता है? अहो गौतम: एक युग में नक्षत्र १८३५ अर्ध मंडल चलता है. इन के पूर्ण ९१७॥ मंडल होते है. एक युग में मुहूर्त ५४९०० है. और नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५ भाग १०९८०० के चलता है इस से ५४९०० मुहूर्त साथ १८३० से गुना करने से १००७४१५०० भाग होते है. इस के मंडल करने के १०९८०० से भाग देने से ९१७॥ मंडल होते है: इस से एक युग में नक्षत्र ९१७॥ मंडल चलते है. ॥ १७ ॥ इस तरह चंद्र सूर्य नक्षत्र की मुहूर्त में कितना भाग चले, युग के मास में व अहोरात्रि में कितना चले, युगमें उक्त तीनों कितने मंडल चले वगैरह से तीनों की शीघ्र गति व मंद गति कही. यों चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का पन्नरहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १५ ॥ ×

॥ षोडश प्राभृतम् ॥

ता कहंते दोसिणा लक्खणा आहितेति वदेज्जा ? ता दोसिणां तिया चंदलेस्सा ता दोसिणा तिया चंदलेसा, किं अट्ठे किं लक्खणे? ता एग अट्ठे एगलक्खणे आहितेति वदेज्जा ॥ १ ॥ ता कहंते सूरे लक्खणा आहितेति वदेज्जा ता सूरलेस्सातिया आयावेति २ ता किं अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एग लक्खणा॥ २ ॥ ता कहंते छाया लक्खणे आहितेति वदेज्जा? ता अंधकारे तिया छायातिया ता अंधकारे तिया छयातिया किं अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एग लक्खणं ॥ इति सोलसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १६ ॥ *

अथ सोलहवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! उद्योत का भक्षण कैसे कहा ? अहो गौतम ! उद्योत चंद्र लेश्या से होता है. अहो भगवन् ! उद्योत अथवा चंद्र लेश्या किसलिये कही अथवा उस का क्या लक्षण है ? अहो गौतम ! उस का एक अर्थ कहा और एक लक्षण कहा. ॥१॥ अहो भगवन् ! सूर्य का क्या लक्षण कहा ? अहो गौतम ! जहां सूर्य लेश्या वहां आताप होता है. अहो भगवन् ! जहां सूर्य लेश्या वहां आताप किस प्रकार कहा ? अहो गौतम ! एक अर्थ ताप का व एक अर्थ दीप्त का कहा. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! छाया किसे कहते हैं अर्थात् छाया का क्या लक्षण है ? अहो गौतम ! जहां अंधकार है वहां छाया है. अहो भगवन् ! जहां अंधकार है वहां छाया है उस का क्या लक्षण कहा ? अहो गौतम ! एक अर्थ अंधकार का और एक लक्षण अंधकार करने का है. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का सोलहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥

सूत्र

॥ सप्तदश प्राभृतम् ॥

ता कहंते चवणोववाते आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो पण्णवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा तत्थेगे एव माहंसु ता अणुसमय मेव चंदिम सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहितेति वदेज्जा ?एगे पुण एवं माहंसु अणुमुहुत्त मेव चंदिम सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति वदेज्जा, एवं जाव जचेवहेट्ठिताए पण्णवीसं पडिवत्तीओ, तेतो एत्थपि भाणियव्वातो जाव अणुउसप्पिणिमेव चंदिम सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहितेति वदेज्जा एगे एवं माहंसु॥ १॥वयंपुण एव वयामोता चंदिम सूरियाण जोइसिया देवा महिड्ढिया महाजसा महाबला महाणुभावा महासुक्खा वरवत्थधरा वरमल्लधरा

अर्थ

अब सत्तरहवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! चंद्र सूर्य का चवन व उत्पन्न होने का कैसे कहा ? अहो गोतम ! इस विषय में अन्य तीर्थीकी प्ररूपना रूप पच्चीस पडिवत्तियों कही हैं कितनेक ऐसा कहते हैं कि अनुसमय में चंद्र सूर्य अन्य उत्पन्न होते हैं और अन्य चवते हैं. कितनेक ऐसा कहते हैं प्रत्येक मुहूर्त में चंद्र सूर्य अन्य उत्पन्न होते हैं व अन्य चवते हैं. यों जिस प्रकार स्थिति आश्री पच्चीस पडिवत्ति कही वैसे ही यहां कहना. यावत् प्रत्येक उत्सर्पिणी में चंद्र सूर्य अन्य उत्पन्न होते हैं व अन्य चवते हैं ॥ १ ॥ इस कथन को हम इस प्रकार कहते हैं कि चंद्र सूर्य दोनों ज्योतिषी के देव महर्द्धिक, महाद्युति-

वरगंधधरा अवोच्छिन्ने नयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहितेति वदेज्जा इति सत्तरसमं पाहुडं सम्मत्तं ॥ १७ ॥ * * * * *

वंत, महा बलवंत, महानुभाववाले, महासुखवाले, श्रेष्ट वस्त्र धारन करनेवाले, श्रेष्ट माला धारन करनेवाले, श्रेष्ट गंध धारन करने वाले, अविच्छिन्नपने आयुष्य पूर्ण होने पर चवते हैं और अन्य उत्पन्न होते हैं. यों चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र में सतरहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥

॥ अष्टादश प्राभृतम् ॥

ता कहंते उच्चत्ते आहिनेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो पंचवीसं पडिवत्तीओ प० तजहा तत्थेगे एवं माहंसु ता एगं जोयण सहस्से सूरे उड्डुं उच्चत्तेणं दिवड्डुं चंदे, एगे एवं माहंसु ता दो जोयण सहस्साति सूरे उड्डुं उच्चत्तेणं अड्डातिं जाइं चंदे ॥ एवं एएणं अभिलावेणं तिण्णि जोयण सहस्साति सूरे उड्डुं उच्चत्तेणं अद्धुट्ठाइ चंदे, ता चत्तारि जोयण सहस्साति सूरे उड्डु उच्चत्तेणं अद्धपंचमाइं चंदे ता पंचजोयणं

अब अठारहवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, व तारा कितनी ऊंचाइ से कहे हैं ? अहो गौतम ! इन में अन्य तीर्थि की प्ररूपणारूप पच्चीस पडिवत्तियों कहीं हैं. १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक हजार योजन सूर्य पृथ्वी से ऊंचा है और देढ हजार योजन चंद्र पृथ्वी से ऊंचा है, कितनेक ऐसा कहते हैं कि २ दो हजार योजन सूर्य ऊंचा है, और अढाइ हजार योजन चंद्र पृथ्वी से ऊंचा है. इसी प्रकार से ३ कितनेक तीन हजार योजन सूर्य ऊंचा व साढे तीन हजार योजन चंद्र ऊंचा. ४ चार हजार योजन सूर्य ऊंचा व साढे चार हजार योजन चंद्र ऊंचा, ५ पांच हजार योजन सूर्य ऊंचा व साढे पांच हजार योजन चंद्र ऊंचा, ६ छ हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे छ हजार योजन चंद्र ऊंचा, ७ सात हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे सात हजार योजन चंद्र ऊंचा, ८ आठ हजार योजन सूर्य ऊंचा,

सहस्सातिं सूरे उड्ढं अद्ध छट्ठाति चंदे, एवं छसूरे अद्ध सत्तमाति चंदे, सत्त सूरे अद्धट्ठमाति चंदे, अट्ठसूरे, अद्धणवमाइ चंदे, णवसूरे अद्ध दसमाति चंदे, दससूरे अद्धएकारसमाइ चंदे, एक्कारस सूरे, अद्धवारसमाति चंदे, वारससूर, अद्धतेरस मातिचंदे, तेरससूर अद्ध चउद्दसमाति चंदे, चउद्दससूरे अद्धपण्णरसमाति चंदे, पण्णरससूरे अद्ध सोलसमाइं चंदे, सोलससूरे अद्ध सत्तरसमाति चंदे, सत्तरससूरे अद्ध अट्ठारसमाइ चंदे, अट्ठारससूरे अद्ध एगूणवीसमाइ चंदे, एगूणवीसइसूरे अद्ध विसति माति चंदे, विसइसूरे अद्ध एक्क सातिमाति चंदे, एवं एक्कवीससूर अद्ध वावीसतिमाति चंदे,

साढे आठ हजार योजन चंद्र ऊंचा, ९ नव हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे नव हजार योजन चंद्र ऊंचा, १० दश हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे दश हजार योजन चंद्र ऊंचा, ११ अग्यारह हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे अग्यारह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १२ बारह हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे बारह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १३ तेरह हजार योजन चंद्र ऊंचा, साढे तेरह हजार योजन सूर्य ऊंचा १४ चौदह हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे चउदह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १५ पन्नरह हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे पन्नरह हजार योजन चंद्र ऊंचा. १६ सोलह हजार योजन सूर्य ऊंचा, साढे सोलह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १७ सत्तरह हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे सत्तरह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १८ अठारह हजार योजन सूर्य ऊंचा म ढे अठारह हजार योजन चंद्र ऊंचा, १९ गुनीस हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे गुनीस हजार

सूत्र

वा… अद्धतेवीसगाति चंदे, तेवीससूरे अद्ध चउवीसतिमातिं चंदे, चउवीसं सूरे, अद्धप… निमातिं चंदे एगे एवं माहंसु ॥ एगे पुण पणवीसंच जोयण सहस्सातिं सूरे उड्ढं उ… अद्धछवीसातिमातिंचंदे एगे एवं माहंसु ॥ १ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता इमीसे र… भाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागाओ सत्तणउते जोयणसते अबाहाए हिट्ठिल्ले… चारं चरति अट्ठजोयणसए अबहाए सुरविमाणे चारं चरति, अट्ठसी जोयणसए अबाहाए …विमाणे चारं चरति, णव जोयणसए

अर्थ

योजन चंद्र ऊंचा, २० वीस हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे वीस हजार …न चंद्र ऊंचा, २१ इक्कीस हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे इक्कीस हजार योजन चंद्र ऊंचा २२ बाइस हजा…जन सूर्य ऊंचा साढे बाइस हजार योजन चंद्र ऊंचा २३ तेइस हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे तेइस हजार …जन चंद्र ऊंचा २४ चौवीस हजार योजन सूर्य ऊंचा साढे चौवीस हजार योजन चंद्र ऊंचा २५ हजार …जन सूर्य ऊंचा साढे पचीस हजार योजन चंद्र ऊंचा ॥ १ ॥ इस तरह अन्यतीर्थी की प्ररूपणा कहकर …त अपना मत कहते हैं. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से ७९० योजन ऊंचे अबाधा से सब से नीचे का तारा मंडल है, आठसो योजन ऊंचे सूर्य का विमान है, और आठसो अस्सी योजन ऊंचे चंद्र

अवाहाए उवरिल्लेताराख्वे चारं चरति ॥ २ ॥ ता हेट्ठिल्लातोणं ताराख्वातो दस जोयण अवाहाए सूरे विमाणे चारं चरति, तयाणं असीत जोयण अवाहाए चंदविमाणे चारं चरति, तयाण वीसं जोयण अवाहाए ताराख्वे चारं चरति एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव णेयव्वं सब्भंतरं जं चार संठाणं पमाणं वहंति, सीहगाति इड्ढि तारतर अग्गमहिसीतो ठिति अप्पाबहुयं जाव तारातो संखेज्जगुणा ॥ इति अट्ठारसमं पाहुड सम्मत्तं ॥ १८ ॥ :: :: :: :: ::

का विमान है, और ९०० योजन ऊंचे उपर का तारा मंडल है. ॥ २ ॥ नीचे का तारा मंडल से दश योजन ऊंचे सूर्य का विमान है. उस से ८० योजन उपर चंद्र का विमान है, वहां से बीस योजन ऊंचे उपर का तारा मंडल है. यों जैसे जीवाभिगम सूत्र में कहा वैसे ही कहना. ११० योजन में ज्योतिष चक्र है. यावत् सब आभ्यंतर कौनसा नक्षत्र है ? वगैरह सब वक्तव्यता कहना. चंद्रादिक के विमान के के संस्थान की वक्तव्यता कहना, चंद्रादि के विमान की लम्बाइ, चौडाइ का प्रमाण, विमान को वहन करने वाले, शीघ्रगति, ऋद्धि, अंतर, अग्रमहिषियों, स्थिति, अल्पाबहुत्व वगैरह सब यहां कहना. यावत् ताराओं संख्यातगुने हैं. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का अठारहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १८ ॥

अवाहाए उवरिल्लेतारारूवे चारं चरति ॥ २ ॥ ता हेट्ठिल्लातोणं तारारूवातो दस जोयण अवाहाए सूरे विमाणे चारं चरति, तयाणं असीत जोयण अवाहाए चंदविमाणे चारं चरति, तयाण वीसं जोयण अवाहाए तारारूवे चारं चरति एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव णेयव्वं सब्भंतरं जं चार संठाणं पमाणं वहंति, सीहगाति इड्ढ तारतर अग्गमाहिसीतो ठिति अप्पाबहुयं जाव तारातो संखेज्जगुणा ॥ इति अट्ठारसमं पाहुड सम्मत्तं ॥ १८ ॥ :: :: :: :: ::

का विमान है, और ९०० योजन ऊंचे उपर का तारा मंडल है. ॥ २ ॥ नीचे का तारा मंडल से दश योजन ऊंचे सूर्य का विमान है. उस से ८० योजन उपर चंद्र का विमान है, वहां से वीस योजन ऊंचे उपर का तारा मंडल है. यों जैसे जीवाभिगम सूत्र में कहा वैसे ही कहना. ११० योजन में ज्योतिष चक्र है. यावत् सब आभ्यंतर कौनसा नक्षत्र है ? वगैरह सब वक्तव्यता कहना. चंद्रादिक के विमान के के संस्थान की वक्तव्यता कहना, चंद्रादि के विमान की लम्बाइ, चौडाइ का प्रमाण, विमान को वहन करने वाले, शीघ्रगति, ऋद्धि, अंतर, अग्रमहिषियों, स्थिति, अल्पाबहुत्व वगैरह सब यहां कहना, यावत् ताराओं संख्यातगुने हैं. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का अठारहवा पाहुडा संपूर्ण हुवा. ॥ १८ ॥

॥ एकोनविंशतितम प्राभृतम् ॥

सूत्र

ता कतिणं चंदिम सूरया सव्वलोयंसि उभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासंति आहि-तेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमातो दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तत्थेगे एव माहंसु ता एगेचंदे एगेसूरे सव्वलोगंमि भासंति जाव पभासंति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु॥ एगे पुण एवं माहंसु ता तिण्णिचंदा तिण्णिचेव सूरे सव्व-लोगंसि भासंति जाव पभासंति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु ॥ एगे पुण एवं माहंसु ता अट्ठ चंदा अट्ठ सूरा सव्वलोगंसि ओभासंति जाव पभासंति

अर्थ

अब गुन्नीसवा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! सब लोक में कितने चंद्र सूर्य उद्योत करते हैं, तपते हैं यावत् प्रकाश करते हैं ? अहो गौतम ! इस विषय में अन्य तीर्थि की प्ररूपणा रूप बारह पडिवृत्तियों कही हैं १ कितनेक ऐसा कहते हैं कि एक चंद्र व एक सूर्य सब लोक में उद्योत करते हैं यावत् प्रकाश करते हैं. २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि तीन चंद्र तीन सूर्य उद्योत करते हैं यावत् प्रकाश करते हैं, ३ कितनेक ऐसा कहते हैं कि आठ चंद्र आठ सूर्य उद्योत करते हैं यावत् प्रकाश करते हैं यों जिस प्रकार तीसरे पाहुडे में बारह पडिवृत्तियों कही वैसे ही सब कहना जैसे ४ सात चंद्र सात सूर्य,

एवं एएणं अभिलावेणं जाव चेव ततिए पाहुडे दुवालस पडिवत्तीओ ताओ चेव इहवि णेयव्वा, णवरं सत्त दसं जाव बवत्तरि चंद सहस्स बावत्तरि सूरिय सहस्स सव्वलोगंसि उभासंति आहितेति वदेज्जा एगे एव माहंसु ॥ १ ॥ वय पुण एवं वयामो ता अयण्णं जबूदीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं ता जंबूदीवेणं दिवेणं दिवे दो चंदा पभासिंसु पभासंति जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ ॥ २ ॥ ता जंबूदीवेण दीव लवणेनाम समुद्दे वट्टे वलयागारे संठिते सव्वओ समंता

५ दश चंद्र दश सूर्य ६ बारह चंद्र बारह सूर्य ७ बयालीस चंद्र बयालीस सूर्य ८ बहत्तर चंद्र बहत्तर सूर्य ९ बयालीस सो चंद्र बयालीस सो सूर्य १० बहत्तर सो चंद्र बहत्तर सो सूर्य, ११ बयालीस हजार चंद्र बयालीस हजार सूर्य १२ बहत्तर हजार चंद्र बहत्तर हजार सूर्य सब लोक में उद्योत करते हैं यावत् प्रकाश करते हैं ॥ १ ॥ इस कथन का हम ऐसे कहते हैं कि यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा यावत् परिधिवाला है. इस में दो चंद्र दो सूर्य उद्योत करते हैं, तपते हैं यावत् प्रकाश करते हैं. इस का कथन जैसे जीवाभिगम में कहा वैसे जानना. अर्थात् दो सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, १७६ ग्रह व ५६ नक्षत्रोंने योग किया, करते हैं व करेंगे; एक लाख तेत्तीस हजार नव सो पचास कोडाकोडी ताराओंने शोभा की, शोभा करते हैं व शोभा करेंगे ॥ २ ॥ इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप को

सूत्र

संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति, तो लवणेणं समुद्दे किं समचक्कवाल संठिते विसम चक्कवाल संठिते? ता सम चक्कवाल संठिते नो विसम चक्कवाल संठिते, ता लवणेणं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितातिं वदेज्जा ? ता दोय जोयण सय सहस्सातिं चक्कवालविक्खंभेण पण्णरस जोयण सयसहस्साति एक्कासीइं च सहस्सातिं एगसत उणयालीसं जाय गसए किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं॥ ता लवणेणं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसुवा जाव तारातो ॥ ३ ॥ ता लवण समुद्दं धायति संडे णामं दीवे

अर्थ

लवण समुद्र गोल वर्तुलाकार चुडी के संस्थान से संस्थित है. सब चारों तरफ परिधि से घेरा हुवा है. अहो भगवन् ! यह लवण समुद्र क्या सम चक्रवाल संस्थानवाला है या विषम चक्रवाल संस्थानवाला है ? अहो गौतम ! यह लवण समुद्र सम चक्रवाल संस्थान है परंतु विषम चक्रवाल संस्थित नहीं है. अहो भगवन् ! यह लवण समुद्र कितना चक्रवाल चौडाइ में है और कितनी परिधि है ? अहो गौतम ! दो लाख योजन चक्रवाल में चौडाइ है और इस की परिधि १५८१,१३९ योजन में कुछ न्यून है. इस लवण समुद्र में चार चंद्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे यावत् तारा पर्यंत कहना. अर्थात् ४ चंद्र, ४ सूर्य, ३५२ ग्रह, ११२ नक्षत्र और २६७४०० क्रोडाक्रोड ताराओं का जानना ॥ ३ ॥ लवण समुद्र की चारों तरफ धातकी खंड वर्तुलाकार संस्थानवाला यावत्

वट्टे वलयाकार संठिते जाव चिट्ठंति ॥ ता धायति खंडेणं द्विवे किं समचक्कवाल संठिते, एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जहा जीवाभिगमे जाव तारातो ॥ ४ ॥ ता धायति संडणं दिवे कालोएणं समुद्दे वट्टे वलयागारे जाव चिट्ठति ॥ ता कालोएणं समुद्द किं समचक्कवाल संठिते विसमचक्कवाल; एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसंच भाणियव्वं जाव तारातो ॥ ५ ॥ ता कालोयणं समुद्दे पुक्खरवरेणं द्विवे

रहता है. अहो गौतम ! धातकी खंड क्या सम चक्रवाल संस्थानवाला है या विषम चक्रवाल संस्थानवाला है ? अहो गौतम ! जैसे जीवाभिगम सूत्र में कहा वैसे ही यहां जानना, यावत् तारा पर्यंत कहना. धातकी खंड चार लाख योजन का चक्रवाल से चौडाइ में है. उस की परिधि ४११०९६० योजनसे कुछ अधिक है. इसमें १२ चंद्र, १२ सूर्य, १०५६ ग्रह, ३३७ नक्षत्र और ८०३७०० क्रोडाक्रोड ताराओं हैं. ॥ ४ ॥ इस धातकी खंड की चारों तरफ कालोदधि समुद्र वर्तुलाकार रहा हुवा है. अहो भगवन् ! यह कालोदधि समुद्र क्या समचक्रवाल है या विषम चक्रवाल है ? अहो गौतम ! इस की चौडाइ, परिधि, यावत् तारा पर्यंत सब जीवाभिगम सूत्र से जानना. यह कालोदधि समुद्र आठ लाख योजन का चक्रवाल से चौडाइ में है, इस की परिधि ९१७०६०५ योजन से कुछ अधिक की है. इस में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य, ३६९६ ग्रह ११७६ नक्षत्र २८१२९५० क्रोडाक्रोड ताराओं हैं ॥ ५ ॥ उस

सूत्र

वट्ट वलयाकार जाव चिट्ठंति, तं पुक्खरवरेणं दिवे किं समचक्कवाल विक्खंभो परिक्खेवो जोतिमं जाव तारातो ॥ ६ ॥ ता पुक्खरवरदीवस्सणं दीवस्स चक्कवाल विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थणं माणुसुत्तरेणामं पव्वते वट्टे वलयाकार संठाण संठिते पण्णत्ते जेणं पुक्खरवर दीवं दुहाविं भयमाणे २ चिट्ठंति तंजहा-अब्भंतर पुक्खरद्धंच बाहिं पुक्खरद्धंच ॥ ७ ॥ ता अब्भितर पुक्खरद्धेणं

अर्थ

कालोदधि समुद्र को चारों तरफ पुष्कर वर नामक द्वीप वर्तुलाकार रहा हुवा है. यह पुष्करवर नामक द्वीप क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है? अहो गौतम! इस का विष्कंभ, परिधि यावत् तारा पर्यंत सब जीवाभिगम से जानना. अर्थात् यह पुष्करवरद्वीप, सोलह लाख योजन का चक्रवाल से चौडाइ वाला है. इस की परिधि १९२८९८९३ से कुछ अधिक की है. इस में १४४ चंद्र, १४४ सूर्य, १२६७२ ग्रह, ४०३२ नक्षत्र, ९६४४४०० कोडाकोड ताराओं हैं. जिस में से ७२ चंद्र, ७२ सूर्य, ६३३६ ग्रह, २०१६ नक्षत्र, ४८२२२०० क्रोड क्रोड तारा इतने स्थिर है और इतने ही चलते हैं ॥ ६ ॥ इस पुष्करवर नामक द्वीप की १६ लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ के बहुत मध्य भाग में मानुषोत्तर नामक पर्वत है. यह मानुषोत्तर नामक पर्वत वर्तुलाकार चुडी के आकार वाला है. यह पुष्करवरद्वीप आभ्यंतर पुष्करवरद्वीप व बाह्य पुष्करवर द्वीप ऐसे दो भाग करके रहा हुवा है. ॥ ७ ॥ यह

कि समचक्कवाल संठिते, एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो ॥ ८ ॥
ता मणुस्सक्खेत्तणं केवतियं आयाम विक्खंभेणं वदेज्जा ? एवं विक्खंभो परि
क्खेवो जोतिसं जाव ताराओ एगससिपरिवारो तारागण कोडाकोडीणं ॥ ९ ॥
ता पुक्खरवरंण दीवे पुक्खरोदेनामं समुद्दे वट्टे वलयागारे जाव चिट्ठति एवं विक्खंभो

आभ्यंतर पुष्करवरद्वीप क्या सम चक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? यह आभ्यंतर अर्ध पुष्करद्वीप आठ लाख योजन का चक्रवाल से चौडा है. इस की परिधि १४२३०२४९ योजन से कुछ अधिक की है इस में ७२ चंद्र वगैरह सब पूर्वोक्त कहा वैसे कहना यावत् ४८२२२०० क्रोडाक्रोड ताराओं हैं. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र कितना लम्बा चौडा है ? अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र ४५ लाख योजन का लम्बा चौडा है. इस की परिधि १४२३०२४९ योजन से कुछ अधिक की है. इस में १३२ चंद्र, १३२ सूर्य, ११६१६ ग्रह, ३६९६ नक्षत्र व ८८४०७०० क्रोडाक्रोड ताराओं हैं १३२ चंद्र की दो पंक्ति हैं तद्यथा-६६ चंद्र की पंक्ति नैऋत्य कून में हैं और ६६ चंद्र की पंक्ति ईशान कून में हैं वैसे ही १३२ सूर्य की पंक्ति हैं, जिस में ६६ सूर्य की एक पंक्ति अग्निकून में हैं और ६६ सूर्य की दूसरी पंक्ति वायव्य कून में हैं. ये मेरु पर्वत की चारों ओर चलते हैं. एक चंद्र का परिवार ८८ ग्रह, २८ नक्षत्र व ६६९७५ क्रोडाक्रोड ताराओं का है ॥ ९ ॥ इस पुष्करवर द्वीप को पुष्करोदधि नामक

परिक्खेवो जोतिसंच भाणियव्वं जहा जीवाभिगमे जाव संयंभूरमणे ॥ ॥ इति एगूणवीसमं पाहुड सम्मत्तं ॥ १९ ॥ * * * * * * * *

समुद्र वर्तुलाकार है. यह ३२ लाख योजनका चक्रवाल से चौडाइ में है, इस की परिधि ३९५२८४७० योजन से कुच्छ अधिक कही. इस में ४९२ चंद्र ४९२ सूर्य ४३२९६ ग्रह १३७७६ नक्षत्र ३२२५१७०० क्रोडाक्रोड ताराओं हैं. इस का सब कथन जीवाभिगम सूत्र से स्वयंभूरमण समुद्र के अधिकार पर्यंत कहना. यह गुणी सवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥

॥ विंशतितम प्राभृतम् ॥

ता कहंते अणुभावे आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दोपाडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा- तत्थणं एगे एव माहंसु-चंदिम सूरियाणं नो जीवा अजीवा नो घणझूसिरा वायरबोंदिधरा कलेवराणत्थिणं तसि उट्ठाणेतिवा कमेतिवा बलेतिवा वीरिएतिवा पुरिसक्कार परकम्मेतिवा, ते नो विज्जुत लवंति नो असणि लवंति नो थणियं लवंति अहेणं बादर काइयाए समुच्छंति, अहेणं बादर वाउयाए समुच्छंतित्ता विज्जुंपि लवंतिवा असणिं लवंति थणियंपि लवंति ॥ ॥ एगे पुण एवमाहंसु ता चंदिम सूरियाणं जीवा नो अजीवा घणा णो झूसिरा बादर बोंदिधरा कलेवरा

अब २० वा पाहुडा कहते हैं. अहो भगवन् ! अनुभाव कैसे कहा ? अहो गौतम ! इस विषय में अन्य तीर्थि की प्ररूपणा रूप दो पडिवृत्तियों कही है. कितनेक ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य जीव नहीं परंतु अजीव हैं, घन निबिड नहीं हैं परंतु झूसिर पोले हैं बादर शरीर धारण करनेवाले कलेवर मात्र हैं. उन का उत्थान, कर्म, बल, वीर्य व पुरुषाकार पराक्रम नहीं है. विद्युतपना वे नहीं प्रवर्तते हैं, असंज्ञी जैसे नहीं बोलते हैं, वर्षा जैसे गर्जारव नहीं करते हैं,, परंतु बादर काय अथवा बादर वायु काया में से संमूर्च्छिमपने उत्पन्न होकर विद्युतमान प्रवर्तते हैं यावत् मेघ गर्जना करते हैं. २ दूसरे ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य जीव हैं परंतु अजीव नहीं है. घन निबिड है परंतु पोलारवाले नहीं हैं. बादर शरीर के धारन

सूत्र

अत्थिणं तेसिं उट्ठाणेतिवा जाव पुरिसक्कार परक्कमेतिवा तेणं विज्जंपि लवंति, असणिंपिलवंति एगे ए। माहंसु ॥१॥ वयं पुण एवं वयामो,ता चंदिमसूरियाणं देवा महिड्डिया जाव महासुक्खा वरवत्थधरा वरगंधधरा वरमल्लधरा वराभरणधरा अवोछिन्नणयट्ठयाए अण्णेचयंति अण्णेउववज्जंति आहितेति वदेज्जा ॥ २ ॥ ता कहं ते राहु कम्मे आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा-तत्थेगे एवमाहंसु ता अत्थिणं से राहु देवे जेणं चंदिम सूरंच गिण्हंति एगे एव माहंसु ता णत्थिणं ते राहु देवे जेणं चंदं सूरंच गिण्हंति ॥३॥ तत्थणं जेते एव माहंसु

अर्थ

करनेवाले नहीं हैं परंतु उन को उत्थान कर्म बल वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है. वे विद्युत्समान प्रवर्तते हैं. वज्र समान बोलते हैं, मेघ समान गर्जारव करते हैं ॥ १ ॥ इस कथन को हम इस प्रकार कहते हैं कि चंद्र व सूर्य दोनों देव हैं. वे महर्द्धिक यावत् महा सुखवाले हैं. श्रेष्ठ वस्त्र धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ गंध धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ माला धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ आभरण धारन करनेवाले हैं, वे अविच्छिन्नपना से आयुष्य का क्षय होने से चवते हैं और अन्य उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! राहु की क्रिया कैसे कही? अहो गौतम! इस विषय में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप दो प्रतिपत्तियों कही. कितनेक ऐसा कहते हैं कि राहु देव है कि जो चंद्र सूर्य ग्रह कर ग्रहण करता है २ और २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि जो चंद्र सूर्य को ग्रहण करता है वह राहु नहीं है ॥ ३ ॥ जो अन्य तीर्थि ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य को

ता अत्थिणं से राहुदेवे जेणं चंदसूरंच गिण्हंति तेणं एव माहंसु ता राहुणं देव चंदसूरंच गिण्हमाणे बुद्धत्तेणं गिण्हंति बुद्धं तेणं गिण्हंतित्ता बुद्धतेणं मुयाति, बुद्ध तेणं मुयतित्ता मुद्धत्तेणं गिण्हंति मुद्धत्तेणं गिण्हतित्ता मुद्धत्तेणं मुयति, वामं भुयत्तेणं गिण्हति२त्ता वामं भुयं तेणं मुयति, वामंभुयंत्तेणं गिण्हइत्ता. दाहिण भुयंत्तेणं मुयति, दाहिण भुयं तेणं गिण्हंतित्ता वामंभुयंतेणं मुयाति, दाहिण भुयागिण्हइत्ता. दाहिण भुयत्तेणं मुयति गए माहंसु एव॥४॥ तत्थ जे ते एव माहंसु ता णत्थिण से राहुदेवे जेणं चंदसूरंवागिण्हइ;

जो ग्रहण करता है वह राहु है. उन का कथन इस तरह है कि वह राहु देव चंद्र सूर्य को ग्रहण करता हुवा अधो भाग से ग्रहण करता है और अधो भाग छोडकर चलता है. अधो भाग से ग्रहण करलेता है और ऊर्ध्व भाग से छोडकर चलता है, ऊर्ध्व भाग में ग्रहण कर चलता है और अधो भाग से छोडता है. ऊर्ध्व भाग से ग्रहण करता है और ऊर्ध्व भाग से छोडता है. वाम भूजा से ग्रहण कर वाम भूजा पे छोडता है. वाम भूजा से ग्रहण कर दक्षिण की भूजा से छोडता है, दक्षिण भूजा से ग्रहण कर वाम भूजासे छोडता है, दक्षिण भूजा ग्रहण कर दक्षिण भूजा से छोडता है. यों कितनेक कहते हैं ॥४॥ अब जो अन्य तीर्थि एमा कहते हैं कि चंद्र सूर्य को जो ग्रहण करता है व राहु देव नहीं है. इन का कथन ऐसा है कि पन्नरह

सूत्र

अत्थिणं तेसिं उट्ठाणेतिवा जाव पुरिसक्कार परकमेतिवा तेणं विज्जंपि लवंति, असणिंपिलवंति एगे ए। माहंसु ॥१॥ वयं पुण एवं वयामो,ता चंदिमसूरियाणं देवा महिड्डिया जाव महासुक्खा वरवत्थधरा वरगंधधरा वरमल्लधरा वराभरणधरा अवोछिन्नणयट्ठयाए अण्णेचयंति अण्णेउववज्जंति आहिते ति वदेज्जा ॥ २ ॥ ता कहं ते राहु कम्मे आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा- तत्थेगे एवं माहंसु ता अत्थिणं से राहु देवे जेणं चंदिम सूरंच गिण्हंति एगे एव माहंसु ता णत्थिणं ते राहु देवे जेणं चंदं सूरंच गिण्हंति ॥३॥ तत्थणं जेते एव माहंसु

अर्थ

करनेवाले नहीं हैं परंतु उन को उत्थान कर्म बल वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है. वे विद्युत्समान प्रवर्तते हैं. वज्र समान वर्तते हैं, मेघ समान गर्जारव करते हैं ॥ १ ॥ इस कथन को हम इस प्रकार कहते हैं कि चंद्र व सूर्य दोनों देव हैं. वे महर्द्धिक यावत् महा सुखवाले हैं. श्रेष्ठ वस्त्र धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ गंध धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ माला धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ आभरण धारन करनेवाले हैं, वे अविच्छिन्नपना से आयुष्य का क्षय होने से चवते हैं और अन्य उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! राहु की क्रिया कैसे कही? अहो गौतम! इस विषय में अन्यतीर्थि की प्ररूपणा रूप दो पडिवृत्तियों कही. कितनेक ऐसा कहते हैं कि राहु देव है कि जो चंद्र सूर्य ग्रह कर ग्रहण करता है २ और २ कितनेक ऐसा कहते हैं कि जो चंद्र सूर्य को ग्रहण करता है वह राहु नहीं है ॥ ३ ॥ जो अन्य तीर्थि ऐसा कहते हैं कि चंद्र सूर्य को

ता राहुणं देवे महिड्डिए जाव महासुक्खे वरवत्थधरे जाव वराभरणधारी राहुस्सणं देवस्स णवणामधिज्जा प० तंजहा-सिंघाडए, जडिलए, खत्तते, खरत्ते, देंदुरे, मगरे, मच्छे, कच्छभे, किण्हसप्पे ॥ ६ ॥ राहुस्सणंदेवस्सविमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता तंजहा किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला ॥ ७ ॥ अत्थिकालए राहुविमाणे खंजण वण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि णीलए राहु विमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए मजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीएहालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किल्लए भासिवण्णाभे पण्णत्ते ॥ ८ ॥ ता जयाणं राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा

राहु देव महर्द्धिक यावत् महा सुखवाला है. श्रेष्ठ वस्त्र धारन करनेवाला, श्रेष्ठ आभूषण धारन करनेवाला है. इस राहु देव के नव नाम कहे हैं तद्यथा—१ सिंघाडक २ जटिल ३ क्षुल्लक ४ खर ५ ददुर ६ मगर ७ मच्छ ८ कच्छ और ९ कृष्ण सर्प ॥ ६ ॥ इस राहु का विमान पांच वर्णवाला कहा है तद्यथा—१ कृष्ण २ नील ३ रक्त ४ पीत और ५ शुक्ल. ॥ ७ ॥ राहु का कृष्ण वर्ण का विमान खंजन के वर्ण समान है, २ नीलवर्ण वाला राहुका विमान तुम्बे के वर्ण जैसा है ३ रक्त राहुका विमान मजीठ के रंग समान है ४ पीला राहुका विमान हलदी के वर्ण समान है. और ५ शुक्ल वर्ण वाला राहुका विमान भस्म समान है. ॥ ८ ॥ जब राहुदेवता जाता हुवा, आता हुवा, विकुर्वणा करता हुवा, व परिचारणा करता

सूत्र

तेणं एवं माहंसु तत्थ खलु इमे पण्णरस कसिणा पुग्गला पण्णत्ता तंजहा-सिंघडए, जडिलए, खतए, खरए, अंजणे, खंजणे, सीतले, हेमसीतिले, कैलासे, अरुणप्पहे पभंजणे नभपूरए, कविलए, पिंगलए, राहू॥ता जयाणं एए पण्णरस कसिणा पोग्गला सत्ता चंदस्सवा सूरस्सवा लेसाणुबंध चारिणो भवति, तताणं मणुसलोगे मणुस्सा वयंति एवंखलु राहु चंदंवा सूरंवा गिण्हति॥ ता जयाणं एए पण्णरस कसिणा पोग्गला नो चंदस्सवा सूरस्स लेसाणुबंध चारिणो भवति, तयाणं मणुस्सलोगे मणुसा वयंति एए खलु राहु चंदं सूरंवा गिण्हइ एगे एवं माहंसु ॥ ५ ॥ वयंपुण एवं वयामो

अर्थ

प्रकार के कृष्ण पुद्गल कहे हैं जिन के नाम—१ सिंघाटक २ जटिल ३ क्षुल्लक ४ खर ५ अंजन ६ खंजन ७ शीतल ८ हिमसीतल ९ कैलाश १० अरुणप्रभ ११ प्रभंजन १२ नभसूर १३ कपिल १४ पिंगल और १५ राहु. जब उक्त पन्नरह प्रकार के कृष्ण पुद्गल संपूर्ण चंद्र अथवा सूर्य की लेश्या को आवरणरूप होते हैं तब मनुष्य लोक में ऐसा कहता है कि राहु चंद्र व सूर्य का ग्रहण करता है. और जब उक्त पन्नरह प्रकार के कृष्ण पुद्गलों चंद्र सूर्य को आवरणरूप नहीं होते हैं तब मनुष्य लोक में ऐसा कहते हैं कि राहु चंद्र सूर्य का ग्रहण नहीं करता है ॥ ५ ॥ भगवान कहते हैं कि इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हुं कि

दाहिण पुरत्थिमेणं वितिवयइ; उत्तरपुरत्थिमेणं आवरित्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वितिवयति ता जयाणं उत्तरपुरत्थिमेणं चदे उवदंसेति दाहिण पच्चत्थिमेणं राहु ॥ ९ ॥ ता जयाणं राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वेमाणेवा परियारेमाणेवा चंदस्सलेसे आवरेमाणे चिट्ठति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सा वयति एवं खलु राहुणा चंदेवा सूरेवा गहिए, एवं ता जयाण राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदस्सवा सूरस्स लेस्सा आवरेत्ता पासेण वितिवयति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सा वयंति एवं खलु चंदेणंवा

सूर्य दीखता है और वायव्यकून में राहु दीखाता है. जब दक्षिण पश्चिम नैऋत्यकून में से चंद्र सूर्य की लेश्या को ढक कर उत्तर पूर्व (ईशानकून) में जब राहु जाता है. तब नैऋत्यकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और ईशानकून में राहु रहता है. जब वायव्यकून में चंद्र सूर्य की लेश्या ढककर अग्निकून में राहु जाता है तब वायव्यकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और अग्निकून में राहु रहता है. जब ईशानकून में चंद्र सूर्य की लेश्या ढककर नैऋत्यकून में राहु जाता है. तब ईशानकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और नैऋत्यकून में राहु रहता है. ॥ ९ ॥ जब राहु जाता आता हुवा विकुर्वणा करता हुवा या परिचारणा करता हुवा चंद्र अथवा सूर्य की लेश्या को आवरण करता हुवा रहता है तब मनुष्यों कहते हैं कि राहुने चंद्र व सूर्य को ग्रहण किया. जब राहु जाते आते, विकुर्वणा करते अथवा परिचारणा करते चंद्र सूर्य की लेश्या का

सूत्र

चंदस्सवा सूरस्सवा लेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ताणं पच्चत्थिमेणं वितिवयति, तयाणं पुरत्थिमेणं चंदे सूरे उवदंसेति पच्चत्थिमेणं राहु, जयाणं राहु आगच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदस्सवा सूरस्सवा लेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरित्ताणं पुरत्थिमेणं वितिवयति तयाणं पच्चत्थिमेणं चंदे सूरेवा उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहु, एव एएणं अभिलावेणं दाहिणेणं आवरित्ताण उत्तरेणं वितिवयइ उत्तरेणं आवरित्ताणं उत्तरपच्चत्थिमेणं वितिवयइ, दाहिण पच्चत्थिमेणं आवरित्ताण उत्तरपुरत्थिमेणं वितिवयइ, उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरित्ताणं

अर्थ

हुवा चंद्र अथवा सूर्य की लेश्या (कीरण) को पूर्व में से आवरण कर पश्चिम दिशा में जाता है तब पूर्वदिशा में चंद्र सूर्य दीखावे और पश्चिम दिशा में राहु देखावे, जब राहु जाता हुवा, आता हुवा, यावत् परिचारणा करता हुवा चंद्र या सूर्य की लेश्या को पश्चिम में ढक कर पूर्व में जाता है तब पश्चिम में चंद्र सूर्य देखता है और पूर्व में राहु रहता है. ऐसे ही दक्षिण दिशा में सूर्य को ढककर उत्तर दिशा में राहु जाता है तब दक्षिण दिशा में चंद्र सूर्य दीखता है और उत्तर दिशा में राहु रहता है. वैसे ही उत्तर दिशा में चंद्र सूर्य को ढक कर दक्षिण दिशा में जब राहु जाता है तब उत्तर दिशा में चंद्र या सूर्य दीखता है और दक्षिण दिशा में राहु रहता है. जब चंद्र या सूर्य की लेश्या को दक्षिण पूर्व (अग्निकून) में से ढक कर उत्तर पश्चिम (वायव्यकून) में राहु जाता है तब अग्निकून में चंद्र या

दाहिण पुरत्थिमेणं वितिवयइ; उत्तरपुरत्थिमेणं आवरित्ता दाहिणपच्चात्थिमेणं वितिवयाति ता जयाणं उत्तरपुरत्थिमेणं चदे उवदंसेति दाहिण पच्चत्थिमेणं राहु ॥ ९ ॥ ता जयाणं राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वेमाणेवा परियारेमाणेवा चंदस्सलेसे आवरेमाणे चिट्ठति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सा वयाति एवं खलु राहुणा चंदेवा सूरेवा गहिए, एवं ता जयाण राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदस्सवा सूरस्स लेस्सा आवरेत्ता पासेण वितवयाति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सावयंति एवं खलुचंदेणंवा

सूर्य दीखता है और वायव्यकून में राहु दीखाता है. जब दक्षिण पश्चिम नैऋत्यकून में से चंद्र सूर्य की लश्या को ढक कर उत्तर पूर्व (ईशानकून) में जब राहु जाता है. तब नैऋत्यकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और ईशानकून में राहु रहता है. जब वायव्यकून में चंद्र सूर्य की लेश्या ढककर अग्निकून में राहु जाता है तब वायव्यकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और अग्निकून में राहु रहता है. जब ईशानकून में चंद्र सूर्य की लेश्या ढककर नैऋत्यकून में राहु जाता है. तब ईशानकून में चंद्र सूर्य दीखाते हैं और नैऋत्यकून में राहु रहता है. ॥ ९ ॥ जब राहु जाता आता हुवा विकुर्वणा करता हुवा या परिचारणा करता हुवा चंद्र अथवा सूर्य की लश्या को आवरण करता हुवा रहता है तब मनुष्यों कहते हैं कि राहुने चंद्र व सूर्य को ग्रहण किया. जब राहु जाते आते, विकुर्वणा करते अथवा परिचारणा करते चंद्र सूर्य की लेश्या का

सूरेण राहुस्सकुच्छा भिन्नाए, एवं ता जयाणं राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदस्सवा सूरस्सवा लेस्सं आवरित्ताणं पच्चोसक्कइ तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सावयंति एवं खलु चंदं वा सूरे वा राहुण वंते । एवं ता जयाणं आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा चंदस्सवा सूरस्सलेस्सा आवरित्ताणं मज्झेणं वितिवयति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सा वयति एवं राहुणं चंदेवा सूरेवा विइवति घरिए, एवं ता जयाणं राहु आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा चंदस्सवा सूरस्सलेस्सं अहे सपक्ख सपडिदिसिं आवरेमाणे चिट्ठति तयाणं मणुस्सलोगे मणुस्सावदंति, एवं खलु राहुणं । चंदेवा सूरेवा घत्थे एवं ॥ १० ॥ ता कतिविहेणं राहु

आवरण कर पास में होकर जावे तब मनुष्य लोक में मनुष्यों कहते हैं कि चंद्र सूर्य की कुक्षि राहुने भेदी. अर्थात् राहु के अंदर में चंद्र सूर्य गया. ऐसे ही राहु जाते, आते, विकुर्वणा करते अथवा परिचारणा चंद्र अथवा सूर्य की लेश्या को आवरण कर पीछा नीकल तब मनुष्य लोक में मनुष्यों कहते हैं कि राहुने चंद्र सूर्य का वमन किया. ऐसे ही जब राहु देवता जाते आते विकुर्वणा करते या परिचारणा करते चंद्र अथवा सूर्य की लेश्या को चारों दिशा में ढककर रहता है तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं राहुने चंद्र अथवा सूर्य का ग्रहण किया अर्थात् खग्रास हुवा. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! राहु के कितने भेद कहे

पण्णत्ता?गोयमा दुविहे राहु पण्णत्ता तंजहा-धूवराहुय पव्वराहुय ॥११॥ तत्थणं जेसे धुवराहु सेणं बहुलपक्खस्स पडिवए पण्णसाति भागेणं पण्णरस भाग चंदरस लेस्सं आवरेमाणे चिट्ठति तंजहा-पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियभागं जाव पण्णरसेमू पण्णरसमंभागं, चरमसमए चंदरत्ते भवति अवसेस समए चंदेरत्ते विरत्तेवा भवति॥तां मेव सुक्कपक्खस्स उवदंसमाणे २ चिट्ठति तंजहा पढमाए पढमभागं जाव पण्णरसं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवति अव समए चंदे रत्तोविरत्ते भवति॥१२॥ तत्थणं जंसे पव्वराहु

हैं ? अहो गौतम ! राहु के दो भेद कहे हैं जिन के नाम-१ धूवराहु और २ पर्व राहु ॥ ११ ॥ इन में से जो धूवराहु है वह कृष्ण पक्ष का प्रतिपदा के दिन पन्नरवे भाग से आवरण कर पन्नरवे दिन पन्नर भाग को चंद्र लेश्या का आवरण कर रहता है. यथा. प्रतिपदा को प्रथम भाग, द्वितिया को दो भाग यावत् चतुर्दशी के दिन चउदह भाग १५ वी अमावास्या के दिन पन्नरह भाग. चरम समय में चंद्र रक्त होकर आवरण करने वाला होवे. अर्थात् अमावास्या के चरम समय में चंद्र को सर्वथा प्रकार से आवरण करता है. अमावास्या का चरम समय वर्जकर शेष समय में चंद्र रक्त व विरक्त होवे. वैसे ही शुक्ल पक्ष में चंद्र को बताता हुवा राहु रहता प्रतिपदा को एक भाग यावत् पन्नरहवी तीथी का पन्नरह भाग पूर्णिमा के चरम समय में चंद्र विरक्त होवे व शेष समय में चंद्र रक्त व विरक्त होता है ॥ १२ ॥ जो पर्व राहु है वह जघन्य छ मास उत्कृष्ट ४२ मास में चंद्र का ग्रहण करे

सूत्र

से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बयालीसाते मासाणं चंदस्स अडतालीसति संवच्छराणं सूरस्स ॥ १३ ॥ से केणट्ठेणं एवं वुचइ चंदे ससी ? गोयमा! चंदस्सणं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो मियंके विमाणे कंता देवा कंताती देवीओ कंताति आसणसयण खंभ भंडमत्तोवगरणाइं अप्पणाविय णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता सेतेणट्ठेणं एवं वुच्चइ चंदेससी ॥ १४ ॥ सेकेणट्ठेणं एवं वुच्चति सूरे आइच्चे ? गोयमा! ता सूरादियाण समयातिवा आवलियातिवा जाव उसप्पिणितिवा अवसप्पिणितिवा सेतेणट्ठेण एवं वुच्चति सूरे आइच्चे ॥ १५ ॥ ता चंदस्सणं

अर्थ

और जघन्य छ मास उत्कृष्ट ४८ वर्ष में सूर्य का ग्रहण करे ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! चंद्र को शशी क्यों कहा ? अहो गौतम ! ज्योतिषि के इन्द्र ज्योतिषि के राजा चंद्र को मृग के चिन्ह वाला मृगांक नामक विमान है, मनोहर देव व देवियों हैं, मनोहर आसन शयन भंड व उपकरण हैं, ज्योतिषि का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्र स्वयमेव शीतलकारी, सौभाग्यकारी, प्रेमकारी स्वरूप है. इसलिये चंद्र को शशी कहा है. ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य को आदित्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! सूर्य आदि करने वाला, समय, आवलिका, श्वासोश्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग यावत् अवसर्पिणी उत्सर्पिणी का करने वाला है. इस से अहो गौतम ! सूर्य को आदित्य कहा है.

जोतिंदस्स, जोतिसरन्नो कतिअग्गमहिसिणो पण्णत्ता ?गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा-चंदप्पहा सुदंसणा अच्चिमालिणी, पभंकरा ॥ तत्थणं एगमेगाए देवीए चत्तारि २ सहस्सणं रूवं विउव्वित्ता एवं तंचेव पुव्व भणियं अट्ठारसमे पाहुडे तहाणेयव्वं; जाव नो मेहुणवत्तियं एवं सूरस्सवि ॥१६॥ ता सरिय चंदमाणं जोतिसिंदे जोतिसरायाणो कारिसए कामभोग पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहा णामए केतिपुरिसे पढम जोव्वणुट्ठा बलत्थए ॥ पढम जोव्वणुट्ठाण बलरथाए ठाणत्थ चेव भारियत्ताए

॥ १८ ॥ अहो भगवन् ज्योतिषी के राजा ज्योतिषी का इन्द्र चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! चार अग्रमहिषियों कही. जिन के नाम-१ चंद्रप्रभा २ सुदर्शना, ३ अर्चिमाली व ४ प्रभंकरा. एक २ इन्द्राणी चार २ हजार रूपका वैक्रेय करे वगैरह अठारवे पाहुडे में जैसे जीवाभिगम सूत्र की साक्षी दी वैसे ही यहां जानना. यावत् मैथुन करे नहीं. जैसे चंद्र की चारों इन्द्राणी का कहा वैसे ही सूर्य का जानना. वे मैथुन नहीं करते हैं क्यों भगवती के दशवे शतक के पांचवे उद्देशे में कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा चंद्र सूर्य कैसे काम भोग भोगते हुवे विचर रहे हैं ? अहो गौतम ! प्रथम यौवनावस्था में प्राप्त हुवा कोइ पुरुष प्रथम यौवनावस्था वाली भार्या की साथ विवाह करके तुरत ही धन की प्राप्ति के लिये परदेश गया. वहां सोलह वर्ष पर्यंत धन

सद्धिं अविरत्त विवाह कज्जे अत्थगवेसणताए सोलसवास विप्पवासिते सेणं ततो लद्धट्ठे कातिकज्जे अणह समए पुण निसयं गिण्हं हव्वमागते ण्हाए जाव सरीरे विभूसिए मणुण्णं थालि पाकसिद्धं अट्ठारस वंजणाउलं भोयणं भुंचे समाणे तंसि तारिस गंसि वासघरंसि अब्भितराओ सचित्त कम्मे बाहिरउ दुमित घट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोय चिल्लगातिलेमणिरयण पणासियंधयारे, बहुसमरमणिज्जभूमिभागे पंचवण्णरस सुरभिमुक्क पुप्फ पुंजोवयारे कलिते कालागरूपवर कुंदुरुक्क तुरुक्कधूव मघमघातं गंधूताभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधिवट्टिभूए, तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण-

अर्थ साधन में विजयवंत हुवा किसी प्रकार का विघ्न नहीं आया. इस तरह करके अपने घर आया आकर स्नान किया, मंगलीक कार्य किया, सब अलंकार से विभूषित हुवा. मनोज्ञ स्थाल में पक्वान्न व अठारह प्रकार के शाक सहित भोजन किया. फीर पुन्यवंत को योग्य अंदर विविध प्रकार के चित्रों वाला, बाहिर स्वच्छ करके अनेक प्रकार के चित्रों वाला, उपर कपडे की छत वाला, रत्नों जडित भूतलवाला, उज्वल उद्योतवाला, बहुत रमणीय भूमिभागमें पंचवर्ण रस सहित सुगंधित पुष्पों का ढग वाला, कृष्णवर्ण सुगंधि द्रव्य व कुंदरुक्कादिक धूप से मघमघायमान सुगंधित पदार्थों सहित रहने के घर में पुण्यवंत माणि-

वंट्टीसूए उभओवि वोयणे दुहओ उणए मज्झयण गंभीरए गंगापुलिण वालुता उद्दालि सालिंगए उवचिते पुग्गलपट्टपडिच्छयणे विरातिया ताणे रत्ते सुत्तसंवुडे सुरम्मे आयणिगमुय बूरणवणिततुलफासे सुगंधवर कुसुमतूणसयणोवकारिकासिए तारिसयाए भारियाए सद्धिं ,सिंगारागार चारुवेसाएसंगय जाव जोवणविलास कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणेणुकुलाए सद्धिं इट्ठे सद्दफरस रूवगंधे पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरेज्जा तिसेणं पुरिसे वितसमकाल समयंसि केरिसयं साता सोक्खं पच्चणुभवमाणे विहराति ?एतेणं समणाउसो ! तस्सणं पुरिसस्स

यों को योग्य, चारों तरफ समान, दोनों बाजु गाल मसूरियें, दोनों बाजु कुच्छ ऊंचा, मध्य भाग गंभीर, जैसे गंगा नदी की रेतु पानी में स्वच्छ दिखती है वैसे ही स्वच्छ चादर से चारों तरफ अच्छी तरह ढका हुआ, सुरम्य, वृर वस्त्र समान कोमल, सुगंधित प्रधान पुष्प समान शैय्या में शृंगार के घर समान भव्य वेशवाली विलासवाली व मन को अनुकूल भार्या की साथ इष्ट शब्द, रूप, गंध, रस व स्पर्श यों पांच प्रकार के मनुष्य संबंधी कामभोग भोगता हुवा विचरता होवे. उस पुरुषको उस समय कैसा सुख होवे ? अहो आयुष्यवंत श्रमणो ! उस पुरुष के काम भोग से वाणव्यंतर के काम भोग अनंतगुने विशिष्टतर हैं.

कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एतो अणंतगुणविसिट्ठतरगाचेव कामभोगा वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद वज्जियाणं भवणवासिणं देवाणं एतो अणंतगुण विसिट्ठतरगा चेव कामभोगा असुरिंदवज्जियाणं भवण जाव भोगेहिंतो असुरकुमाराणं एतो अणंतगुणा असुरकुमारदेवाण कामभोगेहिंतो गहगणणक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणंदेवाणं एतो अणंतगुणा विसिट्ठतरगाचेव कामभोगा गहगणणक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिम सूरियाण जोतिसियाणं जोतिसरायाणं एतो अणंतगुणा विसिट्ठतरगाचेव कामभोगा, ता चंदिम सूरियाणं जोतसिंदा जोतिसरण्णा एरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरंति॥ १७॥ तत्थ खलु इमा अट्ठासीतिं महागहा पण्णत्ता तंजहा-इंगालए, वियालए, लोहिताए, सणिच्छरे, आहुणिए, पाहु-

वाणव्यंतर के काम भोगों से असुरेन्द्र छोडकर शेष भवनवासी के कामभोग अनंत गुने विशिष्टतर हैं. भवन भवनवासी के कामभोगों से असुर कुमार के कामभोग अनंतगुने विशिष्टतर हैं, असुर कुमार के कामभोगों से ग्रह, नक्षत्र व ताराओं के कामभोग अनंतगुन विशिष्टतर हैं. ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं के कामभोगों से ज्योतिषी का राजा, ज्योतिषी का इन्द्र चंद्र सूर्य के कामभोगों अनंतगुन विशिष्टतर भोगवते हुवे विचरते हैं ॥ १७ ॥ ज्योतिषी में ८८ सी महा ग्रह कहे हैं जिन के नाम—१ अंगारक, २ विकालक, ३ लोहिताक्ष, ४ शनिश्चर, ५ आधुनिक, ६ प्राधुनिक, ७ कनक, ८ कनकनक, ९ कणग, १० विंयाणक,

काए, कणकणए, कणग वियाणए, कणगसंताणए, सोमे, सहिए, आसासणे, कज्जोवते, कचंडगे, अयकयरए, दुदुभए, संखे, शखवण्णे, संखवण्णाभे, कंसे, कंसवण्णे, कंसवण्णाभे निले, निलाभासे, रूवे, रूवाभासे, भासे, भासरासी, तिले, तिलपुप्फे, वण्णे, दक्खे, दक्खवण्णे, काए, कायकंधे धुमाग्गि धुमकेतु, हरी, पिंगलए, बुहे, सुक्के, बहस्साति, राहु अगत्थी, माणवते, कासे, फासे, धूरे, पमुहे, वियडे, विसधी, पयले, जयले, अरुणे, अगिलाए, काले, महाकाले, सोत्थिए, सोवात्थिए, वद्धमाणे, पलंबे, णिच्चालोए, णिचुजोए, सयंपहे, सेयंकरे, खेमंकरे, आभंकरे, पभंकरे, अरए, असोगे,

११ कणगसंतानक, १२ सोम, १३ सहित, १४ आसासण, १५ इन, १६ कार्यवर्त, १७ कचंडल, १८ अपकरक, १९ दुंडाभे, २० शंख, २१ शंखवर्ण, २२ शंखवर्णाभ, २३ कंस, २४ कंसवर्ण, २५ कंसवर्णाभ, २६ नील, २७ नीलाभास, २८ रूपी, २९ रूपीभास, ३० भास, ३१ भासराशी, ३२ तिलपुष्प, ३४ वर्ण, ३५ दक्ष, ३६ दक्षवर्ण, ३७ काय, ३८ कायकंप, ३९ धूमांसि, ४० धूमकेतु, ४१ हरि, ४२ पिंगलक ४३ बुध, ४४ शुक्र, ४५ बृहस्पति, ४६ राहु, ४७ अगस्ति ४८ मानवर्त ४९ कास, ५० स्पर्श, ५१ धूर, ५२ प्रमुख, ५३ विपध, ५४ विसध, ५५ नलय, ५६ जयल, ५७ अरुण, ५८ अंगील, ५९ काल, ६० महा काल ६१ सोथिक, ६२ स्वास्तिक, ६३ वर्धमान, ६४ प्रलंबमान, ६५ नित्य लोक, ६६ नित्य ज्योति ६७ स्वयंप्रभ, ६८ श्रेयकर, ६९ क्षेमकर, ७० आभंकर, ७१ प्रभंकर, ७२ अरंग नामाग्रह, ७३ अशोक

विगयसोगे, वितके, विजये, विसाले; साले, सुव्वए, अणियट्टी, अणाविए एगजडी, दुजडि, करकरिए, रायगले, पुप्फकेतु, भावकेतु ॥ इति एस पागडच्छा, (गाहा) अभव्वजण हियर्य दुलहाहीइ णमो ॥ उक्कातियाँ भगवती, जोतिरस रायरस पण्णत्ति ॥ १ ॥ एसगहिय विसतिथद्धे गारचितमाणि पडिणीए ॥ अवहुस्सूए न देया ॥ तव्वीवरिए भवेदेवा ॥ २ ॥ सद्धा ढिइ उट्ठाणुच्छाह कम्मबल वीरिए पुरिसक्कारहिं ॥ जोसिक्खि उवमंतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥ ३ ॥ सोपवयण कुलगण संघबाहिरोनाण

७४ विगत शोक, ७५ विमल, ७६ विजय, ७७ विशाल, ७८ शाल, ७९ सुव्रत, ८० अनियति, ८१ अनामृत, ८२ एकजटी, ८३ द्विजटी, ८४ कर, ८५ कर कटिक, ८६ रायगल, ८७ पुष्पकेतु और ८८ महाकेतु. यों अठ्यासी ग्रह हैं. प्रत्येक ग्रह को चार २ हजार सामानिक देव हैं. चार २ अग्र महिषियों हैं, तीन २ परिषदा के देव हैं, सात २ अनिक व अनिक के अधिपति हैं. और सोलह हजार आत्म रक्षक देव व अन्य भी स्वविमानवासी देव व देवियों हैं. इन सब का अधिपतिपना करते हुवे विचरते हैं. पूर्वोक्त श्री चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का अर्थ प्रगट हैं. परंतु अभव्य जीवों को इस का अर्थ दुर्लभ होता है ॥१८॥ यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र बहुत गूढार्थवाला है. इस से इस का ज्ञान दान किसे को देना व किस को न देना सो बताते हैं. यह उत्कृष्ट भगवती श्री ज्योतिषराज प्रज्ञप्ति का ज्ञान दान स्वयमेव ग्रहण करनेवाले को कुद्यादि गर्व आजाने से नरकादि गति प्राप्त होवे इस से उन को देना नहीं. परंतु नरकादि गति मिटाने

विणयि पारहाणा ॥ अरिहंत थेर गणहर मेइ किरहोंति वालिणो ॥ ४ ॥ तम्हो धिति उट्ठाणुच्छाह कम्मबलविरिय सिक्खियनाणं॥ धारेयव्वं णियमा, णय अविणीए सुदायव्वं ॥ ५ ॥ वीर वरस्स भगवओ । जर मर किलेस दोस राहियस्स ॥ वंदामि विणय पण्णत्तो, सोक्खं पाइ संपाए ॥६॥ इति चंद पण्णत्तीए वीसमं पाहुडं सम्मत्तं॥२०॥

को चंद्र प्रज्ञप्ति का ज्ञान दान देना. और भी जात्यादिमद युक्त, प्रत्यनीक, सिद्धांत के खंडन करनेवाले को और जो बहुश्रुत नहीं होवे उन को यह ज्ञान दान नहीं देना परंतु जिन प्रवचन में सम्यक् प्रकार से भव्यादिपना से शब्द अर्थ पर्याय की आलोचना करनेवाले सम्यक्त्वी को इस का ज्ञान दान देना. अब शास्त्र के आदान में निर्णयपना करते हैं. ॥ २ ॥ जो कोई श्रद्धा, धृति, (धैर्य) उत्थान, उत्साह, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार व पराक्रम से चंद्र प्रज्ञप्ति का ज्ञान प्राप्त करके अयोग्य अभव्य को देवे तो देने-वाले को भी इस की हानि होगी॥३॥ इस तरह अभव्य को ज्ञान देनेवाला साधु प्रवचन कुल गण व संघ से बाहिर मानना. अरिहंत व गणधरों की मर्यादा उल्लंघनेवाला जानना ॥४॥ इस से धृति, उत्थान, उत्साह, कर्म, बल, वीर्य से ज्ञान ग्रहण कर धारन करना. और अविनीत को देना नहीं ॥ ५ ॥ जो जन्म जरामरण के क्लेश व अठारह दोष रहित होगये हैं, जिनोंने निराबाध सुख प्राप्त किया है और जो अन्य को प्राप्त करानेवाले हैं वैसे श्री चौवीसवे वीर भगवान को विनय पूर्वक नमस्कार करता हूं. यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र का वीसवा पाहुडा संपूर्ण हुवा ॥ २० ॥ यह चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र समाप्त हुवा.

० ० ०

* इति सप्तदश *

चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र समाप्तम्.

वीर संवत २४४९ माघ वदी २ वार शनि

* इति सप्तदश *

चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र समाप्तम्.

वीर संवत २४४५ माघ बदी २ वार शनि